माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उ.प्र. प्रयागराज द्वारा स्वीकृत नवीनतम्
पाठ्यक्रम पर आधारित एकमात्र पाठ्य पुस्तक

राजीव®

संस्कृत

कक्षा-12

(सरकारी गजट उत्तर प्रदेश भाग-4 में प्रकाशित)

*सचिव, माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उ०प्र०, प्रयागराज की विज्ञप्ति संख्या परिषद्–**9/989**,*
*के सातत्य में शैक्षिक सत्र **2021-22** के लिए स्वीकृत नवीनतम पाठ्यक्रम पर*
आधारित एकमात्र पाठ्य-पुस्तक

राजीव®

संस्कृत

कक्षा-12

- चन्द्रापीडकथा (उत्तरार्द्ध)
- रघुवंशमहाकाव्यम् (द्वितीयः सर्गः)
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थोऽङ्कः)
- निबन्ध, अलंकार एवं व्याकरण

व्याख्याकार

डॉ० रमेश कुमार उपाध्याय
एम०ए० (हिन्दी, संस्कृत), पी-एच० डी०
भूतपूर्व साहित्य विभागाध्यक्ष,
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयागराज

श्रीमती आशा मिश्रा
एम० ए० (संस्कृत, हिन्दी) बी० एड०,
आचार्या-ज्वालादेवी इण्टर कॉलेज
प्रयागराज

प्रकाशक
राजीव प्रकाशन
प्रयागराज

मूल्य
₹ 195.00

• प्रकाशक एवं मुद्रक :

राजीव प्रकाशन

19, लाउदर रोड,

प्रयागराज-211002

• **संस्करण : 2021-2022**

• फोन :

कार्यालय : (0532) 2402474, 2404980

• © प्रकाशकाधीन

चेतावनी

इस पुस्तक में समाहित सम्पूर्ण सामग्री (रेखा व छायाचित्रों सहित) के सर्वाधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं। अतः कोई भी सज्जन इस पुस्तक का नाम, टाइटिल, डिजाइन तथा पाठ्य-सामग्री आदि को आंशिक या पूर्ण रूप से तोड़-मगेड़कर प्रकाशित करने का साहस न करें अन्यथा वे कानूनी तौर पर हर्जे-खर्चे के जिम्मेदार होंगे। समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन रहेंगे।

प्राक्कथन

माध्यमिक शिक्षा परिषद् उ० प्र०, प्रयागराज के अनुसार संस्कृत विषय में 100 अंकों का एक प्रश्न-पत्र होगा। समय तीन घण्टे, न्यूनतम उत्तीर्णांक 33 है।

संस्कृत भाषा भारतीय साहित्य की अमूल्य निधि है इसीलिए इसे देववाणी की संज्ञा दी गयी है। इसे ध्यान में रखते हुए माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश ने कक्षा-12 संस्कृत हेतु चर्चित एवं जनप्रिय तीन पुस्तकें निर्धारित की हैं। क्रमानुसार ये पुस्तकें हैं—चन्द्रापीडकथा (उत्तरार्द्ध भाग), रघुवंशमहाकाव्यम् (द्वितीयः सर्गः), अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थोऽङ्कः)। इसके अतिरिक्त संस्कृत व्याकरण का भी पूर्ण समावेश है। विद्यार्थियों की सुविधा को देखते हुए उपर्युक्त कृतियों को एक पुस्तक का स्वरूप दिया गया है।

बाणभट्ट द्वारा रचित 'चन्द्रापीडकथा' संस्कृत गद्य साहित्य की सर्वश्रेष्ठ रचना है। बाणभट्ट की इस कृति के माध्यम से इसे सरल रूप में प्रस्तुत किया गया है।

रघुवंशमहाकाव्यम् (द्वितीयः सर्गः) को सरल एवं बोधगम्य रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। इसमें प्रस्तुत अनुपम सूक्तियों से परिपूर्ण सर्वगुणसम्पन्न इसकी रचना अत्यन्त चमत्कारिणी और मनोहारिणी है।

'काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला' इस कथन के आधार पर 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' को सर्वश्रेष्ठ नाटक माना गया है। यह महाकवि कालिदास की अमर कृति है। 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक को सरल एवं बोधगम्य रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

छात्र-छात्राओं के अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से प्रत्येक रचनाकारों का जीवन-परिचय, शैली, कृतियों की कथावस्तु, श्लोकों एवं गद्यावतरणों पर आधारित प्रश्नोत्तर, हिन्दी अनुवाद, हिन्दी व्याख्या, संस्कृत व्याख्या एवं शब्दार्थ आदि दिये गये हैं। सम्पूर्ण कृतियों से उद्धृत सूक्तियों को भी प्राथमिकता दी गयी है। इसके अतिरिक्त अतिलघु उत्तरीय एवं बहुविकल्पीय प्रश्नों का भी पूर्ण समावेश है।

संस्कृत व्याकरण भाग के अन्तर्गत निबन्ध, अलंकार, अनुवाद, कारक एवं विभक्ति, समास, सन्धि, शब्द-रूप, धातु-रूप, प्रत्यय, वाच्य परिवर्तन आदि जैसे विविध पक्षों पर विधिवत् प्रकाश डाला गया है ताकि छात्रगण अधिकाधिक लाभ अर्जित कर सकें।

प्रस्तुत संस्करण की रचना विशेषतः विद्यार्थियों को ध्यान में रखकर की गयी है और मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह उनके अध्ययन में अधिकाधिक सहायता प्रदान करेगी।

—व्याख्याकार

माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उ०प्र०, प्रयागराज द्वारा 2021-22 की परीक्षा के लिए निर्धारित

संस्कृत : कक्षा-12

अंक-विभाजन

➨ सामान्य निर्देश

संस्कृत विषय में 100 अंकों का एक प्रश्न-पत्र होगा। प्रश्न-पत्र के प्रत्येक खण्ड में निर्धारित अंकों के अन्तर्गत दीर्घ उत्तरीय, लघु उत्तरीय, अतिलघु उत्तरीय एवं बहुविकल्पीय प्रश्नों का समावेश कर कई प्रश्न पूछे जा सकते हैं। प्रश्न-पत्र में प्रश्नों के लिए निर्धारित अंक ही उत्तर के आकार की संक्षिप्तता या दीर्घता का द्योतक होगा। प्रत्येक प्रश्न-पत्र के अन्तर्गत समाविष्ट पाठ्यक्रम का अंक विभाजन निम्नवत् होगा—

खण्ड-क (गद्य) — 20 अंक

➨ चन्द्रापीडकथा

1.	गद्यांश के आधार पर प्रश्नोत्तर।	**10**
2.	कथात्मक पात्रों का चरित्र-चित्रण (हिन्दी में, अधिकतम 100 शब्द)।	**4**
3.	रचनाकार का जीवन-परिचय एवं गद्य-शैली (हिन्दी अथवा संस्कृत में, अधिकतम 100 शब्द)।	**4**
4.	सन्दर्भित पुस्तक से सम्बन्धित वैकल्पिक प्रश्न।	**2**

खण्ड-ख (पद्य) — 20 अंक

➨ रघुवंशमहाकाव्यम् (द्वितीयः सर्गः)

1.	किसी श्लोक की सन्दर्भ सहित हिन्दी में व्याख्या	**2+5=7**
2.	किसी श्लोक की सन्दर्भ सहित संस्कृत में व्याख्या।	**2+5=7**
3.	कवि-परिचय एवं काव्य-शैली (हिन्दी अथवा संस्कृत में, अधिकतम 100 शब्द)।	**4**
4.	काव्यगत तथ्यों एवं भावों पर आधारित वैकल्पिक प्रश्न।	**2**

खण्ड-ग (नाटक) — 20 अंक

➨ अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थोऽङ्कः)

1.	पाठगत नाटक के किसी गद्यांश अथवा पद्य की सन्दर्भसहित हिन्दी में व्याख्या।	**2+5=7**
2.	पाठगत नाटक के अंशों से सूक्तिपरक पंक्ति की सन्दर्भसहित हिन्दी में व्याख्या।	**2+5=7**
3.	नाटककार का जीवनपरिचय एवं नाट्यशैली (हिन्दी अथवा संस्कृत में, अधिकतम 100 शब्द)।	**4**
4.	सन्दर्भित पुस्तक से सम्बन्धित वैकल्पिक प्रश्न।	**2**

खण्ड-घ (निबन्ध) 10 अंक

विभिन्न विषयों पर संस्कृत में निबन्ध (10 पंक्तियाँ)–संस्कृत साहित्य, जनसंख्या, पर्यावरण, स्वास्थ्य शिक्षा, यातायात के नियम आदि।

खण्ड-ङ (अलंकार) 3 अंक

निम्नलिखित अलंकारों की सामान्य परिभाषा (हिन्दी या संस्कृत में) अथवा उदाहरण संस्कृत में– उपमा तथा रूपक।

खण्ड-'च' (व्याकरण) 27 अंक

1.	अनुवाद – ऐसे हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद जहाँ उपपद विभक्तियों का प्रयोग हो।	**8**
2.	कारक तथा विभक्ति	**3**
3.	समास	**3**
4.	सन्धि	**3**
5.	शब्दरूप	**3**
6.	धातुरूप	**3**
7.	प्रत्यय	**2**
8.	वाच्य परिवर्तन	**2**

निर्धारित पुस्तकें एवं पाठ्य-वस्तु

खण्ड-(क) गद्य– महाकवि बाणभट्टप्रणीतम् – कादम्बरीसारतत्त्वभूतम् ''चन्द्रापीडकथा'' का उत्तरार्द्ध भाग-सा तु समुत्थाय महाश्वेतां–जग्रन्थ बाणभट्टस्य वाक्यैरेव कथामिमाम्।।इति।।

खण्ड-(ख) पद्य– महाकविकालिदासप्रणीतम् – रघुवंशमहाकाव्यम् (द्वितीय सर्ग) श्लोक संख्या 41 से समाप्तिपर्यन्त।

खण्ड-(ग) नाटक– महाकविकालिदासप्रणीतम्–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थोऽङ्कः) (आकाशे) रम्यान्तरः कमलिनी हरितैः ..... इत्यादि पद से अंक की समाप्ति तक।

खण्ड-(घ) निबन्ध– विभिन्न विषयों पर संस्कृत में निबन्ध (10 पंक्तियाँ) संस्कृत साहित्य, जनसंख्या, पर्यावरण, स्वास्थ्य शिक्षा, यातायात के नियम आदि विषयों पर निबन्ध)

खण्ड-(ङ) अलंकार- निम्नलिखित अलंकारों की सामान्य परिभाषा (हिन्दी या संस्कृत में) अथवा उदाहरण संस्कृत में– उपमा तथा रूपक।

खण्ड-(च) व्याकरण–

1. अनुवाद– ऐसे हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद जहाँ उपपद विभक्तियों का प्रयोग हो।

2. कारक तथा विभक्ति–

निम्नलिखित सूत्रों तथा वार्तिकों के आधार पर कारकों तथा विभक्तियों का ज्ञान–

(क) चतुर्थी विभक्ति (सम्प्रदान कारक)

(1) कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्
(2) चतुर्थी सम्प्रदाने
(3) रुच्यर्थानां प्रीयमाणः
(4) क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः
(5) स्पृहेरीप्सितः
(6) नमःस्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषड्योगाच्च

(ख) पंचमी विभक्ति (अपादान कारक)

(1) ध्रुवमापायेऽपादानम्

(2) अपादाने पञ्चमी
(3) जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामुपसंख्यानम् ।(वा0)
(4) भीत्रार्थानां भयहेतुः
(5) आख्यातोपयोगे

(ग) षष्ठी विभक्ति (सम्बन्ध कारक)

(1) षष्ठी शेषे
(2) षष्ठी हेतुप्रयोगे
(3) क्तस्य च वर्तमाने
(4) षष्ठी चानादरे

(घ) सप्तमी विभक्ति (अधिकरण कारक)

(1) आधारोऽधिकरणम्
(2) सप्तम्यधिकरणे च
(3) साध्वसाधुप्रयोगे च। (वा0)
(4) यतश्च निर्धारणम् ।

3. समास

निम्नांकित समासों की परिभाषा अथवा संस्कृत में विग्रहसहित समास का नाम।
(1) द्वन्द्वः, (2) अव्ययीभावः, (3) द्विगुः।

4. सन्धि

सन्धि, सन्धि-विच्छेद, नामोल्लेख तथा नियम-ज्ञान।
निम्नलिखित सूत्रों के अनुसार संधियों का उदाहरण सहित ज्ञान—

(क) व्यंजन सन्धि या हल सन्धि– (1) स्तोःश्चुना श्चुः, (2) ष्टुना ष्टुः, (3) झलां जशोऽन्ते, (4) खरि च, (5) मोनुऽस्वारः, (6) झलां जश् झशि, (7) तोर्लि, (8) अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः।

(ख) विसर्ग सन्धि– (1) विसर्जनीयस्य सः, (2) ससजुषोरुः, (3) अतोरोरप्लुतादप्लुते, (4) हशि च, (5) खरवसानयोर्विसर्जनीयः, (6) वा शरि, (7) रोरि, (8) ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः।

5. शब्द-रूप

(अ) नपुंसकलिंग– गृह, वारि, दधि, मधु, जगत्, नामन्, मनस्, ब्रह्मन्, धनुष्।
(आ) सर्वनाम– सर्व, तद्, यद्, किम्, युष्मद्, अस्मद्, इदम्, एतत्, अदस्, भवत्।
(इ) 01 से 100 तक के संख्यावाचक शब्द तथा कति के रूप।

6. धातु-रूप

निम्नलिखित धातुओं के लट्, लङ्, लोट्, विधिलिङ् एवं ऌट् लकार में रूप।
(अ) आत्मनेपद– लभ्, वृध्, भाष्, शी, विद्, सेव्।
(आ) उभयपद– नी, याच्, दा, ग्रह्, ज्ञा, चुर्, श्रि, क्री, धा।

7. प्रत्यय ल्युट्, णमुल्, अनीयर्, टाप्, ङीष्, तुमुन्, क्त्वा।

8. वाच्य परिवर्तन वाक्यों में कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य एवं भाववाच्य पदों का वाच्य परिवर्तन।

विषय-सूची

विषय — पृष्ठ-संख्या

खण्ड - 'क' (गद्य)

चन्द्रापीडकथा (उत्तरार्द्ध भाग)

- महाकवि बाणभट्ट **9**
- चन्द्रापीडकथा : कथा-सार **13**
- चन्द्रापीडकथा : पात्र-परिचय **14**
- चन्द्रापीडकथा **20**
  (उत्तरार्द्ध भाग : शब्दार्थ, हिन्दी अनुवाद, व्याकरणात्मक टिप्पणी एवं प्रश्नोत्तर)
- अतिलघु उत्तरीय प्रश्न **90**
- बहुविकल्पीय प्रश्न **92**

खण्ड - 'ख' (पद्य)

रघुवंशमहाकाव्यम् (द्वितीयः सर्गः)

- महाकवि कालिदास : एक संक्षिप्त परिचय **96**
- रघुवंश महाकाव्य : एक संक्षिप्त परिचय **101**
- रघुवंशमहाकाव्यम् (द्वितीयः सर्गः) **107**
  (हिन्दी एवं संस्कृत व्याख्या)
- अतिलघु उत्तरीय प्रश्न **124**
- बहुविकल्पीय प्रश्न **125**

खण्ड - 'ग' (नाटक)

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थोऽङ्कः)

(आकाशे) रम्यान्तरः कमलिनीहरितैः ..... इत्यादि)

- महाकवि कालिदास **128**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् : चतुर्थ अङ्क का सारांश **132**

- प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण **133**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थोऽङ्कः) **140**
- सूक्तिपरक वाक्यों की ससंदर्भ हिन्दी व्याख्या **152**
- अतिलघु उत्तरीय प्रश्न **155**
- बहुविकल्पीय प्रश्न **158**

खण्ड - 'घ'

- निबन्ध **164**

खण्ड - 'ङ'

- अलंकार **184**

खण्ड - 'च' (व्याकरण)

1. अनुवाद **185**
गत वर्ष की बोर्ड परीक्षाओं में पूछे गये वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद **199**

2. कारक तथा विभक्ति **204**
गत वर्ष की बोर्ड परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्नों के उत्तर **208**
बहुविकल्पीय प्रश्न **212**

3. समास **218**
गत वर्ष की बोर्ड परीक्षाओं में पूछे गये समास (उत्तर सहित) **221**
बहुविकल्पीय प्रश्न **224**

4. सन्धि **228**
बहुविकल्पीय प्रश्न **233**

5. शब्द-रूप **237**
बहुविकल्पीय प्रश्न **246**

6. धातु-रूप **257**
बहुविकल्पीय प्रश्न **278**

7. प्रत्यय **285**
बहुविकल्पीय प्रश्न **287**

8. वाच्य-परिवर्तन **295**
गत वर्ष की बोर्ड परीक्षाओं में पूछे गये वाच्य-परिवर्तन **296**

- **प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र** **301**

खण्ड - 'क' (गद्य)

महाकविबाणभट्टप्रणीतम्

चन्द्रापीडकथा

(उत्तरार्द्ध भाग)

महाकवि बाणभट्ट (2017 NF, NI, 19 DE, 20 ZR, ZT, ZU)

जीवन-परिचय—बाणभट्ट संस्कृत साहित्य के सर्वश्रेष्ठ गद्य कवि हैं। उनके समय, जीवन-परिचय तथा रचनाओं आदि के विषय में किसी प्रकार का सन्देह नहीं है। इसका कारण है उनके आश्रयदाता हर्षवर्धन का ऐतिहासिक व्यक्तित्व होना, साथ ही उनकी कृतियों में वर्णित घटनाएँ तथा अन्य बाह्य साक्ष्य भी उसे प्रमाणित करते हैं। हर्षचरित के प्रथम दो उच्छ्वासों और कादम्बरी (भूमिका, श्लोक 10 से 20) में बाण ने अपनी आत्मकथा और वंश-परिचय दिया है। हर्षचरित के प्रथम उच्छ्वास में इन्होंने अपने वंश की पौराणिक उत्पत्ति बतायी है। इनके वंश प्रवर्तक वत्स, सरस्वती के पुत्र सारस्वत के चचेरे भाई थे। बाण के पिता का नाम चित्रभानु तथा माता का नाम राजदेवी था। बचपन में ही उनकी माता का देहान्त हो गया और पिता ने उनका पालन-पोषण किया। 14 वर्ष की आयु में ही इनके पिता का भी स्वर्गवास हो गया। पिता की मृत्यु के बाद शोकसन्तप्त बाण अपने मित्रों के साथ देशाटन पर निकल पड़े और यायावरी जीवन व्यतीत करने लगे। भ्रमण के दौरान बाण राजदरबारों तथा गुरुकुलों में भी गये। विद्वानों के बीच रहते हुए बाण की प्रकृति बदल गयी और वे अपने वात्स्यायन वंश के अनुरूप गम्भीर स्वभाव के होकर अपनी जन्म-भूमि को लौट आये। इनके पूर्वजों का निवास-स्थान शोण (सोन) नदी के पास प्रीतिकूट नामक ग्राम था।

समय—बाण सम्राट् हर्ष के सभा-पण्डित थे, अतः बाण के समय-निर्धारण में कोई कठिनाई नहीं है। हर्ष का राज्याभिषेक अक्टूबर, 606 ई. में हुआ और उनकी मृत्यु 648 ई. में हुई। ताम्रपत्रों तथा चीनी यात्री ह्वेनसांग के संस्मरणों से ये तिथियाँ निर्णीत हो चुकी हैं। ह्वेनसांग ने 629 से 645 ई. तक भारत-भ्रमण किया था और वह हर्ष के निकट सम्पर्क में भी आया था। अतः बाण का समय 7वीं शताब्दी ई. का पूर्वार्द्ध मानना उचित है।

8वीं शताब्दी ई. से लेकर अनेक संस्कृत ग्रन्थकारों ने बाण और उनके ग्रन्थों का उल्लेख किया है, अतः बाण के समय के विषय में कोई विवाद नहीं है।

रचनाएँ—मुख्य रूप से बाणभट्ट के दो ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं—

1. हर्षचरित, 2. कादम्बरी।

इनके नाम से तीन और ग्रन्थ माने जाते हैं—

1. चण्डीशतक, 2. मुकुटताडितक, 3. पार्वती परिणय।

परन्तु इन तीनों रचनाओं की प्रामाणिकता सन्दिग्ध है।

हर्षचरित—यह आठ उच्छ्वासों में लिखी हुई एक आख्यायिका है। इसके प्रारम्भ में स्वयं बाण ने अपने वंश का विशद् वर्णन किया है और अगले उच्छ्वासों में हर्ष की वंश-परम्परा से प्रारम्भ करते हुए उनकी उत्पत्ति तथा विकास का विस्तृत वर्णन किया है।

कादम्बरी—यह एक अनूठा कथा-ग्रन्थ है। इसमें एक काल्पनिक कथा वर्णित है। कादम्बरी को हम आधुनिक युग में उपन्यास कह सकते हैं। भाव और भाषा-शैली सभी दृष्टियों से कादम्बरी एक उत्कृष्ट रचना है, अतः यह कथन उचित ही है कि कादम्बरी के रसज्ञों को भोजन भी अच्छा नहीं लगता—''**कादम्बरीरसज्ञानामाहारोऽपि न रोचते।**''

पार्वती परिणय—यह एक नाटक है, इसमें भगवान् शिव तथा पार्वती का विवाह वर्णित है।

चण्डीशतक—यह सौ श्लोकों का संग्रह-ग्रन्थ है। इसमें अत्यन्त सुन्दर शब्दावली में भगवती चण्डिका की स्तुति की गयी है।

मुकुटताडितक—यह एक नाटक है, परन्तु अब अप्राप्य है।

बाण की शैली एवं काव्य-सौन्दर्य

(2017 ND, NH, 18 BD, BE, 19 CZ, DB, DC, DD, DF, 20 ZO,ZP, ZR, ZS)

बाण संस्कृत गद्य-काव्य के मूर्द्धन्य सम्राट् माने गये हैं। उन्होंने गद्य में पद्यों से भी अधिक सौन्दर्य एवं चमत्कार-प्रदर्शन किया है। बाण की सबसे प्रमुख विशेषता है कि उन्होंने अपने दोनों गद्य-काव्यों में शैलीगत समस्त विशेषताओं का संग्रह करने का प्रयत्न किया है, अतः उनके ग्रन्थ सभी के लिए आनन्ददायी हैं। बाण के अनुसार नवीन या चमत्कारिक अर्थ, उत्कृष्ट स्वभावोक्ति, सरल श्लेष प्रयोग, सुन्दर रसाभिव्यक्ति और ओज-गुणयुक्त शब्दयोजना, ये सारे गुण एकत्र दुर्लभ हैं। परन्तु बाण की रचनाओं में ये सभी गुण प्राप्त होते हैं।

रीति—बाण पाञ्चाली रीति के कवि हैं। उनकी रचनाओं में भाव और भाषा का अनुपम समन्वय मिलता है। पाञ्चाली रीति का तात्पर्य है, विषय के अनुरूप शब्दावली का प्रयोग और बाण इसके सिद्धहस्त कवि हैं।

शैली—बाण के समय चार प्रकार की गद्य-शैलियाँ प्रचलित थीं, जिनमें से तीन बाण के साहित्य में मिलती हैं–दीर्घसमासा, अल्पसमासा और समासरहिता। बाण का किसी शैली पर विशेष आग्रह नहीं था।

समासों का अस्तित्व गद्य शैली की प्रमुख विशेषता माना जाता है–'**ओजः समास भूयस्त्वमेतद् गद्यस्य जीवितम्।**' समासों का जमघट लगा देने में बाण ने कमाल दिखलाया है। जिस प्रकार उन्होंने समास-बहुल लम्बे-लम्बे वाक्यों का प्रयोग किया है, उसी प्रकार समासरहित छोटे-छोटे वाक्यों के प्रयोग में भी कौशल दिखाया है।

भाषा—बाण की भाषा का प्रवाह अविच्छिन्न है। उन्होंने भाव और भाषा का अत्यन्त सुन्दर समन्वय प्रस्तुत किया है। शृङ्गार रस के वर्णन में कोमलकान्त पदावली है और करुण रस के वर्णन में सरल-सुबोध पदावली का प्रयोग है। अतएव उनके काव्य में ललित पदविन्यास और रचनाशैली अत्यन्त आकर्षक प्रतीत होती है। नये-नये अर्थों का सन्निवेश भी उन्होंने विलक्षण ढङ्ग से किया है। बाण का अक्षय शब्दकोश और पदावलियों का अविराम स्पन्दन, काव्य के लिए अपेक्षित समस्त तत्त्व जो बाण की कृतियों में वर्तमान हैं, उसे देखकर ही '**बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्**' की उक्ति चल पड़ी, जो सार्थक भी है।

अलङ्कार—बाण की रचनाओं में अलङ्कारों की छटा दर्शनीय है। उन्होंने अलङ्कारों का प्रयोग समुचित तथा अत्यन्त स्वाभाविक रूप में किया है। कहीं भी अलङ्कारों के कारण भाषा की रमणीयता में व्याघात नहीं उत्पन्न हुआ है। बाण के अलङ्कार-प्रयोग के विषय में प्रसिद्ध है कि बाण के लम्बे-लम्बे समास यदि पहाड़ी नदी की वेगवती धारा के समान हैं, तो उनकी श्लिष्ट उपमाएँ इन्द्रधनुष की छाया की भाँति उसे रंगीन बना देती हैं। उनके अनुप्रासों से भाषा में एक विलक्षण स्वर-माधुर्य आ गया है–'**मधुकरकलकलङ्ककालीकृतकालेय-कुसुमकुड्मलेषु**'। उनके श्लेष जुही की माला में पिरोये गये चम्पक पुष्पों की भाँति हैं–'**निरन्तर श्लेषघनाः सुजातयो महास्त्रजश्चम्पककुड्मलैरिव**'। बाण की उत्प्रेक्षाओं और उपमाओं से सम्पूर्ण कथा व्याप्त है। वस्तुतः बाण के चित्रणों का अधिकांश सौन्दर्य उनकी उत्प्रेक्षाओं में ही है। बाण के अर्थापत्ति, विरोधाभास आदि अलङ्कारों के प्रयोग भी बड़े स्वाभाविक बन पड़े हैं।

रस—बाण रससिद्ध कवि हैं। शृङ्गार उनका सर्वप्रिय रस है। वे संयोग शृङ्गार के वर्णन में जितने सिद्धहस्त हैं, उससे अधिक सफलता उन्हें विप्रलम्भ शृङ्गार के वर्णन में मिली है। बाण जिस रस का प्रयोग करते हैं, उसका मार्मिक वर्णन कर पूर्ण रसास्वाद कराते हैं।

चरित्र-चित्रण—बाण ने हर्षचरित में ऐतिहासिक और कादम्बरी में काल्पनिक पात्र लिये हैं। कादम्बरी के पात्र समाज के विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधि हैं, साथ ही, दिव्यलोक के पात्र भी हैं। प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण अति उत्तम है, जबकि गौण पात्रों का चित्रण उतना प्रभावशाली नहीं बना। बाण मर्यादित प्रेम के समर्थक हैं।

बाण ने तत्कालीन समाज और संस्कृति का बहुत सुन्दर और सजीव चित्रण किया है। बाण के सुभाषित उनकी सूक्ष्म दृष्टि और चिन्तन-शक्ति के परिचायक हैं।

बाण की दो-एक प्रशस्तियाँ यहाँ दी जा रही हैं। कादम्बरी के उत्तरभाग के 7वें श्लोक में कादम्बरी की रसभरता के विषय में भूषणभट्ट ने स्वयं कहा है–

(1) कादम्बरी रसभरेण समस्त एव मत्तो न किञ्चिदपि चेतयते जनोऽयम्॥

(2) रुचिरस्वरवर्णपदा रसभाववती जगन्मनोहरति।
तत् किं तरुणी, नहि नहि वाणी बाणस्य मधुरशीलस्य॥

–धर्मदाससूरि, विदग्धमुखमण्डन, 4/28

बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम् (2013 BC, BD, 17 NC, NF, 18 BC, BE)

कवि की सर्वतोमुखी प्रतिभा, व्यापक ज्ञान, अद्भुत वर्णन-शैली और प्रत्येक वर्ण्य विषय के सूक्ष्मातिसूक्ष्म वर्णन के आधार पर यह सुभाषित प्रचलित है कि बाण ने किसी विषय को अछूता नहीं छोड़ा है और उसने जो कुछ वर्णन कर दिया है, उससे आगे कहने के लिए कुछ शेष नहीं रहता।

बाण ने जितनी सुन्दरता, सहृदयता और सूक्ष्मदृष्टि से बाह्य प्रकृति का वर्णन किया है, उतनी ही गहराई से अन्तःप्रकृति और मनोभावों का विश्लेषण भी किया है। प्रत्येक वर्णन इतने व्यापक और सटीक होते हैं कि पाठक को यह अनुभव होता है कि उन परिस्थितियों में वह भी ऐसा ही सोचता या करता। प्रातःकालवर्णन, सन्ध्यावर्णन, शूद्रकवर्णन, चाण्डालकन्या-वर्णन, विन्ध्याटवी-वर्णन, शबरसैन्यवर्णन, जाबाल्याश्रमवर्णन, जाबालिवर्णन, उज्जयिनीवर्णन, तारापीडवर्णन, इन्द्रायुधवर्णन, अच्छोद-सरोवरवर्णन, महाश्वेतावर्णन, कादम्बरीवर्णन आदि में बाण ने वर्णन ही नहीं किया है, अपितु प्रत्येक वस्तु का सजीव चित्र उपस्थित कर दिया है। इसी प्रकार विलासवती के पुत्रहीनताजन्य विषाद का वर्णन, चन्द्रापीड को देखकर स्त्रियों के हाव-भाव का वर्णन, पुण्डरीक को देखकर महाश्वेता के प्रेमोद्रेक का वर्णन, चन्द्रापीड को देखकर कादम्बरी के हार्दिक भावों का वर्णन, पुण्डरीक की मृत्यु पर महाश्वेता और कपिंजल के विलाप का वर्णन बाण की हार्दिक सम्वेदना और सहृदय-हृदयता का परिचायक है। चन्द्रापीड को दिए गए शुकनासोपदेश में तो कवि की प्रतिभा का चरमोत्कर्ष परिलक्षित होता है। कवि की लेखनी भावोद्रेक में बहती हुई सी प्रतीत होती है। शुकनासोपदेश में ऐसा प्रतीत होता है मानो सरस्वती साक्षात् मूर्तिमती होकर बोल रही हैं।

बाण के वर्णनों में भाव और भाषा का सामंजस्य, भावानुकूल भाषा का प्रयोग, अलंकारों का सुसंयत प्रयोग, भाषा में आरोह और अवरोह तथा लम्बी समासयुक्त पदावली के पश्चात् लघु-पदावली गुण विशेषरूप से प्राप्त होते हैं। प्रत्येक वर्णन में पहले विषय का साङ्गोपाङ्ग वर्णन मिलता है; बड़े समस्त पद मिलते हैं; तत्पश्चात् श्लेषमूलक उपमाएँ और उत्प्रेक्षाएँ; तदनन्तर विरोधाभास या परिसंख्या से समाप्ति। श्लेषमूलक उपमा-प्रयोग, विरोधाभास और परिसंख्या के प्रयोगों में क्लिष्टता, दुर्बोधता और बौद्धिक परिश्रम अधिक है। कहीं-कहीं वर्णन इतने लंबे हो गए हैं कि ढूँढ़ने पर भी क्रियापद मिलने कठिन हो जाते हैं। महाश्वेता-दर्शन में एक वाक्य 67 पंक्ति का है और कादम्बरी-दर्शन में तो एक वाक्य 72 पंक्ति का हो गया है। विशेषणों के विशेषणों की परम्परा इतनी लंबी हो जाती है कि मूल क्रिया लुप्त सी हो जाती है और कथा-प्रवाह तो प्रयागस्थ संगम

में सरस्वती की भाँति अदृश्य हो जाता है। ऐसे वर्णनों में वर्णन का स्वारस्य रह जाता है, परन्तु कथा-प्रवाह पद-पद पर प्रतिहत हो जाता है।

कुछ मनोरम वर्णन उदाहरणार्थ दिए जा रहे हैं। सन्ध्या का वर्णन करते हुए कवि की कल्पना है कि ऊर्ध्वमुख ऋषियों ने सूर्य का तेज पी लिया है, अतः उसका तेज मन्द पड़ गया है। सप्तर्षियों को पैर न लग जाएँ, इसलिए मानो सूर्य ने अपने पैर (किरण) समेट लिए हैं। तपोवन की धेनु की तरह संध्या मानो दिन भर कहीं घूम कर अब आ गई है। सूर्य के पश्चिम समुद्र में गिरने से जो बूँदें उठीं, वे ही मानो तारे हो गए।

ऊर्ध्वमुखैः.....ऊष्मपैस्तपोधनैरिव परिपीयमानतेजःप्रसरो विरलातपो दिवसस्तनिमानमभजत्। उद्यत्सप्तर्षिसार्थस्पर्शपरिजिहीर्षयेव.....रविरम्बरतलादलम्बत। क्वापि विहृत्य दिवसावसाने लोहिततारका तपोवनधेनुरिव कपिला परिवर्तमाना सन्ध्या मुनिभिरदृश्यत। अपराम्भसि पतिते दिनकरे...अम्भससीकरनिकरमिव तारागणमम्बरमधारयत्।

कादम्बरी के सौन्दर्य के वर्णन में उत्प्रेक्षा, उपमा, श्लेष अलंकारों की छटा दर्शनीय है–

देहार्धप्रविष्टहरगर्वितगौरीविजिगीषयेव सर्वाङ्गानुप्रविष्टमन्मथदर्शितसौभाग्यविशेषाम्,...गौरीमिव श्वेतांशुकरचितोत्तमाङ्गाभरणाम्,...आकाशकमलिनीमिव स्वच्छाम्बरदृश्यमानमृणालकोमलोरुमूलाम्,...कल्पतरुलतामिव कामफलप्रदाम्...कादम्बरीं ददर्श।

विन्ध्याटवी-वर्णन में समासभूयस्त्व, ओज गुण और विरोधाभास का ताल-मेल दर्शनीय है–

उन्मदमातङ्गकपोलस्थलगलितमदसलिलसिक्तेनेव निरन्तरमेलालतावनेन मदगन्धिनान्धकारिता,...प्रेताधिपनगरीव सदासंनिहितमृत्युभीषणा महिषाधिष्ठिता च,...क्रूरसत्त्वापि मुनिजनसेविता, पुष्पवत्यपि पवित्रा विन्ध्याटवी नाम।

बाण की रचना में अलंकार स्वयं आते गए हैं। श्लेष, परिसंख्या और विरोधाभास वाले स्थल आयास-साध्य हैं। उपमा, उत्प्रेक्षा और रूपक के उदाहरण पद-पद पर प्राप्य हैं। उज्जयिनी-वर्णन में परिसंख्या अलंकार का प्रयोग करते हुए वर्णन किया गया है कि–केवल मणि-दीपों में ही अनिर्वाण (न बुझना) था, कोई ऐसा व्यक्ति नहीं था, जिसे मोक्ष-प्राप्ति न हो। चकवा-चकवी के युगल का ही वियोग होता था, अन्य किसी के जोड़े का वियोग नहीं होता था। वर्ण (जाति) परीक्षा सोने की ही होती थी, अन्य की नहीं। ध्वजाओं में ही अस्थिरता थी, अन्यत्र नहीं। कुमुद ही मित्र (सूर्य) से द्वेष करते थे, अन्य कोई मित्रद्वेषी नहीं था।

यस्यां चानिवृत्तिर्मणिप्रदीपानाम्, अन्तस्तरलता हाराणाम्, ... द्वन्द्वियोगश्चक्रवाकनाम्नाम्, वर्णपरीक्षा कनकानाम्, अस्थिरत्वं ध्वजानाम्, मित्रद्वेषः कुमुदानाम्, कोशगुप्तिरसीनाम्।

राजकुलवर्णन में श्लेष के आधार पर उत्कृष्ट कवि के गद्य का स्वरूप बताया गया है कि उसमें विविध पदों के द्वारा नवीन अर्थों की अभिव्यक्ति की जाती है।

उत्कृष्टकविगद्यमिव विविधवर्णश्रेणिप्रतिपाद्यमानाभिनवार्थसंचयम्, नाटकमिव प्रकटपताकाङ्कशोभितम्।

महाश्वेता में नवयौवनावस्था का प्रवेश इसी प्रकार हुआ जैसे वसन्त में चैत्रमास, चैत्रमास में नवपल्लव, नवपल्लव में फूल, फूल में भौंरा, भौंरे में मद। इसमें एकावली अलंकार का बहुत सुन्दर प्रयोग हुआ है।

क्रमेण च कृतं मे वपुषि वसन्त इव मधुमासेन, मधुमास इव नवपल्लवेन, नवपल्लव इव कुसुमेन, कुसुम इव मधुकरेण, मधुकर इव मदेन नवयौवनेन पदम्।

उपर्युक्त वर्णनों में बाण की सूक्ष्मदृष्टि, वर्णनों की व्यापकता, वर्णनों की सर्वांगीणता के साथ ही रस, अलंकार और मनोरम कल्पनाओं का समन्वय सहृदयों को यह कहने के लिए बाध्य करता है कि 'बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्'।

●●

चन्द्रापीडकथा : कथा-सार

प्राचीनकाल में शूद्रक नामक एक राजा था। विदिशा नाम की नगरी उसकी राजधानी थी। एक बार जब वह सभा मण्डप में बैठा हुआ था कि दक्षिण दिशा से एक चाण्डाल कन्या पिंजड़े में एक तोता लिए हुए आयी और उसके समीप जाकर बोली, "महाराज यह तोता सम्पूर्ण शास्त्रों का ज्ञाता और पृथ्वी का एक रत्न है। इसे आप स्वीकार करें।" राजा के पूछने एवं उनकी उत्सुकता को सन्तुष्ट करने हेतु शुक ने बताया कि बाल्यकाल में वह एक मुनि कुमार के द्वारा जाबालि के आश्रम में पहुँच गया। मेरे विषय में मुनियों की जिज्ञासा जानकर जाबालि ऋषि ने इस प्रकार बताया–

अवन्ति में उज्जयिनी नाम की एक नगरी में तारापीड नाम का एक राजा हुआ था। शुकनास नाम का एक ब्राह्मण उसका मन्त्री था। देवताओं की आराधना, पूजापाठ के बाद तारापीड को चन्द्रापीड नाम का और मन्त्री शुकनास को वैशम्पायन नाम का पुत्र-रत्न प्राप्त हुआ। विद्याध्ययन एवं युवावस्था प्राप्त होने पर चन्द्रापीड को युवराज और वैशम्पायन को उसका मन्त्री नियुक्त किया गया। विजय में मिली कुलूत राजा की पुत्री राजकन्या पत्रलेखा को चन्द्रापीड की सेवा में नियुक्त किया गया। दिग्विजय अभियान में चन्द्रापीड किरातों की नगरी सुवर्णपुर पहुँचा। अपने इन्द्रायुध पर सवार वह एक दिन शिकार खेलते समय किन्नरों के एक युगल का पीछा करते हुए अच्छोद सरोवर के तट पर पहुँच गया। वहाँ शिव मन्दिर में एक कन्या को पूजा करते हुए देखा। चन्द्रापीड के पूछने पर उस कन्या ने बताया कि वह गन्धर्वराज हंस की पुत्री महाश्वेता है। महर्षि श्वेतकेतु के पुत्र पुण्डरीक ने एक दिन उसे देखा और वे इतने आसक्त हो गये कि उनका जीवन खतरे में पड़ गया। पुण्डरीक के मित्र कपिंजल से सूचना पाकर रात्रि में जब मैं उनसे मिलने यहाँ पहुँची तब तक वे अपना प्राण त्याग चुके थे। मैंने उनके शरीर के साथ सती होने का निर्णय लिया तभी कोई उनके शरीर को लेकर आकाश में उड़ गया। उसी समय मुझे आकाशवाणी सुनाई पड़ी कि शाप का अन्त होने पर यह फिर तुमसे मिलेगा। तब तक तुम यहीं रहकर तपस्या करो। कुछ देर के बाद पुण्डरीक का मित्र कपिंजल भी जो हमारे निकट खड़ा था, अचानक मुझे अकेला छोड़कर दूर आसमान में उड़ता हुआ विलीन हो गया।

महाश्वेता अपनी आपबीती चन्द्रापीड को सुनाकर उसका उचित अतिथि सत्कार किया। महाश्वेता एक दिन चन्द्रापीड को साथ लेकर अपनी प्रिय सखी कादम्बरी को समझाने के लिए हेमकूट गयी। सखी के दुःख से प्रभावित होकर कादम्बरी विवाह नहीं करना चाहती थी। किन्तु महाश्वेता के साथ पहुँचे युवराज चन्द्रापीड को देखते ही वह उस पर आसक्त हो गई। कुछ दिनों उपरान्त अपनी सेविका पत्रलेखा को वहीं रुकने के लिए कहकर चन्द्रापीड अपनी सेना में लौट आया। किन्तु वहाँ आये पत्रवाहक से मिले पत्र को पढ़कर वैशम्पायन एवं सेवक को पत्रलेखा के साथ जाने का आदेश देकर अपनी राजधानी लौट आया। कुछ दिनों बाद एक दूत के माध्यम से कादम्बरी का सन्देश पाकर वैशम्पायन की खोज के बहाने चन्द्रापीड कादम्बरी से मिलने चल पड़ा। यात्रा के बीच में ही चन्द्रापीड को जानकारी प्राप्त हुई कि अच्छोद सरोवर के किनारे वैशम्पायन पड़ा हुआ है। वह वापस आना ही नहीं चाहता है। चन्द्रापीड के वहाँ पहुँचने पर महाश्वेता ने उसे बताया कि वैशम्पायन ने उसके प्रति दुर्व्यवहार किया जिसके कारण उसने उसे शुक हो जाने का शाप दे दिया है। चन्द्रापीड इतना सुनते ही वहीं गिरकर मर गया। यह दृश्य देखकर पत्रलेखा भी इन्द्रायुध को लेकर अच्छोद सरोवर में कूद पड़ी। तदन्तर सरोवर से एक पुरुष निकला। सारी कथा कादम्बरी और महाश्वेता को सुनाकर दोनों को अपने प्रेमियों से पुनर्मिलन के लिए आश्वस्त किया।

राजा शूद्रक शुक के मुख से इतना सुनते ही मृत्यु को प्राप्त हो गया। इस घटना के बाद चन्द्रापीड जीवित हो गया और फिर चन्द्रलोक से पुण्डरीक भी आ गया। परिणामस्वरूप चन्द्रापीड का कादम्बरी के साथ और पुण्डरीक का महाश्वेता के साथ विवाह सम्पन्न हो गया।

चन्द्रापीडकथा : पात्र परिचय

शूद्रक

(2017 NF, NG, 18 BD, 20 ZT)

बाण की कादम्बरी की कथा दो जन्मों से सम्बन्धित है। राजा शूद्रक पूर्वजन्म में युवराज चन्द्रापीड था। चन्द्रापीड पूर्वजन्म में चन्द्रमा था। वह शाप के कारण पृथ्वी पर दो बार जन्म लेता है। प्रथम बार चन्द्रापीड के रूप में जन्म लेकर मित्र वैशम्पायन की मृत्यु के आघात से प्राण त्याग देता है, तत्पश्चात् राजा शूद्रक के रूप में जन्म लेता है। राजा शूद्रक का शारीरिक सौष्ठव अत्यन्त आकर्षक था। उसके चरित्र की विशेषताएँ इस प्रकार कही जा सकती हैं–

महाबलशाली चक्रवर्ती सम्राट्–राजा शूद्रक महाप्रतापी चक्रवर्ती सम्राट् था। उसके पराक्रम के आगे समस्त राजा अपना मस्तक झुकाते हैं और उसकी आज्ञा शिरोधार्य करते हैं। अपने पराक्रम और तेज के कारण वह दूसरे इन्द्र के समान प्रतीत होता था। चक्रवर्ती के लक्षणों से सम्पन्न शूद्रक चारों समुद्रों की मालारूपी मेखलावाली पृथ्वी का स्वामी था–''**अशेषनरपतिशिरः समभ्यर्चितशासनः पाकशासन इवापरः, चतुरुदधिमालामेखलाया भुवो भर्त्ता, प्रतापानुरागावनत-समस्तसामन्तचक्रः, चक्रवर्तीलक्षणोपेतः, चक्रधर इव**'' **इति।** वह सम्पूर्ण पृथ्वी के भार को हाथों में कङ्कन के समान अनायास धारण करता था–''**वलयमिव लीलया भुजेन भुवनभारमुद्वहन्।**''

संयमी–शूद्रक के राजमहल में अनेक स्त्रियाँ उसकी परिचायिकाओं के रूप में कार्य करती थीं। उसे स्नानादि कराती थीं, परन्तु शूद्रक उनके बीच अनासक्त भाव से रहता था। बाण ने शूद्रक के लिए स्पष्ट कहा है–''**प्रथमे वयसि वर्तमानस्यापि रूपवतोऽपि सन्तानार्थिभिरमात्यैरपेक्षितस्यापि सुरतसुखस्योपरि द्वेष इवासीत्।**'' अर्थात् मन्त्रियों के द्वारा सन्तान की आकाङ्क्षा करने पर भी वह स्त्री-सुख से विमुख था। वह जितेन्द्रिय था, इन्द्रियों का दास नहीं। बाण पुनः शूद्रक को '**वनितासम्भोगसुखपराङ्मुखः**' कहकर उसके संयमी होने का परिचय देते हैं।

शास्त्रपारङ्गत एवं गुणग्राही–राजा शूद्रक समस्त शास्त्रों का ज्ञाता था और दूसरों के गुणों को भी परखनेवाला था। उसके राज-दरबार में विद्वानों और गुणीजनों का सदा आदर होता था। अनेक छन्दों का ज्ञाता शूद्रक अपना समय शास्त्रचर्चाओं में व्यतीत करता था–''**कदाचिदाबद्धविदग्धमण्डलः काव्यप्रबन्धरचनेन, कदाचिच्छात्रालापेन, कदाचिदाख्यानकाख्यायिकेतिहासपुराणाकर्णनेन....।**'' वह राज-सभा में प्रायः विद्वत् सभाओं और गोष्ठियों का आयोजन करता रहता था–''**आदर्शः सर्वशास्त्राणाम्, उत्पत्तिः कलानाम्, कुलभवनं गुणानां, आगमः काव्यामृतरसानाम्, उदयशैलो मित्रमण्डलस्य, उत्पातकेतुरहितजनस्य प्रवर्तयिता गोष्ठीबन्धानाम्, आश्रयो रसिकानाम्।**'' वह सभा में लोभरहित विद्वान् मन्त्रियों से घिरा रहता था–''**नीतिशास्त्रनिर्मलमनोभिरलुब्धैः स्निग्धैः प्रबुद्धैश्चामात्यैः परिवृतः।**''

सौन्दर्य का प्रशंसक–राजा शूद्रक किसी भी प्रकार के गुण का प्रशंसक है, वह स्वाभाविक सौन्दर्य की भी प्रशंसा करता है। राजसभा में जब चाण्डालकन्या राजा के समक्ष उपस्थित होती है, तो उसके सौन्दर्य को देखकर वह चकित रह जाता है–''**अहो! विधातुरस्थाने रूप-निष्पादनप्रयत्नः....मन्ये च मातङ्गजातिस्पर्शदोषभयादस्पृशतेयमुत्पादिता प्रजापतिना, अन्यथा कथमियमक्लिष्टता लावण्यस्य।**''

धर्मनिष्ठ–राजा शूद्रक धर्म के प्रति आस्था रखता है। उसके दैनिक कृत्यों में ईश्वरोपासना भी सम्मिलित है। पितरों को तर्पण देता है, मन्त्रों से पवित्र जल से सूर्य को अञ्जलि देता है तथा देवालय में शङ्कर की पूजा करता है– ''**सम्पादितपितृजलक्रियो मन्त्रपूतेन तोयाञ्जलिना दिवसकरमभिप्रणम्य देवगृहमगमत्। उपरचित पशुपतिपूजश्च।**''

इस प्रकार पराक्रम का रसिक होते हुए भी विनय का व्यवहार करनेवाला शूद्रक विजय-प्राप्ति का उत्कट अभिलाषी एवं अत्यधिक शक्तिशाली था।

चाण्डालकन्या

(2018 BD, 19 DA, 20 ZU)

सौन्दर्य की प्रतिमा–अपने अत्यधिक सौन्दर्य के कारण चाण्डालकन्या सौन्दर्य की प्रतिमा के सदृश थी। राजा शूद्रक

जैसा पराक्रमी तथा चक्रवर्ती सम्राट् भी उसके अप्रतिम सौन्दर्य को देखकर चकित रह जाता है–''**असुरगृहीतामृतापहरणकृत-कपटपटुविलासिनीवेशस्य श्यामतया भगवतो हरेरिवानुकुर्वतीम्।**'' उसका रूप-लावण्य विष्णु के मोहिनी रूप का अनुकरण करनेवाला था। अपलक नेत्रों से चाण्डालकन्या के रूप-सौन्दर्य को देखते हुए वह सोचता है कि यदि विधाता ने उसे इतना रूप दिया तो उसे ऐसे कुल में जन्म क्यों दिया। वह सोचता है कि शायद अछूत को छूने के दोष के भय से इसे बिना छुए ही बना डाला है–''**यदि नामेयमात्मरूपोपहसिता-शेषरूपसम्पदुत्पादिता किमर्थमपगत-स्पर्शसम्भोगसुखे कृतं कुले जन्म।**'' अन्ततः शूद्रक विधाता को धिक्कारता है कि ऐसे अनुपयोगी स्थान पर सर्व-सौन्दर्य तथा रूपलावण्यता की कमनीयता क्यों स्थापित की–**सर्वथा धिग्धिग्विधातारमसदृशसंयोगकारिणम्, अतिमनोहराकृतिरपि क्रूरजातितया....।**''

चतुरता–रूपवती होने के साथ ही चाण्डालकन्या अत्यन्त चतुर एवं विवेकशील स्त्री है। शूद्रक के समक्ष सभाभवन में प्रवेश करके वह सभी लोगों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए जर्जर बाँस के टुकड़े को फर्श पर जोर से पटकती है, जिससे उत्पन्न तेज आवाज के कारण पूरी सभा का ध्यान उसकी ओर चला जाता है। इससे स्पष्ट है कि वह कितनी चतुराई से सभा-मण्डप में अपनी उपस्थिति का महत्त्व उत्पन्न करती है।

वात्सल्यमयी–चाण्डालकन्या का हृदय स्नेह तथा वात्सल्य से परिपूर्ण है। पिंजड़े में बन्द तोते के रूप में भी पुत्र के लिए उसके हृदय में अगाध स्नेह तथा वात्सल्य है। वह अपने पुत्र की देख-रेख तथा रक्षा के लिए मृत्युलोक में निवास करना स्वीकार करती है और चाण्डाल कुल में जन्म लेकर अपने आचरण को पवित्र रखती है। शुक रूप में स्थित पुत्र के शाप का अन्त समीप समझकर वह सम्पूर्ण वृत्तान्त राजा को सुनाती है।

वस्तुतः कादम्बरी के अनुसार चाण्डालकन्या महामुनि श्वेतकेतु की पत्नी एवं पुण्डरीक की माता है, जिसके शापग्रस्त हो जाने पर उसकी रक्षा के लिए चाण्डाल कुल में जन्म लेती है, जिससे स्पर्श के दोष से बची रहे। वैशम्पायन नामक शुक के शापमुक्त होने पर वह पुनः अपने लोक को चली जाती है।

वैशम्पायन नामक शुक (2018 BE, 19 CZ)

यह तोता अपने पहले के दो जन्मों में क्रमशः श्वेतकेतु का पुत्र पुण्डरीक तथा शुकनास नामक मन्त्री का पुत्र वैशम्पायन था। चन्द्रमा के शाप के कारण यह मनुष्य लोक में शुकनास के यहाँ उत्पन्न हुआ। महाश्वेता के द्वारा शाप दिये जाने पर तोते की योनि में उत्पन्न हुआ। पूर्वजन्म के संस्कार के कारण इसका शास्त्रज्ञान तथा महाश्वेता के प्रति अनुराग आदि नष्ट नहीं हुए। इसकी चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

शास्त्रज्ञ तथा कलाओं में निपुण–पूर्वजन्मों के संस्कार के कारण शुक सम्पूर्ण विद्याओं, कलाओं, शास्त्रों, पुराणों, इतिहास तथा राजनीति का ज्ञानी था। इसका यह ज्ञान राजा 'शूद्रक' के लिए आशीर्वाद के रूप में कही हुई निम्न आर्या में स्पष्ट हो जाता है–

स्तनयुगमश्रुस्नातं समीपतरवर्ति हृदयशोकाग्नेः।
चरति विमुक्ताहारं व्रतमिव भवतो रिपुस्त्रीणाम्॥

अपने इसी ज्ञान के कारण इसने अपने तथा शूद्रक के पूर्वजन्मों की कथा को स्पष्ट रूप में कहा था।

मनुष्य की वाणी में बोलनेवाला–इसकी वाणी मनुष्य के समान स्पष्ट थी। स्वयं राजा शूद्रक उसकी इस चमत्कारयुक्त वाणी से प्रभावित होकर अपने मन्त्री कुमारपालित से कहता है कि सुना आप लोगों ने इस पक्षी की वर्णों के उच्चारण में स्पष्टता और स्वर में मधुरता! पहले तो यही महाश्चर्य है कि यह (शुक) वर्णों की परस्पर स्पष्ट पृथकतावाली सुस्पष्ट मात्रा, अनुस्वार, स्वर तथा व्याकरण-संयत अक्षरोंवाली वाणी बोलता है–''**श्रुता भवद्भिरस्य विहङ्गमस्य स्पष्टता वर्णोच्चारणे, स्वरे च मधुरता! प्रथमं तावदिदमेव महदाश्चर्यम्....।**''

महाश्वेता का प्रेमी–पूर्वजन्म के संस्कार के कारण इसे महाश्वेता से अति प्रेम था। अतः जैसे ही इसके पङ्खों में उड़ने की शक्ति आयी, वह महाश्वेता से मिलने के लिए उड़ चला।

दुर्भाग्यशाली–यह दुर्भाग्यशाली भी था। जन्म लेते ही इसकी माता स्वर्ग चली गयी और बचपन के आरम्भ में ही इसके पिता को वृद्ध भील ने मार डाला। यह इसके पूर्वजन्म के पिता श्वेतकेतु की तपस्या का प्रभाव था कि किसी प्रकार इसके जीवन की रक्षा हो सकी।

पूर्वजन्म का ज्ञाता—इसे पहले के दो जन्मों का पूर्ण ज्ञान था। इसी ज्ञान के आधार पर वह राजा शूद्रक को कहानी सुनाता है। संक्षेप में इसके सम्पूर्ण गुण चाण्डालकन्या के द्वारा शूद्रक के समक्ष निम्नलिखित कथन से स्पष्ट हैं–

देव! विदितसकलशास्त्रार्थः, राजनीतिप्रयोगकुशलः, पुराणेतिहासकथालापनिपुणः,...

सकलभूतलरत्नभूतोऽयं वैशम्पायनो नाम शुकः। ...तदयात्मीयः क्रियताम्।

इसी ज्ञान के आधार पर वह राजा शूद्रक से स्वयं सम्मान प्राप्त करता है। राजा शूद्रक स्वयं वैशम्पायन शुक से पूछते हैं कि क्या आपने कुछ अभीष्ट खाद्य पदार्थों का अन्तःपुर में आस्वादन किया–

कच्चिदभिमतमास्वादितमभ्यन्तरे भवता किञ्चिदशनजातम्।

अन्ततः राजा शूद्रक उसके चरित्र से प्रभावित होकर जिज्ञासावश उसके विषय में समस्त जानकारी देने का निवेदन करता है।

कादम्बरी का चरित्र-चित्रण

(2017 CN, NG, NH, 18 BC, 19 CZ, DA, DB, DF, 20 ZR, ZS)

परिचय—कादम्बरी बाणभट्ट कृत 'कादम्बरी' की प्रमुख स्त्री पात्र है। वह गन्धर्वों के राजा चित्ररथ की एकमात्र पुत्री है। वह चन्द्रापीड की प्रेमिका, महाश्वेता की सखी और सम्पूर्ण कलाओं में दक्ष स्त्री है।

प्रमुख नायिका—कादम्बरी के नाम पर ही रचना का नामकरण होने से ही यह स्पष्ट हो जाता है कि कादम्बरी मुख्य स्त्री-पात्र है। यद्यपि यह कथानक के आदि में ही हमारे सामने आती है और महाश्वेता के मुख से ही हमें उसका परिचय मिलता है, किन्तु नायक चन्द्रापीड की प्रिया होने के कारण तथा बाद के कथानक में सर्वत्र मुख्य रूप से उपस्थित होने से वही इस आख्यायिका की नायिका है।

सच्ची प्रेमिका—वह चन्द्रापीड को पहली बार देखते ही उस पर अनुरक्त हो जाती है और सदैव उनके पास रहना चाहती है, **'हे सखि! महाश्वेते, × × × दर्शनादारभ्य शरीरस्याप्ययमेव प्रभुः किमुत भवनस्य परिजनस्य वा।'** एकान्त में चन्द्रापीड के बारे में सोचना और पत्रलेखा के द्वारा चन्द्रापीड को सन्देश भेजना इसके प्रमाण हैं। पत्रलेखा चन्द्रापीड से कादम्बरी की मनोभावना का वर्णन करती हुई कहती है–''वह चन्द्रापीड के मरने पर उसके साथ सती होना चाहती है, किन्तु आकाशवाणी के द्वारा पुनर्मिलन का सन्देश दिये जाने पर यह सब-कुछ छोड़कर अच्छोद सरोवर के किनारे ही उसके मृत शरीर की रक्षा और सेवा करती हुई एक तपस्विनी का जीवन व्यतीत करने लगती है।''

सङ्कोची—यह अत्यन्त लज्जाशीला और सङ्कोची स्वभाव की है। इसी कारण से महाश्वेता के बार-बार आग्रह करने पर भी वह चन्द्रापीड को अपने हाथ से पान देने में सङ्कोच करती है और महाश्वेता के मुख से अपनी दृष्टि हटाये बिना ही उसे पान देती है। इसी कारण ही विभिन्न प्रकार से चन्द्रापीड के द्वारा पूछे जाने पर भी स्पष्ट रूप से अपने प्रेम को प्रकट नहीं करती।

प्रिय सखी—वह महाश्वेता की प्रिय सखी है। वह महाश्वेता से प्रेम करती है और महाश्वेता इससे प्रेम करती है। महाश्वेता कादम्बरी का परिचय कराती हुई चन्द्रापीड से कहती है–**'सरलहृदया महानुभावा च कादम्बरी।'**

सम्पूर्ण कलाओं में दक्ष—वह सङ्गीत, चित्रकारी, शृङ्गार आदि सम्पूर्ण कलाओं में दक्ष है। इस प्रकार कादम्बरी के चरित्र में अनेक विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं।

चन्द्रापीड का चरित्र-चित्रण

(2017 ND, NH, NI, 18 BD, BE,BG, 19 DA, DB, DD, DE, DF, 20 ZO, ZP, ZR, ZU)

'कादम्बरी' महाकवि बाण की श्रेष्ठ गद्य-काव्यात्मक रचना है। चन्द्रापीड इस गद्य-काव्य का धीरोदात्त नायक है। उसके चरित्र में निम्नलिखित विशेषताएँ दिखायी पड़ती हैं–

रूपवान्—चन्द्रापीड सुन्दर राजकुमार है। जब उसमें यौवन आता है तब तो उसका अङ्ग-प्रत्यङ्ग निखर उठता है। शिक्षा प्राप्त कर जब वह घर आता है, तब नवयौवन उसके सौन्दर्य को दोगुना कर देता है।

बुद्धिमान् और गुणवान्—चन्द्रापीड की बुद्धि बहुत तीव्र है। विद्या-मन्दिर में वह आचार्यों द्वारा पढ़ायी गयी सम्पूर्ण विद्याओं को बहुत थोड़े समय में ग्रहण कर लेता है। सभी शास्त्रों, शस्त्रविद्या, घोड़े और हाथी पर सवारी, पक्षियों की भाषा का ज्ञान आदि सभी में वह पारङ्गत हो जाता है।

वीर—चन्द्रापीड महान् वीर तथा पराक्रमी भी है। वह युवराज बनकर दिग्विजय करने के लिए चलता है, तो चारों दिशाओं को जीतकर सबको अपने अधीन कर लेता है।

सच्चा मित्र—चन्द्रापीड सच्चा मित्र है। अपने मित्र वैशम्पायन के बिना वह रह नहीं सकता। चाहे विद्यालय में पढ़ने जाय अथवा दिग्विजय के लिए प्रस्थान करे, मित्र उसके साथ रहता है। मित्र ही कठिनाई के समय सहायता करता है—ऐसा उसका विश्वास है। चन्द्रापीड को जब यह पता चलता है कि महाश्वेता के शाप से वैशम्पायन मर गया है, तब अपने मित्र के शोक में व्याकुल चन्द्रापीड प्राण त्याग देता है।

सच्चा प्रेमी—चद्रापीड कादम्बरी से प्रेम करता है। कादम्बरी के प्रथम दर्शन में ही उसके हृदय में प्रेम प्रवाहित हो जाता है। उसका प्रेम निःस्वार्थ और वासनारहित है। कादम्बरी से मिलने के लिए वह आकुल होता है। उज्जयिनी से वर्षा-आँधी में चलकर भी वह कादम्बरी के पास पहुँचने का प्रयास करता है। कादम्बरी की प्रत्येक इच्छा को वह पूर्ण करना चाहता है। उसके प्रेम में कहीं भी स्वार्थ अथवा वासना की गन्ध नहीं है।

दिव्य पुरुष—चन्द्रापीड यद्यपि राजा तारापीड का पुत्र अर्थात् लौकिक मनुष्य है, परन्तु वास्तव में वह लोकपाल चन्द्रमा है। शाप के कारण वह पहले चन्द्रापीड के रूप में और फिर राजा शूद्रक के रूप में जन्म लेता है। शापमुक्त होकर वह फिर चन्द्रलोक, हेमकूट और उज्जयिनी पर शासन करता है।

संक्षेप में, चन्द्रापीड चन्द्रमा का अवतार है। वह वीर, बुद्धिमान् तथा गुणवान् राजकुमार के रूप में पृथ्वी पर अवतरित हुआ है।

पुण्डरीक का चरित्र-चित्रण (2017 NF, NI, 20 ZQ,ZT)

पुण्डरीक महाकवि बाणभट्ट कृत कादम्बरी का महत्त्वपूर्ण पात्र है। उसके चरित्र में निम्न प्रमुख विशेषताएँ देखने को मिलती हैं—

सुन्दर एवं चञ्चल—महामुनि श्वेतकेतु से आकृष्ट लक्ष्मी के मानसपुत्र का नाम पुण्डरीक है। तीनों लोक में श्वेतकेतु का रूप सर्वाधिक सुन्दर है, अतः पुत्र पुण्डरीक भी अत्यन्त सुन्दर युवक है। लक्ष्मी का पुत्र होने से उसमें नैसर्गिक चञ्चलता भी है। तभी तो महाश्वेता के आकृष्ट होते ही वह अपनी मानसिक दुर्बलता के कारण उस पर आसक्त हो जाता है।

कुशल प्रेमी—महाश्वेता के पुष्पमञ्जरी विषयक कौतूहल को देखकर वह उसके पास चला आता है और अपने कानों से उतारकर उसके कानों में पहनाते समय अनजाने ही महाश्वेता के गालों के स्पर्शसुख से उसकी अँगुलियाँ काँप जाती हैं और रुद्राक्षमाला उसके हाथ से गिर जाती है। मुनिपुत्र होने पर भी पुण्डरीक प्रणयव्यापार में प्रवीण है।

वाक्पटु—महाश्वेता के प्रेमपाश में आबद्ध हो जाने से कपिञ्जल उसकी भर्त्सना करता है, तो वह असत्य भी बोल जाता है और कहता है कि वह कामवश नहीं है। बनावटी क्रोध से वह महाश्वेता को प्रेम-फटकार भी सुनाता है, किन्तु अवसर मिलते ही छिपकर तरलिका के पास पहुँच जाता है और महाश्वेता के बारे में सारी बातें पूछता है। वह प्रेमपत्र भी तरलिका के माध्यम से महाश्वेता के पास पहुँचा देता है। पुण्डरीक की धार्मिकता, विद्वत्ता, तपस्विता एवं मित्रता आदि का मूल्याङ्कन कपिञ्जल के शब्दों में किया जा सकता है और यह कहा जा सकता है कि पुण्डरीक के अन्दर अनेक विशेषताएँ हैं।

महाश्वेता का चरित्र-चित्रण (2017 NC, 18 BE, BG, 19 DB, 20 ZO, ZP, ZQ, ZS, ZT)

गौरवर्णा, परम रूपवती गन्धर्वराज हंस की पुत्री महाश्वेता स्वभाव से सरल, उदार हृदयवाली, अतिथि सेवापरायण, तर्कशीला एवं बुद्धिमती है। उसकी माँ गौरी चन्द्रमा के वंश में उत्पन्न अप्सराओं के कुल में पैदा हुई थी। इससे स्पष्ट है कि बाण रचित 'कादम्बरी' की मुख्य नायिका कादम्बरी की सहेली महाश्वेता का जन्म अप्सराओं के कुल में हुआ था। महाश्वेता अपनी माँ गौरी से भी अधिक गौर वर्ण की और अत्यन्त आकर्षक थी। इसी कारण मुनिकुमार पुण्डरीक इसकी तरफ आकर्षित हुआ और अल्पकालिक विछोह भी सहन करने में अक्षम होकर मृत्यु को प्राप्त हो गया था।

दृढ़ संकल्पवती—महाश्वेता दृढ़ संकल्पवाली युवती है। मुनिकुमार पुण्डरीक को प्रथम दर्शन में ही आकर्षित होकर

उसे प्राप्त करने का निश्चय कर लेती है। कपिञ्जल से पुण्डरीक की अस्वस्थता की सूचना पाकर वह रात्रि में उससे मिलने तरलिका के साथ निर्भय होकर सरोवर की तरफ जाती है। वहाँ पुण्डरीक की मृत्यु की दशा में पाकर उसके साथ सती होने का निर्णय लेती है। आकाशवाणी सुनकर कि 'तुम प्राणों का परित्याग मत करना, तुम्हारा इसके साथ फिर मिलन होगा', महाश्वेता ने तपस्विनी के रूप में वहीं रहने का संकल्प किया। पिता के राजमहल में वैभवपूर्ण सुखमय जीवन का परित्याग करके निर्जन वन-प्रान्तर में रहकर कठोर तपस्यारत जीवन व्यतीत करना उसके दृढ़ संकल्पी व्यक्तित्व का ही द्योतक है।

पतिव्रता– महाश्वेता मानसिक रूप से पुण्डरीक को अपना पति स्वीकार कर चुकी थी। सामाजिक मान्यता के अभाव में भी पतिपरायण होकर एकनिष्ठ भारतीय आदर्श नारी का वह प्रतिनिधित्व करती है। वह दृढ़ चरित्र की स्वामिनी है। आकाशवाणी की सूचना पर वह पुण्डरीक के पुनर्आगमन तक तपस्विनी का जीवन व्यतीत करने का संकल्प लिए है। वैशम्पायन के प्रेम प्रदर्शन करने पर वह उसे शुक होने का श्राप देती है। यह उसके पातिव्रत्य धर्म पालन की गरिमा का स्पष्ट उदाहरण है।

व्यवहार कुशल एवं कोमल हृदयवाली– महाश्वेता के व्यक्तित्व की मुख्य विशेषता उसकी व्यवहार कुशलता एवं दयालुता है। वह उच्च कुलीन गन्धर्वराज हंस की पुत्री है। राजमहल में उसका बचपन व्यतीत हुआ। कोमल हृदयवाली होने के कारण ही वह तपस्वी कुमार पुण्डरीक को अपना हृदय दे देती है। वह राजकुमार चन्द्रापीड का आतिथ्य-सत्कार करती है। कादम्बरी उसकी प्रिय सहेली है। उसके कल्याण की कामना हेतु चन्द्रापीड को साथ लेकर वह उसके पास जाती है। अपने सम्पर्क में आने वाले केयूरक, पत्रलेखा आदि प्रत्येक व्यक्ति से वह बड़ी ही कुशलतापूर्वक व्यवहार करती है। सभी उसका सम्मान करते हैं। उसका व्यवहार चातुर्य उस समय भी प्रकट होता है जब पुण्डरीक अपनी अक्षमाला लौटाने के लिए कहता है तो वह अपनी एकावली उसके हाथ पर रखकर चली जाती है। वह सद्गुणी, निश्छल और सरलहृदया है। उसके चरित्र में कहीं भी अशिष्टता या कपटता का दर्शन नहीं होता है। चन्द्रापीड को वह अपनी आपबीती बिना कुछ छिपाये बता देती है। उसे सत्य के उद्घाटन करने में कभी लज्जा या ग्लानि का अनुभव नहीं करती है।

कठोर तपोव्रती– महाश्वेता कठोर तपोव्रती है। मुनिजनों का आदर करने वाली है। पुण्डरीक की दुरवस्था की सूचना देने जब कपिञ्जल राजमहल में जाकर उससे मिलता है तो महाश्वेता उसका चरण धुलकर अपने आँचल से साफ करती है। पुण्डरीक से मिलने के लिए वह गुरुजनों की आज्ञा लिये बिना ही रात्रि में ही यह सोचकर चल पड़ती है कि कहीं पुण्डरीक के प्राणों पर संकट न आ जाये। पुण्डरीक की मृत्यु पर वह पहले सती होने का निर्णय लेती है किन्तु आकाशवाणी एवं दिव्य पुरुष के कथन पर वह तपस्विनी बन कर वहीं निर्जन वन में गुफा में रहने लगती है। वह पाशुपत व्रत एवं कठोर अनुष्ठानों में अपना जीवन लगा देती है। यह क्रम तब तक चलता है जब तक शाप का अन्त नहीं हो जाता है।

स्पष्ट है कि महाश्वेता प्रेम, त्याग, करुणा, सहानुभूति, सरलता, निष्कपटता आदि अनेक मानवीय सद्गुणों से युक्त एक आदर्श भारतीय नारी सिद्ध होती है।

पत्रलेखा का चरित्र-चित्रण

(2017 ND, NF, 18 BC, BG, 19 CZ, DD, DE, DF, 20 ZO, ZU)

पत्रलेखा का परिचय युवराज चन्द्रापीड को महादेवी द्वारा दी गयी आज्ञा से प्राप्त होता है–महाराज ने कुलूत देश को जीतकर उस देश के राजा की पुत्री पत्रलेखा को कैदियों के साथ यहाँ लाकर रनिवास की सेविकाओं के बीच नियुक्त कर दिया था। उसे अनाथ राजपुत्री जानकर मेरे मन में उसके प्रति प्रेम हो गया। मैंने उसे अपनी पुत्री के समान पाल-पोसकर बड़ा किया है। 'अब यह पानदान का डिब्बा लेकर चलने वाली तुम्हारी योग्य सेविका बने'– आयुष्मान् उसके प्रति साधारण सेविका की दृष्टि न रखें और अपनी भावनाओं के समान ही इसे भी चंचलता से रोकें। स्पष्ट है कि उज्जयिनी के राजा तारापीड की पत्नी महारानी विलासवती द्वारा पालित पुत्री पत्रलेखा की सामाजिक स्थिति विशिष्ट थी।

स्वस्थ एवं सौन्दर्यवती–लम्बी, स्वस्थ एवं सुगठित शरीरवाली पत्रलेखा रूपवती एवं आकर्षक व्यक्तित्ववाली थी। गन्धर्व राजपुत्री कादम्बरी उसके सौन्दर्य को देखकर चकित रह गई थी। पत्रलेखा के सौन्दर्य के सम्बन्ध में कादम्बरी की यह युक्ति ''अहो! मानुषीषु पक्षपातः प्रजापतेः'' पूर्णतया सत्य प्रतीत होती है।

योग्य परिचारिका–चन्द्रापीड की ताम्बूल करङ्कवाहिनी पत्रलेखा सभी दृष्टिकोणों से सुयोग्य परिचारिका प्रमाणित होती है। वह अपने कर्त्तव्य का पूर्णरूप से निर्वाह करती है। सेवाकाल में वह सदैव चन्द्रापीड के साथ रहती है। जिस समय

चन्द्रापीड दिग्विजय के लिए उज्जयिनी से निकलता है और वह सुवर्णपुर पहुँचता है, हर जगह वह चन्द्रापीड के साथ रहती है। चन्द्रापीड का सानिध्य पत्रलेखा को सुख की अनुभूति करता है।

कर्त्तव्यपरायण–पत्रलेखा अपने कर्त्तव्य के प्रति सदैव जागरूक रहती है। उज्जयिनी हो या सुवर्णपुर, दिग्विजय यात्रा हो या कादम्बरी का महल सब जगह, हर समय वह अपने कर्त्तव्य के प्रति तत्पर रहती है। वह चन्द्रापीड की सेविका भी, सलाहकार भी और सखी भी है।

विश्वासपात्र–पत्रलेखा विश्वासपात्र सेविका है। वह छाया सदृश चन्द्रापीड के साथ सदैव उपस्थित रहती है। विश्वासपात्र होने के कारण ही चन्द्रापीड अपने मनोभावों को उससे प्रकट कर देता है। वह उससे कादम्बरी के प्रति अपने हृदय को भी खोल देता है। पत्रलेखा अपनी विश्वसनीयता के कारण कादम्बरी का भी विश्वास भाजन है। कादम्बरी भी चन्द्रापीड के प्रति मनोभावों को पत्रलेखा के समक्ष प्रकट कर देती है।

स्पष्ट है कि महाकवि बाण ने पत्रलेखा को कर्त्तव्यपरायण, स्वामिभक्त, आदर्श सेविका के रूप चित्रित किया है।

शुकनास का चरित्र-चित्रण

(2017 NF, NI, 20 ZQ)

अवन्ति में उज्जयिनी के राजा तारापीड का प्रधान मंत्री शुकनास का चरित्र अपने विशिष्ट गुणों के कारण सर्वश्रेष्ठ है। शुकनास की बुद्धि बड़े-बड़े कार्यों के संकट में भी स्थिर रहती थी। राजा तारापीड प्रजा को निश्चिन्त करके राज्य का भार मंत्री शुकनास के ऊपर डालकर सुख से रहने लगा था। शुकनास ने अपनी बुद्धि के बल से उस महान राज्य के भार को सरलता से धारण कर लिया था। वह धीर-गम्भीर, विद्वान एवं राज्य संचालन में कुशल ब्राह्मण था। वह महाराज तारापीड का विश्वासपात्र था।

निर्भीक एवं कर्त्तव्यनिष्ठ–शुकनास के चरित्र की मुख्य विशेषता उसकी कर्त्तव्यनिष्ठता है। वह राज्य की सेवा को अपना परम धर्म मानता है वह समयानुसार राज्य के हित में निर्णय लेता है और अपने कार्य से राज्य का हित करता है। वह लगन एवं पूर्ण निष्ठा के साथ राज्य के समस्त कार्यों का संपादन करता है। निर्भीक स्वभाव, विवेकशीलता, दूरदर्शिता, अनुभव परिपक्वता का दर्शन उस समय स्पष्ट परिलक्षित होता है जब वह युवराज चन्द्रापीड को अनेक प्रकार के उपदेश देकर उसे सावधान करता है। वह उसे राजा का कर्त्तव्य सिखाता है।

राज्य के प्रति समर्पित– प्रधानमंत्री शुकनास राज्य एवं राजा के प्रति एकनिष्ठ समर्पित है। वह राज्य एवं प्रजा के कल्याण में सदैव संलग्न रहता है। चन्द्रापीड के जन्म के अवसर पर उसकी प्रसन्नता देखने लायक होती है। युवराज पद पर जब चन्द्रापीड का राज्याभिषेक किया जाता है तो वह उसे बहुविधि उपदेश देकर भविष्य में लोकप्रिय राजा के रूप में तैयार करता है। उसके उपदेशों, सम्बोधन, चेतावनी से उसकी राज्यभक्ति परिलक्षित होती है।

महाराज तारापीड का विश्वासपात्र– प्रधानमंत्री शुकनास महाराज तारापीड का पूर्ण विश्वासपात्र मंत्री है। चन्द्रापीड को शिक्षा पूर्ण होने पर गुरु आश्रम से वापस लाने के लिए प्रबन्ध मंत्री शुकनास ही करता है। चन्द्रापीड को इस सन्दर्भ में राजा के पत्र के साथ मंत्री शुकनास का भी पत्र मिलता है। इस उदाहरण से शुकनास की गरिमा एवं विश्वासपात्रता का परिचय मिलता है। राजा तारापीड राज्य संचालन का भार शुकनास पर डालकर चिन्ता रहित हो जाते हैं।

धीर-गंभीर स्वभाव– ब्राह्मण मंत्री शुकनास सम्पूर्ण राज्य संचालन की शक्ति पाकर भी अत्यन्त सरल, विनम्र, राजा एवं प्रजा का कल्याण चाहने वाला सद्चरित्र व्यक्ति ही सिद्ध होता है। वह राजनैतिक संकट प्रकट होने पर भी अविचलित रहता है। वह सभी समस्याओं का समाधान अपने विवेक, बुद्धि कौशल से करता है।

दूरदृष्टिवाला– प्रधानमंत्री शुकनास अनुभवी एवं दूरदर्शी है। वह धन-वैभव से उत्पन्न बुराई को समझता है। लक्ष्मी के प्रभाव से व्यक्ति दूषित विचारवाला हो जाता है। इसलिए युवराज चन्द्रापीड को लक्ष्मी की विशेषताओं से अवगत कराता है। शुकनासोपदेश इसका सर्वोत्तम उदाहरण है।

इस आधार पर हम कह सकते हैं कि शुकनास के चरित्र में वे सभी गुण मौजूद हैं जो एक राजभक्त मंत्री में होना चाहिए। वह धैर्यवान, निर्भीक, निस्पृह, बुद्धिमान् और निष्ठावान् मंत्री है।

●●

महाकविश्रीबाणभट्टविरचितम्

चन्द्रापीडकथा

(उत्तरार्द्ध भाग : शब्दार्थ, हिन्दी अनुवाद, व्याकरणात्मक टिप्पणी एवं प्रश्नोत्तर)

➥ **सा तु समुत्थाय महाश्वेतां स्नेहनिर्भरं कण्ठे जग्राह। महाश्वेतापि दृढतरदत्तकण्ठाग्रहा, ताम् अवादीत्–''सखि कादम्बरि! भारते वर्षे राजा तारापीडो नाम। तस्यायम् आत्मजः चन्द्रापीडो नाम दिग्विजयप्रसङ्गेन अनुगतो भूमिमिमाम्। एष च दर्शनात् प्रभृति मे निष्कारणबन्धुतां गतः। कथिता चास्य बहुप्रकारं प्रियसखी। तत् अपूर्वदर्शनोऽयम् इति विमुच्य लज्जाम्, अविज्ञातशीलः इत्यपहाय शंकाम्, यथा मयि तथा अत्रापि वर्तितव्यम्'' इत्यावेदिते तया चन्द्रापीडः प्रणामम् अकरोत्।**

शब्दार्थ– समुत्थाय = उठकर। स्नेहनिर्भरम् = स्नेहभाव से पूर्ण होकर। कण्ठे = गले से। जग्राह = लगा लिया। दृढ़तरदत्तकण्ठग्रहा = दृढ़ता के साथ गले लगाती हुई। अवादीत् = कहा। तस्यायम् = यह उसका। आत्मजः = पुत्र। दिग्विजयप्रसङ्गेन = दिग्विजय के प्रसंग से। अनुगतः = आया है। भूमिमिमाम् = इस स्थान पर। एषः = यह। निष्कारण बन्धुतां = बिना किसी कारण के ही भ्रातृत्व भाव को। गतः = पहुँच गये हैं। कथिता = कही गयी है। बहुप्रकारम् = बहुत प्रकार से। तत् = अतः। अपूर्वदर्शनः = पहले न देखा हुआ। विमुच्य = छोड़कर। अविज्ञातशीलः = अनजानशील-स्वभाववाला। इत्यपहाय = छोड़कर। यथा मयि = जैसा मुझमें। तथा अत्रापि = वैसा ही इसमें। वर्तितव्यम् = व्यवहार करना चाहिए। इत्यावेदिते = ऐसा निवेदन करने पर। अकरोत् = किया।

हिन्दी अनुवाद– कादम्बरी ने उठकर अत्यन्त प्रेम के साथ महाश्वेता को गले लगा लिया। महाश्वेता ने भी उसे कसकर गले से लगाते हुए कहा–सखी कादम्बरी, भारतवर्ष में तारापीड नाम के राजा हैं। यह उन्हीं के पुत्र चन्द्रापीड दिग्विजय के प्रसंग में यहाँ आये हुए हैं। मैंने इन्हें जब से देखा तभी से ये मेरे अकारण भाई बन गये हैं। इनसे मैंने तुम्हारे विषय में बहुत कुछ कह दिया। अतः प्रथम दर्शन के कारण होने वाली लज्जा तथा अज्ञात शील-स्वभाव के कारण होने वाली शङ्का को छोड़कर तुम इनके प्रति भी वही व्यवहार करो जो मेरे प्रति करती हो। महाश्वेता के ऐसा कहने पर चन्द्रापीड ने कादम्बरी को प्रणाम किया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– दृढ़तरदत्तकण्ठग्रहा = (दृढ़तरः दत्तः कण्ठहः यया सा) तस्यायम् = (तस्य + अयम्) भूमिमिमाम् = (भूमिम् = इमाम्) अविज्ञातशीलः = (अविज्ञातः शीलः यस्य सः) इत्यपहाय = (इति + अपहाय)।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. अस्य गद्यांशस्य प्रणेता कः?
उत्तर– अस्य गद्यांशस्य प्रणेता बाणभट्टः अस्ति।
प्रश्न 2. का समुत्थाय महाश्वेतां स्नेहनिर्भरं कण्ठे जग्राह?
उत्तर– कादम्बरी समुत्थाय महाश्वेतां स्नेहनिर्भरं कण्ठे जग्राह।
प्रश्न 3. तारापीडस्य आत्मजः कः आसीत्?
उत्तर– तारापीडस्य आत्मजः चन्द्रापीडः आसीत्।
प्रश्न 4. 'दिग्विजयप्रसङ्गेन अनुगतो भूमिमिमाम्।' रेखांकित अंश का अनुवाद लिखिए।
उत्तर– चन्द्रापीड दिग्विजय के प्रसंग से यहाँ आये हुए हैं।
प्रश्न 5. चन्द्रापीडः कं प्रणामम् अकरोत्?
उत्तर– चन्द्रापीडः कादम्बरीं प्रणामम् अकरोत्।

➥ **कादम्बर्यपि सविभ्रमकृतप्रणामा महाश्वेतया सह पर्यङ्के सह निषसाद। ससंभ्रमं परिजनोपनीतायां हेमपादाङ्कितायां पीठिकायां चन्द्रापीडः समुपाविशत्। परिजनोपनीतेन सलिलेन कादम्बरी स्वयम् उत्थाय महाश्वेतायाः चरणौ**

प्रक्षाल्य उत्तरीयांशुकेन अपमृज्य, पुनः पर्यङ्कम् आरुरोह। चन्द्रापीडस्यापि कादम्बर्याः सखी मदलेखा प्रक्षालितवती चरणौ।

शब्दार्थ– अपि = भी। सविभ्रमकृतप्रणामा = उतावली के साथ प्रणाम करती हुई। परिजनोपनीतायाम् = सेवकों द्वारा लायी गयी। हेमपादाङ्कितायाम् = सुनहरे पैरों वाली। पीठिकायाम् = छोटे से सिंहासन पर। समुपाविशत् = बैठ गया। सलिलेन = जल से। स्वयम् उत्थाय = स्वयम् उठकर। प्रक्षाल्य = धोकर। उत्तरीयांशुकेन = आँचल से। अपमृज्य = पोंछकर। आरुरोह = बैठ गयी। प्रक्षालितवती = धोया।

हिन्दी अनुवाद– कादम्बरी भी उतावली में चन्द्रापीड को प्रणाम करके महाश्वेता के साथ शैय्या पर बैठ गयी। चन्द्रापीड भी सेविकाओं द्वारा शीघ्रता से लाये गये सुनहरे पैरों वाले आसन पर बैठ गया। इसके पश्चात् सेविकाओं द्वारा लाये गये जल से कादम्बरी ने स्वयं उठकर महाश्वेता के पैरों को धोया और अपने आँचल से पोंछने के बाद वह फिर पलंग पर जा बैठी। कादम्बरी की सखी मदलेखा ने भी चन्द्रापीड के पैरों को धोया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– सविभ्रमकृतप्रणामा = सविभ्रमेण कृतः प्रणामः यया सा। समुपाविशत् = सम् + उपाविशत्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. कादम्बरी कया सह पर्यङ्के निषसाद?

उत्तर– कादम्बरी महाश्वेतया सह पर्यङ्के निषसाद।

प्रश्न 3. 'ससंभ्रमं परिजनोपनीतायां हेमपादाङ्कितायां पीठिकायां चन्द्रापीडः समुपाविशत्' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– चन्द्रापीड भी सेविकाओं द्वारा शीघ्रता से लाये गये सुनहरे पैरों वाले आसन पर बैठ गया।

प्रश्न 4. का महाश्वेतायाः चरणौ प्रक्षाल्य उत्तरीयांशुकेन अपमृज्य, पुनः पर्यङ्कम् आरुरोह?

उत्तर– कादम्बरी महाश्वेतायाः चरणौ प्रक्षाल्य उत्तरीयांशुकेन अपमृज्य, पुनः पर्यङ्कम् आरुरोह।

प्रश्न 5. चन्द्रापीडस्य चरणौ का प्रक्षालितवती?

उत्तर– चन्द्रापीडस्य चरणौ कादम्बर्याः सखी मदलेखा प्रक्षालितवती।

➥ **अथ महाश्वेता कादम्बरीम् अनामयं पप्रच्छ। सा तु सखीप्रेम्णा गृहनिवासेन कृतापराधेव लज्जमाना कृच्छ्रादिव कुशलम् आचचक्षे। मुहुर्तापगमे च महाश्वेता ताम्बूलदानोद्यतां ताम् अभाषत्–''सखि कादम्बरि, सर्वाभिरस्माभिः अयम् अभिनवागतः चन्द्रापीडः आराधनीयः। तदस्मै तावत् दीयताम्'' इति। इत्युक्ता सा शनैः अव्यक्तमिव ''सखि, लज्जेऽहम् अनुपजातपरिचया प्रागल्भ्येनानेन। गृहाण त्वमेव अस्मै प्रयच्छ'' इत्युवाच। पुनः पुनः अभिधीयमाना च तया ग्राम्येव चिरात् दानाभिमुखं मनश्चक्रे। महाश्वेतामुखात् अनाकृष्टदृष्टिरेव वेपमानाङ्गयष्टिः प्रसारयामास च ताम्बूलगर्भं हस्तपल्लवम्। चन्द्रापीडस्तु स्वभावपाटलं धनुर्गुणाकर्षणकृतकिणश्यामलं पाणिं प्रसार्य ताम्बूलं प्रतिजग्राह। अथ सा गृहीत्वा अपरं ताम्बूलं महाश्वेतायै प्रायच्छत्।**

अथवा **अथ महाश्वेता ..... मनश्चक्रे।** (2017 NC)

अथवा **अथ महाश्वेता ..... हस्तपल्लवम्।** (2019 DB)

शब्दार्थ– अनामयम् = रोगहीनता, स्वस्थ। सखीप्रेम्णा = सखी के प्रेम से। गृहनिवासेन = घर में रहने के कारण। कृतापराधेन = अपराधिनी जैसी। कृच्छ्रादिव = कठिनाई से। आचचक्षे = कही। मुहूर्तापगमे = एक क्षण बीतने पर। ताम्बूलदानोद्यतां = ताम्बूल देने के लिए तैयार। ताम् = उससे, कादम्बरी से। अभाषत् = बोली। सर्वाभिरस्माभिः = सभी लोगों द्वारा। अभिनवागत = नया-नया आया हुआ। आराधनीयः = सत्कार योग्य है। दीयताम् = दो। अव्यक्तमिव = अप्रगट रूप से। अनुपजात परिचयः = परिचय न होने से। प्रागल्भ्येनानेन = इस ढिठाई से। गृहाण = लो। अस्मै = इसके लिए। प्रयच्छ = दो। इत्युवाच = इस प्रकार कहा। पुनः पुनः = बार-बार। अभिधीयमाना = कही जाने पर। ग्राम्येव = ग्रामीण स्त्री के समान तात्पर्य भोलेपन के साथ। चिरात् = बड़ी देर के बाद। दानाभिमुखम् = देने की ओर। मनश्चक्रे = मन किया। अनाकृष्टदृष्टिरेव = बिना दृष्टि हटाये। वेपमानाङ्गयष्टिः = कांपते

हुए शरीर से। प्रसारयामास = फैलाया। ताम्बूलगर्भम् = ताम्बूल युक्त। स्वभावपाटलम् = स्वभावतः लाल। धनुर्गुणाकर्षणकृतकिणश्यामलम् = धनुष की डोरी खींचने से पड़े हुए घट्टे के कारण काले। पाणिम् = हाथ को। प्रसार्य = फैलाकर। प्रतिजग्राह = ले लिया। अपरम् = दूसरा। प्रायच्छत् = दिया।

हिन्दी अनुवाद– इसके पश्चात् महाश्वेता ने कादम्बरी से उसके स्वास्थ्य के विषय में पूछा। अपनी सखी के प्रेम से पूर्ण होते हुए भी घर में रहने के कारण (अर्थात् महाश्वेता की तरह मैं भी क्यों नहीं वनवासिनी बन गयी) अपने आप को अपराधिनी जैसी मानती हुई कादम्बरी ने लज्जित होकर बड़ी कठिनाई से कुशल समाचार कहा! थोड़ी देर बीतने पर पान देती हुई कादम्बरी से महाश्वेता ने कहा– ''सखि! हम सबों को नवागन्तुक अतिथि का सत्कार करना चाहिए। अतः पहले इन्हें पान दो।'' ऐसा कहने पर कादम्बरी ने बहुत धीरे से अप्रगट रूप में कहा– ''सखि! परिचय न होने के कारण इस प्रकार की धृष्टता करने में मुझे लज्जा आ रही है। इसलिए तुम्हीं उन्हें दे दो।'' गाँव की भोली-भाली स्त्री के समान बार-बार समझाने पर कादम्बरी ने पान देने का विचार किया और महाश्वेता की ओर से बिना दृष्टि हटाये (अर्थात् चन्द्रापीड की ओर बिना देखे ही) काँपते हुए शरीर से पानयुक्त हाथ को (चन्द्रापीड की ओर) बढ़ा दिया। स्वभावतः लाल किन्तु धनुष की डोरी खींचने से पड़ने वाली रगड़ से काले पड़े हुए हाथ को बढ़ाकर चन्द्रापीड ने उसे ले लिया। इसके पश्चात् दूसरा पान लेकर कादम्बरी ने महाश्वेता को दिया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– ताम्बूलदानोद्यताम् = ताम्बूलदानाय उद्यता या ताम्। अनुपजातपरिचया = अनुपजातः परिचयः यस्याः सा। प्रागल्भ्येनानेन = प्रागल्भ्येन + अनेन। इत्युवाच = इति + उवाच। ग्राम्येव = ग्राम्या + इव। अनाकृष्टदृष्टिरेव = अनाकृष्टा दृष्टिः यया सा। वेपमानाङ्गयष्टिः = वेपमाना अंगयष्टिः यस्या सा। धनुर्गुणाकर्षणकृतकिणश्यामलम् = धनुषः गुणस्य आकर्षणेन कृतः यः किणः तेन श्यामलम्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' (उत्तरार्द्ध भाग) से उद्धृत है।

प्रश्न 2. महाश्वेता काम् अभाषत्?
उत्तर महाश्वेता कादम्बरीम् अभाषत्।

प्रश्न 3. ''सखि! लज्जेऽहम् अनुपजातपरिचया प्रागल्भ्येनानेन।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर सखि! परिचय न होने के कारण इस प्रकार की धृष्टता से मुझे लज्जा आ रही है।

प्रश्न 4. ''अस्मै'' में कौन-सी विभक्ति है?
उत्तर– ''अस्मै'' में चतुर्थी विभक्ति है। 'अस्मै' चतुर्थी विभक्ति एकवचन का रूप है।

प्रश्न 5. ''वेपमानाङ्गयष्टिः'' का शाब्दिक अर्थ लिखिए।
उत्तर– ''वेपमानाङ्गयष्टिः'' का शाब्दिक अर्थ है—काँपती हुई शरीर वाली।

प्रश्न 6. ''सखि कादम्बरि, सर्वाभिरस्माभिः अयम् अभिनवागतः चन्द्रापीडः आराधनीयः।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– सखि! हम सभी को नवागन्तुक (अतिथि) चन्द्रापीड का सत्कार करना चाहिए।

➥ **अत्रान्तरे कंचुकी समागत्य महाश्वेताम् अवोचत्–''आयुष्मति, देवः चित्ररथः देवी च मदिरा त्वां द्रष्टुम् आह्वयतः'' इति। इत्येवम् अभिहिता गन्तुकामा महाश्वेता ''सखि! चन्द्रापीडाः क्वास्ताम्?'' इति कादम्बरीम् अपृच्छत्। असौ तु ''सखि महाश्वेते, किमेवम् अभिदधासि? दर्शनादारभ्य शरीरस्याप्ययमेव प्रभुः किमुत भवनस्य विभवस्य परिजनस्य वा–यत्रास्मै रोचते प्रियसखीहृदयाय वा, तत्र अयम् आस्ताम्'' इत्यवदत्। तत् श्रुत्वा महाश्वेता ''तत् अत्रैव त्वत्प्रासादसमीपवर्तिनि प्रमदवने क्रीडापर्वतकमणिवेश्मनि आस्ताम्'' इत्यभिधाय, गन्धर्वराजं द्रष्टुं ययौ। चन्द्रापीडोऽपि तयैव सह निर्गत्य, केयूरकेण उपदिश्यमानमार्गः, मणिमन्दिरम् अगात्।**
(2020 ZQ, ZT)

शब्दार्थ– अत्रान्तरे = इसी बीच। समागत्य = आकर। अवोचत् = कहा। द्रष्टुम् = देखने के लिए। आहवयतः = बुला रहे हैं। अभिहिता = कही गयी। गंतुकामा = जाने की इच्छा वाली। क्वास्ताम् = कहाँ रहें। अभिदधासि = कहती हो। प्रभुः = स्वामी। किमुत = फिर। यत्रास्मै = जहाँ इन्हें। रोचते = अच्छा लगे। त्वत्प्रासादसमीपवर्तिनि = तुम्हारे महल के पास। प्रमदवने = प्रमदवन

में। क्रीडापर्वतकमणिवेश्मनि = क्रीडा पर्वत पर बने मणिगृह में। आस्ताम् = रहें। इत्यभिधाय = ऐसा कहकर। ययौ = चली गयी। निर्गत्य = निकलकर। उपदिश्यमानमार्गः = बताये हुए मार्ग से। आगत् = गया।

हिन्दी अनुवाद– इसी बीच कंचुकी ने आकर महाश्वेता से कहा– देवी, महाराज चित्ररथ और महारानी मदिरा आपको देखने के लिए बुला रही हैं। ऐसा कहने पर वहाँ जाने की इच्छा से महाश्वेता ने कादम्बरी से कहा– सखि! चन्द्रापीड कहाँ रहेंगे? कादम्बरी ने कहा– ''सखि! ऐसा क्यों कह रही हो। जब से मैंने इन्हें देखा है उसी समय से यह मेरे शरीर के भी स्वामी बन गये हैं फिर घर, वैभव और परिजनों की तो बात ही क्या है? जहाँ इन्हें अच्छा लगे और प्रिय सखी, तुमको भी जहाँ रुचिकर हो वहाँ ये रहें। यह सुनकर महाश्वेता ने कहा–तो तुम्हारे महल के समीप प्रमदवन में बने क्रीडापर्वत के मणिमन्दिर में रहेंगे। इसके बाद महाश्वेता गन्धर्वराज को देखने चली गयी। चन्द्रापीड भी उसी के साथ निकल कर केयूरक द्वारा बताये गये मार्ग से मन्दिर में चला गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– क्वास्ताम् = क्व + आस्ताम्। शरीरस्याप्ययमेव = शरीरस्य + अपि + अयम् + एव। यत्रास्मै = यत्र + अस्मै।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखए।
अथवा प्रस्तुत गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. कः समागत्य महाश्वेताम् अवोचत्?
उत्तर– कंचुकी समागत्य महाश्वेताम् अवोचत्।

प्रश्न 3. देवः चित्ररथः देवी च मदिरा कां द्रष्टुम् आह्वयतः?
उत्तर– देवः चित्ररथः देवी च मदिरा महाश्वेतां द्रष्टुम् आह्वयतः।

प्रश्न 4. ''त्वत्प्रासादसमीपवर्तिनि प्रमदवने क्रीडापर्वतकमणिवेश्मनि आस्ताम्।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– तुम्हारे महल के समीप प्रमदवन में बने क्रीडापर्वत के मणिमन्दिर में रहेंगे।

प्रश्न 5. चन्द्रापीडः केन उपदिश्यमानमार्गः मणिमन्दिरम् अगात्?
उत्तर– चन्द्रापीडः केयूरकेण उपदिश्यमानमार्गः मणिमन्दिरम् अगात्।

➥ **गते च तस्मिन् गन्धर्वराजपुत्री, विसृज्य सकलं सखीजनम् परिजनं च प्रासादम् आरुरोह। तत्र च शयनीये निपत्य, एकाकिनी एवं चिन्तयामास– 'अहो! किमिदम् आरब्धं चपलया मया। न परीक्षिता अस्य चित्तवृत्तिः। परित्यक्तः कुलकन्यकानां क्रमः। न परिक्षिता अस्य चित्तवृत्तिः। परित्यक्तः कुलकन्यकानां क्रमः। गुरुजनात् न त्रस्तम्। लोकापवादात् नोद्विग्नम्। आसन्नवर्ती, सखीजनोऽपि उपलक्षयतीति मन्दया मया न लक्षितम्। तथा महाश्वेताव्यतिकरेण प्रतिज्ञा कृता श्रुत्वैतं वृत्तान्तं किं वक्ष्यति अम्बा तातो वा? किं करोमि? केनोपायेन स्खलितम् इदं प्रच्छादयामि? पूर्वकृतापुण्यसंचयेनैवायम् आनीतो मम विप्रलम्भकः चन्द्रापीडः' इति सचिन्त्य गुर्वीम् लज्जाम् उवाह।**

(2018 BD, 20 ZS)

शब्दार्थ– गते च तस्मिन् = उसके चले जाने पर। गन्धर्वराजपुत्री = कादम्बरी। विसृज्य = छोड़कर। परिजनम् = सेविकाओं को। प्रासादम् आरुरोह = महल पर चढ़ गयी। शयनीये = बिस्तर पर। निपत्य = पड़कर। एकाकिनी = अकेली। चिन्तयामास = विचार किया। आरब्धम् = किया। चपलया मया = मुझ चंचला ने। न परीक्षिता = परीक्षा नहीं ली। अस्य चित्तवृत्तिः = इसकी (चन्द्रापीड की) भावना। परित्यक्तः = छोड़ दिया। कुलकन्यकानां क्रमः = कुलीन कन्याओं की परिपाटी। न त्रस्तम् = नहीं डरी। लोकापवादात् = संसार की बदनामी से। नोद्विग्नम् = घबरायी नहीं। आसन्नवर्ती = समीप से स्थित। सखीजनोऽपि = सखियाँ भी। उपलक्षयतीति = देखती हैं। मन्दया मया = मुझ मूर्ख ने। लक्षितम् = नहीं देखा, नहीं सोचा। महाश्वेताव्यतिकरेण = महाश्वेता के सम्बन्ध में। प्रतिज्ञा कृता = प्रतिज्ञा की। किं वक्ष्यति = क्या कहेंगे। केनोपायेन = किस उपाय से। स्खलितम् इदम् = इस गलती को। प्रच्छादयामि = ढकूँ, छिपाऊँ। पूर्वकृतापुण्यसंचयेनैव = मेरे पूर्व जन्म के संचित पापों द्वारा ही। आनीतः = लाया गया है। मम विप्रलम्भकः = मेरा वंचक। संचिन्त्य = सोचकर। गुर्वीम् = बहुत भारी। उवाह = धारण किया।

हिन्दी अनुवाद– चन्द्रापीड के जाने पर गंधर्वराजपुत्री कादम्बरी सभी सखियों और सेविकाओं को छोड़कर महल में चली गयी। वहाँ शय्या पर पड़कर अकेली सोचने लगी–अरे, मुझ चंचला ने यह क्या कर डाला? उसकी भावनाओं की परीक्षा नहीं ली।

कुल कन्याओं की परिपाटी छोड़ दी। मैं गुरुजनों से भयभीत नहीं हुई। संसार की बदनामी से भी व्याकुल नहीं हुई। पास में स्थित सखियाँ भी समझ रही हैं। मुझ मूर्ख ने इसका भी ध्यान नहीं रखा। महाश्वेता के सम्बन्ध से मैंने (अविवाहित रहने की) प्रतिज्ञा की थी, किन्तु इस वृत्तान्त को (चन्द्रापीड के प्रति मेरी अनुरक्ति को) सुनकर माता-पिता क्या कहेंगे। क्या करूँ? कैसे इस भूल पर पर्दा डालूँ? निश्चय ही मेरे पूर्व जन्म में किये पापों ने ही मुझे ठग लेने वाले इस चन्द्रापीड को यहाँ ला दिया है। इस प्रकार सोचकर वह बहुत अधिक लज्जित हो उठी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– लोकापवादात् = लोक + अपवादात्। केनोपायेन = केन + उपायेन।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकं च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. 'अहो! किमिदम् आरब्धं चपलया मया।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– 'अरे! मुझ चंचला ने यह क्या कर डाला?'

प्रश्न 3. गन्धर्वराज पुत्री, विसृज्य सकलं सखीजनं परिजनं च कुत्र आरुरोह?

उत्तर– गन्धर्वराज पुत्री, विसृज्य सकलं सखीजनं परिजनं च प्रासादम् आरुरोह।

प्रश्न 4. कस्य न परीक्षिता चित्तवृत्तिः?

उत्तर– चन्द्रापीडस्य न परीक्षिता चित्तवृत्तिः।

प्रश्न 5. गुरुजनात् न त्रस्तं का?

उत्तर– कादम्बरी गुरुजनात् न त्रस्तम्।

➥ **चन्द्रापीडोऽपि प्रविश्य मणिगृहम्, शिलातलास्तीर्णायाम् उभयतः उपर्युपरि निवेशितबहूपधानायां कुथायां निपत्य, केयूरकेण उत्सङ्गे गृहीतचरणयुगलः दोलायमानेन चेतसा चिन्तां विवेश। 'किं तावत् अस्याः कादम्बर्याः सहभुवः एते विलासाः? आहोस्वित् अनाराधित प्रसन्नेन मकरकेतुना मयि नियुक्ताः? येन मां सरागेण चक्षुषा तिर्यक् विलोकयति, आलोकिता च लज्जया आत्मानम् आवृणोति' इति। भूयश्चाचिन्तयत् 'किमनेन वृथैव मनसा खेदितेन? यदि सत्यमेवेयं धवलेक्षणा मय्येवं जातचित्तवृत्तिः, न चिरात् स एवैनाम् अप्रार्थितानुकूलः मन्मथः प्रकटीकरिष्यति, स एवास्य संशयस्य छेत्ता भविष्यति' स इत्यवधार्य, विनोदार्थं कादम्बर्या प्रहिताभिः कन्यकाभिः सह अक्षैः, गेयैः, विपञ्चीवाद्यैः, स्वरसंदेहविवादैः सुभाषितगोष्ठीभिः अन्यैश्च सरसालापैः क्रीडन् आसांचक्रे।**

चन्द्रापीडोऽपि प्रविश्य ..... आवृणोति इति। (2017 ND, NF)

शब्दार्थ– शिलातलास्तीर्णायाम् = शिला तल पर बिछायी गई। उपर्युपरि = ऊपर-ऊपर। निवेशितबहूपधानायाम् = जिसके ऊपर बहुत तकिये रखे हुए हैं। कुथायाम् = कालीन पर। निपत्य = पड़कर। उत्संगे = गोद में। गृहीतचरणयुगलः = जिसके दोनों चरण ग्रहण किये गये हैं। दोलायमानेन = हिलते हुए, चंचल। चेतसा = चित्त से। चिन्तां विवेश = चिन्ता में पड़ गया। सहभुवः = साथ उत्पन्न होने वाली, स्वाभाविक। एते विलासाः = यह कामचेष्टाएँ। अनाराधितप्रसन्नेन = बिना आराधना के प्रसन्न होने वाले। मकरकेतुना = कामदेव द्वारा। मयि नियुक्ताः = मुझ में नियुक्त की गयी। सरागेण चक्षुषा = रागयुक्त नेत्रों से। तिर्यक् विलोकयति = तिरछे देखती है। आलोकिता = देखी जाने पर। लज्जया = लज्जा के कारण। आत्मानम् = अपने आपको। आवृणोति = छिपा लेती है। भूयश्चाचिन्तयत् = फिर सोचा। वृथैव = व्यर्थ ही। मनसा खेदितेन = मन के दुःखी होने से। सत्यमेवेयम् = सचमुच ही यह। धवलेक्षणा = निर्मल दृष्टिवाली। मय्येव = मुझ पर इस प्रकार। जातिचित्तवृत्तिः = जिसकी चित्तवृत्ति हो गयी है। न चिरात् = शीघ्र ही। अप्रार्थितानुकूलः = बिना प्रार्थना के ही अनुकूल। मन्मथः = कामदेव। प्रकटीकरिष्यति = प्रकट करेगा। स एव = वही। संशयस्य = शंका का। छेत्ता भविष्यति = काटने वाला होगा। इत्यवधार्य = ऐसा निश्चय करके। विनोदार्थम् = मन बहलाव के लिए। प्रहिताभिः = भेजी गयी। अक्षैः = जुआ से। गेयैः = गीतों से। विपञ्चीवाद्यैः = वीणा बजाने से। स्वरसंदेहविवादैः = स्वर में संदेह होने के तर्क से। सुभाषितगोष्ठीभिः = मधुर गोष्ठियों से। सरसालापैः = मधुर बातचीत से। क्रीडन् आसांचक्रे = खेलता रहा।

हिन्दी अनुवाद– चन्द्रापीड भी मणिगृह में जाकर शिला पर बिछी हुई तथा दोनों ओर रखी हुई अनेक तकियों वाली कालीन

पर लेट गया। केयूरक ने उसके चरणों को अपनी गोद में कर लिया। इसके पश्चात् वह चंचल हृदय से सोचने लगा– कादम्बरी की यह चेष्टाएँ स्वाभाविक हैं तथा बिना आराधना के ही प्रसन्न हो जाने वाले कामदेव ने उसे मेरे प्रति अनुरक्त कर दिया है, जिससे वह प्रेमपूर्वक मुझे तिरछी आँखों से देखती है और जब उसकी ओर मैं देखने लगता हूँ तो लज्जा से अपने को छिपा लेती है। उसने विचार किया कि इस प्रकार मन ही मन दुःखी होने से क्या लाभ है। यदि सचमुच ही उस शुभ्रनेत्रों वाली (कादम्बरी) का अनुराग मेरे प्रति होगा तो बिना प्रार्थना किये मेरे प्रति अनुकूल हो जाने वाला कामदेव शीघ्र ही उसे प्रकट कर देगा। वही इस शंका को मिटाएगा। ऐसा निश्चय कर मनबहलाव के लिए कादम्बरी द्वारा भेजी गयी कुमारियों के साथ जुआ, गीत, वीणा के स्वरों के विषय में तर्क-वितर्क, सुभाषित, गोष्ठी तथा मधुर बातचीत द्वारा चन्द्रापीड खेलता (मनोरंजन करता) रहा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– शिलातलास्तीर्णायाम् = (शिलातले आस्तीर्णायाम्)। निवेशितबहूपधानायाम् = (निवेशितानि बहूपधानानि यस्याम्)। गृहीतचरणयुगलः = (गृहीतम् चरणयुगलम् यस्य सः)। भूयश्चाचिन्तयत् = (भूयः + च + अचिन्तयत्) मय्येव = (मयि + एव)। सत्यमेवेयम् = (सत्यम् +एव + इयम्)। जातचित्तवृत्तिः = (जात चित्तवृत्तिः यस्याः सा)। इत्यवधार्य = (इति + अवधार्य) ऐसा निश्चय करके।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. ''आहोस्वित् अनाराधित प्रसन्नेन मकरकेतुना मयि नियुक्ताः?'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– बिना आराधना के ही प्रसन्न होने जाने वाले कामदेव ने उसे मेरे प्रति अनुरक्त कर दिया है।

प्रश्न 3. मणिगृहे कः प्राविशत्?

उत्तर– चन्द्रापीडः मणिगृहे प्राविशत्।

प्रश्न 4. उत्सङ्गे गृहीतचरणयुगलः केन?

उत्तर– केयूरकेण उत्सङ्गे गृहीतचरणयुगलः।

प्रश्न 5. अनाराधित प्रसन्नेन केन मयि नियुक्ताः?

उत्तर– अनाराधित प्रसन्नेन मकरकेतुना मयि नियुक्ताः।

➥ **एवं मुहूर्तं स्थित्वा, कादम्बरीपरिजनेन निर्वर्तितस्नानविधिः, अर्चिताभिमतदैवतः, क्रीडापर्वतके एव सर्वम् आहारादिकम् अहःकर्म चक्रे। अथ क्रीडापर्वतकस्य प्राग्भागे मनोहारिणि मरकतशिलातले समुपविष्टः दृष्टवान् सहसैव धवलेनालोकेन विलिप्यमानम् अम्बरतलम्। अद्राक्षीच्च मदलेखाम् आगच्छन्तीम्, तस्याश्च समीपे तरलिकाम्, तया च सितांशुकोपच्छदे पटलके गृहीतं शरच्छशिनम् इव प्रभावर्षिणम् अतितारं हारम्। दृष्ट्वा च 'इदम् अस्य धवलिम्नः कारणम्' इति निश्चित्य, प्रत्युत्थानादिना समुचितेन उपचारेण मदलेखां प्रतिजग्राह। सा तस्मिन्नेव मरकतग्राव्णि मुहूर्तम् उपविश्य, स्वयम् उत्थाय, चन्द्रापीडं चन्दनेन अनुलिप्य, द्वे दुकूले परिधाप्य, तैश्च मालतीकुसुमदामभिः आरचितशेखरं कृत्वा, तं हारम् आदाय उवाच।**

शब्दार्थ– मुहूर्तं = थोड़ी देर। स्थित्वा = ठहरकर। कादम्बरी परिजनेन = कादम्बरी की सेविकाओं द्वारा। निर्वर्तितस्नानविधिः = स्नान क्रिया को समाप्त करने वाला। अर्चिताभिमतदैवतः = इष्टदेव की पूजा करने वाला। क्रीडापर्वतके एव = क्रीडापर्वत पर ही। आहारादिकम् = भोजनादि। अहःकर्म = दिन का कार्य। चक्रे = क्रिया। प्राग्भागे = पूर्व की ओर। मनोहारिणि = सुन्दर। मकरतशिलातले = मरकत मणि की चट्टान पर। समुपविष्टः = बैठा हुआ। दृष्टवान् = देखा। सहसैव = अकस्मात्। धवले नालोकेन = शुभ्र प्रकाश से। विलिप्यमानम् = लिया हुआ। अम्बरतलम् = आकाश को। अद्राक्षीच्च = और देखा। आगच्छन्तीम् = आती हुई। सितांशुकोपच्छदे = श्वेत रेशम में लिपटे। पटलके = संपुट में। शरच्छशिनम् = शरद के चन्द्रमा के समान। प्रभावर्षिणम् = प्रकाश की वर्षा करने वाले। अतितारम् = तारों से भी अधिक। हारम् = माला को। धवलिम्नः = उज्ज्वलता का। प्रत्युत्थानादिना = उठाने आदि। उपचारेण = स्वागत। प्रतिजग्राह = ग्रहण किया। मरकतग्राव्णि = मरकत मणि पर। उपविश्य = बैठकर। उत्थाय = उठकर। अनुलिप्य = लेप करके। द्वे दुकूले = दो कपड़े। परिधाप्य = पहिनाकर। मालतीकुसुमदामभिः = मालती पुष्प की माला ने। आरचितशेखरम् = सिर को सजाकर। आदाय = लेकर। उवाच = बोली।

हिन्दी अनुवाद– थोड़ी देर ठहरकर चन्द्रापीड ने कादम्बरी के सेवकों की सहायता से स्नानक्रिया समाप्त करके, देवताओं की पूजा आदि से निवृत्त होकर क्रीडा-पर्वत पर ही भोजनादि दैनिक कर्मों को पूरा किया। क्रीड़ा पर्वत के पूर्वी भाग में सुन्दर मरकत की शिला पर बैठे हुए चन्द्रापीड ने सहसा उज्ज्वलता से परिपूर्ण हो जाने वाले आकाश को देखा और उसने श्वेत रेशम से ढकी हुई पोटली में चन्द्रमा के समान प्रकाश फैलाने वाले तारों से भी श्रेष्ठ हार को ली हुई तरलिका के साथ आती हुई मदलेखा को भी देखा। उसे देखकर और यह निश्चय करके कि यह (आकाश में दिखाई देने वाली उज्ज्वला) इसी (हार) के कारण है, उठकर बड़े सत्कार के साथ मदलेखा का स्वागत किया। मदलेखा ने उसी मरकत की शिला पर कुछ देर बैठने के बाद स्वयं उठकर चन्द्रापीड को चन्दन लगाया, दो कपड़े पहनाया, मालती पुष्प की मालाओं से उसके सिर को सजाया और उस हार को लेकर कहा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– कादम्बरीपरिजनेन = कादम्बर्याः परिजनः तम्। निर्वर्तितस्नानविधिः = निर्वर्तितः स्नानविधिः यस्य सः। अर्चिताभिमतदैवतः = अर्चितः अभिमतदैवतः येन सा। धवलेनालोकेन = धवलेन + आलोकेन। अद्राक्षीच्च = अद्राक्षीत् + च। शरच्छशिनम् = शरत् + शशिनम्। आरचितशेखरम् = आरचितः शेखरः यस्य तम्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. 'दृष्टवान् सहसैव धवलेनालोकेन विलिप्यमानम् अम्बरतलम्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– (चन्द्रापीड ने) सहसा उज्ज्वलता से परिपूर्ण हो जाने वाले आकाश को देखा।

प्रश्न 3. कः कादम्बरीपरिजनेन निर्वर्तित स्नानविधिः?

उत्तर– चन्द्रापीडः कादम्बरीपरिजनेन निर्वर्तितस्नानविधिः।

प्रश्न 4. चन्द्रापीडः कम् अद्राक्षीत्?

उत्तर– चन्द्रापीडः मदलेखाम् अद्राक्षीत्।

प्रश्न 5. कः मदलेखां प्रतिजग्राह?

उत्तर– चन्द्रापीडः मदलेखां प्रतिजग्राह।

➥ **''कुमार! शेषनामा हारोऽयं भगवता अम्भसां पत्या गृहम् उपगताय प्रचेतसे दत्तः। पाशभृतापि गन्धर्वराजाय, गन्धर्वराजेनापि कादम्बर्यै, तयापि त्वद्वपुः अस्य अनुरूपमिति विभावयन्त्या अनुप्रेषितः। अतः अर्हति इयम् बहुमानं त्वत्तः महाश्वेतयापि कुमारस्य संदिष्टम् न खलु महाभागेन मनसापि कार्यः कादम्बर्याः प्रथमप्रणयभङ्गः इति उक्त्वा तं तस्य वक्षःस्थले बबन्ध। चन्द्रापीडस्तु, विस्मयमानः प्रत्यवादीत् ''मदलेखे, निपुणासि। जानासि ग्राहयितुम्। उत्तरावकाशम् अपहरन्त्या कृतं वचसि कौशलम्'' इत्युक्त्वा कादम्बरीसंबद्धाभिरेव कथाभिः सुचिरं स्थित्वा, विसर्जयांवभूव मदलेखाम्।** (2020 ZU)

शब्दार्थ– अम्भसां पत्या = जल के स्वामी वरुण द्वारा। गृहम् उपगताय = घर आये हुए। प्रचेतसे = कुबेर को। दत्तः = दिया। पाशभृतापि = कुबेर द्वारा भी। गन्धर्वराजाय = चित्ररथ के लिए। कादम्बर्यै = कादम्बरी के लिए। त्वद्वपुः = तुम्हारा शरीर। अस्य अनुरूपमिति = इसके योग्य है। विभावयन्त्या = विचार करती हुई। अनुप्रेषितः = भेजा है। अर्हति इयम् बहुमानं त्वत्तः = (कादम्बरी) आप से सम्मान पाने योग्य है। संदिष्टम् = संदेश दिया है। मनसापि = मन से भी। कार्यः = कराना चाहिए। प्रथमप्रणयभङ्गः = पहले प्रेम का नाश। उक्त्वा = कहकर। वक्षस्थले = छाती पर। बबन्ध = बाँध दिया। विस्मयमानः = चकित होते हुए। प्रत्यवादीत् = उत्तर दिया। निपुणासि = चतुर हो। जानासि = जानती हो। ग्राहयितुम् = ग्रहण कराना। उत्तरावकाशम् = (उत्तरस्यावकाशम्) उत्तर का अवसर। अपहरन्त्या = दूर करती हुई। वचसि = वाणी में। कादम्बरीसम्बद्धाभिः = कादम्बरी से सम्बन्धित। कथाभिः = बातचीत से। सुचिरम् = देर तक। विसर्जयाम् बभूव = विदा किया।

हिन्दी अनुवाद– ''कुमार यह शेष नाम का हार है, इसे वरुण ने अपने घर आये हुए कुबेर को, कुबेर ने चित्ररथ को और चित्ररथ ने कादम्बरी को दिया था, यह आपके शरीर के ही योग्य है, ऐसा विचार करके कादम्बरी ने इसे आपके पास भेजा है, अतः (इसे स्वीकार करके) आपको कादम्बरी का सम्मान करना चाहिये। देवी महाश्वेता ने भी आपको संदेश दिया है कि आप कादम्बरी के इस प्रथम प्रणय को भङ्ग न करें, ऐसा कहकर उसने हार को उसकी छाती पर बाँध दिया। चन्द्रापीड ने चकित होकर कहा–

मदलेखे तुम बहुत कुशल हो। ग्रहण कराना जानती हो। उत्तर का अवसर दिये बिना ही तुमने वाणी की कुशलता प्रकट कर दी। ऐसा कहकर उसने बहुत देर तक कादम्बरी सम्बन्धी बातचीत करके मदलेखा को विदा किया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– पाशभृतापि = (पाश बिभर्ति यः स तेन)। त्वद्वपुः = त्वत् + वपुः। अनुरूपमिति = अनुरूपम् + इति। मनसापि = मनस् + अपि। उत्तरावकाशम् = उत्तर + अवकाशम्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकं च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. ''यदलेखेनिपुणसि। जानासि ग्राहयितुम्। उत्तरावकाशम् अपहरन्त्या कृतं वचसि कौशलमः।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– यद लेखे तुम बहुत कुशल हो। ग्रहण कराना जानती हो। उत्तर का अवसर दिये बिना ही तुमने वाणी की कुशलता प्रकट कर दी।

प्रश्न 3. हारस्य किं नामास्ति?

उत्तर– हारस्य शेषनामास्ति।

प्रश्न 4. भगवता अम्भसां पत्या गृहम् उपगताय हारं कस्मै दत्तः?

उत्तर– भगवता अम्भसां पत्या गृहम् उपगताय हारं प्रचेतसे दत्तः।

प्रश्न 5. चित्ररथः हारं कस्यै दत्तः?

उत्तर– चित्ररथः हारं कादम्बर्यै दत्तः।

➥ **अथ अदर्शनम् उपगते भगवति गभस्तिमालिनि, चन्द्रापीडः गृहकुमुदिन्याः तीरे चन्दनरसैः क्षालितम् कादम्बरीपरिजनोपदिष्टम् शिलापट्टम् अधिशिश्ये। कादम्बरी तु मदलेखया सह तत्र आगत्य, कंचित् कालं स्थित्वा, कृतप्रस्तावा ''कथं राजा तारापीडः? कथं देवी विलासवती? कथम् आर्यः शुकनासः? कीदृशी च उज्जयिनी? कियत्यध्वनि सा? कीदृशं भारतं वर्षम्?'' इत्यशेषं पप्रच्छ। एवं विविधाभिश्च कथाभिः सुचिरं स्थित्वा उत्थाय कादम्बरी, केयूरकं चन्द्रापीडसमीपशायिनम् आदिश्य, शयनसौधशिखरम् आरुरोह। तत्र च सितदुकूलवितानतलास्तीर्णम् शयनम् अभजत्।** (2017 NG, 19 DC)

अथ अदर्शनम् ..... पप्रच्छ। (2017 NC)

अथदर्शनुपगते भगवति ..... आरुरोह। (2018 BG)

शब्दार्थ– अदर्शनम् उपगते = छिप जाने पर। गभस्तिमालिनि = किरणमाली सूर्य। गृहकुमुदिन्याः तीरे = घर की बावड़ी के किनारे। परिजनोपदिष्टम् = सेविकाओं द्वारा बताये गये। अधिशिश्ये = सो गया। आगत्य = आकर। कंचित् कालं = कुछ समय। स्थित्वा = ठहरकर। कृतप्रस्तावा = बातचीत करती हुई। कीदृशी = कैसी। कियत्यध्वनि = कितनी दूर। इत्यशेषम् = इस प्रकार सब। पप्रच्छ = पूछा। विविधाभिश्च = तरह-तरह की। समीपशायिनम् = समीप में सोने वाले। आदिश्य = आदेश देकर। शयनशौधशिखरम् = शयन करने के महल के ऊपरी भाग में। आरुरोह = चढ़ गयी। सितदुकूलवितानतलास्तीर्णम् = श्वेतमण्डप के नीचे बिछी हुई। शयनम् अभजत् = शैया को ग्रहण किया।

हिन्दी अनुवाद– भगवान सूर्य के अस्त हो जाने पर चन्द्रापीड ने घर की बावड़ी के किनारे चन्दन के रस से धुली तथा कादम्बरी की सेविकाओं से बतायी गयी शिला पर शयन किया। कादम्बरी ने मदलेखा के साथ वहाँ आकर कुछ देर ठहरकर इस प्रकार बातें कीं, ''राजा तारापीड कैसे हैं? देवी विलासवती कैसी हैं? आर्य शुकनास कैसे हैं? उज्जयिनी कैसी है? वह कितनी दूर है? भारतवर्ष कैसा है?'' इसके बाद उठकर कादम्बरी ने केयूरक को उसके पास सोने का आदेश दिया और वह स्वयं अपने शयन करने के लिए महल के ऊपरी हिस्से में चली गयी, वहाँ उसने श्वेत मंडप के नीचे बिछी हुई शय्या पर शयन किया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– कियत्यध्वनि = कियति + अध्वनि। इत्यशेषम् = इति + अशेषम्। सितदुकूलवितानतलास्तीर्णम् = सितं च यत् दुकूलं तस्य वितानः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' (उत्तरार्द्ध भाग) से उद्धृत है।

प्रश्न 2. चन्द्रापीडः कस्याः तीरे शिलापट्टम् अधिशिष्ये?
उत्तर– चन्द्रापीडः गृहकुमुदिन्याः तीरे शिलापट्टम् अधिशिष्ये।
प्रश्न 3. ''भगवति'' में कौन-सी विभक्ति एवं वचन है?
उत्तर– ''भगवति'' में सप्तमी विभक्ति एवं एकवचन है।
प्रश्न 4. कादम्बरी कुत्र आरुरोह?
उत्तर– कादम्बरी शयनसौधशिखरम् आरुरोह।
प्रश्न 5. ''शयनसौधशिखरम्'' का शाब्दिक अर्थ लिखिए।
उत्तर– 'शयनसौधशिखरम्' का शाब्दिक अर्थ है–शयन करने के लिए राजमहल के ऊपरी भाग पर।

➥ **चन्द्रापीडोऽपि तत्रैव शिलातले, निरभिमानताम् अतिगम्भीरतां च कादम्बर्याः, निष्कारणवत्सलतां महाश्वेतायाः, अतिसमृद्धिं च गन्धर्वराजलोकस्य मनसा भावयन्, केयूरकेण संवाह्यमानचरणः, क्षणादिव क्षणदां क्षपितवान्। अथ समुद्गते सवितरि, शिलातलात् उत्थाय चन्द्रापीडः प्रक्षालितमुखकमलः, कृतसन्ध्यानमस्कृतिः गृहीतताम्बूलः ''केयूरक! विलोकय, देवी कादम्बरी प्रबुद्धा वा न वा? क्व सा तिष्ठति?'' इत्यवोचत्। गतप्रतिनिवृत्तेन च तेन ''देव! मन्दरप्रासादस्य अधस्तात्, अङ्गणसौधवेदिकायां महाश्वेतया सह अवतिष्ठते'' इत्यावेदिते, ताम् आलोकितुम् आजगाम। दृष्ट्वा च कादम्बरीं समुपसृत्य, तस्यामेव सुधावेदिकायां विन्यस्तम् आसनं भेजे।**

(2019 DA)

शब्दार्थ– निरभिमानताम् = अभिमानहीनता। अतिगंभीरताम् = अत्यन्त गम्भीरता को। निष्कारणवत्सलताम् = निःस्वार्थ स्नेह को। अतिसमृद्धिं = अत्यन्त वैभव। मनसा भावयन् = मन में सोचते हुए। संवाह्यमानचरणः = जिसके पैर दबाये जा रहे हों। क्षणादिव = क्षणमात्र के समान। क्षणदां = रात्रि को। क्षपितवान् = बिता दिया। समुद्गते सवितरि = सूर्य निकलने पर। प्रक्षालितमुखकमलः = कमल जैसे मुख को धोने वाले। कृतसंध्यानमस्कृतिः = संध्यावन्दन करने वाले। गृहीतताम्बूलः = पान खाने वाले। विलोकय = देखो कि। प्रबुद्धा = जगी हुई। इत्यवोचत् = इस प्रकार कहा। गतप्रतिनिवृत्तेन = जाकर लौटने वाले। मन्दरप्रासादस्य = मन्दर महल के। अधस्तात् = नीचे। अङ्गणसौधवेदिकायाम् = महल के आँगन की वेदी पर। अवतिष्ठते = बैठी है। इत्यावेदिते = ऐसा निवेदन करने पर। आलोकितुम् = देखने के लिए। आजगाम = आया। समुपसृत्य = पास जाकर। सुधावेदिकायाम् = उज्ज्वल वेदी पर। विन्यस्तम् = रखे हुए। आसनम् भेजे = आसन को ग्रहण किया।

हिन्दी अनुवाद– चन्द्रापीड ने उसी शिला पर कादम्बरी की अभिमानहीनता तथा अत्यन्त गम्भीरता और महाश्वेता के निःस्वार्थ स्नेह तथा गन्धर्वराज चित्ररथ के वैभव को मन ही मन सोचते हुए केयूरक द्वारा पैर दबाये जाने से सारी रात को क्षण मात्र के समान बिता दिया। इसके पश्चात् सूर्योदय होने पर शिलातल से उठकर चन्द्रापीड ने हाथ-मुँह धोया, संध्यावंदन किया और पान खाकर केयूरक को आदेश दिया कि जाओ देखो देवी कादम्बरी जगी हैं या नहीं और वह इस समय कहाँ हैं? केयूरक वहाँ जाकर लौटा और बोला– राजकुमार! वह अन्दर महल के नीचे आँगन की वेदिका पर महाश्वेता के साथ बैठी हैं। उसके ऐसा कहने पर चन्द्रापीड उसे देखने के लिए आया और कादम्बरी के पास जाकर उसी वेदी पर रखे हुए आसन पर बैठ गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– संवाह्यमानचरणः = संवाह्यमानो चरणौ यस्य सः। प्रक्षालितमुखकमलः = (प्रक्षालितं मुखकमलं येन सः। कृतसंध्यानमस्कृतिः = कृता संध्यायाः नमस्कृतिः येन सः। इत्यवोचत् = इति + अवोचत्। इत्यावेदिते = इति + आवेदिते।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकं च नाम लिखत।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।
प्रश्न 2. ''केयूरक! विलोकय, देवी कादम्बरी प्रबुद्धा वा न वा? क्व सा तिष्ठति?'' इत्यवोचत्। रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– केयूरक! देखो, देवी कादम्बरी जगी हैं या नहीं तथा वे कहाँ हैं? इस प्रकार कहा।
प्रश्न 3. चन्द्रापीडः केन संवाह्यमानचरणः, क्षणादिव क्षणदां क्षपितवान्?
उत्तर– चन्द्रापीडः केयूरकेण संवाह्यमानचरणः क्षणादिव क्षणदां क्षपितवान्।

प्रश्न 4. चन्द्रापीडः शिलातलात् उत्थाय किम् अकरोत्?
उत्तर– चन्द्रापीडः शिलातलात् उत्थाय प्रक्षालितमुखकमलः कृतसन्ध्यानमस्कृतिः।
प्रश्न 5. कादम्बरी अङ्गणसौधवेदिकायां कया सह अवतिष्ठते?
उत्तर– कादम्बरी अङ्गणसौधवेदिकायां महाश्वेतया सह अवतिष्ठते।
प्रश्न 6. 'महाश्वेतया' में कौन-सी विभक्ति है?
उत्तर– 'महाश्वेतया' में तृतीया विभक्ति एकवचन है।
प्रश्न 7. 'गतप्रतिनिवृत्तेन' का शाब्दिक अर्थ लिखिए।
उत्तर– 'गतप्रतिनिवृत्तेन' का शाब्दिक अर्थ है–जाकर लौटे हुए।

➥ **स्थित्वा च कंचित् कालम् महाश्वेतायाः वदनं विलोक्य, मन्दस्मितम् अकरोत्। असौ तु तावतैव विदिताभिप्राया कादम्बरीम् अब्रवीत्–''सखि! जिगमिषति खलु कुमारः, पृष्ठतः राजचक्रम् अविदितवृत्तान्तं दुःखम् आस्ते। युवयोः दूरस्थितयोरपि कमलिनीकमलबान्धवयोरिव स्थिरेयं प्रीतिः आप्रलयात्। अतः अभ्यनुजानातु भवती'' इति। अथ कादम्बरी 'स्वाधीनोऽयं जनः कुमारस्य, कोऽत्रानुरोधः? इत्यभिधाय गन्धर्वकुमारान् आहूय, ''प्रापयत कुमारं स्वां भूमिम्'' इति आदिदेश। चन्द्रापीडोऽपि उत्थाय प्रणम्य प्रथमं महाश्वेताम्, ततः कादम्बरीम् ''देवि! किं ब्रवीमि? बहुभाषिणः न श्रद्दधाति लोकः। स्मर्तव्योऽस्मि परिजनकथासु'' इत्याभिधाय, कन्यकान्तःपुरात् निर्जगाम।** (2017 NI)

असौ तु तावतैव ..... कन्यकान्तःपुरात् निर्जगाम। (2018 BC)

शब्दार्थ– कंचित् कालम् = कुछ देर तक। वदनम् = मुख। विलोक्य = देखकर। मंदस्मितम् = हल्की मुस्कान्। अकरोत् = किया। तावतैव = तुरन्त ही। विदिताभिप्राया = अभिप्राय जानने वाली। जिगमिषति = जाना चाहता है। पृष्ठतः = पीछे। राजचक्रम् = राजपरिवार। अविदितवृत्तान्तम् = समाचार न जानने वाला। दुःखम् आस्ते = दुःखी है। युवयोः = तुम दोनों का। दूर स्थितयोः = दूर स्थित रहने वालों का। कमलिनीकमलबान्धवयोरिव = कमल की लता और सूर्य के समान। स्थिरेयम् = स्थिर है। आप्रलयात् = प्रलय तक। अभ्यनुजानातु = अनुमति दें। भवती = आप। स्वाधीन = अधीन हैं। अयम् जनः = यह व्यक्ति। कोऽत्रानुरोधः = इसमें अनुरोध कैसा? आहूय = बुलाकर। प्रापयत = पहुँचा दो। स्वां भूमिम् = अपने स्थान को। आदिदेश = आदेश दिया। बहुभाषिणः = बहुत बोलने वाले का। न श्रद्दधाति = नहीं श्रद्धा रखता है। स्मर्तव्योऽस्मि = स्मरण योग्य हूँ। परिजनकथासु = सखियों के वार्त्तालाप में। कन्यकान्तःपुरात् = कन्याओं के अन्तःपुर से। निर्जगाम = निकल गया।

हिन्दी अनुवाद– थोड़ी देर ठहरकर चन्द्रापीड ने महाश्वेता के मुख की ओर देखकर मुस्करा दिया। उसने उसके अभिप्राय को जानकर कादम्बरी से कहा–सखि, राजकुमार जाना चाहते हैं, सारा राजपरिवार इनका समाचार न मिलने से इनके पीछे दुःखी है। परस्पर दूर रहने वाले तुम दोनों का यह प्रेम कमल और सूर्य के प्रेम की भाँति प्रलयकाल तक दृढ़ रहे। अतः आप जाने की अनुमति प्रदान करें। कादम्बरी ने कहा– मैं तो कुमार के अधीन हूँ, अतः मुझसे अनुरोध की बात ही क्या है? ऐसा कहकर गन्धर्वकुमारों को बुलाकर उसने आदेश दिया कि कुमार को उनके स्थान पर पहुँचा दो। चन्द्रापीड ने उठकर पहले महाश्वेता और कादम्बरी को प्रणाम करते हुए कहा– देवि, क्या कहूँ? अधिक बोलने वाले पर लोग श्रद्धा नहीं रखते। सखियों से बातचीत करते समय मेरी भी याद कीजिएगा। ऐसा कहकर वह कन्याओं के महल से बाहर निकल गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– तावदैव (तावत् + एव) विदिताभिप्राया = (विदितः अभिप्रायः यया सा) स्थिरेयम् = (स्थिर + इयम्)।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।
प्रश्न 2. ''प्रापयत कुमारं स्वां भूमिम्'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– कुमार को उनके स्थान पर पहुँचा दो।
प्रश्न 3. कः महाश्वेतायाः वदनं विलोक्य, मन्दस्मितम् अकरोत्?
उत्तर– चन्द्रापीडः महाश्वेतायाः वदनं विलोक्य, मन्दस्मितम् अकरोत्।

प्रश्न 4. महाश्वेता कादम्बर्या का अब्रवीत्?

उत्तर– सखि! जिगमिषति खलु कुमारः, पृष्ठतः राजचक्रम् अविदितवृत्तान्तं दुःखम् आस्ते।

प्रश्न 5. कादम्बरी का अब्रवीत्?

उत्तर– कादम्बरी अब्रवीत् – ''स्वाधीनोऽयं जनः कुमारस्य, कोऽत्रानुरोधः।''

➥ **कादम्बरीवर्जम् अशेषः कन्यकाजनः तं व्रजन्तम् आबहिस्तोरणात् अनुवव्राज। निवृत्ते च कन्यकाजने, चन्द्रापीडः केयूरकेण उपनीतं वाजिनम् आरुह्य, गन्धर्वकुमारैः तैः अनुगम्यमानः, हेमकूटात् निर्गत्य, प्राप्य महाश्वेताश्रमम्, अच्छोदसरस्तीरे संनिविष्टम् इन्द्रायुधखुरपुटानुसारेणैव आगतम् आत्मनः स्कन्धावारम् अपश्यत्। निवर्तिताशेष-कुमाराश्च, सानन्देन सकुतूहलेन सविस्मयेन च स्कन्धावारजनेन प्रणम्यमानः स्वभवनं विवेश।** (2019 DF)

शब्दार्थ– कादम्बरीवर्जम् = कादम्बरी को छोड़। अशेषः = सम्पूर्ण। व्रजन्तम् = जाते हुए। आबहिस्तोरणात् = मुख्य द्वार तक। अनुवव्राज = पीछे-पीछे गयीं। निवृत्ते = लौटने पर। उपनीतम् = लाये गये। वाजिनम् = घोड़े पर। आरुह्य = सवार होकर। अनुगम्यमानः = अनुगमन किया गया। निर्गत्य = निकलकर। प्राप्य = पाकर, पहुँचकर। सन्निविष्टम् = स्थित। इन्द्रायुधखुरपुटानुसारेण = इन्द्रायुध के खुर के चिह्नों के अनुसार। आगतम् = आये हुए। आत्मनः = अपने। स्कन्धावारम् = सेना के पड़ाव को। अपश्यत् = देखा। निवर्तिताशेषकुमाराः = शेष सभी (गन्धर्व) कुमारों को लौटा देने वाले। सकुतूहलेन = कुतूहल के साथ। सविस्मयेन = विस्मय के साथ। स्कन्धावारजनेन = सेना के लोगों द्वारा। प्रणम्यमानः = प्रणाम किया गया। विवेश = प्रवेश किया।

हिन्दी अनुवाद– कादम्बरी को छोड़ सभी कन्याएँ जाते हुए चन्द्रापीड के पीछे-पीछे मुख्य द्वार तक गयीं। कन्याओं के लौट जाने पर चन्द्रापीड केयूरक द्वारा लाये गये घोड़े पर सवार होकर पीछे-पीछे चलने वाले गन्धर्व-कुमारों के साथ हेमकूट से निकलकर महाश्वेता के आश्रम में पहुँचा। वहाँ उसने इन्द्रायुध के खुर-चिह्नों को देखते हुए वहाँ तक पहुँचे और अच्छोद तालाब के किनारे स्थित अपनी सेना के पड़ाव को देखा। सभी गन्धर्व कुमारों को उसने लौटा दिया। सारी सेना ने आनन्द, कुतूहल और आश्चर्य के साथ उसे प्रणाम किया। इसके पश्चात् वह अपने घर में चला गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– इन्द्रायुधखुरपुटानुसारेण = इन्द्रायुधस्य खुरपुटस्य अनुसारेण। निवर्तिताशेषकुमाराः = निवर्तिताः अशेषाः कुमाराः येन सः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' (उत्तरार्द्ध भाग) से उद्धृत है।

प्रश्न 2. चन्द्रापीडः केन उपनीतं वाजिनम् आरूढः?

उत्तर– चन्द्रापीडः केयूरकेण उपनीतं वाजिनम् आरूढः।

प्रश्न 3. 'निवर्तिताशेषकुमाराश्च, सानन्देन सकुतूहलेन सविस्मयेन च स्कन्धावारजनेन प्रणम्यमानः स्वभवनं विवेश।' रेखांकित अंश का हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

उत्तर– सभी गन्धर्वकुमारों को (वापस) लौटाकर आनन्द, कौतुक और आश्चर्यपूर्वक स्कन्धावार (छावनी) में टिके हुए सैनिकों के द्वारा प्रणाम किये जाते हुए अपने भवन में प्रवेश किये।

प्रश्न 4. 'ब्रजन्तम्' का शाब्दिक अर्थ लिखिए।

उत्तर– 'ब्रजन्तम्' का शाब्दिक अर्थ है–'जाते हुए।'

➥ **तत्र च वैशम्पायनेन पत्रलेखया च सह, 'एवं महाश्वेता, एवं कादम्बरी, एवं मदलेखा, एवं केयूरकः' इत्यनयैव कथया दिवसम् अनैषीत्। तामेव कादम्बरीं चिन्तयतः जाग्रत एव सा जगाम रात्रिः। अपरेद्युश्च समुत्थिते भगवति रवौ, आस्थानमण्डपगतः सहसैव प्रतीहारेण सह प्रविशन्तं केयूरकं ददर्श। दूरादेव कृतप्रणामम् एनम् 'एहिएहि' इत्युक्त्वा गाढम् आलिङ्ग्य, आत्मनः समीपे एव समुपावेशयत्।**

शब्दार्थ– सह = साथ। एवं = इस प्रकार। इत्यनयैव = ऐसी ही। कथया = बातचीत द्वारा। अनैषीत् = बिताया। चिन्तयतः = चिन्ता करते हुए। जाग्रत एव = जागते हुए ही। जगाम = गयी, बीत गयी। अपरेद्युश्च = और दूसरे दिन। समुत्थिते = निकलने पर।

आस्थानमण्डपगतः = सभामंडप में गये हुए। सहसैव = अचानक। प्रतीहारेण सह = प्रतीहारी के साथ। प्रविशन्तं = प्रवेश करते हुए। कृतप्रणामम् = प्रणाम करने वाले को। एहि-एहि = आओ-आओ। गाढ़म् आलिङ्ग्य = भली-भाँति गले लगाकर। समुपावेशयत् = बिठाया।

हिन्दी अनुवाद– यहाँ वैशम्पायन और पत्रलेखा के साथ, महाश्वेता ऐसी है, कादम्बरी ऐसी है, मदलेखा ऐसी है, केयूरक ऐसा है– इस प्रकार की चर्चा में चन्द्रापीड ने दिन बिता दिया और कादम्बरी की चिन्ता में ही रात भी जागते ही बीत गयी। दूसरे दिन सूर्योदय होते ही सभामण्डप में आये हुए चन्द्रापीड ने अचानक प्रतीहारी के साथ प्रवेश करने वाले केयूरक को देखा। आओ-आओ कहते हुए उसे दूर ही से प्रणाम करने वाले केयूरक को चन्द्रापीड ने कसकर गले से लगा लिया और अपने समीप ही बिठा लिया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– इत्यनयैव = इति + अनया + एव। अपरेद्युश्च = अपरेद्युः + च। सहसैव = सहसा + एव। कच्चित् = कत् + चित्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. 'इत्यनयैव कथया दिवसम् अनैषीत्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– इस प्रकार की चर्चा में (चन्द्रापीड ने) दिन बिता दिया।

प्रश्न 3. चन्द्रापीडः केन सह दिवसम् अनैषीत्?

उत्तर– चन्द्रापीडः वैशम्पायनेन पत्रलेखया सह दिवसम् अनैषीत्।

प्रश्न 4. चन्द्रापीडः प्रतीहारेण सह प्रविशान्तं कं ददर्श?

उत्तर– चन्द्रापीडः प्रतीहारेण सह केयूरकं ददर्श।

प्रश्न 5. चन्द्रापीडः आत्मनः समीपे कं समुपावेशयत्?

उत्तर– चन्द्रापीडः आत्मनः समीपे केयूरकं समुपावेशयत्।

➥ **पप्रच्छ च– ''केयूरक! कथय, कच्चित् कुशलिनी ससखीजना देवी कादम्बरी भगवती महाश्वेता च'' इति। असौ तु ''अद्य कुशलिनी, याम् एवं देवः पृच्छति'' इत्यभिधाय, कादम्बरीप्रहितानि अभिज्ञानानि अदर्शयत्– मरकतहरिन्ति, व्यपनीतत्वञ्चि पूगीफलानि, शुककपोलपाण्डूनि ताम्बूलदलानि, मृगमदामोदमनोहरमलयजविलेपनं चेति। अब्रवीच्च– ''अञ्जलिना देवम् अर्चयति कादम्बरी, महाश्वेता च कुशलवचसा। नमस्कारेण च मदलेखा। संदिष्टं च तव महाश्वेतया।**

शब्दार्थ– पप्रच्छ = पूछा। कथय = कहो। कच्चित् = क्या। ससखीजना = सखियों के साथ। असौ = यह। याम् = जिसको। पृच्छति = पूछते हैं। प्रहितानि = भेजे गये। अभिज्ञानानि = पहचान चिह्नों को। अदर्शयत् = दिखाया। मरकतहरिन्ति = मरकत मणि जैसी हरी। व्यपनीतत्वञ्चि = छिलके रहित। पूगीफलानि = सुपाड़ी। शुककपोलपांडूनि = सुग्गे के कपोल जैसे पीले। ताम्बूलदलानि = पान के पत्ते। मृगमदामोद = कस्तूरी की गन्ध से युक्त। मनोहरमलयजविलेपनम् = मनोहर चन्दन का लेप। अब्रवीच्च = और कहा। अञ्जलिना = हाथ जोड़कर। कुशलवचसा = कुशल समाचार से। अर्चयति = अभिनन्दन करती है। संदिष्टम् = संदेश दिया है।

हिन्दी अनुवाद– और पूछा– ''केयूरक! बताओ, सखियों सहित कादम्बरी तथा देवी महाश्वेता कुशलपूर्वक हैं न? उसने कहा– राजकुमार, आप इस प्रकार जिनके बारे में पूछते हैं वह कुशलपूर्वक हैं। इसके पश्चात् उसने कादम्बरी द्वारा भेजे गये मरकतमणि जैसे हरे छिलके रहित पूगीफल (सुपाड़ी), सुग्गे के कपोल जैसे पीले पान तथा कस्तूरी की गन्ध युक्त चन्दन के लेप आदि स्मरण चिह्नों को दिखाया। उसने कहा कि देवी कादम्बरी ने हाथ जोड़कर, महाश्वेता ने कुशल प्रश्न द्वारा तथा मदलेखा ने प्रणाम द्वारा आपका अभिनन्दन किया है और देवी महाश्वेता ने आपको सन्देश दिया है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– कच्चित् = कत् + चित्। मृगमदामोदमनोहरमलयजविलेपनम् = मृगमदमोदेन मनोहरम् यत् मलयजस्य विलेपनम्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकं च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. **''केयूरक! कथय, कच्चित् कुशलिनी ससखीजना देवी कादम्बरी भगवती महाश्वेता च'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**

उत्तर– केयूरक! बताओ सखियों सहित कादम्बरी देवी महाश्वेता कुशलपूर्वक हैं न?

प्रश्न 3. **चन्द्रापीडः केन पप्रच्छ?**

उत्तर– चन्द्रापीडः केयूरकेन पप्रच्छ।

प्रश्न 4. **कादम्बर्या प्रहितानि किम् अदर्शयत्?**

उत्तर– कादम्बर्या प्रहितानि अभिज्ञानानि अदर्शयत्।

प्रश्न 5. **प्रतिहारी किम् अब्रवीत्?**

उत्तर– प्रतिहारी अब्रवीत् –''अञ्जलिना देवम् अर्चयति कादम्बरी, महाश्वेता च कुशलवचसा, नमस्कारेण च मदलेखा।''

➥ **''धन्या खलु ते येषां न गतोऽपि चक्षुषोर्विषयम्। स्पृहयन्ति खलु जनाः सर्वे व्यतीतदिवसाय। त्वया वियुक्तं विनिवृत्तमहोत्सवमिव वर्तते गन्धर्वराजनगरम्। जानासि च मां कृतसकलपरित्यागाम्। तथापि 'अकारणपक्षपातिनं भवन्तं द्रष्टुम् इच्छति मे हृदयम्।' अपि च बलवत् अस्वस्थशरीरा कादम्बरी। स्मरति च स्मेराननं स्मरकल्पं त्वाम्। अतः पुनरागमनेन अहसि इमां सम्भावयितुम्। अवश्यं सोढव्या चेयं कदर्थना कुमारेण। भवत्सुजनतैव जनयति अनुचिते संदेशप्रागल्भ्यम् इति, इत्युक्त्वा, एषः देवस्य शयनीये विस्मृतः हार प्रहितः'' इत्युत्तरीयपटान्तसंयत तत्सर्वं विमुच्य चामरग्राहिण्याः करे समर्पितवान्।**

धन्या खलु ते ..... कदर्थना कुमारेण। (2017 ND)

स्पृहयन्ति खलु जनाः ..... चेयं कदर्थना कुमारेण। (2018 BC)

शब्दार्थ– येषां = जिनके। चक्षुषोर्विषयम् = नेत्रों का विषय। गतोऽपि = हुए हो। स्पृहयन्ति = चाहते हैं। वियुक्तं = रहित। अलग। विनिवृत्तमहोत्सवमिव = बीते हुए महोत्सव के समान अर्थात् उदास। कृतसकलपरित्यागाम् = सबका परित्याग करने वाली। अकारणपक्षपातिनं = निःस्वार्थ पक्षपात करने वाले। द्रष्टुम् = देखने के लिए। बलवत् = बहुत अधिक। अस्वस्थशरीरा = रुग्ण। स्मेराननं = हंसता हुआ मुख। स्मरकल्पम् = कामदेव के समान। पुनरागमनेन = पुनः आगमन द्वारा। सम्भावयितुम् अहसि = सम्मानित करने योग्य हैं। सोढव्या = सहन करें। कदर्थना = कष्ट। भवत्सुजनतैव = आपकी सज्जनता ही। जनयति = उत्पन्न करती है। संदेशप्रागल्भ्यम् = संदेश भेजने की धृष्टता। शयनीये = बिस्तर पर। विस्मृतः = भूल हुआ। प्रहितः = भेजा है। उत्तरीयपटान्तसंयतम् = चद्दर के आँचल में बँधे। विमुच्य = खोलकर। समर्पितवान् = दे दिया।

हिन्दी अनुवाद– वे लोग धन्य हैं जिन्होंने अभी तक आपका दर्शन नहीं किया है। यहाँ के सभी लोग फिर उन्हीं बीते हुए दिनों की लालसा में पड़े हैं। आपके बिना गन्धर्वराज का नगर बीते हुए उत्सव के समान उदासी से भर गया है। आप जानते हैं कि मैंने सब कुछ छोड़ दिया है **फिर भी आपके प्रति निःस्वार्थ स्नेह रखने वाला मेरा हृदय आपको देखना चाहता है।** देवी कादम्बरी भी अधिक अस्वस्थ हो गयी हैं। वह कामदेव तुल्य आपके मुस्कान युक्त मुख का स्मरण करती रहती हैं, अतः अपने पुनः आगमन द्वारा उसे सम्मानित करें। आप इतना कष्ट अवश्य उठाएँ। आपकी सज्जनता ही इस अनुचित संदेश को भेजने की धृष्टता करा रही है। ऐसा कहकर उसने कहा कि आपके बिस्तर पर भूले हुए इस हार को उन्होंने भेजा है। इसके पश्चात् उसने दुपट्टे के आँचल में बँधी हुई सारी वस्तुओं को खोलकर चमर डुलाने वाली सेविका को समर्पित कर दिया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– चक्षुषोर्विषयम् = चक्षुषोः + विषयम्। गतोऽसि = गतः + असि। विनिवृत्तमहोत्सवमिव = विनिवृत्तमहा + उत्सवम् + इव। स्मेराननम् + स्मेः + आननम्। पुनरागमनेन = पुनः + आगमनेन।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. **उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।**

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. **'अकारणपक्षपातिनं भवन्तं द्रष्टुम् इच्छति मे हृदयम्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**

उत्तर– फिर भी आपके प्रति निःस्वार्थ स्नेह रखने वाला मेरा हृदय आपको देखना चाहता है।

प्रश्न 3. **'अकारण पक्षपातिनं भवन्तं द्रष्टुम् इच्छति मे हृदयम्।' केनोक्त?**

उत्तर– केयूरकेणोक्तः।

प्रश्न 4. अस्वस्थशरीरा का?
उत्तर– अस्वस्थशरीरा कादम्बरी।
प्रश्न 5. जनाः कस्यै स्पृहयन्ति?
उत्तर– जनाः व्यतीतदिवसाय स्पृहयन्ति।

➥ **चन्द्रापीडस्तु तत् सर्वं शिरसि कृत्वा, स्वयमेवजग्राह। तेन च विलेपनेन विलिप्य, कण्ठे हारम् अकरोत्। आगृहीतताम्बूलश्च मुहूर्तादिव उत्थाय, केयूरकद्वितीय एव मन्दुरां प्रविवेश। प्रविश्य च लीलामन्दं सकुतूहलम् उवाच– ''केयूरक! कथय, मन्निर्गमादारभ्य को वा वृतान्तो गन्धर्वराजकुले? केन वा व्यापारेण वासरम् अतिनीतवती गन्धर्वराजपुत्री? के वा अभवन् आलापाः परिजनस्य? आसीद्वा कच्चित् अस्मदाश्रयिणी कथा?'' इति।** (2020 ZP)

शब्दार्थ– शिरसि कृत्वा = सिर पर करके, सम्मान के साथ स्वीकार करके। जग्राह = ग्रहण किया। विलेपनेन = लेप द्वारा। विलिप्य = लेप करके। आगृहीतताम्बूलश्च = और पान खाकर। उत्थाय = उठकर। केयूरकद्वितीय = केयूरक के साथ। मन्दुराम् = घुड़साल में। प्रविवेश = प्रवेश किया। लीलामन्दम् = प्रसन्नता के साथ। मन्निर्गमादारभ्य = मेरे निकलने के समय से। व्यापारेण = कार्य द्वारा। वासरम् = दिन को। अतिनीतवती = बिताया। गन्धर्वराजपुत्री = कादम्बरी। के = कौन सी। अभवन् = हुई। आलापाः = बातें। अस्मदाश्रयिणी = मुझसे सम्बन्धित।

हिन्दी अनुवाद– चन्द्रापीड ने सारी वस्तुएँ आदर से स्वीकार करते हुए ले लीं। उसने चन्दन के लेप को शरीर पर लगा लिया और हार को गले में डाल लिया। पान खाकर थोड़ी ही देर में उठकर वह केयूरक के साथ ही घुड़साल में गया और प्रसन्नता तथा जिज्ञासा के साथ धीरे-धीरे बोला– केयूरक बताओ मेरे वहाँ से आने के समय से अब तक गन्धर्व राजकुल का क्या समाचार है? कादम्बरी ने किन कार्यों द्वारा दिन बिताया। सखियों के साथ कौन-सी बातें हुईं। क्या मुझसे सम्बन्धित कोई बात भी हुई थी?

व्याकरणात्मक टिप्पणी– कृत्वा = कृ + क्त्वा। मन्निर्गमादारभ्य = मत् + निर्गमात् + आरभ्य।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकं च नाम लिखत।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।
प्रश्न 2. ''केयूरक! कथय, मन्निर्गमादारभ्य को वा वृतान्तो गन्धर्वराजकुले? रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– केयूरक! बताओ, मेरे वहाँ से आने के समय से अब तक गन्धर्व राजकुल का क्या समाचार है?
प्रश्न 3. चन्द्रापीड कं स्वयमेव जग्राह?
उत्तर– चन्द्रापीडः कादम्बरी प्रहितानि अभिज्ञानानि स्वयमेव जग्राह।
प्रश्न 4. कः मन्दुरां प्रविवेश?
उत्तर– चन्द्रापीडः केयूरक द्वितीय एव मन्दुरां प्रविवेश।
प्रश्न 5. गन्धर्वराजपुत्री का आसीत्?
उत्तर– गन्धर्वराजपुत्री कादम्बरी आसीत्।

➥ **केयूरकस्तु सर्वम् सर्वम् आचचक्षे– ''देव श्रूयताम्– निर्गते त्वयि, देवी कादम्बरी सौधशिखरम् आरुह्य देवस्यैव गमनमार्गम् आलोकितवती। तिरोहितदर्शने च देवे, सखेदम् अवतीर्य, तमेव क्रीडापर्वतकम् आगतवती– यत्र स्थितवान् देवः। तम् उपेत्य च देवेन अत्र स्थितम् अत्र स्नातम् अत्र भुक्तम्, अत्र सुप्तम् इति देवस्यैव स्थानचिह्नानि पश्यन्ती क्षपितवती दिवसम्। दिवसावसाने च महाश्वेतायाः प्रयत्नात् तस्मिन्नेव मणिवेश्मनि आहारम् अकरोत्। अस्तमिते च भगवति रवौ, उदिते च चन्द्रमसि, तत्रैव कंचित् कालं स्थित्वा, शय्यागृहम् अगात्। तत्र प्रबलया शिरोवेदनया दारुणेन दाहज्वरेण च अभिभूयमाना, दुःखदुःखेन क्षणदाम् अनैषीत्। उषसि च माम् आहूय, देवस्य वार्तोपलम्भार्थम् आदिष्टवती'' इति।**

शब्दार्थ– आचचक्षे = बताया। श्रूयताम् = सुनिए। निर्गते त्वयि = तुम्हारे चले आने पर। सौधशिखरम् = महल की चोटी पर। आरुह्य = चढ़कर। गमनमार्गम् = जाने का रास्ता। आलोकितवती = देखती रही। तिरोहितदर्शने = आँखों से ओझल हो जाने पर। सखेदम् = कष्ट के साथ। अवतीर्य = उतरकर। क्रीडापर्वतकम् = क्रीडा के लिए बने पर्वत पर। आगतवती = आई। स्थितवान्

= ठहरे थे। उपेत्य = पहुँचकर। स्नातम् = स्नान किया था। भुक्तम् = भोजन किया था। स्थानचिह्नानि = स्थान चिह्नों को। पश्यन्ती = देखती हुई। क्षपितवती = बिताया। दिवसावसाने = सायंकाल। मणिवेश्मनि = मणिमहल में। आहारम् अकरोत् = भोजन किया। अस्तमिते = अस्त हो जाने पर। उदिते च चन्द्रमसि = चन्द्रमा के उदय हो जाने पर। कंचित् कालम् = कुछ देर। स्थित्वा = रुककर। शय्यागृहम् = सोने के घर में। अगात् = आई। शिरोवेदनया = सिर की पीड़ा से। दारुणेन = कठिन। दाहज्वरेण = दाह (जलन) ज्वर से। अभिभूयमाना = अभिभूत होकर। दुःखदुःखेन = दुःख के साथ। क्षणदाम् = रात को। अनैषीत् = बिताया। उषसि = उषाकाल में। माम् = मुझको। आहूय = बुलाकर। वार्तोपलम्भार्थम् = समाचार जानने के लिए। आदिष्टवती = आदेश दिया।

हिन्दी अनुवाद– केयूरक ने चन्द्रापीड को सभी बातें बतायीं। उसने कहा राजकुमार सुनिये– आपके वहाँ से निकलते ही देवी कादम्बरी महल के ऊपरी भाग में जाकर आपके जाने का रास्ता देखती रहीं। जब आप आँखों से ओझल हो गये तो वह कष्ट के साथ वहाँ से उतरकर उसी क्रीड़ा पर्वत पर आयीं जहाँ आप ठहरे थे। वहाँ पहुँचकर, आपने जहाँ विश्राम किया था, जहाँ स्नान किया था, जहाँ भोजन किया था, जहाँ शयन किया था– इस प्रकार आपके ही स्थान-चिह्नों को देखती हुई उन्होंने सारा दिन बिता दिया। सायंकाल महाश्वेता के प्रयत्न से उसी मणिमहल में उन्होंने भोजन किया। सूर्य के अस्त हो जाने तथा चन्द्रमा के निकल आने पर वहीं कुछ देर रुककर सोने के लिये घर में चली गईं। वहाँ सिर की तीव्र पीड़ा और भयंकर ज्वर के कारण बड़े कष्ट के साथ रात बिताई। उषाकाल में ही उन्होंने मुझे बुलाकर आपका समाचार जानने के लिए आदेश दिया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– दिवसावसाने = (दिवसस्य अवसाने)।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. ''उषसि च माम् आहूय, देवस्य वार्तोपलम्भार्थम् आदिष्टवती'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– उषाकाल में ही उन्होंने मुझे बुलाकर आपका समाचार जानने के लिए आदेश दिया।

प्रश्न 3. कः आचचक्षे?

उत्तर– केयूरकः आचचक्षे।

प्रश्न 4. का सौधशिखरम् आरुह्य देवस्यैव गमनमार्गम् आलोकितवती?

उत्तर– देवी कादम्बरी सौधशिखरम् आरुह्य देवस्यैव गमनमार्गम् आलोकितवती।

प्रश्न 5. कादम्बरी कस्य वार्तोपलम्भार्थम् आदिष्टवती?

उत्तर– कादम्बरी देवस्य (चन्द्रापीडस्य) वार्तोपलम्भार्थम् आदिष्टवती।

➥ **चन्द्रापीडः तत् आकर्ण्य जिगमिषुः अश्वः अश्वः इति वदन् भवनात् निर्ययौ। आरोपितपर्याणम् इन्द्रायुधम् आरुह्य, पश्चात् आरोप्य पत्रलेखाम्, वैशम्पायनं स्कन्धावारे स्थापयित्वा, अन्यतुरगारूढेन केयूरकेण अनुगम्यमानः हेमकूटं ययौ।**

शब्दार्थ– तत् = यह। आकर्ण्य = सुनकर। जिगमिषुः = जाने की इच्छा वाला। अश्वः अश्वः = घोड़ा-घोड़ा। वदन् = कहता हुआ। भवनात् निर्ययौ = घर से निकल पड़ा। आरोपित पर्याणम् = जीन कसे हुए। पश्चात् = पीछे। पत्रलेखाम् आरोप्य = पत्रलेखा को बिठाकर। स्कन्धावारे = शिविर में। स्थापयित्वा = नियुक्त करके। अन्यतुरगारूढ़ेन = दूसरे घोड़े पर सवार। ययौ = गया।

हिन्दी अनुवाद– यह सुनकर जाने के लिए उद्यत चन्द्रापीड घोड़ा-घोड़ा कहता हुआ घर से बाहर निकल पड़ा। जीन कसे हुए इन्द्रायुध पर सवार होकर अपने पीछे पत्रलेखा को बिठाकर तथा सेना के शिविर में वैशम्पायन को नियुक्त करके दूसरे घोड़े पर सवार होकर पीछे-पीछे आने वाले केयूरक के साथ हेमकूट को चल पड़ा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– आरोपितपर्याणम् = आरोपितम् पर्याणम् यस्मिन् तम्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकं च नाम लिखित।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. ''आरोपितपर्याणम् इन्द्रायुधम् आरुह्य हेमकूटं ययौ।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– जीन कसे हुए इन्द्रायुध पर सवार होकर हेमकूट को चल पड़ा।
प्रश्न 3. चन्द्रापीडः किं वदन् भवनात् निर्ययौ?
उत्तर– चन्द्रापीडः अश्व अश्व इति वदन् भवनात् निर्ययौ।
प्रश्न 4. चन्द्रापीडः केन अनुगम्यमानः हेमकूटं ययौ?
उत्तर– चन्द्रापीडः केयूरकेण अनुगम्यमानः हेमकूटं ययौ।
प्रश्न 5. चन्द्रापीडः कुत्र ययौ?
उत्तर– चन्द्रापीडः हेमकूटं ययौ।

➥ **आसाद्य कादम्बरीभवनद्वारम्, अवतीर्य द्वारपालार्पिततुरङ्गः कादम्बरीप्रथमदर्शनकुतूहलिन्या पत्रलेखया अनुगम्यमानः, प्रविश्य, ''क्व देवी कादम्बरी तिष्ठति?'' इति संमुखागतम् अन्यतमं वर्षवरम् अप्राक्षीत्। कृतप्रणामेन च तेन ''देव क्रीडापर्वतकस्य अधस्तात् कमलवनदीर्घिकातीरे विरचितं हिमगृहम् अध्यास्ते'' इत्यावेदिते केयूरकेण उपदिश्यमानवर्त्मा, हिमगृहस्य मध्यभागम् आससाद। तस्य च एकदेशे सखीकदम्बकपरिवृताम्, मृणालदण्डमण्डपिकायाः तले कुसुमशयनम् अधिशयानाम् कादम्बरी व्यलोकयत्।**

शब्दार्थ– आसाद्य = पहुँचकर। कादम्बरीभवनद्वारम् = कादम्बरी के महल के द्वार पर। अवतीर्य = उतरकर। द्वारपालार्पिततुरङ्ग = द्वारपाल को घोड़ा सौंपकर। कादम्बरी प्रथमदर्शन कुतूहलिन्या = कादम्बरी को पहले-पहल देखने के लिए उत्सुक। सम्मुखागतम् = सामने से आते हुए। अन्यतमम् वर्षवरम् = नपुंसक (राजभवनों की स्त्रियों के महलों में नपुंसक सेवक नियुक्त किये जाते थे।) अप्राक्षीत् = पूछा। कृतप्रणामेन = प्रणाम किये जाने पर। अधस्तात् = नीचे। कमलवनदीर्घिकातीरे = कमलवन की बावड़ी के किनारे। विरचितम् = बने हुए। हिमगृहम् = हिमगृह में। अध्यास्ते = विराजमान है। इत्यावेदिते = ऐसा निवेदन करने पर। उपदिश्यमानवर्त्मा = बताये गये मार्ग से। आससाद = पहुँचा। एकदेशे = एक भाग में। सखीकदम्बकपरिवृताम् = सखियों के समूह से घिरी हुई। मृणालदण्डमण्डपिकायाः = कमल के डण्ठल से बने छोटे मण्डप के। तले = नीचे। कुसुमशयनम् = फूलों की शय्या पर। अधिशयानाम् = सोई हुई। व्यलोकयत् = देखा।

हिन्दी अनुवाद– चन्द्रापीड ने कादम्बरी के महल के द्वार पर पहुँचकर घोड़े से उतरकर उसे द्वारपाल को सौंप दिया और कादम्बरी को पहले-पहल देखने के लिए उत्सुक पीछे-पीछे आने वाली पत्रलेखा के साथ महल के भीतर प्रवेश करके सामने से आते हुए एक नपुंसक सेवक से पूछा कि– देवी कादम्बरी कहाँ हैं? उसने प्रणाम करके कहा– राजकुमार! क्रीड़ा पर्वत के नीचे कमलवन की बावड़ी के किनारे बने हुये हिमगृह में विराजमान हैं। उसके ऐसा कहने पर केयूरक द्वारा बताये गये मार्ग से चन्द्रापीड हिमगृह के बीच में पहुँचा और उसने वहाँ एक स्थान पर सखियों से घिरी हुई तथा कमलदण्ड के बने छोटे-से मण्डप में फूलों की सेज पर सोई हुई कादम्बरी को देखा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– कादम्बरीभवनद्वारम् = कादम्बर्याः भवनस्य द्वारम्। द्वारपालार्पिततुरङ्गः = द्वारपालम् अर्पितः तुरङ्गः येन सः। कादम्बरीप्रथमदर्शनकुतूहलिन्या = कादम्बर्याः प्रथमदर्शनस्य कुतूहलिनी या तया। कमलवनदीर्घिकातीरे = कमलवनस्य या दीर्घिका तस्या तीरे। इत्यावेदिते = इति + आवेदिते।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।
प्रश्न 2. ''देव क्रीडापर्वतकस्य अधस्तात् कमलवनदीर्घिकातीरे विरचितं हिमगृहम् अध्यास्ते।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– राजकुमार! क्रीडापर्वत के नीचे कमलवन की बावड़ी के किनारे बने हुए हिमगृह में विराजमान हैं।
प्रश्न 3. चन्द्रापीडः कुत्रः आसीदत्?
उत्तर– कादम्बरी भवनद्वारम् आसीदत्।
प्रश्न 4. चन्द्रापीडः संमुखागतम् अन्यतमं वर्षवरं किम् अप्राक्षीत्?
उत्तर– चन्द्रापीडः अप्राक्षीत्—'क्व देवी कादम्बरी तिष्ठति'?

प्रश्न 5. चन्द्रापीडः कुत्र आससाद?
उत्तर– हिमगृहस्य मध्यभागम् आससाद।

➥ **अथ सा संमुखम् आपतन्तम् तं दूरादेव दृष्ट्वा कुसुमशयनात् उत्तस्थौ। चन्द्रापीडस्तु समुपसृत्य पूर्ववदेव तां महाश्वेताप्रणामपुरस्सरं दर्शितविनयः प्रणनाम। कृतप्रतिप्रणामायां च तस्यां स्मिन्नेव कुसुमशयने समुपविष्टायाम्, प्रतिहार्या समुपनीतां जाम्बूनदमयीम् आसन्दिकां पादेनैव उत्सार्य क्षितावेव उपविशत्।**

शब्दार्थ– आपतन्तम् = आते हुए। दूरादेव = दूर ही से। कुसुमशयनात् = फूल की सेज से। उत्तस्थौ = उठकर खड़ी हो गई। समुपसृत्य = पास जाकर। पूर्ववदेव = पहले जैसे ही। महाश्वेताप्रणामपुरस्सरम् = पहले महाश्वेता को प्रणाम करके। दर्शितविनयः = विनम्रता के साथ। प्रणनाम = प्रणाम किया। कृतप्रतिप्रणामायाम् = बदले में प्रणाम करने पर। समुपविष्टायाम् = बैठ जाने पर। समुपनीताम् = लाई गई। जाम्बूनदमयीम् = सोने की बनी हुई। आसन्दिकाम् = मञ्चिका को। पादेनैव = पैर से ही। उपविशत् = बैठ गया।

हिन्दी अनुवाद– कादम्बरी सामने से आने वाले चन्द्रापीड को दूर से ही देखकर फूल की सेज से उठ खड़ी हुई। चन्द्रापीड ने उसके पास जाकर पहले ही की तरह प्रथम महाश्वेता को प्रणाम किया, फिर बड़े आदर के साथ कादम्बरी को भी प्रणाम किया। प्रणाम के बदले प्रणाम करके जब कादम्बरी उसी फूल की सेज पर बैठ गई तो चन्द्रापीड भी प्रतीहारी द्वारा लाई गई सोने की मञ्चिका को पैर से हटाकर भूमि पर ही बैठ गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– दूरादेव = दूरात् + एव। पूर्ववदेव = पूर्ववत् + एव। पादेनैव = पादेन + एव।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकं च नाम लिखत।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।
प्रश्न 2. ''कृतप्रतिप्रणामायां च तस्यां स्मिन्नेव कुसुमशयने समुपविष्टायाम्।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– प्रणाम के बदले प्रणाम करके कादम्बरी उसी फूल की सेज पर बैठ गई।
प्रश्न 3. कादम्बरी कं सम्मुखम् आपतन्तम् दूरादेव दृष्ट्वा कुसुमशयनात् उत्तस्थौ?
उत्तर– कादम्बरी चन्द्रापीडं सम्मुखम् आपतन्तम् दूरादेव दृष्ट्वा कुसुमशयनात् उत्तस्थौ।
प्रश्न 4. चन्द्रापीडः कुत्र उपविशत्?
उत्तर– चन्द्रापीडः क्षिताम् उपविशत्।
प्रश्न 5. आसन्दिका कीदृशः आसीत्?
उत्तर– आसन्दिका जाम्बूनदमयीम् आसीत्।

➥ **अथ केयूरकः ''देवि! देवस्य चन्द्रापीडस्य प्रसादभूमिः एषा पत्रलेखा नाम ताम्बूलकरङ्कवाहिनी इत्याभिधाय पत्रलेखाम् अदर्शयत्। अथ कादम्बरी दृष्ट्वा तां ''अहो मानुषीषु पक्षपातः प्रजापतेः'' इति चिन्तयांबभूव। कृतप्रणामां च तां, सादरम् 'एह्येहि' इत्याहूय, आत्मनः समीपे समुपावेशयत्। दर्शनादेव उपारूढप्रीत्यतिशया च मुहुर्मुहुरेनाम् करतलेन पस्पर्श।**

शब्दार्थ– प्रसादभूमिः = कृपापात्र। तांबूलकरङ्कवाहिनी = पान का डिब्बा लेकर चलने वाली। अदर्शयत् = दिखाया। मानुषीषु = मनुष्य जाति की स्त्री पर। प्रजापतेः = ब्रह्मा का। चिन्तयांबभूव = विचारमग्न हो गई। कृतप्रणामा = प्रणाम करने वाली। एह्येहि = आओ-आओ। इत्याहूय = इस प्रकार बुलाकर। आत्मनः समीपे = अपने पास। समुपवेशयत् = बिठाया। दर्शनादेव = देखने के समय से ही। उपारूढप्रीत्यतिशया = अत्यधिक प्रेम के कारण। मुहुर्मुहुरेनाम् = बार-बार इसको। करतलेन = हाथ से। पस्पर्श = छुआ, सहलाया।

हिन्दी अनुवाद– इसके पश्चात् केयूरक ने पत्रलेखा को दिखाते हुए कहा– देवि! यह कुमार चन्द्रापीड की कृपापात्री पान का डिब्बा लेकर चलने वाली पत्रलेखा है। कादम्बरी उसे देखकर एक मानुषी के प्रति किये गये ब्रह्मा के पक्षपात के विषय में सोचने लगी। ब्रह्मा ने इसे कितना अलौकिक सौन्दर्य दिया जैसा कि मनुष्य जाति में नहीं होना चाहिए, इसी पर वह सोचने लगी। कादम्बरी ने उसे प्रणाम करती हुई पत्रलेखा को आदर के साथ आओ, आओ कहती हुई बुलाकर अपने पास बिठा लिया और उसे देखते ही उसके प्रति आकर्षित हो जाने के कारण प्रेमपूर्वक उसे बार-बार हाथ से स्पर्श किया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– एह्येहि = एहि + एहि। उपारूढप्रीत्यतिशया = उपारूढा अतिशया प्रीतिः यस्याः सा। मुहुर्मुहुरेनाम् = मुहुः + मुहुः + एनाम्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।
प्रश्न 2. 'अहो मानुषीषु पक्षपातः प्रजापतेः।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– अरे! ब्रह्मा ने मानुषी के प्रति कैसा पक्षपात किया है।
प्रश्न 3. पत्रलेखा का आसीत्?
उत्तर– चन्द्रपत्नी रोहिण्याः अवतारः चन्द्रापीडस्य च ताम्बूलकरङ्कवाहिनी आसीत्।
प्रश्न 4. केयूरकः काम् अदर्शयत्?
उत्तर– केयूरकः पत्रलेखाम् आदर्शयत्।
प्रश्न 5. कादम्बरी पत्रलेखां दृष्ट्वा का चिन्तयांबभूव?
उत्तर– कादम्बरी पत्रलेखां दृष्ट्वा 'अहो मानषीषु पक्षपातः प्रजापतेः' इतिचिन्तयांबभूव।

➥ **चन्द्रापीडस्तु तदवस्थां चित्ररथतनयाम् आलोक्य निपुणालापेन अपृच्छत्– ''देवि! जानामि कामरतिं निमित्तीकृत्य प्रवृत्तोऽयं व्याधिः। कुसुमेषु पीडया पतितां त्वाम् अवेक्ष्य दूयते मे हृदयम्। इच्छामि देहदानेनापि स्वस्थाम् अत्र भवतीम् कर्तुम्'' इति।** (2019 DD, 20 ZP)

शब्दार्थ– तदवस्थां = उस अवस्था में। चित्ररथतनयाम् = चित्ररथ की पुत्री कादम्बरी को। आलोक्य = देखकर। निपुणालापेन = चतुराईपूर्ण बातों से। अपृच्छत् = पूछा। जानामि = जानता हूँ। कामरतिम् = कामक्रीड़ा को। निमित्तीकृत्य = कारण बनाकर। प्रवृत्तोऽयं व्याधिः = यह रोग उत्पन्न हुआ है। अवेक्ष्य = देखकर। दूयते = दुःखी हो रहा है। देहदानेनापि = शरीर दान करके। कुसुमेषु पीडया = काम के बाणों की पीड़ा से।

हिन्दी अनुवाद– चन्द्रापीड ने कादम्बरी को उस अवस्था में देखकर चतुराई-पूर्ण बातचीत करते हुए कहा– देवि, मैं जानता हूँ कि तुममें कामक्रीड़ा के लिए ही यह रोग उत्पन्न हुआ है। कामबाणों की पीड़ा के कारण फूलों पर पड़ी हुई तुमको देखकर मेरा हृदय बहुत दुःखी हो रहा है। मैं अपना शरीर देकर भी आपको स्वस्थ करना चाहता हूँ।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– तदवस्थाम् = तत् + अवस्थाम्। प्रवृत्तोऽयं = प्रवृतः अयं। देहदानेनापि = देहदानेन + अपि।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकं च नाम लिखत।
अथवा अस्य गद्यांशस्य प्रणेता कः ?
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा अस्य लेखकः बाणभट्टः च अस्ति।'
प्रश्न 2. चन्द्रापीडः कस्य तनयां आलोक्य अपृच्छत्?
उत्तर– चन्द्रापीडः चित्ररथ तनयाम् आलोक्य अपृच्छत्।
प्रश्न 3. ''इच्छामि देहदानेनापि स्वस्थाम् कर्त्तुम्'' केन एवं कं प्रति उक्तः?
उत्तर– चन्द्रापीडेन एवं कादम्बरीं प्रति उक्तः, यत् इच्छामि देहदानेनापि स्वस्थाम् कर्त्तुम्।
प्रश्न 4. ''निपुणालापेन'' में कौन-सी विभक्ति है?
उत्तर– ''निपुणालापेन'' में तृतीया विभक्ति और एकवचन है।
प्रश्न 5. 'अवेक्ष्य' का शाब्दिक अर्थ लिखिए।
उत्तर– 'अवेक्ष्य' का शाब्दिक अर्थ है– 'देखकर'।

➥ **कादम्बरी तु तम् अशेषम् अस्य अव्यक्तव्यावहारसूचितम् अर्थं मनसा गृहीत्वापि शालीनताम् अवलम्बमाना तूष्णीमेव आसीत्। ततः मदलेखा प्रत्यवादीत्– ''कुमार! किं कथयामि? अस्याः खलु कुमारभावोपेतायाः दारुणोऽयम् अकथनीयः संतापः। मृणालिन्याः किसलयमपि हुताशनायते। ज्योत्स्नापि आतपायते। धीरत्वमेव प्राणसंधारणमस्याः'' इति।**

शब्दार्थ– अशेषम् = समस्त। अव्यक्तव्याहारसूचितम् = अप्रकट संकेत से सूचित होने वाले। अर्थम् = अभिप्राय को। मनसा गृहीत्वापि = मन में समझते हुए भी। अवलम्बमाना = आश्रय लेकर। तूष्णीमेव आसीत् = चुप रह गई। प्रत्यवादीत् = बोली। कुमारभावोपेतायाः = कुमार के ही भावों से युक्त। दारुणः = भयंकर। अकथनीयः = न कहने योग्य। मृणालिन्या = कमलिनी के। किसलयमपि = पत्ते भी। हुताशनायते = अग्नि जैसे गरम लगते हैं। ज्योत्स्नापि = चाँदनी भी। आतपायते = धूप जैसी लगती है। धीरत्वमेव = धैर्य ही प्राणसन्धारणमस्याः = इसके प्राणों को धारण करने वाला।

हिन्दी अनुवाद– कादम्बरी उसके अप्रकट व्यवहार से सूचित होने वाली सारी बात मन ही मन जानकर भी शिष्टता के कारण चुप रह गई। तब मदलेखा ने उत्तर दिया– कुमार! क्या कहूँ? कुमार की ही यादों में मग्न रहने वाली इस कादम्बरी का सन्ताप सहन करने योग्य नहीं है। कमल का पत्ता भी इसे अग्नि के समान जलाता है और चाँदनी भी धूप-सी लगती है। अब केवल धैर्य ही इसके प्राणधारण का एक मात्र सहारा है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– गृहीत्वापि = गृहीत्वा + अपि। प्रत्यवादीत् = प्रति + अवादीत्। किसलयमपि = किसलयम् + अपि। ज्योत्स्नापि = ज्योत्स्ना + अपि। धीरत्वमेव = धीरत्वम् + अपि।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश के पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश के पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।
प्रश्न 2. 'धीरत्वमेव प्राणसंधारणमस्याः।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– (केवल) धैर्य ही इसके प्राण धारण का एकमात्र सहारा है।
प्रश्न 3. कादम्बरी कस्य अव्यक्तव्यावहारसूचितम् अर्थ मनसा गृहीत्वापि तूष्णीमेव आसीत्?
उत्तर– कादम्बरी चन्द्रापीडस्य अव्यक्तव्यावहारसूचितम् अर्थ मनसा गृहीत्वापि तूष्णीमेव आसीत्।
प्रश्न 4. मदलेखा का प्रत्यवादीत्?
उत्तर– मदलेखा प्रत्यवादीत्–"कुमार! किं कथयामि? अस्या खलु कुमारभावोपेतायाः दारुणोऽयम् अकथनीयः संतापः।
प्रश्न 5. मृणालिन्याः किसलयमपि हुताशनायते काम्?
उत्तर– कादम्बरीं मृणालिन्याः किसलयमपि हुताशनायते।

➥ **चन्द्रापीडोऽपि उभयतः घटमानार्थतया संदेहदोलारूढेनैव चेतसा महाश्वेतया सह प्रीत्युपचतुराभिः कथाभिः महान्तं कालं स्थित्वा, महता यत्नेन मोचयित्वा आत्मानं स्कन्धावारगमनाय कादम्बरीभवनात् निर्ययौ।**

शब्दार्थ– उभयतः = दोनों ओर से। घटमानार्थतया = घटित होने वाली। बातों के कारण। सन्देहदोलारूढेनैव चेतसा = सन्देह के झूले पर चढ़े हुए मन से। प्रीत्युपचतुराभिः = प्रेम से बढ़ने वाली चतुराइयों से। कथाभिः = बात-चीत से। महान्तम् कालम् = बहुत देर तक। स्थित्वा = रुककर। महता यत्नेन = बड़े प्रयत्न से। मोचयित्वा = छुड़ाकर। आत्मानम् = अपने को। स्कन्धावारगमनाय = सेना शिविर में जाने के लिए। निर्ययौ = निकला।

हिन्दी अनुवाद– चन्द्रापीड भी दोनों ओर घटित होने वाली बातों के कारण सन्देहयुक्त हृदय से महाश्वेता के साथ प्रेम बढ़ाने वाली चतुराइयों से पूर्ण बातें करता हुआ बहुत देर तक ठहरने के पश्चात् बड़े प्रयत्न से स्वयं को वहाँ से मुक्त करके सेना-शिविर में जाने के लिए कादम्बरी के घर से निकला।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– प्रीत्युपचतुराभिः = प्रीति + उपचतुराभिः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।
प्रश्न 2. 'स्कन्धावारगमनाय कादम्बरीभवनात् निर्ययौ।' रेखाकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– सैनिकों के शिविर में जाने के लिए कादम्बरी के घर से निकला।
प्रश्न 3. संदेहदोलारूढेनैव चेतसा कः?
उत्तर– चन्द्रापीडः संदेहादोलारूढेनैव चेतसा।

प्रश्न 4. कादम्बरी भवनात् कः निर्ययौ?
उत्तर– कादम्बरीभवनात् चन्द्रापीडः निर्ययौ।
प्रश्न 5. 'चन्द्रापीडः' कुतः निर्ययौ?
उत्तर– चन्द्रापीडः कादम्बरीभवनात् निर्ययौ।

➥ **निर्गतं च तम् तुरङ्गमम् आरुरुक्षन्तं पश्चात् आगत्य केयूरकः अभिहितवान्– ''देव! मदलेखा विज्ञापयति– देवी कादम्बरी प्रथमदर्शनजनितप्रीतिः पत्रलेखाम्-निवर्त्यमानाम् इच्छति। पश्चात् यास्यति'' इति।**

शब्दार्थ– निर्गतम् = निकले हुए। तुरङ्गमम् आरुरुक्षन्तं = घोड़े पर सवार होने की इच्छा करने वाले। पश्चात् आगत्य = पीछे आकर। अभिहितवान् = कहा। विज्ञापयति = निवेदन करती है। प्रथमदर्शनजनितप्रीतिः = प्रथम दर्शन के कारण उत्पन्न होने वाले प्रेम के कारण। अनिवर्त्यमानाम् = लौटाना। यास्यति = जायेगी।

हिन्दी अनुवाद– कादम्बरी के महल से निकलकर घोड़े पर सवार होने वाले उस चन्द्रापीड के पीछे आकर केयूरक ने कहा– राजकुमार! मदलेखा ने निवेदन किया है कि पहले-पहल देखने के कारण स्नेहपूर्ण होकर देवी कादम्बरी पत्रलेखा को लौटाना नहीं चाहती हैं, वह पीछे (बाद में) जायेगी।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।
प्रश्न 2. ''देवी कादम्बरी प्रथमदर्शनजनितप्रीतिः पत्रलेखाम्-निवर्त्यमानाम् इच्छति।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– देवी कादम्बरी प्रथम दर्शन से उत्पन्न प्रीतिवाली होती हुई पत्रलेखा को (पीछे) लौटाना चाहती है।
प्रश्न 3. केयूरकः कम् अभिहितवान्।
उत्तर– केयूरकः तुरङ्गम् आरुरुक्षन्तं चन्द्रापीडम् अभिहितवान्।
प्रश्न 4. मदलेखा किं विज्ञापयति?
उत्तर– मदलेखा विज्ञापयति- ''देवी कादम्बरी प्रथमदर्शनजनितप्रीतिः पत्रलेखां-निवर्त्यमानाम् इच्छति।''
प्रश्न 5. चन्द्रापीडस्य पश्चात् कः आजगाम?
उत्तर– चन्द्रापीडस्य पश्चात् केयूरकः आजगाम।

➥ **तदाकर्ण्य चन्द्रापीडः ''धन्या पत्रलेखा, यामेवम् अनुगृह्णाति। दुर्लभो देवीप्रसादः। प्रवेश्यताम्'' इत्यभिधाय, स्कन्धावारम् आजगाम। प्रविशन्नेव पितुः समीपात् आगतं लेखहारकम् अद्राक्षीत्। धृततुरङ्गमश्च, प्रीतिविस्फारितेन चक्षुषा दूरादेव अपृच्छत्– ''अङ्ग! कच्चित् कुशली तातः सह सर्वेण परिजनेन? अम्बा च सर्वान्तःपुरैः'' इति।** (2017 NH)

शब्दार्थ– तदाकर्ण्य = यह सुनकर। अनुगृह्णाति = अनुग्रह करती हैं। देवीप्रसादः = देवी की कृपा। प्रवेश्यताम् = भीतर ले जाओ। इत्यभिधाय = ऐसा कहकर। आजगाम = आया। प्रविशन्नेव = प्रवेश करते ही। पितुः समीपात् = पिता के पास से। आगतम् = आये हुए। लेखहारकम् = पत्रवाहक को। अद्राक्षीत् = देखा। धृततुरङ्गमश्च = घोड़ा थाम लेने पर। प्रीतिस्फारितेन = प्रेम से फैली हुई। चक्षुषा = नेत्रों द्वारा। दूरादेव = दूर ही से। अपृच्छत् = पूछा। कच्चित् = क्या। सर्वेण परिजनेन = सभी परिजनों के साथ। अम्बा = माता। सर्वान्तःपुरैः = सभी अन्तःपुर के लोगों के साथ।

हिन्दी अनुवाद– यह सुनकर चन्द्रापीड ने कहा– पत्रलेखा धन्य है जिस पर कादम्बरी की ऐसी कृपा है, क्योंकि उसकी कृपा दुर्लभ है। पत्रलेखा को कादम्बरी के पास ले जाओ। ऐसा कहकर वह सेनाशिविर की ओर चल पड़ा। शिविर में प्रवेश करते ही उसने पिता के पास से आये हुए पत्रवाहक को देखा। सेवक द्वारा घोड़े को थाम लेने के बाद प्रेम से खुली आँखों द्वारा चन्द्रापीड ने दूर से ही पूछा–पिता जी सभी परिजनों के साथ तथा माता जी रनिवास में सभी रहने वालियों के साथ सकुशल हैं न।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– तदाकर्ण्य = तद् + आकर्ण्य। इत्यभिधाय = इति + अभिधाय। धृततुरङ्गमश्च = धृतः तुरंगमः यस्य स।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. ''धन्या पत्रलेखा, यामेवम् अनुगृह्णाति।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– पत्रलेखा धन्य है, जिस पर कादम्बरी इतना अनुग्रह करती है।

प्रश्न 3. का पत्रलेखाम् अनिवर्त्यमानाम् न इच्छति?

उत्तर– कादम्बरी पत्रलेखाम् अनिवर्त्यमानाम् न इच्छति।

प्रश्न 4. चन्द्रापीडः कुत्र आजगाम्?

उत्तर– चन्द्रापीडः स्कन्धावारम् आजगाम्।

प्रश्न 5. समीपात् आगतं कम् अद्राक्षीत्?

उत्तर– समीपात् आगतं लेखाहारकम् अद्राक्षीत्।

➥ **अथासौ उपसृत्य प्रणामानन्तरम् 'देव! यथाज्ञापयसि' इत्यभिधाय, लेखद्वितयम् अर्पयांबभूव। युवराजस्तु शिरसि कृत्वा स्वयमेव तत् उन्मुच्य पपाठ– ''स्वाति! उज्जयिनीतः परममाहेश्वरः महाराजः तारापीडः सर्वसम्पदाम् आयतनम् चन्द्रापीडम् उत्तमाङ्गे चुम्बन नन्दयति। कुशलिन्यः प्रजाः। कियानपि कालः भवतः दृष्टस्य गतः। बलवत् उत्कण्ठितं नः हृदयम्। ततः लेखवाचनविरतिरेव प्रयाणकालतां नेतव्या'' इति। शुकनासप्रेषिते द्वितीयेऽपि अमुमेवार्थम् अवाचयत्।**

शब्दार्थ– उपसृत्य = समीप में आकर। प्रणामानन्तरम् = प्रणाम करने के बाद। यथाज्ञापयसि = जैसी आज्ञा। इत्यभिधाय = ऐसा कहकर। लेखद्वितयम् = दो पत्र। अर्पयाम्बभूव = अर्पित किया। शिरसिकृत्वा = सिर पर धारण करके। उन्मुच्य = खोलकर। पपाठ = पढ़ा। उज्जयिनीतः = उज्जयिनी से। परममाहेश्वरः = बहुत बड़े शिवभक्त। सर्वसंपदाम् = सभी सम्पत्तियों के। आयतनम् = घर। उत्तमांगे = सिर पर। चुम्बन् = चुम्बन करते हुए। नन्दयति = प्रसन्न होते हैं। कुशलिन्यः = कुशलपूर्वक। कियानपिकालः = कितना समय। भवतः = आपके। दृष्टस्य = देखे हुए। गतः = बीत गया। बलवत् = अधिक। नः = हम लोगों का। लेखवाचनविरतिरेव = पत्र पढ़ते ही। प्रयाणकालताम् नेतव्या = प्रस्थान का समय समझना। शुकनासप्रेषिते = शुकनास द्वारा भेजे गए। द्वितीयेऽपि = दूसरे पत्र में भी। अमुमेवार्थम् = इसी आशय को। अवाचयत् = पढ़ा।

हिन्दी अनुवाद– इसके पश्चात् पत्रवाहक ने उसके समीप जाकर कहा– राजकुमार, आप जैसा कह रहे हैं, सभी कुशल हैं। ऐसा कहकर उसने दो पत्र अर्पित किए। राजकुमार ने उसे सिर लगाकर स्वयं खोलकर पढ़ा–''स्वस्ति, उज्जयिनी से परम शैव महाराज तारापीड सभी सम्पत्तियों से पूर्ण चन्द्रापीड के सिर का चुम्बन लेते हुए आनन्दित हो रहे हैं। सारी प्रजा सकुशल है। आपको देखे कितना समय बीत गया। हम लोगों का हृदय अत्यन्त उत्सुक है। अतः पत्र पढ़ने का समाप्तिकाल ही प्रस्थान का समय समझो अर्थात् पत्र पढ़ते ही प्रस्थान कर दो।'' शुकनास द्वारा भेजे गये दूसरे पत्र में भी इसी आशय को पढ़ा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– प्रणामानन्तरम् = प्रणाम + अनन्तरम्। इत्यभिधाय = इति + अभिधाय। शिरसिकृत्वा = शिरसि + कृ + क्त्वा।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. 'कियानपि कालः भवतः दृष्टस्य गतः।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– आपको देखे कितना समय बीत गया है।

प्रश्न 3. पत्रवाहकः कस्य समीपम् अगच्छत्?

उत्तर– पत्रवाहकः चन्द्रापीडस्य समीपम् अगच्छत्।

प्रश्न 4. लेखद्वितीयं कः अर्पयांबभूव?

उत्तर– पत्रवाहकः लेखद्वितीयम् अर्पयांबभूव।

प्रश्न 5. पत्रं केन उन्मुच्य पपाठ?
उत्तर– युवराज चन्द्रापीडः पत्रं उन्मुच्य पपाठ।

➥ **वैशम्पायनोऽपि समुपसृत्य लेख द्वितयम् अपरम् आत्मीयम् अस्मात् अभिन्नार्थम् अदर्शयत्। अथ 'यथाज्ञापयति तातः' इत्युक्त्वा, तथैव तुरगाधिरुढः प्रयाणपटहम् अवादयत्। समीपे स्थितं च महाबलाधिकृतं मेघनादनामानम् आदिदेश– ''भवता पत्रलेखया सह आगन्तव्यम्। नियतं च केयूरकः ताम् आदाय एतावतीं भूमिम् आगमिष्यति। तन्मुखेन च विज्ञाप्या देवी कादम्बरी। गरीयसी गुरोः आज्ञा इति कृत्वा गतोऽस्मि इदानीम् उज्जयिनीम्। स्मर्तव्योऽस्मि परिजनकथासु। जीवन पुनः देवीचरणारविन्दवन्दनानन्दम् अननुभूय न स्थायति चन्द्रापीडः'' इति। इत्यादिश्य तम् वैशम्पायनं स्कन्धावारभर नियुज्य स्वयं तथारुढ एव सैन्येनानुगम्यमानः तमेव लेखहारकम् उज्जयिनीमार्गम् पृच्छन् प्रतस्थे।**

शब्दार्थ– समुपसृत्य = पास आकर। अपरम् = दूसरे। आत्मीयम् = अपने। अस्मात् = उससे। अभिन्नार्थम् = अभिन्न अर्थ वाले। अदर्शयत् = दिखाया। तथैव = उसी प्रकार। तुरगाधिरूढः = घोड़े पर चढ़ते हुए। प्रयाणपटहम् = प्रस्थान का नगाड़ा। अवादयत् = बजवाया। महावलाधिकृतं = सेनापति को। आदिदेश = आज्ञा दी। भवता = आप द्वारा। आगन्तव्यम् = आइएगा। नियतम् = निश्चय ही। आदाय = लेकर। एतावतीं भूमिम् = यहाँ तक। आगमिष्यति = आएगा। तन्मुखेन = उसके मुख से। विज्ञाप्या = सूचित करना। गरीयसी = सबसे बड़ी है। गुरोः = पिता की। इति कृत्वा = ऐसा करके। गतोऽस्मि = चला गया हूँ। इदानीम् = इस समय। स्मर्तव्योऽस्मि = स्मरण करने योग्य हूँ। परिजनकथासु = परिजनों से बातचीत के प्रसंग में। जीवन् = जीवित रहते हुए। देवीचरणारविन्दवन्दनानन्दम् = देवी कादम्बरी के चरणों की वन्दना के आनन्द। अननुभूय = बिना अनुभव किए। न स्थास्यति = नहीं रहेगा। इत्यादिश्य = ऐसा आदेश देकर। स्कन्धावारभारे = शिविर के भार में। नियुज्य = नियुक्त करके। पृच्छन् = पूछते हुए। प्रतस्थे = प्रस्थान किया।

हिन्दी अनुवाद– वैशम्पायन ने भी चन्द्रापीड के पास जाकर उसी आशय के अपने दो पत्र उसे दिखाए। उसके पश्चात् पिता की जैसी आज्ञा ऐसा कहकर चन्द्रापीड ने घोड़े पर सवार होकर प्रस्थान का नगाड़ा बजवा दिया और अपने समीप ही स्थित सेनापति मेघनाद को आदेश दिया कि तुम पत्रलेखा के साथ आना। केयूरक उसे निश्चय ही यहाँ तक लेकर आयेगा। उसके द्वारा देवी कादम्बरी को सूचित करना कि पिता की आज्ञा सबसे बड़ी होती है। इसलिए मैं सम्प्रति उज्जयिनी चला गया हूँ। वह परिजनों से बातचीत के प्रसंग में मेरी याद करती रहेंगी। यदि यह चन्द्रापीड जीवित रहा तो देवी के चरणों की वन्दना के आनन्द का अनुभव किये बिना न रहेगा। उसे ऐसा आदेश देकर तथा सेनाशिविर का भार वैशम्पायन को सौंप कर स्वयं घोड़े पर सवार हो, सेना को साथ लिये, उसी पत्रवाहक से उज्जयिनी का मार्ग पूछते हुए प्रस्थान किया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– समुपसृत्य = सम + उपसृत्य। तथैव = तथा + एव। महाबलाधिकृतम् = महाबलम् + अधिकृतम्। तन्मुखेन = तत् + मुखेन। गतोऽस्मि = गतः + अस्मि। इत्यादिश्य = इति + आदिश्य।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।
प्रश्न 2. ''जीवन पुनः देवीचरणारविन्दवन्दनानन्दम् अननुभूय न स्थायति चन्द्रापीडः।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– यदि यह चन्द्रापीड जीवित रहा तो देवी के चरणों की वन्दना के आनन्द का अनुभव किये बिना न रहेगा।
प्रश्न 3. कः समुपसृत्य लेख द्वितीयम् आत्मीयम् अस्मात् अभिन्नार्थम् अदर्शयत्?
उत्तर– वैशम्पायनः समुपसृत्य लेख द्वितीयम् आत्मीयम् अस्मात् अभिन्नार्थम् अदर्शयत्।
प्रश्न 4. चन्द्रापीडस्य सेनापतिः कः आसीत्?
उत्तर– चन्द्रापीडस्य सेनापतिः मेघनादः आसीत्।
प्रश्न 5. चन्द्रापीडः मेघनादं किम् आदिदेश?
उत्तर– भवता पत्रलेखया सह आगन्तव्यम्।

➥ **क्रमेण च अतिप्रवृद्धपादपया वनगजपातितपादपपरिहारेण वक्रीकृतमार्गया पत्रसंकरकषायगिरिनदीजलया शून्यया दिवसम् अटव्या गत्वा, परिणतरविबिम्बे सन्ध्यारुणातपे वासरे रक्तचन्दनतरोः उपरि बद्धं सरसपिशितपिण्डनिभैः अलक्तकैः आर्द्रीकृतं महान्तं रक्तध्वजं दूरत एव ददर्श। तदभिमुखश्च कंचिदध्वानं गत्वा, केतकीसूचिखण्डपाण्डुरेण वनद्विरददन्तकपाटेन परिवृताम्, तोहतोरणेन सनाथीकृतद्वारदेशाम्, लोहमहिषेण अध्यासितशिलावेदिकाम्, निस्संस्कारतया यत्किंचनकारिणा खञ्जतया मन्दं मन्दं संचारिणा, बधिरतया संज्ञाव्यवहारिणा, लम्बोदरतया प्रभूताहारिणा, विस्फोटकव्रणबिन्दुभिः कल्माषितसकलशरीरेण क्षणमप्यमुक्तकालकम्बलखण्डेन जरद्द्रविडधार्मिकेण अधिष्ठितां चण्डिकावसतिम् अपश्यत्। तस्यामेव च आवासम् अरोचयत्।**

शब्दार्थ– क्रमेण = क्रम से। अतिप्रवृद्धपादपया = अत्यन्त बड़े-बड़े वृक्षों वाले। वनगजपातितपादपपरिहारेण = जंगली हाथियों द्वारा गिराये गये वृक्षों को बचाकर। वक्रीकृतमार्गया = टेढ़े-मेढ़े रास्तेवाली। पत्रसंकरकषायगिरिनदीजलया = पत्तों के मिलने से पहाड़ी नदियों के कसैले जलवाली। शून्यया = सूनसान। अटव्या = जंगल से। परिणतरविबिम्बे = सूर्यबिम्ब के बूढ़े हो जाने पर। सन्ध्यारुणातपे = सन्ध्याकालीन लाल धूप वाले। रक्तचन्दनतरोः = लाल चन्दन के वृक्ष के। उपरि बद्धम् = ऊपर बँधे हुए। सरसपिशितपिण्डनिभैः = रसदार मांस के लोथड़े के समान। अलक्तकैः = लाक्षा रस से। आर्द्रीकृतं = गीला किये। रक्तध्वजं = लाल पताका। ददर्श = देखा। तदभिमुखश्च = उसकी ओर। कंचिदध्वानम् = कुछ रास्ता। केतकी सूचिखण्डपाण्डुरेण = केवड़े के फूल जैसे पीले। वनद्विरददन्तकपाटेन = जंगली हाथियों के दांतों के किवाड़। परिवृताम् = घिरी हुई। लौहतोरणेन = लोहे के तोरण से। सनाथीकृतद्वारदेशाम् = जिसका दरवाजे का हिस्सायुक्त है। लौहमहिषेण = लोहे के भैंसे से। अध्यासित- शिलावेदिकाम् = युक्त है शिलावेदी जिसकी। निस्संस्कारतया = असंस्कृत (अपढ़) होने के कारण। यत्किंचनकारिणा = जो कुछ भी करने वाले। खञ्जतया = लँगड़ा होने के कारण। संचारिण = चलने वाले। बधिरतया = बहरा होने से। संज्ञाव्यवहारिणा = संकेत से बात करने वाले। लम्बोदरतया = बड़ा पेट होने से। प्रभूताहारिणा = अधिक भोजन करने वाले। विस्फोटकव्रणबिन्दुभिः = चेचक के दागों से कल्माषितसकलशरीरेण = काले शरीर वाले। क्षणमप्यमुक्तकालकम्बलखण्डेन = काले कम्बल के टुकड़े को क्षणभर को भी न छोड़ने वाले। जरत्द्रविडधार्मिकेण = बूढ़े द्रविड धार्मिक से। अधिष्ठताम् = युक्त। चण्डिकावसतिम् = चंडिका देवी का मंदिर। अपश्यत् = देखा। आवासम् अरोचयत् = ठहरना पसन्द किया।

हिन्दी अनुवाद– क्रमशः चलते-चलते चन्द्रापीड ने बड़े-बड़े पेड़ों वाले जंगली हाथियों द्वारा गिराये गये पेड़ों को बचाकर टेढ़े-मेढ़े रास्तों वाले तथा पत्तों के मिलने से पहाड़ी नदियों के कसैले जल वाले सूने जंगल में दिन भर चलकर सूर्य-बिम्ब के बूढ़े हो जाने तथा संध्या की लाल धूप फैल जाने पर (अर्थात् सूर्य डूबने के समय) लाल चन्दन के वृक्ष के ऊपर बँधे हुए तथा रसदार मांस के लोथड़े के समान लाक्षा रस से भिगोए हुए बहुत बड़े लाल झण्डे को दूर ही से देखा। उसकी ओर कुछ रास्ता तय करने के बाद उसने चण्डिका देवी के मन्दिर को देखा, जिसके किवाड़ केतकी फूल जैसे हाथी के दांत से बने थे, जिसका दरवाजा लोहे के तोरण से युक्त था, जिसके सामने शिला की वेदी पर लोहे का भैंसा बना हुआ था तथा जिसमें एक बूढ़ा द्रविड़ पुजारी बैठा हुआ था जो अपढ़ होने से स्वच्छन्दताचारी था, लंगड़ा होने से धीरे-धीरे चलने वाला था, बहरा होने से उससे संकेत द्वारा ही बात हो सकती थी तथा लम्बा पेट होने के कारण बहुत अधिक खाने वाला था। उसका सारा शरीर चेचक के दागों से काला हो गया था और जो क्षणमात्र के लिये भी काले कम्बल के टुकड़े को नहीं छोड़ता था। उसने वहीं ठहरना पसन्द किया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– वनगजपातितपादपपरिहारेण = वनानां गजाः तैः पातिताः पादपाः तेषाम् परिहारः तेन। वक्रीकृतमार्गया = वक्रीकृतः मार्गः यस्याः सा तया। पत्रसंकरकषायगिरिनदीजलया = पत्राणाम् संकरेण कषायम् गिरः नद्याः जलम् यस्याम् सा तया। परिणतरविबिम्बे = परिणतम् रविबिम्बकम् यस्याम् तस्याम्। केतकीसूचिखण्डपाण्डुरेण = केतक्याः सूचिखण्डः तद्वत् पांडुरः तेन। वनद्विरददन्तकपाटेन = वनद्विरदानाम् दन्तकपाटः तेन। सनाथीकृतद्वारदेशाम् = सनाथीकृतः द्वारदेशः यस्याः ताम्। अध्यासितशिलावेदिकाम् = अध्यासितां शिलावेदिका यस्याः ताम्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. **''विस्फोटकव्रणबिन्दुभिः कल्माषितसकलशरीरेण क्षणमप्यमुक्तकालकम्बलखण्डेन जरद्द्रविडधार्मिकेण अधिष्ठितां चण्डिकावसतिम् अपश्यत्।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**

उत्तर– चेचक के दागों से काले पड़े हुए शरीर वाले बूढ़े द्रविड़ धार्मिक के द्वारा आश्रित चण्डिका देवी मन्दिर को देखा।

प्रश्न 3. **चन्द्रापीडः दूरत एव किं ददर्श?**

उत्तर– चन्द्रापीडः महान्तं रक्तध्वजं दूरत एव ददर्श।

प्रश्न 4. **चन्द्रापीडः कंचिद ध्वानं गत्वा किम् अपश्यत्?**

उत्तर– चन्द्रापीडः कचिदध्वानं गत्वा चण्डिकावसितम् अपश्यत्।

प्रश्न 5. **चन्द्रापीडः कुत्र आवासम् अरोचयत्?**

उत्तर– चन्द्रापीडः चण्डिका देव्याः मन्दिरेषु आवासम् अरोचयत्।

➥ **अथावतीर्य तुरगात् प्रविश्य भक्तिप्रवेणेन चेतसा तां प्रणनाम। कृतप्रदक्षिणश्च पुनः प्रणम्य, प्रशस्तदेवतोद्देशदर्शनकुतूहलेन परिभ्रमन्, तं द्रविडधार्मिकम् अपश्यत्। न्यवारयच्च तेन सार्धम् प्रारब्धकलहान् उपहसतः स्वसैनिकान्। उपसान्त्वनैश्च कथमपि तं प्रशमम् उपनीय, क्रमेण जन्मभूमिम्, जातिम्, विद्याम्, कलत्रम्, अपत्यानि, विभवम्, वयःप्रमाणम्, प्रव्रज्यायाः कारणञ्च स्वयमेव पप्रच्छ।** (2017 NF)

शब्दार्थ– अथावतीर्य = इसके पश्चात् उतरकर। तुरगात् = घोड़े से। भक्तिप्रवेणेन = भक्ति से भरे हुए। चेतसा = हृदय से। प्रणनाम = प्रणाम किया। कृतप्रदक्षिणश्च = प्रदक्षिण करके। प्रशस्तदेवतोद्देश्यदर्शनकुतूहलेन = प्रशस्त देवता के उद्देश्य से दर्शन की उत्सुकता के कारण। परिभ्रमन् = घूमते हुए। न्यवारयच्च = और रोका। तेन सार्धम् = उसके साथ। प्रारब्धकलहान् = झगड़ने वाले। उपहसतः = हँसते हुए। स्वसैनिकान् = अपने सैनिकों को। उपशान्त्वनैः = समझा-बुझाकर। कथमपि = किसी प्रकार। प्रशमम् उपनीय = शान्त करके। कलत्रम् = स्त्री। अपत्यानि = संतान। विभवम् = सम्पत्ति। वयः प्रमाणम् = आयु। प्रव्रज्यायाः = संन्यास का। पप्रच्छ = पूछा।

हिन्दी अनुवाद– चन्द्रापीड ने घोड़े से उतरकर देवी के मन्दिर में जाकर भक्तिपूर्ण हृदय से प्रणाम किया। प्रदक्षिणा करके फिर प्रणाम करके प्रशस्त देवता के उद्देश्य से दर्शन की उत्सुकता में घूमते हुए उसने उस बूढ़े द्रविड़ धार्मिक को देखा और उसके साथ झगड़ा करते हुए तथा उसकी हँसी उड़ाते हुए अपने सैनिकों को रोका। उसे समझा-बुझाकर शान्त करके उसने उसकी जन्मभूमि, जाति, विद्या, स्त्री, सन्तान, सम्पत्ति, आयु तथा संन्यास लेने का कारण पूछा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– अथावतीर्य = अथ + अवतीर्य। न्यवारयच्च = न्यवारयत् + च। कथमपि = कथम् + अपि।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. **उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।**

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. **''न्यवारयच्च तेन सार्धम् प्रारब्धकलहान् उपहसतः स्वसैनिकान्।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**

उत्तर– उसके साथ कलह को आरम्भ करने वाले तथा (उसका) उपहास करते हुए अपने सैनिकों को रोका।

प्रश्न 3. **चन्द्रापीडः तुरगात् अवतीर्य भक्तिप्रवेण चेतसा कां प्रणनाम?**

उत्तर– चन्द्रापीडः तुरगात् अवतीर्य भक्तिप्रवेण चेतसा चण्डीदेवीं प्रणनाम।

प्रश्न 4. **प्रशस्तदेवतोद्देशदर्शनकुतूहलेन परिभ्रमन् चन्द्रापीडः कम् अपश्यत्।**

उत्तर– प्रशस्तदेवतोद्देशदर्शनकुतूहलेन परिभ्रमन् चन्द्रापीडः द्रविड़धार्मिकम् अपश्यत्।

प्रश्न 5. **चन्द्रापीडः द्रविडधार्मिकेन किं पप्रच्छ?**

उत्तर– चन्द्रापीडः द्रविडधार्मिकेन जन्मभूमिम्, जातिम्, विद्याम्, कलत्रम्, अपत्यानि, विभवम्, वयःप्रमाणम्, प्रव्रज्यायाः कारणञ्च पप्रच्छ।

➥ **पृष्टश्चासौ अवर्णयत् आत्मानम्। अतीतस्वशौर्यसौन्दर्यविभववर्णनावाचालेन तेन सुतराम् अरज्यत राजपुत्रः। कादम्बरीविरहातुरस्य तस्य तच्चरितं मनोविनोदनताम् अगात्। अस्तम् उपगते च भगवति सप्तसप्तौ, शाखावसक्तपर्याणेषु, पुरोनिखातकुन्तयष्टिसंयतेषु वाजिषु, दूरगमनखिन्ने परिकल्पितयामिके, सुषुप्सति सैनिकजने,**

चन्द्रापीडः परिजनेन एकदेशे संयतस्य इन्द्रायुधस्य पुरः परिकल्पितं शयनीयम् अगात् निषण्णस्य चास्य पस्पर्श दुःखासिका हृदयम्। अनुपजातनिद्र एव ताम् अनयत् निशाम्।

शब्दार्थ– पृष्टश्चासौ = पूछे जाने पर उसने। आत्मानम् = अपने को, अपने विषय में। अवर्णयत् = वर्णन किया। अतीतस्वशौर्यसौन्दर्यविभववर्णनावाचालेन = अपने अतीतकाल की वीरता, सुन्दरता, सम्पत्ति आदि को खूब बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन करने वाले। तेन = उससे। सुतराम् = अत्यन्त। अरज्यत = प्रसन्न हुआ। कादम्बरीविरहातुरस्य = कादम्बरी के विरह से व्याकुल। तच्चरितम् = उसका चरित्र। मनोविनोदनताम् = मनोरंजन करने वाला। अगात् = पहुँच गया, हो गया। अस्तमुपगते = अस्त हो जाने पर। सप्तसप्तौ = सूर्य के। शाखावसक्तपर्याणेषु = जिनकी जीनें डालियों पर लटका दी गई हों। पुरोनिखातकुन्तयष्टिसंयतेषु = सामने गाड़े गये भालों के डंडे में बँधे हुए। दूरगमनखिन्ने = बहुत दूर चलने से थके हुए। परिकल्पितयामिके = बिस्तर लगाकर। सुषुप्सति सैनिकजने = सैनिकों के सो जाने पर। परिजनेन = सेवकों द्वारा। एकदेशे = एक स्थान पर। संयतस्य = बँधे हुए। पुरः = सामने। परिकल्पितम् = लगाये गये। शयनीयम् = बिस्तर पर। अगात् = आया। निषण्णस्य = बैठ जाने के लिए। पस्पर्श = स्पर्श किया। दुःखासिका = चिंता। अनुपजातनिद्रः = बिना नींद आए, जागते ही, निशाम् अनयत् = रात बिता दी।

हिन्दी अनुवाद– चन्द्रापीड से पूछे जाने पर उस द्रविड़ ने अपना वर्णन किया। उसने अपने अतीत की वीरता, सुन्दरता और सम्पत्ति का इतना बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया कि उससे राजकुमार को बहुत आनन्द हुआ। कादम्बरी के विरह में व्याकुल राजकुमार के लिए उसका चरित्र मनोरंजन की सामग्री बन गया। सूर्यास्त होने पर घोड़ों की जीनें डालियों पर लटकाकर और सामने गड़े हुए भालों के डण्डों में घोड़ों को बाँधकर जब दूर से आने के कारण थके हुए सैनिक बिस्तर लगाकर सोने लगे तब चन्द्रापीड भी बँधे हुए इन्द्रायुध के सामने एक स्थान पर सेवक द्वारा लगाये गये बिस्तर पर पहुँचा। वहाँ बैठते ही उसके हृदय में चिन्ता उत्पन्न हो गई जिससे उसने सारी रात जागते ही बिता दी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– पृष्टश्चासौ = पृष्टः + च + असौ। कादम्बरीविरहातुरस्य = कादम्बर्याः विरहेण आतुरस्य। तच्चरितम् = तत् + चरितम्। शाखावसक्तपर्याणेषु = शाखासु अवसक्तानि पर्याणि येषाम् तेषु।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. ''अस्य पस्पर्श दुःखासिका हृदयम्।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– उनके हृदय को दुःख की अनुभूति ने स्पर्श किया।

प्रश्न 3. चन्द्रापीडेन पृष्टः कः आत्मानम् अवर्णयत्?

उत्तर– चन्द्रापीडेन पृष्टः द्रविडधार्मिकः आत्मनम् अवर्णयत्।

प्रश्न 4. कादम्बरीविरहातुरः कः आसीत्?

उत्तर– कादम्बरीविरहातुरः चन्द्रापीडः आसीत्।

प्रश्न 5. चन्द्रापीडः कस्य चरित वर्णनं श्रुत्वा मनोविनोदम् अकरोत्?

उत्तर– चन्द्रापीडः जरद्द्रविड धार्मिकस्य चरित वर्णनं श्रुत्वा मनोविनोदम् अकरोत्।

➥ **उषसि च उत्थाय तस्य जरद्द्रविडधार्मिकस्य मनोरथं धनविसरैः पूरयित्वा, रमणीयेषु प्रदेशेषु कृतवसतिः अल्पैरेवाहोभिः उज्जयिनीम् आजगाम। तत्र पौराणां नमस्काराञ्जलिसहस्राणि प्रतीच्छन् विवेश नगरीम्। दृष्ट्वा च पितरं दूरादेव अवतीर्य वाजिनः मौलिना महीम् अगच्छत्। अथ प्रसारितभुजेन 'एह्येहि' इत्याहूय, पित्रा सुचिरं गाढम्, उपगूढः, करे गृहीत्वा विलासवतीभवनम् अनीयत राज्ञा। तयापि तथैव प्रत्युद्गम्य अभिनन्दितागमनः दिग्विजयसंबद्धाभिरेव कथाभिः कंचित् कालं स्थित्वा, शुकनासं द्रष्टुम् आययौ। तत्रापि अमुनैव क्रमेण सुचिरं स्थित्वा, निवेद्य वैशम्पायनं स्कन्धावारवर्तिनं कुशलिनम् आलोक्य च मनोरमाम् आगत्य विलासवतीभवने एव सर्वाः स्नानादिकाः क्रियाः निरवर्तयत्।**

शब्दार्थ– उषसि = प्रातःकाल। उत्थाय = उठकर। जरद्द्रविडधार्मिकस्य = बूढ़े द्रविड़ धार्मिक का। धनविसरैः = धनराशि से। पूरयित्वा = पूर्ण करके। कृतवसतिः = निवास करने वाला। अल्पैरेवाहोभिः = थोड़े ही दिनों में। आजगाम = आया। पौराणाम् = नगरवासियों के। नमस्कारांजलिसहस्राणि = हजारों नमस्कारों को। प्रतीच्छन् = स्वीकार करते हुए। विवेश = प्रवेश किया। दूरादेव

= दूर ही से। अवतीर्य = उतरकर। वाजिनः = घोड़े से। मौलिना = सिर से। महीम् अगच्छत् = पृथ्वी पर पहुँचा, सिर झुकाकर प्रणाम किया। प्रसारितभजेन = भुजा फैलाकर। ऐह्येहि = आओ-आओ। इत्याहूय = इस प्रकार बुलाकर। पित्रा = पिता द्वारा। सुचिरम् = देर तक। गाढम् उपगूढः = दृढ़ आलिंगन करने के बाद। करे गृहीत्वा = हाथ पकड़कर। अनीयत् = ले जाया गया। राज्ञा = राजा द्वारा। प्रत्युद्गम्य = आगे बढ़कर। अभिनन्दितागमनः आगमन का स्वागत किया है। द्रष्टुम् आययौ = देखने के लिए आया। तत्रापि = वहाँ भी। अमुनैवक्रमेण = उसी क्रम से। सुचिरं स्थित्वा = देर तक रुककर। निवेद्य = निवेदन करके। स्कन्धावारवर्तिनं = शिविर में स्थित। कुशलिनम् = कुशलपूर्वक। आलोक्य = देखकर। आगत्य = आकर। निरवर्तयत् = पूरा किया।

हिन्दी अनुवाद– चन्द्रापीड प्रातःकाल उठकर उस बूढ़े द्रविड़ धार्मिक की अभिलाषा धन से पूरी करके रमणीय स्थानों में ठहरता हुआ थोड़े ही दिनों में उज्जयिनी आ गया, वहाँ हजारों नागरिकों की प्रणामाञ्जलि स्वीकार करते हुए उसने नगर में प्रवेश किया। उसने पिता को देखकर दूर ही से घोड़े से उतरकर मस्तक से भूमि का स्पर्श करते हुए प्रणाम किया। अपनी भुजाएँ फैलाकर पिता ने आओ-आओ कहते हुए उसका दृढ़ आलिंगन किया और हाथ पकड़कर राजा उसे विलासवती के महल में ले गया। उसने भी (विलासवती ने) उसी प्रकार उठकर उसके आगमन का स्वागत किया। देर तक दिग्विजय सम्बन्धी बातें करता हुआ कुमार वहाँ रुका रहा फिर शुकनास को देखने आया। वहाँ भी उसी क्रम से देर तक रुककर वैशम्पायन सेनाशिविर में ही है, ऐसा निवेदन करके मनोरमा का दर्शन किया और विलासवती के महल में आकर स्नानादि की सारी क्रियाएँ पूरी कीं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– कृतवसतिः (कृता वसतिः येन सः), निवास करने वाला। अल्पैरेवाहोभिः = (अल्पैः + एव + आहोभिः)।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक बाणभट्ट हैं।

प्रश्न 2. ''तत्र पौराणां नमस्काराञ्जलिसहस्राणि प्रतीच्छन् विवेश नगरीम्।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– नगरवासियों के हजारों प्रणामाञ्जलियों को स्वीकार करते हुए उज्जयिनी नगरी में प्रवेश किया।

प्रश्न 3. चन्द्रापीडः जरद्द्रविडधार्मिकस्य मनोरथं कैः अपूरयत्?

उत्तर– चन्द्रापीडः जरद्द्रविडधार्मिकस्य मनोरथं धनविसरैः अपूरयत्।

प्रश्न 4. चन्द्रापीडः कुत्र आजगाम?

उत्तर– चन्द्रापीडः उज्जयिनीम् आजगाम।

प्रश्न 5. चन्द्रापीडः कं द्रष्टुम् आययौ?

उत्तर– चन्द्रापीडः शुकनासं द्रष्टुम् आययौ।

➥ **अपराह्णे निजमेव भवनम् अयासीत्। तत्र च रणरणकखिद्यमानमानसः, कादम्बर्या विना न केवलम् अवन्तिनगरम् सकलमेव महीमण्डलम् शून्यम् अमन्यत। ततः गन्धर्वराजपुत्रीवार्ताश्रवणोत्सुकः पत्रलेखाया आगमनं प्रत्यपालयत्। कतिपयदिवसापगमे च मेघनादः पत्रलेखाम् आदाय आगच्छत्, कृतनमस्कारां च ताम् दूरादेव स्मितेन प्रकाशितप्रीतिः अब्रवीत् ''पत्रलेखे! कथय-तत्रभवत्याः महाश्वेतायाश्च देव्या कादम्बर्याः कुशलम्? कुशली वा सकलः परिजनः'' इति। सा अब्रवीत्–''देव! यथाज्ञापयसि, भद्राम्। त्वाम् अर्चयति शेखरकृताञ्जलिना कादम्बरी'' इत्येवम् उक्तवतीम् पत्रलेखाम् आदाय, मन्दिराभ्यन्तरं विवेश।**

(2018 BD, 19 CZ)

अथवा कतिपयदिवसापगमे ..... मन्दिराभ्यन्तरं विवेश। (2019 DD)

शब्दार्थ– अपराह्णे = दोपहर के बाद। अयासीत् = आया। रणरणकखिद्यमानमानसः = चिन्ता से दुःखी हृदय वाला। कादम्बर्या विना = कादम्बरी के बिना। सकलमेव = संपूर्ण। महीमण्डलम् = पृथ्वी को। शून्यम् = सूनसान। अमन्यत = समझ लिया। गन्धर्वराजपुत्रीवार्ताश्रवणोत्सुकः = कादम्बरी का समाचार सुनने के लिए उत्सुक। आगमनम् = आने की। प्रत्यपालयत् = प्रतीक्षा करने लगा। दिवसापगमे = कुछ दिन बीतने पर। आदाय = लेकर। कृतनमस्काराम् = नमस्कार करने वाली। स्मितेन = मुस्कान से। प्रकाशितप्रीतिः = प्रेम प्रकट करते हुए। अब्रवीत् = कहा। कथय = बताओ। तत्र भवत्याः = देवी। परिजनः = सेवकवर्ग, सखियाँ। भद्रम् = कल्याण है। अर्चयति = पूजा करती है। शेखरकृताञ्जलिना = सिर पर अंजलि करके। उक्तवतीम् = कहने वाली की।

आदाय = लेकर। मन्दिराभ्यन्तरम् = मन्दिर के भीतर। विवेश = प्रवेश किया।

हिन्दी अनुवाद– दोपहर के बाद चन्द्रापीड अपने महल में आया। वहाँ कादम्बरी की चिन्ता में खिन्न हृदय चन्द्रापीड को कादम्बरी के बिना केवल उज्जयिनी ही नहीं बल्कि सारी दुनिया शून्य प्रतीत होने लगी। वह कादम्बरी का समाचार सुनने के लिए पत्रलेखा की प्रतीक्षा करने लगा। कुछ दिन बीतने पर मेघनाद पत्रलेखा को लेकर आया। अपनी मुस्कान द्वारा चन्द्रापीड ने दूर ही से नमस्कार करने वाली पत्रलेखा के प्रति प्रेम प्रकट करते हुए कहा– पत्रलेखा! बताओ देवी कादम्बरी तथा उसके सारे परिजन कुशलपूर्वक हैं न? उसने कहा– जैसा आप कह रहे हैं, सब कुशल हैं। देवी कादम्बरी हाथ जोड़कर सिर पर लगाते हुए तुम्हें नमस्कार करती हैं। इस प्रकार कहती हुई पत्रलेखा को लेकर चन्द्रापीड ने महल में प्रवेश किया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– गन्धर्वराजपुत्रीवार्ताश्रवणोत्सुकः = (गन्धर्वराज्ञः पुत्री तस्याः वार्ता तां श्रवणाय उत्सुकः यः सः)।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपरोक्त गद्यांशः केन विरचित पुस्तकात् उद्धृतः?

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशः बाणभट्टेन विरचित 'चन्द्रापीडकथाः' (उत्तरार्द्ध भाग) उद्धृतः।

प्रश्न 2. 'चन्द्रापीडः कस्य कुशलम् अपृच्छत्?

उत्तर– चन्द्रापीडः महाश्वेतायाश्च देव्या कादम्बर्याः कुशलम् अपृच्छत्।

प्रश्न 3. चन्द्रापीडः अपराह्णे कुत्र अयासीत्?

उत्तर– चन्द्रापीडः अपराह्णे निजमेव भवनम् अयासीत्।

प्रश्न 4. कया बिना न केवलम् भवन्तिनगरम् सकलमेव महीमण्डलम् शून्यम् अमन्यत्।

उत्तर– कादम्बर्या बिना न केवलम् अवन्तिनगरम् सकलमेव महीमण्डलम् शून्यम् अमन्यत्।

प्रश्न 5. चन्द्रापीडः कस्याः आगमनं प्रत्यपालयत्?

उत्तर– चन्द्रापीडः पत्रलेखायाः आगमनं प्रत्यपालयत्।

प्रश्न 6. पत्रलेखाम् आदाय कः आगच्छत्?

उत्तर– मेघनादः पत्रलेखाम् आदाय आगच्छत्।

प्रश्न 7. चन्द्रापीडः काम् आदाय मन्दिराभ्यान्तरं विवेश?

उत्तर– चन्द्रापीडः पत्रलेखाम् आदाय मन्दिराभ्यान्तरं विवेश।

प्रश्न 8. ''त्वाम् अर्चयति शेखरकृताञ्जलिना कादम्बरी'' इत्येवम् उक्तवतीम् पत्रलेखाम् आदाय, मन्दिराभ्यन्तरं विवेश।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– अञ्जलि को शिरोभूषण बनाकर अर्थात् हाथ जोड़कर सिर पर रखती हुई देवी कादम्बरी आपकी पूजा (नमस्कार) करती है, इस प्रकार कहती हुई पत्रलेखा को लेकर (चन्द्रापीड) राजमहल के भीतर प्रवेश किये।

प्रश्न 9. ''त्वाम्'' में कौन-सी विभक्ति है?

उत्तर– ''त्वाम्'' में द्वितीया विभक्ति एकवचन है।

प्रश्न 10. ''स्मितेन'' का शाब्दिक अर्थ लिखिए।

उत्तर– 'स्मितेन' का शाब्दिक अर्थ है- 'मन्दहास्य से' (मुस्कान से)।

➥ **उपविश्य च तत्र अप्राक्षीत्– ''पत्रलेखे! कथय, कथमसि स्थिता? कियन्ति वा दिनानि? कीदृशो वा देवी प्रसादः? का वा गोष्ठ्यः समभवन्? को वा अतिशयेन अस्मान् स्मरति?'' इति। इत्येवं पृष्टा व्यजिज्ञपत्– ''देव! श्रूयताम्– ततः खल्वागते देवे केयूरकेण सह प्रतिनिवृत्त्याहम् तथैव कुसुमशयनसमीपे समुपाविशम्। अतिष्ठं च सुखं नवनवान् अनुभवन्ती देवीप्रसादान्। अपराह्णे च मामेव अवलम्ब्य संचरन्ती प्रमदवनवेदिकाम् अध्यारोहत्। तस्यां च मणिस्थूणावष्टम्भा स्थिता। स्थित्वा च मुहूर्तमिव किमपि व्याहर्तुम् इच्छन्ती निःस्पन्दपक्ष्मणा चक्षुषा मुखं मे सुचिरं व्यलोकयत्। अथ मया विदिताभिप्रायया 'आज्ञापय' इति विज्ञापिते, लज्जाकलितगद्गदा, कथमपि व्याहाराभिमुखम् आत्मानम् अकरोत्। अब्रवीच्च माम्– ''पत्रलेखे दर्शनात् प्रभृति प्रियासि। न जाने केन कारणेन त्वयि विश्वसिति मे हृदयम्। अहं तावत् न संकल्पित पित्रा। न दत्ता मात्रा। नामुमोदिता गुरुभिः। बलात् अवलिप्तेन गुरुर्हणीयतां नीता कुमारेण चन्द्रापीडेन। कथय महतां किमयम् आचारः'' इति।**

शब्दार्थ– अप्राक्षीत् = पूछा। कथमसि स्थिता = कैसे रही हो। कियन्ति = कितने। कीदृशः = कैसी। देवीप्रसादः = देवी की कृपा। गोष्ठ्यः = बातचीत। समभवन् = हुई। अतिशयेन = अधिकता से। अस्मान् = हम लोगों को। स्मरति = याद करती है। पृष्टा = पूछी गई। व्यजिज्ञपत् = निवेदन किया। खल्वागते देवे = आप के आने पर। प्रतिनिवृत्याहम् = मैं लौटकर। कुसुमशयनसमीपे = फूल की सेज के पास। समुपाविशम् = बैठ गई। अतिष्ठन् = रहती हुई। नवनवान् = नए-नए। देवीप्रसादान् = देवी के अनुग्रह को। अनुभवन्ती = अनुभव करती हुई। मामेव अवलम्ब्य = मेरा ही सहारा लेकर। संचरन्ती = घूमती हुई। प्रमदवनवेदिकाम् = प्रमदवन की वेदी पर। अध्यारोहत् = बैठ गई। मणिस्थूणावष्टम्भा = मणि-खम्भे का सहारा लेकर। किमपि व्याहर्तुम् = कुछ कहने के लिए। इच्छन्ती = चाहती हुई। निःस्पन्दपक्ष्मणा चक्षुषा = निर्निमेष नेत्रों से। सुचिरम् = देर तक। व्यलोकयत् = देखा। विदिताभिप्रायः = आशय समझकर। आज्ञापय = आज्ञा दीजिए। विज्ञापिते = कहने पर। लज्जाकलितगद्गदा = लज्जा से गद्गद होने वाली। कथमपि = किसी प्रकार। व्याहाराभिमुखम् = बात करने के लिए तत्पर। अब्रवीच्च = और बोली। प्रियासि = प्रिय हो। त्वयि = तुम पर। विश्वसिति = विश्वास करता है। संकल्पिता = दी गई हूँ। नानुमोदिता = नहीं अनुमोदित की गई हूँ। बलात् = बलपूर्वक। अवलिप्तेन = गर्वित। गुरुर्हणीयताम् = गुरुजनों द्वारा निन्दनीय दशा को। नीता = ले आई गई हूँ। महताम् = बड़े लोगों का। किमयम् = क्या यह। आचारः = आचरण।

हिन्दी अनुवाद– वहाँ बैठकर चन्द्रापीड ने पूछा– पत्रलेखा! बताओ, वहाँ किस प्रकार रही? कितने दिन रही? तुम्हारे ऊपर देवी की कैसी कृपा रही? कौन-कौन-सी बातें हुईं। मुझे कौन अधिक याद करता है। उसके ऐसा पूछने पर पत्रलेखा ने निवेदन किया– राजकुमार! सुनिए, आपके चले आने पर मैं केयूरक के साथ लौटकर उसी प्रकार फूल की शैय्या के पास बैठ गई। वहाँ रहते हुए मैंने देवी की नई-नई कृपाओं का अनुभव किया। दोपहर के बाद मेरा ही सहारा लेकर घूमती हुई कादम्बरी प्रमदवन की वेदी पर चढ़ गयीं और वहीं मणिखम्भे का सहारा लेकर बैठ गयीं। थोड़ी देर बैठने के बाद कुछ कहने की इच्छा से वह मेरे मुख की ओर देर तक एकटक देखती रहीं। मैंने उनका आशय समझकर कहा– आज्ञा दीजिए। मेरे ऐसा कहने पर लज्जा के कारण गद्गद होकर किसी प्रकार बातचीत के लिए उन्मुख हुईं और मुझसे बोलीं– पत्रलेखे, मैंने जब से तुम्हें देखा है तभी से तुम मेरे लिए प्रिय बन गई हो। न जाने क्यों मेरे हृदय को तुम पर अधिक विश्वास है। मुझे न तो पिता-माता ने संकल्प किया, न गुरुजनों ने उसका अनुमोदन ही किया। किन्तु राजकुमार ने गर्वित होकर बलपूर्वक मुझे गुरुजनों द्वारा निन्दनीय दशा में पहुँचा दिया। बताओ क्या महापुरुषों का यही आचरण है?

व्याकरणात्मक टिप्पणी– कथमसि = कथम् + असि। खल्वागते = खलु + आगते। अध्यारोहत = अधि + आरोहत्। विदिताभिप्रायः = विदितः अभिप्रायः यया तया।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. 'अतिष्ठं च सुखं नवनवान् अनुभवन्ती देवीप्रसादान्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– देवी (कादम्बरी) नये-नये अनुग्रहों का अनुभव करती हुई सुखपूर्वक वहाँ रही।

प्रश्न 3. कः अप्राक्षीत्?

उत्तर– चन्द्रापीडः अप्राक्षीत्।

प्रश्न 4. का प्रमदवनवेदिकाम् अध्यारोहत्?

उत्तर– कादम्बरी प्रमदवनवेदिकाम् अध्यारोहत्।

प्रश्न 5. लज्जाकलितगद्गदा का आसीत्?

उत्तर– कादम्बरी लज्जाकलितगद्गदा आसीत्।

➥ **अहं तु अविदितवृत्तान्ततया भीतेव सविषादं विज्ञापितवती– ''देवि! श्रोतुम् इच्छामि। आज्ञापय किं कृतम् देवेन चन्द्रापीडेन? केन वा खलु अविनयेन खेदितम् देव्याः कुमुदकोमलं मनः?'' इत्येवम् अभिहिता पुनरवदत्– ''आवेदयामि ते। अवहिता शृणु। स्वप्नेषु प्रतिदिवसम् आगत्यागत्य मनोहरान् मदनलेखान् प्रेषयति। उपवनेषु एकाकिन्याः मे परिष्वङ्गम् आचरति। शीतलैः मुखमारुतैः कपोलौ वीजयति। मन्मथमूढमानसश्च, कथय,**

हे पत्रलेखे! केन प्रकारेण निषिध्यते!'' इति।

शब्दार्थ– अविदितवृत्तान्ततया = अनजान होने के कारण। भीतेव = डरी हुई-सी। सविषादं = दुःख के साथ। विज्ञापितवती = निवेदन किया। श्रोतुम् इच्छामि = सुनना चाहती हूँ। आज्ञापय = बताइए। किं कृतम् = क्या किया। अविनयेन = उद्दण्डता से। खेदितम् = दुःखी किया गया। कुमुदकोमलम् = कुमुद पुष्प के समान कोमल। अभिहिता = कही गई। पुनरवदत् = फिर कहा। अवहिता शृणु = सावधान होकर सुनो। आवेदयामि = बताती हूँ। स्वप्नेषु = सपनों में। आगत्यागत्य = आ-आकर। मदनलेखान् = काम सम्बन्धी लेखों को। प्रेषयति = भेजते हैं। एकाकिन्या = अकेली का। परिष्वङ्गम् आचरति = आलिंगन करते हैं। शीतलैः मुखमारुतैः = शीतल साँसों से। कपोलौ वीजयति = कपोलों पर हवा करते हैं। मन्मथमूढमानसः = कामवासना से मूढ़ मनवाले। निषिध्यते = रोका जाये।

हिन्दी अनुवाद– मैंने अनजान-सी डरी हुई बनकर दुःख के साथ कहा– देवी! बताइए, राजकुमार ने क्या किया है। मैं सुनना चाहती हूँ। उनकी किस धृष्टता ने आपके हृदय को दुःखी बना दिया है। मेरे ऐसा कहने पर वह फिर बोलीं– मैं तुम्हें बताती हूँ– ध्यान से सुनो। वह सपनों में प्रतिदिन आ-आकर कामपूर्ण पत्र भेजते हैं, उपवन में मुझ अकेली का आलिंगन करते हैं। मेरे कपोलों पर अपने मुख की ठंडी साँसों के फूँक मारते हैं। पत्रलेखे! कामवासना से मूढ़ बने हुए उनके मन को मैं कैसे मना करूँ।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– अविदितवृत्तान्ततया = अविदितः वृत्तान्त तस्य भाव तया। आगत्यागत्य = आगत्या + आगत्य। मन्मथमूढमानसः = मन्मथेन मूढः मानसः यस्य सः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. 'केन वा खलु अविनयेन खेदितम् देव्याः कुमुदकोमलं मनः?' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– किस अविनम्रता (उदण्डता) से कुमुद पुष्प के समान कोमल देवी (कादम्बरी) के मन को खिन्न कर डाला।

प्रश्न 3. का अविदितवृत्तान्ततया भीतेव सविषादं विज्ञापितवती?

उत्तर– पत्रलेखा अविदितवृत्तान्ततया भीतेव सविषादं विज्ञापितवती।

प्रश्न 4. कस्याः कुमुदकोमलं मनः खेदितम्?

उत्तर– देव्याः कादम्बर्याः कुमुदकोमलं मनः खेदितम्।

प्रश्न 5. कः स्वप्नेषु प्रतिदिवसम् आगत्य मनोहरान् मदलेखान् प्रेषयति?

उत्तर– चन्द्रापीडः स्वप्नेषु प्रतिदिवसम् आगत्य मनोहरम् मदलेखान् प्रेषयति।

➥ **ताम् एवं वादिनीम् आकर्ण्य, प्रहर्षनिर्भरा, अहो चन्द्रपीडम् उद्दिश्य आकृष्टा खलु इयं मकरकेतुना इति विचिन्त्य विहस्य अब्रवम्– ''देवि! यद्येवम् उत्सृज कोपम्। प्रसीद। नार्हसि कामापराधैः देवं दूषयितुम्। अनाराधितप्रसन्नेन कुसुमशरेण भगवता ते वरः दत्तः। का चात्र गुरुजनवक्तव्यता! कति वा कथयामि ते, याः स्वयं वृतवत्यः पतीन्। यदि च नैवम् अनर्थक एव तर्हि धर्मशास्त्रोपदिष्टः स्वयंवरविधिः तत् प्रसीद। संदिश प्रेषय माम्। यामि। आनयामि ते हृदयदयितम्'' इत्येवं वादिनीं माम् पुनरवदत्– ''पत्रलेखे! हृदयात् अव्यतिरिक्तासि। जानामि ते गरीयसीं प्रीतिम्। न खलु प्रियम् इति ब्रवीमि। त्वामेव पश्यन्ती, संधारयामि जीवितम्। तथापि यद्ययं ते ग्रहः, तत् साधय समीहितम्'' इत्यभिधाय मां व्यसर्जयत्।'' इति। चन्द्रापीडस्तु तथा विज्ञप्तः पत्रलेखया धीरप्रकतिरपि नितरां पर्याकुलोऽभवत्।**

देवि! यद्येवम् .....हृदयदयितम्। (2020 ZO)

शब्दार्थ– एवं = इस प्रकार। वादिनीम् = कहनेवाली। आकर्ण्य = सुनकर। प्रहर्षनिर्भरा = आनन्दित होकर। उद्दिश्य = लक्ष्य करके। आकृष्टा = आकर्षित कर दी गई है। मकरकेतुना = कामदेव द्वारा। विचिन्त्य = विचार करके। विहस्य = हँसकर। अब्रवम् = कहा। यद्येवम् = यदि ऐसा है। उत्सृज कोपम् = कोध छोड़िये। नाहसि = उचित नहीं, कामापराधैः = काम के दोषों से। देवं दूषयितुम् = देव को दोष देना। प्रसीद = प्रसन्न हो जाओ। अनाराधितप्रसन्नेन = बिना आराधना किए ही प्रसन्न होने वाले। कुसुमशरेण = कामदेव द्वारा। वरःदत्तः = वरदान दिया है। गुरुजनवक्तव्यता = गुरुजनों के कहने की बात। कति वा = कितनी। वृतवत्यः वरण किया है। पतीन् = पतियों को। यदि च नैवम् = यदि ऐसा नहीं तो। धर्मशास्त्रोपदिष्टः = धर्मशास्त्रों में बताया गया। स्वयंवरविधिः = स्वयम्बर का नियम। अनर्थक एव = व्यर्थ है। संदिश = संदेश दो। प्रेषय माम् = मुझे भेजो। यामि = जाती हूँ।

आनयामि = ले आती हूँ। हृदयदयितम् = प्राणप्रिय को। वादिनीम् = कहने वाली की। पुनरवदत् = फिर कहा। हृदयात् = हृदय से। अव्यतिरिक्तासि = अभिन्न हो। गरीयसीम् = बहुत भारी। न खलु प्रियम् = यह अच्छा नहीं है। इति ब्रवीमि = यही कहती हूँ। पश्यन्ती = देखती हुई। धरयामि जीवितम् = प्राण धारण किये हूँ। ग्रहः = आग्रह। साधय समीहितम् = इच्छा पूरी करो। व्यसर्जयत् = मुझे विदा किया। विज्ञप्तः = कहे जाने पर। धीरप्रकृतिरपि = स्वभावतः धैर्यशाली होते हुए भी। नितराम् = अत्यन्त। पर्याकुलः = व्याकुल।

हिन्दी अनुवाद– कादम्बरी की ऐसी बातें सुनकर मैं अत्यधिक हर्षित हो गई और मैंने समझ लिया कि कामदेव ने इसे चन्द्रापीड की ओर आकर्षित कर दिया है। ऐसा सोचकर मैंने कहा– देवि, यदि ऐसी बात है तो क्रोध छोड़िए। कामदेव के दोषों के लिए राजकुमार को दोष देना उचित नहीं है। बिना आराधना के ही प्रसन्न होने वाले कामदेव ने तुम्हें यह वरदान दिया है। इसमें गुरुजनों के कहने की क्या बात है? मैं कितनी कुमारियों को बताऊँ जिन्होंने स्वयं अपने पतियों को वरण किया है। यदि ऐसा नहीं है तो धर्मशास्त्रों में बताई गई स्वयंवर की विधि ही व्यर्थ है। इसलिए प्रसन्न हो जाइए। मुझे संदेश देकर भेजिए। मैं जाकर तुम्हारे प्राणप्रिय को ले आती हूँ। इस प्रकार कहने वाली मुझसे उसने फिर कहा– ''पत्रलेखे, तुम मेरे हृदय से अभिन्न हो। तुम्हारे गहरे प्रेम को जानती हूँ। मैं इतना ही कहती हूँ कि तुम्हें भेजना अच्छा नहीं है क्योंकि तुम्हीं को देखकर मैं अपना प्राण धारण किये हूँ। फिर भी तुम्हारा आग्रह है तो जाओ अपनी इच्छा पूरी करो। ऐसा कहकर मुझे विदा किया। पत्रलेखा के ऐसा कहने पर चन्द्रापीड स्वभाव से धैर्यशाली होते हुए भी अत्यन्त व्यग्र हो गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– यद्येवम् = यदि + एवम्। नाहसि = न + अहसि। नैवम् = न + एवम्। पुनरवदत् = पुनः + अवदत्। धीरप्रकृतिरपि = धीरप्रकृतिः + अपि।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक बाणभट्ट हैं।
प्रश्न 2. ''अनाराधितप्रसन्नेन कुसुमशरेण भगवता ते वरः दत्तः।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– आराधना के बिना ही प्रसन्न भगवान कामदेव ने आपको वरदान दिया है।
प्रश्न 3. कादम्बर्याः वाणीम् आकर्ण्य, प्रहर्षनिर्भरा का आसीत्?
उत्तर– पत्रलेखा कादम्बर्याः वाणीम् आकर्ण्य, प्रहर्षनिर्भरा आसीत्।
प्रश्न 4. केन वरः दत्तः?
उत्तर– कुसुमशरेण भगवता वरः दत्तः।
प्रश्न 5. का हृदयात् अव्यतिरिक्तासि?
उत्तर– पत्रलेखा हृदयात् अव्यतिरिक्तासि।
प्रश्न 6. 'नार्हसि कामापराधैः देवं दूषयितुं' यहाँ 'देवं' पद किसको सूचित है?
उत्तर– 'देव' पद राजकुमार चन्द्रापीड को सूचित है।
प्रश्न 7. 'स्वयंवरविधिः कुत्र उपदिष्टः?
उत्तर– स्वयंवरविधिः धर्मशास्त्रोप दिष्टः।

➥ **अत्रान्तरे प्रविश्य प्रतीहारी व्यज्ञापयत्– युवराज! देवी विलासवती समादिशति, ''श्रुतं मया पृष्ठतः स्थिता पत्रलेखा पुनः परागता'' इति। तवापि कापि महती वेला वर्तते दृष्टस्य, तत् अनया सहित एव आगच्छ'' इति। चन्द्रापीडस्तु तत् आकर्ण्य, चेतस्यकरोत्– 'अहो संदेहदोलाधिरूढं मे जीवितम्। एवम् अम्बा निमेषमपि माम् अपश्यन्तो दुःखमास्ते। एवम् आज्ञापितम् आगमनाय मे निष्कारणवत्सलया देव्या कादम्बर्या। बलवान् जननीस्नेहः। गरीयान् गन्धर्वराजसुतानुरागः। दुस्त्यजा जन्मभूमिः। परिग्राह्या कादम्बरी। कालातिपातासहं मे मनः। विप्रकृष्टमन्तरं हेमकूटविन्ध्याचलयोः इति इत्येवं चिन्तयन्नेव प्रतीहार्या उपदिश्यमानमार्गः जननीसमीपम् आगत्। तत्रैव च सोत्कण्ठं दिवसम् अनयत्।**

शब्दार्थ– अत्रान्तरे = इसी बीच। प्रविश्य = प्रवेश करके। व्यज्ञापयत् = निवेदन किया। समादिशति = आज्ञा देती है। श्रुतं मया = मैंने सुना है। पृष्ठतः स्थिता = पीछे ठहरी हुई। परागता = लौट आई है। तवापि = तुम्हें भी। कापि महती बेला = बहुत देर। अनया सहितः = इसके साथ। आगच्छ = आओ। चेतस्यकरोत् = मन में विचार किया। सन्देहदोलाधिरूढम् = सन्देह- रूपी झूले पर सवार। जीवितम् = जीवन। अम्बा = माता। निमेषमपि = क्षण मात्र भी। माम् अपश्यन्ती = मुझे बिना देखे। दुखमास्ते =

दुःखी हो जाती हैं। आज्ञापितम् = आदेश दिया है। आगमनाय = आने के लिए। निष्कारणवत्सलया = निःस्वार्थ अनुराग करने वाली। जननीस्नेहः = माता का प्रेम। गरीयान् = भारी। गन्धर्वराजसुतानुरागः = गन्धर्वराजपुत्री कादम्बरी का प्रेम। दुस्त्याजा = कठिनाई से छोड़ने योग्य। परिग्राह्या = ग्रहण करने योग्य। कालातिपातासहम् = विलम्ब को न सहन करने वाला। विप्रकृष्टमन्तरम् = बहुत अधिक दूरी। चिन्तयन्नेव = सोचता हुआ। उपदिश्यमानमार्गः = बताया गया है मार्ग जिसका वह। अगात् = आया। सोत्कण्ठम् = उत्सुकता के साथ। दिवसम् अनयत् = दिन बिताया।

हिन्दी अनुवाद– इसी बीच प्रतीहारी ने भीतर आकर निवेदन किया कि युवराज! देवी विलासवती ने आज्ञा दी है कि "मैंने सुना है कि पीछे रुक जाने वाली पत्रलेखा अब आ गई है, तुम्हें भी देखे बहुत समय हो गया है। इसलिए उसके साथ ही आ जाओ।" चन्द्रापीड ने यह सुनकर विचार किया– मेरा मन सन्देह के झूले पर झूल रहा है, माताजी एक क्षण भी मुझे देखे बिना दुःखी हो जाती हैं, अकारण अनुराग रखने वाली कादम्बरी ने मुझे आने का सन्देश दिया है। माता का स्नेह बलवान् होता है। देवी कादम्बरी का अनुराग भी महान् है। जन्मभूमि को छोड़ना कठिन है। कादम्बरी को ग्रहण करना अनिवार्य है। हेमकूट और विन्ध्याचल की दूरी भी बहुत है। इस प्रकार विचार करता हुआ चन्द्रापीड प्रतीहारी द्वारा बताये गये मार्ग से माता के पास आया। वहाँ पर उसने बड़ी उत्कण्ठा से दिन व्यतीत किया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– अत्रान्तरे = अत्र + अन्तरे। तवापि = तव + अपि। निमेषमपि = निमेषम् + अपि। चेतस्यकरोत् = (चेतसि + अकरोत्)। कालातिपातासहम् = काल + अतिपात + असहम्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।
प्रश्न 2. 'बलवान् जननीस्नेहः।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– माता का स्नेह बलवान होता है।
प्रश्न 3. अत्रान्तरे प्रविश्य का व्यज्ञापयत्?
उत्तर– अत्रान्तरे प्रविश्य प्रतिहारी व्यज्ञापयत्।
प्रश्न 4. "श्रुतं मया पृष्ठतः स्थिता पत्रलेखा पुनः परागता" इति। कस्याः उक्तिः?
उत्तर– विलासवत्याः उक्तिः।
प्रश्न 5. चन्द्रापीडः कया उपदिश्यमानमार्गः जननीसमीपम् आगत्?
उत्तर– प्रतिहार्या उपदिश्यमानमार्गः जननीसमीपम् आगत्।

➥ **एवमेव रात्रौ दिवा च अकृतनिर्वृत्तिः आयास्यमानोऽपि मनसिजेन मर्यादावसात् आत्मानं स्तम्भयन्, कथं कथमपि कतिपयेष्वतिक्रान्तेषु, एकदा निर्गत्य बहिर्नगर्याः, शिप्रातटानि अनुसरन्, अतित्वरया आगच्छतः दूरादेव अतिबहून् तुरङ्गमान् अद्राक्षीत्। दृष्ट्वा च समुत्पन्नकुतूहलः तेषां परिज्ञानाय पुरुषमन्यतमं प्राहिणोत्। आत्मनापि ऊरुदध्नेन पयसा उत्तीर्य शिप्राम् भगवतः कार्तिकेयस्य आयतने तत्प्रतिवार्ताम् प्रतिपालयन् अतिष्ठत्।**

शब्दार्थ– एवमेव = इसी प्रकार। रात्रौ दिवा = रात दिन। अकृतनिर्वृत्तिः = शान्ति न प्राप्त करता हुआ, अशान्त चित्त। आयास्यमानोऽपि = दुःखी किये जाने पर भी। मनसिजेन = काम के द्वारा। मर्यादावसात् = मर्यादा के कारण। आत्मानं = अपने को। स्तम्भयन् = रोकता हुआ। कतिपयेषु = कुछ। अतिक्रान्तेषु = बीतने पर। एकदा = एक बार। निर्गत्य = निकलकर। बहिर्नगर्याः = नगरी के बाहर। शिप्रातटानि = क्षिप्रा नदी के किनारों का। अनुसरन् = अनुसरण करता हुआ। अतित्वरया = बड़ी शीघ्रता से, बड़े वेग से। आगच्छतः = आते हुए। दूरादेव = दूर ही से। समुत्पन्नकुतूहलः = उत्सुकता आने से। परिज्ञानाय = जानने के लिए। अन्यतमम् = दूसरे। प्राहिणोत् = भेजा। ऊरुदध्नेन = जाँघ तक गहरे। पयसा = जल से। उत्तीर्य = पार करके। आयतने = मन्दिर में। तत्प्रतिवार्ताम् = उसके उत्तर की। प्रतिपालयन् = प्रतीक्षा करता हुआ। अतिष्ठत् = बैठा रहा।

हिन्दी अनुवाद– इसी प्रकार रात-दिन अशान्त हृदय तथा काम द्वारा पीड़ित चन्द्रापीड अपने आपको मर्यादा के कारण रोकता हुआ कुछ दिन बीतने पर एक बार शिप्रा के किनारे पर घूम रहा था कि उसी समय उसने अत्यन्त वेग से आते हुए बहुत से घोड़ों को देखा। उसे देखकर उत्सुक होकर उसने उन्हें जानने के लिए एक दूसरे पुरुष को भेजा। वह स्वयं जाँघ तक गहरे जल को पार करके कार्तिकेय के मन्दिर में ठहरकर उनके उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– एवमेव = एवम् + एव आयास्यमानोऽपि = आयास्मानः + अपि। बहिर्नगर्याः = बहिः + नगर्याः। समुत्पन्नकुतूहलः = समुत्पन्नः कुतूहलः यस्मिन् सः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और लेखक का नाम 'बाणभट्ट' है।
प्रश्न 2. 'अतित्वरया आगच्छतः दूरादेव अतिबहून् तुरङ्गमान् अद्राक्षीत्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– अत्यन्त तीव्रगति से दूर से आते हुए बहुत से घोड़ों को देखा।
प्रश्न 3. कः शिप्रातटानि अनुसरति।
उत्तर– चन्द्रापीडः शिप्रातटानि अनुसरति।
प्रश्न 4. चन्द्रापीडः परिज्ञानाय कं प्राहिणोत्?
उत्तर– चन्द्रापीडः परिज्ञानाय पुरुषमन्यतमं प्राहिणोत्।
प्रश्न 5. चन्द्रापीडः कुतः अतिष्ठत्?
उत्तर– चन्द्रापीडः भगवान कार्तिकेयस्य आयतने अतिष्ठत्।

➥ **तत्रस्थ एव दूरादेव अवतीर्य तुरङ्गमात् आपतन्तं विषादशून्येन मुखेन कष्टाम् अवस्थाम् अनक्षरम् आवेदयन्तम् केयूरकम् अद्राक्षीत्। दृष्ट्वा च दर्शितप्रीतिः 'एहि एहि' इति आहूय दूरप्रसारिताभ्यां दोभ्यां पर्यष्वजत तम्। अपसृत्य पुनः कृतनमस्कारे तस्मिन्, तेन सह स्वभवनम् अयासीत्। तत्र निर्वर्तिताशेषदिवसकरणीयः पत्रलेखाद्वितीयः केयूरकम् आहूय अब्रवीत्– ''केयूरक! कथय, देव्याः कादम्बर्याः महाश्वेतायाश्च सन्देशम्'' इति।** (2020 ZR)

शब्दार्थ– तत्रस्थ एव = वहीं स्थित। अवतीर्य = उतरकर। तुरङ्गमात् = घोड़े से। आपतन्तम् = आते हुए। विषादशून्येन = दुःखपूर्ण। अनक्षरम् = बिना बोले। कष्टाम् अवस्थाम् = कष्ट की दशा को। आहूय = कहकर। दूरप्रसारिताभ्याम् = दूर ही से फैलायी गई। दोर्भ्याम् = भुजाओं से। पर्यष्वजत् = आलिंगन किया। उपसृत्य = पास जाकर। कृतनमस्कारे = नमस्कार करने पर। अयासीत् = आया। निर्वर्तिताशेषदिवसकरणीयः = दिन के सभी कृत्यों को पूरा करके। पत्रलेखा द्वितीयः = पत्रलेखा के साथ। आहूय = बुलाकर। कथय = कहो।

हिन्दी अनुवाद– वहीं स्थित चन्द्रापीड ने दूर ही से घोड़े से उतरकर आते हुए केयूरक को देखा जो बिना बोले ही अपने उदास मुख से कष्ट की दशा बता रहा था। उसे देखकर प्रेम प्रकट करते हुए चन्द्रापीड ने आओ आओ कहते हुए दूर ही से फैली हुई अपनी बाहों में लेकर उसका आलिंगन किया और उसके समीप आकर फिर नमस्कार करने पर वह उसके साथ अपने महल में आया। वहीं पत्रलेखा के साथ दिन के सभी कृत्यों को पूरा करके चन्द्रापीड ने केयूरक को बुलाकर कहा– केयूरक! बताओ देवी कादम्बरी और महाश्वेता ने क्या संदेश दिया है?

व्याकरणात्मक टिप्पणी– निर्वर्तिताशेषदिवसकरणीयः = निर्वर्तित + अशेषदिवसकरणीयः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।
अथवा अस्य गद्यांशस्य लेखकः कः?
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।
प्रश्न 2. 'निर्वर्तिताशेषदिवसकरणीयः पत्रलेखाद्वितीयः केयूरकम् आहूय अब्रवीत्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– सभी कृत्यों को सम्पन्न करके पत्रलेखा के साथ केयूरक को बुलाकर बोला।
प्रश्न 3. चन्द्रापीडः तुरङ्मात् अवतीर्य आपतन्तं कम् अद्राक्षीत्?
उत्तर– चन्द्रापीडः तुरङ्मात् अवतीर्य आपतन्तं केयूरकम् अद्राक्षीत्।
प्रश्न 4. चन्द्रापीडः केन सह स्वभवनम् अयासीत्?
उत्तर– चन्द्रापीडः केयूरकेन सह स्वभवनम् अयासीत्।
प्रश्न 5. चन्द्रापीडः केयूरकम् आहूय किम् अब्रवीत्?
उत्तर– केयूरक! कथय, कादम्बर्याः महाश्वेतायाश्च संदेशम्।''

➥ **केयूरकः पुरः सप्रश्रयम् उपविश्य अब्रवीत्– ''देव! किं विज्ञापयामि। नास्ति मयि संदेशलवोऽपि देव्याः कादम्बर्याः महाश्वेतायाः वा। यदैव पत्रलेखां मेघनादाय समर्प्य, प्रतिनिवृत्य मया अयम् देवस्य उज्जयिनीगमनवृत्तान्तः निवेदितः तदैव ऊर्ध्वम् विलोक्य, दीर्घम् उष्णं च निःश्वस्य सनिर्वेदम् उत्थाय महाश्वेता पुनः तपसे स्वमेव आश्रमम् अभजत। देव्यपि कादम्बरी झटिति द्रुघणेनेव अभिहता निवारिताशेषपरिजनप्रवेशा, शयनीये निपत्य, उत्तरीयवाससा उत्तमाङ्गम् अवगुण्ठ्य, सकलमेव तं दिवसम् अस्थात्।''**

शब्दार्थ– पुरः = सामने। सप्रश्रयम् = विनम्रता के साथ। उपविश्य = बैठकर। अब्रवीत् = कहा। विज्ञापयामि = कहता हूँ। संदेशलवोऽपि = थोड़ा भी सन्देश। समर्प्य = सौंपकर। प्रतिनिवृत्य = लौटकर। उज्जयिनीगमनवृत्तान्तः = उज्जयिनी जाने का समाचार। निवेदतिः = सुनाया। ऊर्ध्वम् विलोक्य = ऊपर देखकर। दीर्घम् उष्णं च = लम्बी और गरम। निःश्वस्य = साँस लेकर। सनिर्वेदम् = उदासीनता के साथ। उत्थाय = उठकर। तपसे = तप के लिए। अभजत = आ गई। झटिति = तुरन्त। द्रुघणेनेव = हथौड़े से। अभिहता = मारी हुई-सी। निवारिताशेषपरिजनप्रवेशा = सभीपरिजनों का प्रवेश रोक देने वाली। शयनीये = विस्तर पर, निपत्य = गिरकर उत्तरीयवाससा = आँचल से। उत्तमांगम् = सिर को। अवगुण्ठ्य = लपेटकर। अस्थात् = पड़ी रही।

हिन्दी अनुवाद– केयूरक ने नम्रता के साथ सामने बैठकर कहा, '' देव क्या कहूँ? देवी महाश्वेता तथा कादम्बरी का कुछ भी सन्देश मेरे पास नहीं है। जब पत्रलेखा को मेघनाद को सौंपकर लौटकर मैंने आपके उज्जयिनी आने का समाचार सुनाया तो ऊपर देखकर तथा लम्बी और गरम साँस लेकर अत्यन्त उदासीनता के साथ उठकर महाश्वेता फिर तप करने के लिए अपने आश्रम में चली गयीं। देवी कादम्बरी भी तुरन्त हथौड़े की चोट खाई हुई-सी सभी परिजनों का भीतर आना रोककर बिस्तर पर गिर पड़ीं और आँचल से सिर लपेट कर सारा दिन पड़ी रहीं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– संदेशलवोऽपि = संदेशलवः + अपि। द्रुघणेनेव = द्रुघणेन + एव। निवारिताशेषपरिजनप्रवेशा = निवारितः अशेषजनानाम् प्रवेशः येन सः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. 'नास्ति मयि संदेशलवोऽपि देव्याः कादम्बर्याः महाश्वेतायाः वा।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– देवी कादम्बरी अथवा महाश्वेता का कुछ भी संदेश मेरे पास नहीं है।

प्रश्न 3. कः अब्रवीत् – नास्ति मयि संदेशलवोऽपि देव्याः कादम्बर्याः महाश्वेतायाः वा?

उत्तर– केयूरकः अब्रवीत् – नास्ति मयि संदेशलवोऽपि देव्याः कादम्बर्याः महाश्वेतायाः वा।

प्रश्न 4. पत्रलेखां कस्मै समर्पिता?

उत्तर– पत्रलेखां मेघनादाय समर्पिता।

प्रश्न 5. महाश्वेता पुनः कुत्र अगच्छत्?

उत्तर– महाश्वेता पुनः आश्रमम् अगच्छत्।

➥ **परेद्युश्च प्रातरेव उपसृतं माम् ''ध्रियमाणेष्वेव भवत्सु अहम् ईदृशीम् अवस्थाम् अनुभवामि'' इति उपालंभमानेव पर्याकुलया दृष्ट्या सुचिरम् विलोकितवती। तथा दृष्टश्च तया दुःखितया देव्या, आदिष्टमेव गमनाय आत्मानं मन्यमानः, अहम् अनिवेद्यैव देव्यै देवपादमूलम् उपागतोऽस्मि। देव! भवतः प्रथमागमनसमय एव आरूढवान् मकरकेतनः ताम्। इदानीं तु महान्तम् आयासम् अनुभवति त्वदर्थे। कादम्बरी इदानीं तु महान्तम् आयासम् अनुभवति त्वदर्थे कादम्बरी। तत् धैर्यम् अवलम्ब्य, गमनाय यत्नः क्रियताम्'' इति। इत्यावेदयन्तं केयूरकं चन्द्रापीडः प्रत्युवाच– ''केयूरक, सर्वमेवैतत् पत्रलेखया मय्याख्यातम्। अधुना दिवसक्रमगम्ये अध्वनि किं करोमि। तथापि देवीं संभावयितुं प्रयतामहे'' इति वदन् आदिदेश विश्रान्तये केयूरकम्।**

शब्दार्थ– परेद्युः = दूसरे दिन। उपसृतं = पास गए हुए। माम् = मुझको। ध्रियमाणेसु = जीवित रहते हुए। भवत्सु = आप लोगों के। ईदृशीम् = ऐसी। अनुभवानि = अनुभव करती हूँ। उपालम्भमानेव = उलाहना देती हुई सी। पर्याकुलया = व्याकुल। दृष्ट्या = दृष्टि से। सुचिरम् = देर तक। विलोकितवती = देखा। तथा दृष्टश्च = उस प्रकार देखते हुए। आदिष्टमेव = आदेश दिया है। गमनाय = जाने के लिए। मन्यमानः = मानते हुए। अनिवेद्यैव = बिना निवेदन किए ही, बिना बताये ही। देवपादमूलम् = आपके

चरणों के पास। उपगातोऽस्मि = आया हूँ। प्रथमागमनसमय एव = प्रथम आने के समय ही। आरूढवान् = सवार हो गया था। मकरकेतनः = कामदेव। इदानीं = इस समय। महान्तम् = बहुत कष्ट। अनुभवति = सह रही हैं। त्वदर्थे = तुम्हारे लिए। अवलम्ब्य = धारण करके। इत्यावेदन्तम् = ऐसा कहने वाले। मय्याख्यातम् = मुझे बताया है। दिवसक्रमगम्ये = कई दिनों में चलने योग्य। अध्वनि = मार्ग होने पर। संभावयितुम् = सम्मान करने के लिए। प्रयतामहे = प्रयत्न करूँगा। वदन् = कहते हुए। आदिदेश = आदेश दिया। विश्रान्तये = विश्राम करने के लिए।

हिन्दी अनुवाद– दूसरे दिन प्रातःकाल जब मैं उसके पास गया तब उसने कहा कि आप लोगों के जीवित रहते मैं इस दशा में पड़ी हूँ? इस प्रकार उलाहना-सा देते हुए उसने व्याकुल दृष्टि से मेरी ओर देखा। इस प्रकार दुःखी दृष्टि से देखकर उसने मुझे आपके पास आने का आदेश दिया है। ऐसा ही समझकर मैं उसे बिना बताए आप के चरणों में आया हूँ। देव! आपके प्रथम आगमन के समय ही उस पर काम सवार हो गया था। इस समय तो वह आपके लिए बहुत कष्ट का अनुभव कर रही है। अतः धैर्य धारण करके वहाँ चलने का प्रयत्न कीजिए। इस प्रकार कहने वाले केयूरक से चन्द्रापीड ने कहा–केयूरक! पत्रलेखा ने यह सभी मुझे बताया है। कई दिनों में तै होने वाले मार्ग के कारण इस समय मैं क्या करूँ? फिर भी देवी को सम्मानित करने का प्रयत्न करूँगा। इस प्रकार कहते हुए चन्द्रापीड ने केयूरक को विश्राम करने का आदेश दिया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– उपालम्भमानेव = उपालम्भमान + एव। दृष्टश्च = दृष्टः + च। आदिष्टमेव = आदिष्टम् + एव। अनिवेद्यैव = अनिवेद्य + एव। उपगतोऽस्मि = उपगतः + अस्मि त्वदर्थे = त्वत् + अर्थे।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. 'तत् धैर्यम् अवलम्ब्य, गमनाय यत्नः क्रियताम्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– अतएव धैर्य धारण करके वहाँ चलने का प्रयत्न करें।

प्रश्न 3. केयूरकः परेद्युः कस्याः समीपम् अगच्छत्?

उत्तर– केयूरकः परेद्युः कादम्बर्याः समीपम् अगच्छत्।

प्रश्न 4. ''ध्रियमाणेष्वेव भवत्सु अहम् ईदृशीम् अवस्थाम् अनुभवामि'' कस्या उक्तिः?

उत्तर– कादम्बर्याः उक्तिः।

प्रश्न 5. उपालंभमानेव पर्याकुलया दृष्ट्या सुचिरम् विलोकितवती का?

उत्तर– कादम्बरी पर्याकुलया दृष्ट्या सुचिरम् विलोकितवती।

➥ **अत्रान्तरे भगवान् तिग्मदीधितिः संजहार करसहस्रम्। उदयगिरिशिखरम् आरूढे भगवति चन्द्रमसि, गमनम् आत्मनः समुद्दिश्य एवं चिन्तयामास– 'तातेन खलु स्वभुजात् अवरोप्य मय्येव राज्यभारः समारोपितः। तम् अनाख्याय पदमपि निर्गन्तुं न शक्यते। स्कन्धावारोऽपि मे अद्यापि न परापतति। किं कारणं व्यपदिश्य आत्मानं मोचयामि। कथं वा मुञ्चतु मां तातः अम्बा वा। सुहृत्साध्येऽस्मिन् अर्थे किं करोमि एकाकी। वैशम्पायनोऽपि असंनिहितः पार्श्वे मे।' इत्येवं चिन्तयत एवास्य सा क्षपा क्षयम् अगात्।**

अथवा उदयगिरिशिखरम् आरूढे ..... क्षयम् अगात्। (2019 DE)

शब्दार्थ– तिग्मदीधितिः = सूर्य ने। संजहार = समेट लिया। करसहस्रम् = हजारों किरणों को। उदयगिरिशिखरम् = उदयाचल पर। आरूढे = स्थित होने पर। गमनम् = जाने को। आत्मनः = अपने। समुद्दिश्य = लक्ष्य करके। चिन्तयामास = विचार किया। तातेन = पिता द्वारा। स्वभुजात् = अपनी भुजाओं से। अवरोप्य = उतार कर। मय्येव = मुझ पर ही। राज्यभारः = राज्य का भार। समारोपितः = रख दिया है। अनाख्याय = बिना कहे। पदमपि = एक कदम भी। निर्गन्तुं न शक्यते = निकल नहीं सकता। स्कन्धावारोऽपि = सेना शिविर भी। अद्यापि = आज तक भी। न परापतति = लौटा नहीं है। व्यपदिश्य = बहाना करके। मोचयामि = छुटकारा लूँ। मुञ्चतु = छोड़े। सुहृत्साध्ये = मित्र द्वारा सिद्ध होने वाले। अस्मिन् अर्थे = इस विषय में। एकाकी = अकेला। असंनिहितः = उपस्थित नहीं है। क्षपा = रात्रि। क्षयम् अगात् = बीत गई।

हिन्दी अनुवाद– इसी बीच सूर्य ने अपनी किरणें समेट लीं। चन्द्रोदय हो जाने पर अपने जाने के विषय में लक्ष्य करके

चन्द्रापीड सोचने लगा– पिता ने अपनी भुजाओं से उतारकर राज्य का भार मेरे ऊपर डाल दिया है। उन्हें बिना बताए एक कदम भी आगे नहीं जा सकता। सेना भी अभी तक लौटकर नहीं आयी। कौन सा बहाना बनाकर यहाँ से छुटकारा लूँ। माता-पिता मुझे कैसे छोड़ेंगे। मित्र द्वारा सिद्ध होने वाले इस कार्य में अकेले क्या करूँ। वैशम्पायन भी इस समय मेरे पास नहीं है। इस प्रकार विचार करते हुए ही वह रात बीत गई।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– अत्रान्तरे = अत्र + अन्तरे। स्कन्धावारोऽपि = स्कन्धावारः + अपि। अद्यापि =अद्य + अपि।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपरोक्त गद्यांश किस मूलग्रन्थ से उद्धृत है?
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' से उद्धृत है।
प्रश्न 2. कम् उद्दिश्य चन्द्रापीडः किं चिन्तयामास?
उत्तर– चन्द्रापीडः आत्मनः उद्दिश्य एवं चिन्तयामास–'तातेन खलु स्वभुजात् अवरोप्य मय्येव राज्यभारः समारोपितः।'
प्रश्न 3. 'किं कारणं व्यपदिश्य आत्मानं मोचयामि।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– कौन-सा कारण बताकर (बहाना बनाकर) अपने को छुड़ाऊँ।
प्रश्न 4. 'तातेन' में कौन-सी विभक्ति है?
उत्तर– 'तातेन' में तृतीया विभक्ति एकवचन है।
प्रश्न 5. 'अवरोप्य' का शाब्दिक अर्थ लिखिए।
उत्तर– 'अवरोप्य' का शाब्दिक अर्थ है 'उतारकर'।

➥ **प्रातरेव किंवदन्ती शुश्राव– यथा किल 'दशपुरं यावत् परागतः स्कन्धावारः– इति। तां च श्रुत्वा प्रहृष्टचेताः केयूरकम् अब्रवीत्–''केयूरक! करतलवर्तिनीं सिद्धिम् अवधारय। प्राप्तः वैशम्पायनः'' इति।**

शब्दार्थ– प्रातरेव = प्रातःकाल ही। किंवदन्तीं = जनश्रुति। शुश्राव = सुनी। परागतः = लौट आया है। स्कन्धावारः = सेना शिविर। प्रहृष्टचेताः = प्रसन्नचित्त। करतलवर्तिनीम् = हथेली पर आई हुई। सिद्धिम् = सफलता को। अवधारय = समझो। प्राप्तः = आ गया है।

हिन्दी अनुवाद– प्रातःकाल ही चन्द्रापीड ने लोगों द्वारा कहते हुए सुना कि सेना शिविर दशपुर नगर तक लौट आयी है। यह सुनकर प्रसन्नचित्त उसने केयूरक से कहा– केयूरक! अब सफलता को हाथ में आई हुई समझो। वैशम्पायन आ गया है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– प्रहृष्टचेताः = प्रहृष्टं चेतः यस्य सः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।
उत्तर प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।
प्रश्न 2. ''केयूरक! करतलवर्तिनीं सिद्धिम् अवधारय।'' रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
उत्तर– केयूरक! अब सफलता को हाथ में आई हुई समझो।
प्रश्न 3. कः प्रातरेव किंवदन्ती शुश्राव?
उत्तर– चन्द्रापीडः प्रातरेव किंवदन्ती शुश्राव।
प्रश्न 4. स्कन्धवारः कुत्र यावत् परागतः?
उत्तर– स्कन्धवारः दशपुरं यावत् परागतः।
प्रश्न 5. चन्द्रापीडः किम् अब्रवीत्?
उत्तर– केयूरक! करतलवर्तिनीम् सिद्धिम् अवधारय। प्राप्तः वैशम्पायनः।

➥ **स तु तदाकर्ण्य, ''देव! किमपरं मया अत्र स्थितेन साधनीयम्। अकालक्षमा देव्याः कादम्बर्याः शरीरावस्था। सर्वो हि प्रत्याशया धार्यते। तत् देवागमनोत्सवम् आवेदयितुम् इदानीमेव गमनानुज्ञया प्रसादं क्रियमाणम् इच्छामि'' इति व्यजिज्ञपत्। एवं विज्ञापिते केयूरकेण, परितुष्टः चन्द्रापीडः प्रत्युवाच– ''साधु चिन्तितम्। कस्य**

वा अपरस्य ईदृशी देशकालज्ञता। गम्यतां देव्याः प्राणसंधारणाय। मदागमनप्रत्ययार्थं च पत्रलेखा त्वयैव सह यातु देवीपादमूलम्''। इत्युक्त्वा मेघनादम् आहूय आदिदेश– ''मेघनाद! यस्याम् भूमौ पत्रलेखानयनाय पूर्वं मया त्वं स्थापितः तां भूमिं यावत् पत्रलेखाम् आदाय केयूरकेण सह अग्रतः गच्छ। अहमपि वैशम्पायनम् आलोक्य अनुपदमेव ते तुरङ्गमैः परागतोऽस्मि'' इति।

शब्दार्थ– तदाकर्ण्य = यह सुनकर। किमपरम् = क्या दूसरा। अत्र स्थितेन = यहाँ रहने वाले। साधनीयम् = करने योग्य है। अकालक्षमा = समय के विलम्ब को न सहन कर सकने वाली। शरीरावस्था = शरीर की दशा। प्रत्याशया = आशा के सहारे। देवागमनोत्सवम् = देव के आने के हर्ष को। आवेदयितुम् = कहने के लिए। इदानीमेव = इसी समय ही। गमनानुज्ञया = जाने के आदेश से। व्यजिज्ञपत् = निवेदन किया। परितुष्टः = प्रसन्न। साधु चिन्तितम् = अच्छा सोचा। अपरस्य = दूसरे को। ईदृशी = ऐसी। देशकालज्ञता = देश और काल का ज्ञान। प्राणसंधारणाय = प्राणों की रक्षा के लिए। मदागमनप्रत्ययार्थम् = मेरे आने का विश्वास दिलाने के लिए। देवीपादमूलम् = देवी कादम्बरी के चरणों में। आहूय = बुलाकर। आदिदेश = आज्ञा दी। यस्याम् भूमौ = जिस स्थान पर। पत्रलेखागमनाय = पत्रलेखा को लाने के लिए। स्थापित = ठहराया था। अग्रतः = आगे। अनुपदम् = पीछे। परागतोऽस्मि = लौट रहा हूँ।

हिन्दी अनुवाद– यह सुनकर केयूरक ने कहा– देव, अब मुझे यहाँ रहकर और क्या करना है? देवी कादम्बरी की अवस्था विलम्ब सहन करने योग्य नहीं है। सभी लोग आशा ही के सहारे जीवित रहते हैं, इसलिए आपके आने के उत्सव की सूचना देने के लिए मैं इसी समय जाने के आदेश की कृपा चाहता हूँ। केयूरक के इस प्रकार निवेदन करने पर प्रसन्न होकर चन्द्रापीड ने कहा– बहुत अच्छा विचार किया। इस प्रकार देश-काल का ज्ञान और किसे हो सकता है? देवी कादम्बरी के प्राणों की रक्षा के लिए जाओ। मेरे आने का विश्वास दिलाने के लिए तुम्हारे साथ ही पत्रलेखा भी देवी कादम्बरी के पास जायेगी। ऐसा कहकर उसने मेघनाद को बुलाकर आदेश दिया– मेघनाद मैंने तुम्हें जिस स्थान पर पत्रलेखा को लाने के लिए ठहराया था, तुम वहाँ तक पत्रलेखा को लेकर केयूरक के साथ आगे-आगे चलो, मैं भी तुम्हारे पीछे ही वैशम्पायन को देखकर घोड़े पर सवार होकर आ रहा हूँ।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– तदाकर्ण्य = तत् + आकर्ण्य। देवागमनोत्सवम् = देवः + आगमनः + उत्सवम्। इदानीमेव = इदानीम् + एव। परागतोऽस्मि = परागतः + अस्मि।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. 'सर्वो हि प्रत्याशया धार्यते।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– प्रायः सभी लोग आशा के सहारे ही (अपना) जीवन धारण करते हैं।

प्रश्न 3. कस्याः शरीरावस्था अकालक्षमा आसीत्?

उत्तर– देव्याः कादम्बर्याः शरीरावस्था अकालक्षमा आसीत्।

प्रश्न 4. के प्रत्याशया धार्यते?

उत्तर– सर्वो जनाः हि प्रत्याशया धार्यते।

प्रश्न 5. कस्याः प्राणसंधारणाय गम्यताम्?

उत्तर– देव्या कादम्बर्याः प्राणसंधारणाय गम्यताम्।

➥ **अथ च पत्रलेखाम् आहूय ''पत्रलेखे! त्वयापि यान्त्या अध्वनि न मद्विरहपीडा भावनीया। न शरीरसंस्कारे अनादरः करणीयः। न आहारवेला अतिक्रमणीया। न येन केनचित् अज्ञातेन पथा यातव्यम्। मम जीवितमपि तवैव हस्ते वर्तते। तत् नियतं त्वया आत्मा यत्नेन परिरक्षणीयः''। इत्युक्त्वा केयूरकं पुनः तदवधानदानाय संविधाय ''महाश्वेताश्रमं यावत् त्वयैव सहानया मन्नयनाय आगन्तव्यम्'' इत्यादिश्य व्यसर्जयत्।**

(2017 NH, 19 DE, DF)

शब्दार्थ– अथ = इसके बाद। आहूय = बुलाकर। यान्त्या = जाने वाली। अध्वनि = मार्ग में। मद्विरहपीडा = मेरे विरह का कष्ट। भावनीया = अनुभव करना। शरीरसंस्कारे = शरीर की शुद्धि में। न अनादरः करणीयः = सावधानी करना। आहारवेला = भोजन का समय। अतिक्रमणीया = बिताना। येनकेचित् = जिस किसी। अज्ञातेन पथा = अनजान रास्ते से। यातव्यम् = जाना। जीवितमपि = जीवन भी। तवैव हस्ते = तुम्हारे ही हाथ में। वर्तते = है। नियत = निश्चित रूप से। तदवधानदानाय = उसकी ओर

ध्यान देने के लिए। संविधाय = आदेश देकर। त्वयैव सहानया = तुम्हारे ही साथ। मन्नयनाय = मुझे ले चलने के लिए। इत्यादिश्य = ऐसा आदेश देकर। व्यसर्जयत् = विदा किया।

हिन्दी अनुवाद– इसके बाद पत्रलेखा को बुलाकर चन्द्रापीड ने कहा– पत्रलेखे, तुम मार्ग में जाते हुए मेरे विरह के कष्ट का अनुभव मत करना, शरीर शुद्धि में असावधानी मत करना, भोजन का समय मत बिताना, किसी अनजान रास्ते से मत जाना। मेरा जीवन तुम्हारे ही हाथ में है। इसलिए निश्चित रूप से तुम अपनी रक्षा करना। ऐसा कहकर केयूरक को उसकी ओर ध्यान रखने का आदेश दिया। फिर उसने कहा कि महाश्वेता के आश्रम तक मुझे लेने के लिए तुम्हारे साथ पत्रलेखा भी आएगी। ऐसा कहकर चन्द्रापीड ने उसे विदा किया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– मद्विरहपीड़ा = मत् + विरहपीड़ा। तदवधानदानाय = तत् + अवधानदानाय। इत्यादिश्य = इति + आदिश्य।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. अस्य गद्यांशस्य प्रणेता कः?

उत्तर– अस्य गद्यांशस्य प्रणेता 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. चन्द्रापीडः पत्रलेखाम् आहूय किम् अकथयत्?

उत्तर– चन्द्रापीडः पत्रलेखाम् आहूय अकथयत्–"पत्रलेखे! त्वयापि यान्त्या अध्वनि न मद्विरहपीडा भावनीया। न शरीरसंस्कारे अनादरः करणीयः। न आहारवेला अतिक्रमणीया। न येन केनचित् अज्ञातेन पथा यातव्यम्। मम जीवितमपि तवैव हस्ते वर्तते। तत् नियतं त्वया आत्मा यत्नेन परिरक्षणीयः"।

प्रश्न 3. "महाश्वेताश्रमं यावत् त्वयैव सहानया मन्नयनाय आगन्तव्यम्।" रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– महाश्वेता के आश्रम तक मुझे लेने के लिए तुम्हारे साथ पत्रलेखा भी आयेगी।

प्रश्न 4. चन्द्रापीडः केयूरकं किम् आदिश्य व्यसर्जयत्?

उत्तर– "महाश्वेताश्रमं यावत् त्वयैव सहानया मन्नयनाय आगन्तव्यम्" चन्द्रापीडः इत्यादिश्य व्यसर्जयत्।

प्रश्न 5. "अध्वनि" का शाब्दिक अर्थ लिखिए।

उत्तर– अध्वनि का शाब्दिक अर्थ है– 'मार्ग में'।

➥ **निर्गतायां केयूरकेण सह पत्रलेखायाम्, पितुः पादमूलं गत्वा शुकनाससमुखेन वैशम्पायनप्रत्युद्गमनाय आत्मानं मोचयित्वा, जननीभवने निर्वर्तितशरीरस्थितिः तं दिवसं यामिन्याः यामद्वयं च सुहृद्दर्शनौत्सुक्येन जाग्रदेव नीत्वा अपररात्रवेलाम् इन्द्रायुधम् आरुह्य, सुबहुना तुरङ्गमबलेन अनुगम्यमानः, नगर्याः निर्गत्य, शिप्राम् उत्तीर्य, दशपुरगामिना मार्गेण प्रावर्तत गन्तुम्। तावत्यैव अपररात्रवेलया योजनत्रितयम् अलङ्घयत्।**

(2017 NH)

शब्दार्थ– निर्गतायां = निकलने पर। पितुः पादमूलं = पिता के पास। शुकनाससमुखेन = शुकनास से कहलवाकर। प्रत्युद्गमनाय = स्वागत के लिए। आत्मानं मोचयित्वा = अपने को छुड़ाकर। जननीभवने = माता के मकान में। निर्वर्तितशरीरस्थितिः = शरीरक्रिया अर्थात् स्नान, भोजन आदि करके। यामिन्याः = रात के। यामद्वयम् = दो पहर। सुहृद्दर्शनौत्सुक्येन = मित्रदर्शन की उत्सुकता से। जाग्रदेव = जागते ही। नीत्वा = बिताकर। अपररात्रवेलाम् = रात के तीसरे पहर में। तुरंगमबलेन = बहुत से घुड़सवारों द्वारा। नगर्याः निर्गत्य = नगरी से निकलकर। प्रावर्तत गन्तुं = चल दिया। योजनत्रितयम् = तीन योजन अर्थात् 12 कोस। अलङ्घयत् = पार कर लिया।

हिन्दी अनुवाद– केयूरक के साथ पत्रलेखा के चले जाने पर चन्द्रापीड ने पिता के पास जाकर शुकनास द्वारा वैशम्पायन के स्वागत के लिए आदेश पाकर माता के महल में स्नान-भोजन आदि किया और मित्र को देखने की उत्सुकता में उस दिन और रात के दो पहर को जागते ही बिता दिया। इसके पश्चात् शेष रात्रि में इन्द्रायुध नामक घोड़े पर सवार होकर बहुत से घुड़सवारों के साथ नगर से बाहर निकलकर शिप्रा नदी को पार किया और दशपुर जाने वाले रास्ते से चल दिया। इसी शेष रात्रि में ही उसने बारह कोस का रास्ता तय कर लिया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– प्रत्युद्गमनाय = प्रति + उद्गमनाय। निर्वर्तितशरीर स्थितिः = निर्वर्तिता शरीरस्य स्थितिः येन सा।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक का नाम 'बाणभट्ट' है।
प्रश्न 2. 'दशपुरगामिना मार्गेण प्रावर्तत गन्तुम्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– "दशपुर" की ओर जाने वाले रास्ते से चलना प्रारम्भ कर दिये।
प्रश्न 3. पत्रलेखा केन सह अगच्छत्?
उत्तर– पत्रलेखा केयूरकेण सह अगच्छत्।
प्रश्न 4. चन्द्रापीडः कस्याः भवने स्नानादिक्रियाम् अकरोत्?
उत्तर– चन्द्रापीडः जननीभवने स्नानादिक्रियाम् अकरोत्।
प्रश्न 5. चन्द्रापीडः केन मार्गेण प्रावर्तत गन्तुम्?
उत्तर– चन्द्रापीडः दशपुरगामिना मार्गेण प्रावर्तत गन्तुम्।

➥ **अथ च उदयगिरिशिखरम् आरूढे भगवति सप्तसप्तौ अग्रतः अर्धगव्यूतिमात्र एव आयातं स्कन्धावारम् अद्राक्षीत्। जवविशेषग्राहिणा इन्द्रायुधेन सत्वरम् आसाद्य, स्कन्धावारं प्रविश्य, 'क्व वैशम्पायनः' इत्यपृच्छत्। ततः ते स्कन्धावारवर्तिनः सर्वे जनाः सममेव अस्मिंस्तरुतले अवतरतु तावत् देवः, ततः यथावस्थितं विज्ञापयामः" इति न्यवेदयन्। चन्द्रापीडस्तु तेन कष्टतरेण वचसा अन्तःशल्य इव भूत्वा पुनः तान् अप्राक्षीत्– "किं वृत्तम् अस्य, येनासौ नागतः कः एकाकिनम् उत्सृज्य, आयाताः भवन्तः?" इति।** (2019 DA)

शब्दार्थ– सप्तसप्तौ = सूर्य। आरूढे = चढ़ने पर। अग्रतः = आगे से। अर्धगव्यूतिमात्र एव = दो कोस आगे आई हुई। जवविशेषग्राहिणा = विशेष वेग से चलने वाले। सत्वरम् = शीघ्र ही। आसाद्य = पहुँचकर। क्व = कहाँ। स्कन्धावारवर्तिनः = सेना शिविर में स्थित। सममेव = साथ ही। अवतरतु = उतर जायें। यथावस्थितम् = जो हुआ। विज्ञापयामः = बता रहे हैं। न्यवेदयन् = निवेदन किया। कष्टतरेण = अधिक कष्ट देने वाले। वचसा = वाणी से। अन्तःशल्य इव = हृदय में चुभे हुए कील-सा। वृत्तम् = समाचार। नागतः = नहीं आया। उत्सृज्य = छोड़कर।

हिन्दी अनुवाद– इसके पश्चात् सूर्योदय होने पर राजकुमार चन्द्रापीड ने दो कोस ही आगे आई हुई अपनी सेना को देखा। उसने वेग से चलने वाले इन्द्रायुध के द्वारा शीघ्र ही सेना में पहुँचकर कहा–वैशम्पायन कहाँ है? इसके बाद सेना में रहने वाले सभी लोगों ने एक साथ ही कहा कि देव! इस वृक्ष के नीचे उतर जाइये। फिर जैसी घटना हुई है उसका निवेदन करेंगे। इस कष्ट देने वाली वाणी से उसके हृदय में कील-सा चुभ गया और उनसे फिर उसने पूछा– उसको क्या हो गया जिससे वह नहीं आया। अथवा कहाँ रह गया? उसे अकेले छोड़कर आप लोग क्यों चले आये?

व्याकरणात्मक टिप्पणी– यथावस्थितम् = यथा + अवस्थितम्। नागतः = न + आगतः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपरोक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' (उत्तरार्द्धभाग) से उद्धृत है।
प्रश्न 2. "उदयगिरिशिखरम्' आरूढे भगवति सप्तसप्तौ" रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– उदयाचल पर भगवान सूर्य के आरूढ़ (चढ़ने) होने पर।
प्रश्न 3. चन्द्रापीडः अर्धगव्यूतिमात्र एव आयातं कम् अद्राक्षीत्?
उत्तर– चन्द्रापीडः अर्धगव्यूतिमात्र एव आयातं स्कन्धवारम् अद्राक्षीत्।
प्रश्न 4. चन्द्रापीडः स्कन्धवारं प्रविश्य किम् अपृच्छत्?
उत्तर– चन्द्रापीडः जवविशेषग्राहिणा इन्द्रायुधेन आसाद्य, स्कन्धवारं प्रविश्य 'क्व वैशम्पायनः' इत्यपृच्छत्?
प्रश्न 5. सर्वे जनाः किं न्यवेदयत्?
उत्तर– सर्वे जनाः सममेव अस्मिंस्तरुतले अवतरतु तावत् देवः, ततः यथावस्थितं विज्ञापयामः।

प्रश्न 6. 'इन्द्रायुधेन' में कौन-सी विभक्ति है?

उत्तर– 'इन्द्रायुधेन' में तृतीया विभक्ति है। यह तृतीया विभक्ति के एकवचन का रूप है।

प्रश्न 7. 'अन्तः शल्य इव भूत्वा' का शाब्दिक अर्थ लिखिए।

उत्तर– 'अन्तः शल्य इव भूत्वा' का शाब्दिक अर्थ है– हृदय में चुभे हुए कील के सदृश।

➥ **ते च एवं पृष्टाः व्यज्ञापयन्–''देव! श्रूयतां यथा वृत्तम्– 'पृष्ठतः स्कन्धावारम् अनुपालयद्भिः शनैः शनैः वैशम्पायनेन सह भविद्भरागन्तव्यम्' इत्यादिश्य गतवति देवे, तस्मिन् दिवसे न दत्तमेव प्रयाणं स्कन्धावारेण। अन्यस्मिन् अहनि आहतायां प्रयाणभेर्यां प्रातरेव अस्मान् वैशम्पायनोऽभ्यधात्– 'अतिपुण्यं हि अच्छोदाख्यं सरः पुराणे श्रूयते। तत् अस्मिन् स्नात्वा प्रणम्य च अस्यैव तीरभाजि सिद्धायतने भगवन्तं भवानीपतिं व्रजामः' इत्यभिधाय चरणाभ्यामेव अच्छोदसरस्तीरम् अयासीत्। तत्र च अतिरम्यतया सर्वतः दत्तदृष्टिः संचरन् अतिरमणीयं शीतलाभ्यन्तरशिलातलं तटलतामण्डपम् अद्राक्षीत्। अतिचिरान्तरितदर्शनं सुहृदमिव तं विस्मृतनिमेषेण चक्षुषा विलोकयन् समुपविश्य भूमौ किमपि अन्तरात्मनि स्मरन्निव तूष्णीम् अधोमुखः तस्थौ।**

शब्दार्थ– ते = उन सब सैनिकों ने। एवं पृष्टाः = इस प्रकार पूछने पर। व्यज्ञापयन् = निवेदन किये। यथावृत्तम् = जैसा हुआ। पृष्ठतः = पीछे। अनुपालयद्भिः = रक्षा करते हुए। भवद्भिरागन्तव्यम् = आप लोग आइयेगा। इत्यादिश्य = ऐसा आदेश देकर। न दत्तमेव प्रयाणम् = प्रस्थान नहीं किया।। अन्यस्मिन् = दूसरे। अहनि = दिन। आहतायाम् = बजने पर। प्रयाणभेर्याम् = कूच का नगाड़ा। अस्माद् = हम लोगों को। अभ्यधात् = कहा। तीरभाजि = किनारे पर स्थित। सिद्धायतने = मन्दिर में। व्रजामः = चलेंगे। इत्यभिधाय = ऐसा कहकर। चरणाभ्याम् एव = पैदल ही। अयासीत् = आए। अतिरम्यतया = अत्यधिक सुन्दरता के कारण। सर्वतः = चारों ओर। दत्तदृष्टिः = देखते हुए। संचरन् = घूमते हुए। शीतलाभ्यन्तरशिलातलम् = बीच में शीतल शिला वाले। तटलतामण्डपम् = किनारे की लता के मण्डप को। अद्राक्षीत् = देखा। अतिचिरान्तरितदर्शनम् = बहुत दिन के बाद देखे गये। सुहृदमिव = मित्र के समान। विस्मृतनिमेषेणचक्षुषा = निर्निमेष नेत्रों से। विलोकयन् = देखते हुए। समुपविश्य भूमौ = पृथ्वी पर बैठकर। अन्तरात्मनि स्मरन् इव = हृदय में स्मरण करते हुये सा। तुष्णीम् = चुपचाप। अधोमुखः तस्थौ = नीचे मुख करके बैठ गया।

हिन्दी अनुवाद– उन सब सैनिकों ने चन्द्रापीड के इस प्रकार पूछने पर निवेदन किया– राजकुमार! जो कुछ हुआ उसे सुनिये। 'सेना शिविर की रक्षा करते हुए आप लोग पीछे-पीछे धीरे-धीरे आइएगा,' आपके इस प्रकार आदेश देकर चले जाने के बाद उस दिन सेना ने प्रस्थान नहीं किया। दूसरे दिन कूच का नगाड़ा बजने पर प्रातःकाल ही वैशम्पायन ने हम लोगों से कहा कि पुराणों में ऐसा सुना गया है कि अच्छोद तालाब अत्यन्त पुण्यकर है। अतः उसमें स्नान करके तथा उसके किनारे स्थित मन्दिर में भगवान् शिव को प्रणाम करके चलेंगे। ऐसा कहकर वह पैदल ही अच्छोद के किनारे आए। वहाँ उन्होंने अत्यन्त रमणीय एक लतामण्डप देखा जिसके भीतर एक शीतल शिला थी। बहुत दिन के पश्चात् दिखाई पड़ने वाले मित्र के समान उस लतामण्डप को निर्निमेष नेत्रों से देखते हुए वे पृथ्वी पर बैठ गये और मन ही मन किसी बात का स्मरण करते हुए मुँह को नीचे किये वहीं चुपचाप बैठे रहे।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– भवद्भिरागन्तव्यम् = भवद्भिः + आगन्तव्यम्। इत्यादिश्य = इति + आदिश्य। दत्तमेव = दत्तम् + एव। इत्यभिधाय = इति + अभिधाय। सुहृदमिव = सुहृदम् + इव।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. 'अतिपुण्यं हि अच्छोदाख्यं सरः पुराणे श्रूयते।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– पुराणों में ऐसा सुना जाता है कि अच्छोद नाम का सरोवर अत्यन्त पुण्य स्थान है।

प्रश्न 3. चन्द्रापीडेन के व्यज्ञापयन्?

उत्तर– स्कन्धवारवर्तिनः सर्वे जनाः व्यज्ञापयन्।

प्रश्न 4. चन्द्रापीडः किम् आदिदेश?

उत्तर– 'वैशम्पायनेन सह भविदभरागन्तव्यम्' इत्यादिदेश।

प्रश्न 5. अच्छोदाख्यं सरः कीदृशी अस्ति?

उत्तर– अतिपुण्यं हि अच्छोदाख्यं सरः अस्ति।

➥ **तथा अवस्थितं तम् अवलोक्य, जातचिन्ताः वयम् एवम् अवदाम। 'दृष्टा दर्शनीयानाम् अवधिः एषा भूमिः। तत् उत्तिष्ठ। निर्वर्तय स्नानविधिम्। प्रयाणाभिमुखः सकलः स्कन्धावरः त्वां प्रतिपालयन् आस्ते' इति। स तु एवम् उक्तोऽपि अस्माभिः अश्रुतास्मदीयालाक इव न किञ्चिदपि प्रत्युत्तरम् अददात्। तमेव केवलं लतामण्डपं अनिमेषपक्ष्मणा चक्षुषा विलोकितवान्। पुनः पुनश्चास्माभिः आगमनाय अनुरुध्यमानः परिच्छेदनिष्ठुरम् अस्मान् आह स्म– ''मया तु न यातव्यम् अस्मात् प्रदेशात्। गच्छन्तु भवन्तः स्कन्धावारम् आदाय'' इति।**

शब्दार्थ– तथा अवस्थितम् = उस प्रकार बैठे हुए। तम् अवलोक्य = उसे देखकर। जातचिन्ताः = चिंतित होकर। अवदाम = कहा। दृष्टा = देख लिया। दर्शनीयानाम् अवधिः = सुन्दरता की सीमा। उत्तिष्ठ = उठो। निर्वर्तय = पूरी करो। स्नानविधिम् = स्नान की क्रिया। प्रयाणाभिमुखः = प्रस्थान के लिए तैयार। प्रतिपालयन् आस्ते = प्रतीक्षा कर रहा है। अस्माभिः = हम लोगों द्वारा। अश्रुतास्मदीयालाप इव = हमारी बातों को न सुनते हुए के समान। किंचिदपि = कुछ भी। प्रत्युत्तरम् = हमारी बात का जवाब। अददात् = दिया। अनिमेषपक्ष्मणा = निर्निमेष। विलोकितवान् = देखता रहा। आगमनाय = आने के लिए। अनुरुध्यमानः = अनुरोध करने पर। परिच्छेदनिष्ठुरम् = निर्णय करने में निष्ठुर। आह स्म = कहा। यातव्यम् = जाना चाहिए। गच्छन्तु = जाइये। आदाय = लेकर।

हिन्दी अनुवाद– उसे इस प्रकार बैठे हुए देखकर हम लोगों ने चिन्तित होकर कहा कि–सुन्दरता की चरम सीमा इस भूमि को देख चुके, अब उठो और स्नानादि करो। प्रस्थान के लिए तैयार सारी सेना तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है। हम लोगों के ऐसा कहने पर भी मानो हमारी बातों को न सुनते हुए उसने कोई उत्तर न दिया। केवल उसी लतामण्डप को निर्निमेष दृष्टि से देखता रहा। आने के लिए हम लोगों द्वारा बार-बार अनुरोध करने पर अत्यन्त निष्ठुर होकर उसने हम लोगों से कहा– ''मैं इस स्थान से नहीं जाऊँगा। आप लोग सेना लेकर जाइये।''

व्याकरणात्मक टिप्पणी– जातचिन्ता = जाता चिन्ता येषाम् ते। प्रयाणभिमुखः = प्रयाण + अभिमुखः। अश्रुतास्मदीयालाप = अश्रुत + अस्मदीय + आलापः। किंचिदपि = किंचित् + अपि।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. ''दृष्टा दर्शनीयानाम् अवधिः एषा भूमिः।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– द्रष्टव्यता की पराकाष्ठा इस भूमि को (आपने) देख लिया।

प्रश्न 3. के जातचिन्ताः बभूव?

उत्तर– स्कन्धवारवर्तिनः सर्वे जनाः जातचिन्ताः बभूव।

प्रश्न 4. कः तमेव केवलं लतामण्डपं अनिमेषपक्ष्मणा चक्षुषा विलोकितवान्?

उत्तर– वैशम्पायनः तमेव केवलं लतामण्डपं अनिमेषपक्ष्मणा चक्षुषा विलोकितवान्?

प्रश्न 5. 'मया तु न यातव्यम् अस्मात् प्रदेशात्' केनोक्तः?

उत्तर– वैशम्पायनेनोक्तः – 'मया तु न यातव्यम् अस्मात् प्रदेशात्।'

➥ **इत्युक्तवन्तं च तम् अकस्मादेव किंचिदस्य वैराग्यकारणम् उत्पन्नम् इति आशंक्य सानुनयम् आगमनाय पुनः पुनः प्रतिबोध्य, तादृशासंबद्धानुष्ठानेन जातपीडाः निष्ठुरमपि अभिहितवन्तः वयम्। स तु ''किमहम् एतावदपि न वेद्मि, यत् गमनाय मां भवन्तः प्रबोधयन्ति। अपि च, चन्द्रापीडेन विना क्षणमपि अहम् अन्यत्र न पारयामि स्थातुम्। तथापि किं करोमि? अनेनैव क्षणेन सर्वत्र विगलितं मे प्रभुत्वम्।**

शब्दार्थ– इत्युक्तवन्तं = ऐसा कहने वाले को। अकस्मादेव = अचानक ही। वैराग्यकारणम् = उदासीनता का कारण। आशंक्य = आशंका करके। सानुनयम् = विनती के साथ। प्रतिबोध्य = समझाकर। तादृशासंबद्धानुष्ठानेन = उस प्रकार के अनुचित कार्य से। जातपीडाः = दुःखी होकर। निष्ठुरमपि = कठोर बातें। अभिहितवन्तः = कहीं। एतावदपि = यह भी। न वेद्मि = नहीं जानता हूँ। न पारयामि स्थातुं = नहीं रह सकता हूँ। अनेनैव क्षणेन = इसी क्षण से। विगलितम् = नष्ट हो गई। प्रभुत्वम् = शक्ति।

हिन्दी अनुवाद– इस प्रकार कहने वाले वैशम्पायन के प्रति हम लोगों के मन में यह सन्देह हुआ कि यहाँ शायद इसके वैराग्य का कोई कारण उपस्थित हो गया है। इसलिए अनुनय-विनय के साथ आने के लिए हम लोगों ने उसे बहुत समझाया और उसके उस प्रकार के कार्य से दुःखी होकर उसे कुछ कठोर बातें भी कहीं। इस पर उसने कहा–क्या मैं इतना भी नहीं जानता हूँ कि

चलने के लिए आप लोग मुझे समझा रहे हैं। मैं चन्द्रापीड के बिना दूसरी जगह एक क्षण भी नहीं रह सकता फिर भी मैं क्या करूँ? इस समय मैं अत्यन्त विवश हो गया हूँ।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– अकस्मादेव = अकस्मात् + एव। तादृशासंबद्धानुष्ठानेन = तादृश + असंबद्ध + अनुष्ठानेन। निष्ठुरमपि = निष्ठुरम् + अपि। एतावदपि = एतावत् + अपि।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. 'तादृशासंबद्धानुष्ठानेन जातपीडाः निष्ठुरमपि अभिहितवन्तः वयम्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– उस प्रकार के अनुचित कार्य से दुःखी होकर हमने उन्हें कठोर बातें कहीं।

प्रश्न 3. कस्य हृदये अकस्मादेव वैराग्यकारणम् उत्पन्नम्।

उत्तर वैशम्पायनस्य हृदये अकस्मादेव वैराग्यकारणम् उत्पन्नम्।

प्रश्न 4. केन विना क्षणमपि अहम् अन्यत्र न पारयामि स्थातुम्?

उत्तर– चन्द्रापीडेन विना क्षणमपि अहम् अन्यत्र न पारयामि स्थातुम्।

प्रश्न 5. कस्य विगलितं प्रभुत्वम्?

उत्तर– वैशम्पायनस्य विगलितं प्रभुत्वम्।

➥ **स्मरदिव किमपि मनो नान्यत्र प्रवर्तते। निगलिताविव अन्यत्र पदमपि दातुं न चरणौ उत्सहेते। तत् अलं निर्बन्धेन, गच्छन्तु भवन्तुः'' इति उक्त्वा तेषु तेषु तरुतलेषु लतागहनेषु सरस्तीरेषु किमपि नष्टमिव अन्विष्यन् बभ्राम। वयमपि तत्प्रातिबोधनप्रत्याशया दिनत्रयं स्थित्वा, किमेतदिति विस्मितान्तरात्मानः निष्प्रत्याशाः सुकृतशम्बलसंविधानम् तत्परिकरम् तत्र स्थापयित्वा परागताः वयम्'' इति।**

शब्दार्थ– स्मरदिव = याद करता हुआ सा। नान्यत्र प्रवर्तते = दूसरी जगह नहीं जा रहा है। निगलिताविव = बेड़ी पड़े हुए से। पदमपि दातुम् = एक पग रखने के लिए भी। निबन्धेन = हठ से। तेषु तेषु = उन उन। किमपि नष्टमिव = कुछ खोया हुआ सा। अन्विष्यन् = खोजते हुए। बभ्राम = घूमने लगा। तत्प्रतिबोधनप्रत्याशया = उसे समझाने की आशा से। किमेतदिति = यह क्या है? विस्मितान्तरात्मनः = चकित हृदय वाले। निष्प्रत्याशाः = निराश हो जाने वाले। सुकृतसम्बलसंविधानम् = भोजनादि की अच्छी व्यवस्था करने वाले। तत्परिकरम् = उसके सेवकों को। तत्र स्थापयित्वा = वहीं छोड़कर। परागताः = लौट गये।

हिन्दी अनुवाद– किसी बात का स्मरण करते हुए मेरा मन दूसरी जगह जा ही नहीं पा रहा है। बेड़ियों से जकड़े हुए मेरे पैर इस जगह को छोड़कर एक पग भी आगे बढ़ ही नहीं पा रहे हैं। अतः आप लोग जाइए, हठ करना व्यर्थ है। इस प्रकार कहकर वह उन वृक्षों के नीचे घनी लताओं में, तालाब के किनारों पर किसी खोई हुई वस्तु को ढूँढ़ता हुआ-सा घूमने लगा। उसे समझाने की आशा में हम लोग वहाँ तीन दिन ठहरे रहे। उसके इस व्यवहार से चकित और निराश होकर हम लोग भोजनादि की अच्छी व्यवस्था करके तथा सेवकों को वहीं छोड़कर लौट आये हैं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– निगलिताविव = निगलितौ + इव। विस्मितान्तरात्मनः = विस्मतः अन्तर्रात्मा येषाम् ते। तत्परिकरम् = तत् + परिकरम्।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. ''लतागहनेषु सरस्तीरेषु किमपि नष्टमिव अन्विष्यन् बभ्राम।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– घनी लताओं में, तालाब के किनारों पर किसी खोई हुई वस्तु को ढूँढ़ते हुए की तरह भ्रमण करते रहे।

प्रश्न 3. कस्य मनः नान्यत्र प्रवर्तते?

उत्तर– वैशम्पायनस्य मनः नान्यत्र प्रवर्तते।

प्रश्न 4. कस्य चरणौ निगलिताविव आसीत्?
उत्तर– वैशम्पायनस्य चरणौ निगलिताविव आसीत्।
प्रश्न 5. कः सरस्तीरेषु किमपि नष्टमिव अन्विषयन् बभ्राम?
उत्तर– वैशम्पायनः सरस्तीरेषु किमपि नष्टमिव अन्विषयन् बभ्राम।

➥ **चन्द्रापीडस्तु स्वप्नेऽपि अनुत्प्रेक्षणीयम् वैशम्पायनवृत्तान्तम् आकर्ण्य, युगपत् उद्वेगविस्मयाभ्याम् आक्रान्तहृदयो बभूव। 'किं पुनः ईदृशस्य वैराग्यस्य कारणं भवेत्' इति बहुधा विचिन्त्य, 'प्रकारान्तरेण गमनम् उत्पादयता कादम्बरीसमीपगमनोपायचिन्तापर्याकुलमतेः उपकृतमेव वैशम्पायनवृत्तान्तेन' इति निश्चित्य, तत्कालकृतं वैशम्पायनवियोगदुःखम् परिणामसुखम् औषधमिव बहु मन्यमानः परापतितवान् उज्जयिनीम्। तत्र कृच्छ्रेण मात्रा पित्रा च विसर्जितः शुकनासं मनोरमां च प्रणम्य अग्रतः ढौकितमपि कृतापसर्पणम् अनाविष्कृतगमनोत्साहम् इन्द्रायुधम् आरुह्य, रयेणैव निरगान्नगर्याः।**

शब्दार्थ– स्वप्नेऽपि = स्वप्न में भी। अनुत्प्रेक्षणीयम् = अकल्पनीय। वृत्तान्तम् = समाचार। आकर्ण्य = सुनकर। युगपत् = एक साथ ही। उद्वेगविस्मयाभ्याम् = उद्वेग और आश्चर्य से। आक्रान्तहृदयो = दुःखी हृदय। ईदृशस्य = इस प्रकार के। बहुधा विचिन्त्य = बहुत तरह से सोचकर। प्रकारान्तरेण = दूसरे प्रकार से। गमनम् उत्पादयता = जाना उत्पन्न करने वाले अर्थात् जाने का कारण होने से। कादम्बरीसमीपगमनोपायचिन्तापर्याकुलमतेः = कादम्बरी के पास जाने के उपाय की चिन्ता में व्यग्र। वैशम्पायनवृत्तान्तेन = वैशम्पायन के समाचार से। वैशम्पायनवियोगदुःखम् = वैशम्पायन के वियोग दुःख को। परिणामसुखम् = अन्त में सुख देनेवाले। औषधमिव = दवा के समान। बहुमन्यमान = लाभ मानते हुए। परापतितवान् = लौट आया। कृच्छ्रेण = कठिनाई से। विसर्जितः = विदा पाकर। ढौकितमपि = कसे हुए। कृतापसर्पणम् = हट जाने वाले। अनाविष्कृतगमनोत्साहम् = जाने के उत्साह से रहित। आरुह्य = चढ़कर। रयेणैव = वेग से। निरगान्नगर्याः = निरगात् + नगर्याः) नगर से निकल पड़ा।

हिन्दी अनुवाद– चन्द्रापीड का हृदय स्वप्न में कल्पना न करने योग्य वैशम्पायन की दशा सुनकर एक साथ ही व्याकुलता और आश्चर्य से भर उठा। उसने बहुत सोचा कि उसके वैराग्य का क्या कारण हो सकता है? कादम्बरी के पास जाने के उपाय की चिन्ता में लगा हुआ चन्द्रापीड प्रकारान्तर से वैशम्पायन के वृत्तान्त को वहाँ जाने का कारण समझ बहुत प्रसन्न हुआ और वैशम्पायन के वियोग-दुःख को औषधि के समान अन्त में सुखदायी जानकर उज्जयिनी लौट आया। वहाँ बड़ी कठिनाई से माता-पिता द्वारा विदा लेकर शुकनास और मनोरमा को प्रणाम करके पहले ही से जीन कसे हुए किन्तु चलने के लिए अनिच्छुक इन्द्रायुध पर सवार होकर नगर से वेगपूर्वक निकल पड़ा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– आक्रान्तहृदयः = आक्रान्तः हृदयः यस्य सः। निरगान्नगर्याः = निरगात् + नगर्याः। रयेणैव = रयेण + एव।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।
प्रश्न 2. 'किं पुनः ईदृशस्य वैराग्यस्य कारणं भवेत्!' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– इस प्रकार की उदासीनता का कारण क्या हो सकता है?
प्रश्न 3. कस्य वृत्तान्तम् आकर्ण्य चन्द्रापीडस्य हृदयं युगपद् उद्वेगविस्मयाश्याम् आक्रान्तो बभूव?
उत्तर– वैशम्पायनवृत्तान्तम् आकर्ण्य चन्द्रापीडस्य हृदयं युगपद् उद्वेगविस्मयाभ्याम् आक्रान्तो बभूव।
प्रश्न 4. वैशम्पायनवृत्तान्तम् आकर्ण्य कस्य आक्रान्तहृदयो बभूव?
उत्तर– वैशम्पायनवृत्तान्तम् आकर्ण्य चन्द्रापीडस्य आक्रान्तहृदयो बभूव।
प्रश्न 5. कादम्बरीसमीपगमनोपायचिन्तापर्याकुलमतेः कः आसीत्?
उत्तर– चन्द्रापीडः कादम्बरीसमीपगमनोपायचिन्तापर्याकुलमतेः आसीत्।

➥ **निर्गत्य च उत्ताम्यता हृदयेन किमपि किमपि चिन्तयन्, दिवा रात्रौ च अवहत्। एवं वहतोऽप्यस्य दवीयस्तया अध्वनः अर्धपथ एव आशुगमनविघ्नकारी बभूव जलदकालः। तादृशेऽपि प्रावृट्काले कलामपि अकृतपरिलम्बः**

धाराहतिविकूणिताक्षेण अपचीयमानबलजवोत्साहेन वाजिसैन्येन अनुगम्यमानः तदेव अच्छोदम् आससाद। तत्र चतुर्ष्वपि पार्श्वेषु तुरगगत एवं विचिन्वन् समन्तात् बभ्राम। भ्राम्यंश्च यदा न क्वचिदपि किञ्चित् अवस्थानचिह्नमपि नोपलक्षितवान् तदा महाश्वेता कदाचिदस्य वृत्तान्तस्य अभिज्ञा भवेदिति विचिन्त्य तदाश्रमम् उपजगाम।

शब्दार्थ– निर्गत्य = निकलकर। उत्ताम्यता = संतप्त। चिन्तयन् = सोचता हुआ। दिवा रात्रौ = दिन-रात। अवहत् = सवार होकर चलता रहा। एवं वहतोप्यस्य = इस प्रकार चलते हुए भी। दवीयस्तया = बहुत दूरी होने से। अध्वनः अर्धपथ एव = आधे रास्ते में ही। आशुगमनविघ्नकारी = शीघ्र गमन में विघ्न उपस्थित करने वाला। जलदकालः = वर्षा ऋतु। प्रावृट् काले = वर्षा ऋतु में। कलामपि = क्षणमात्र भी। अकृतपरिलम्बः = बिना विलम्ब किये। धाराहतिविकूणिताक्षेण = वर्षा की बौछारों द्वारा बन्द नेत्र से। अपचीयमानबलजवोत्साहेन = बल, वेग तथा उत्साह के कम होने पर। वाजिसैन्येन = घुड़सवारों द्वारा। आससाद = पहुँचा। चतुर्ष्वपि पार्श्वेषु = चारों किनारों पर। भ्राम्यन् = घूमते हुए। अवस्थानचिह्नमपि = ठहरने की निशानी भी। नोपलक्षितवान् = नहीं देखा। अभिज्ञा = जानकर। उपजगाम = चला गया।

हिन्दी अनुवाद– चन्द्रापीड नगर से निकलकर संतप्त हृदय से विभिन्न विचार करते हुए रात-दिन घोड़े पर बैठकर चलता रहा। इस प्रकार चलते रहने पर भी दूरी अधिक होने के कारण शीघ्र चलने में बाधा डालने वाली वर्षा ऋतु आ गई। ऐसी वर्षा से भी क्षणमात्र का विलम्ब किये बिना ही वर्षा की बौछार से बन्द आँखों तथा बल, वेग और उत्साह से रहित होते हुए भी घुड़सवारों को पीछे लिये चन्द्रापीड उसी अच्छोद तालाब पर पहुँचा। घोड़े पर बैठे हुए ही तालाब के चारों किनारे सभी जगह ढूँढ़ते हुए वह घूमने लगा किन्तु जब उसने कहीं भी कोई ठहरने का चिह्न नहीं पाया तो यह सोचकर कि शायद महाश्वेता इस समाचार को जानती हो उसके आश्रम में चला गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– दिवारात्री = दिवा च रात्रिः च। वहतोप्यस्य = वहतः + अपि + अस्य। दवीयस्तया = दवीयः + तया। कलामपि = कलाम् + अपि।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. ''तत्र चतुर्ष्वपि पार्श्वेषु तुरगगत एवं विचिन्वन् समन्तात् बभ्राम!'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– वहाँ सरोवर के चारों किनारों पर घोड़े पर सवार रहकर ही सभी जगह ढूँढ़ते हुए चारों ओर घूमने लगे।

प्रश्न 3. कः उत्ताम्यता हृदयेन चिन्तयन् दिवारात्रौ च अवहत्?

उत्तर– चन्द्रापीडः उत्ताम्यता हृदयेन चिन्तयन् दिवारात्रौच अवहत्।

प्रश्न 4. कः आच्छोदम् आससाद।

उत्तर– चन्द्रापीडः आच्छोदम् आससाद।

प्रश्न 5. चन्द्रापीडः कुत्र आससाद?

उत्तर– चन्द्रापीडः आच्छोदम् आससाद।

➥ **प्रविश्य च गुहाद्वार एव धवलशिलातले समुपविष्टाम् अधोमुखीम् कथमपि तरलिकया विधृतशरीराम् महाश्वेताम् अपश्यत्। दृष्ट्वा च किमेतदिति तरलिकाम् अपृच्छत्। अथ महाश्वेतैव प्रत्यवादीत्–'महाभाग! श्रूयताम्– केयूरकात् भवद्गमनम् आकर्ण्य, विदीर्णमानसा समुत्पन्नानेक गुणवैराग्या पुनः कष्टतरतपश्चरणाय यावत् अत्रैवाहम् आयाता, तावदत्र महाभागस्यैव तुल्याकृतिं ब्राह्मणयुवानम् अपश्यम्। स तु माम् उपसृत्य अदृष्टपूर्वोऽपि प्रत्यभिजानन्निव सुचिरम् आलोक्य अब्रवीत्– ''वरतनु, सर्वो जनो जगति वयसः सदृशम् आचरति। तव पुनः विसदृशानुष्ठाने कोऽयं प्रयत्नः? यदियं मालतीमालेव कण्ठप्रणयैकयोग्या तनुः अनुचितेन अनेन तपःकरणक्लेशेन ग्लानिम् उपनीयते'' इति।** (2018 BE)

शब्दार्थ– गुहाद्वार = गुफा के द्वार पर ही। धबलशिलातले = उज्ज्वल चट्टान के ऊपर। समुपविष्टाम् = बैठी हुई। अधोमुखीम् = मुख नीचा किये हुए। विधृतशरीराम् = (विधृतं शरीरम् यस्याः सा ताम्) जिसका शरीर कड़ा पड़ गया है। प्रत्यवादीत् = कहा। भवद्गमनम् = आपका जाना। आकर्ण्य = सुनकर। विदीर्णमानसा = फटे हुए हृदय वाली। समुत्पन्नानेकगुणवैराग्या = अनेक प्रकार

से विरक्त होकर। कष्टतरतपश्चरणाय = कठिन तप करने के लिए। आयाता = आयी महाभागस्यैव = आप की ही। तुल्याकृतिम् = समान आकृति वाले। ब्राह्मणयुवानम् = ब्राह्मण युवक को। अपश्यम् = देखा। माम् उपसृत्य = मेरे पास आकर। अदृष्टपूर्वोऽपि = पहले कभी न देखने पर भी। प्रत्यभिजानन्निव = पहचानता हुआ सा। सुचिरम् आलोक्य = भलीभाँति देखकर। सर्वो जनः = सभी लोग। वयसः सदृशम् = आयु के अनुसार। आचरति = कार्य करते हैं। विसदृशानुष्ठाने = विपरीत कार्य में। मालतीमालेव = मालती माला के समान। कण्ठप्रणयैकयोग्या = गले लगाने योग्य। तनुः = शरीर को। तपःकरणक्लेशेन = तपस्या के कष्ट से। ग्लानिम् उपनीयते = क्षीणता को पहुँचाया जा रहा है।

हिन्दी अनुवाद– चन्द्रापीड ने महाश्वेता के आश्रम में प्रवेश करके गुफा के द्वार पर ही एक उज्ज्वल शिला पर नीचे मुख करके तरलिका का सहारा लेकर बैठी हुई महाश्वेता को देखा और तरलिका से पूछा कि यह क्या हुआ? इसके पश्चात् महाश्वेता ने ही उत्तर दिया, महाभाग! सुनिये– केयूरक के मुख से आपके जाने का समाचार सुनकर दुःखी हृदय से विरक्त होकर मैं फिर कठिन तप करने के लिए इसी जगह चली आयी। यहीं मैंने आप जैसी ही आकृति वाले एक ब्राह्मण युवक को देखा। वह मेरे पास आकर यद्यपि उसने मुझे पहले कभी नहीं देखा था फिर भी मुझे पहचानता हुआ बड़ी देर तक देखता रहा और बोला– सुन्दरी, संसार में सभी लोग अपनी अवस्था के अनुसार काम करते हैं, फिर उसके विपरीत कार्य में क्यों लगी हो? मालती की माला के समान गले लगाने योग्य इस शरीर को अनुचित तपस्या के कष्ट से क्षीण क्यों कर रही हो?

व्याकरणात्मक टिप्पणी– अधोमुखीम् = अधः + मुखीम्। विधृतशरीराम् = विधृतं शरीरम् यस्याः सा ताम्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. 'सर्वो जनो जगति वयसः सदृशम् आचरति।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– सभी लोग (अपनी) आयु के अनुरूप आचरण करते हैं।

प्रश्न 3. धवलशिलातले का समुपविष्टाम् आसीत्?

उत्तर– धवलशिलातले महाश्वेता समुपविष्टाम् आसीत्।

प्रश्न 4. गुहाद्वारं प्रविश्य चन्द्रापीडः काम् अपश्यत्?

उत्तर– गुहाद्वारं प्रविश्य चन्द्रापीडः महाश्वेताम् अपश्यत्।

प्रश्न 5. महाश्वेता कम् अपश्यत्?

उत्तर– चन्द्रापीडस्यैव तुल्याकृतिं ब्राह्मण युवानम् अपश्यत्।

➥ **अहं तु तं वदन्तमपि किंचिदपि अपृष्ट्वा अन्यतः अगच्छम्। गत्वा च तरलिकाम् आहूय अब्रवम्– ''तरलिके! योऽयं युवा कोऽपि ब्राह्मणाकृतिः, अस्य अवलोकयतः वदतश्च अन्य एव अभिप्रायः मया उपलक्षितः। तत् निवार्यतामयम् यथा पुनरत्र नागच्छति। अथ निवारितोऽप्यागमिष्यति, तदा अवश्यमेव अस्य अभद्रकं भविष्यति'' इति। स तु निवार्यमाणोऽपि नात्याक्षीदेव अनुबन्धनम्।** (2020 ZO)

शब्दार्थ– वदन्तमपि = बोलने वाले को। किंचदपि = कुछ भी। अपृष्ट्वा = बिना पूछे। अन्यतः = दूसरी जगह। अगच्छम् = चली गई। आहूय = बुलाकर। अब्रवम् = कहा। अवलोकयतः = देखने। वदतः = बोलने। अन्य एव अभिप्रायः = दूसरा ही मतलब। उपलक्षितः = देखा गया है। निवार्यताम् = रोका। निवारितोऽप्यागमिष्यति = रोकने पर भी आयेगा। अभद्रकम् = बुरी, अकल्याण। निवार्यमाणोऽपि = रोकने पर भी। नात्याक्षीदेव = नहीं छोड़ा। अनुबन्धनम् = आग्रह।

हिन्दी अनुवाद– महाश्वेता ने चन्द्रापीड से कहा कि इस प्रकार कहने वाले उस ब्राह्मण से बिना कुछ पूछे ही मैं वहाँ से दूसरी जगह चली गयी और तरलिका को बुलाकर कहा कि यह जो ब्राह्मणों जैसा नवयुवक है, उसके देखने और बोलने का दूसरा ही अभिप्राय दिखाई देता है, इसलिए इसे रोको जिससे फिर वह वहाँ न आवे। अगर मना करने पर भी आवेगा तो उसका बड़ा अकल्याण होगा। किन्तु मना करने पर भी उसने अपना आग्रह नहीं छोड़ा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– वन्दतमपि = वन्दतम् + अपि। किंचिदपि = किंचित् + अपि। निवारितोऽप्यागमिष्यति = निवारितः + अपि + आगमिष्यति। निवार्यमाणोऽपि = निवार्यमाणः + अपि। नात्याक्षीदेव = न + अत्याक्षीत् + एव।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. ''तरलिके! योऽयं युवा कोऽपि ब्राह्मणाकृतिः, अस्य अवलोकयतः वदतश्च अन्य एव अभिप्रायः मया उपलक्षितः।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– तरलिके! जो ब्राह्मण के समान आकृतिवाला युवक आया था उसके देखने तथा बोलने का दूसरा ही अभिप्राय मुझे प्रतीत होता है।

प्रश्न 3. का किंचिदपि अपृष्ट्वा अन्यतः अगच्छत्?

उत्तर– महाश्वेता किंचिदपि अपृष्ट्वा अन्यतः अगच्छत्।

प्रश्न 4. महाश्वेता काम् आहूय अब्रवीत्।

उत्तर– महाश्वेता तरलिकाम् आहूय अब्रवीत्।

प्रश्न 5. कः निवार्यमाणोऽपि नात्याक्षीदेव अनुबन्धम्?

उत्तर– वैशम्पायनः निवार्यमाणोऽपि नात्याक्षीदेव अनुबन्धम्।

प्रश्न 6. 'युवा कोऽपि ब्राह्मणाकृतिः' किसके लिए प्रयुक्त है?

उत्तर– यह उक्ति वैशम्पायन के लिए प्रयुक्त है।

➥ **अतीतेषु केषुचित् दिवसेषु, एकदा गाढायां यामिन्याम् सः माम् उपसृत्य अब्रवीत्– ''चन्द्रमुखि! हन्तुम् उद्यतः माम् अयं कुसुमसायकः। तत् शरणम् आगतोऽस्मि। रक्ष माम् आत्मप्रदानेन'' इति। अहं तु तदाकर्ण्य, क्रोधावेगरूक्षाक्षरम् अवदम्– ''आः पाप! कथम् एवं वदतः माम्, उत्तमाङ्गे न निपतितं वज्रम्। अवशीर्णा वा न सहस्रधा जिह्वा'' इत्युक्त्वा चन्द्राभिमुखी भूत्वा– ''भगवन् लोकपाल! यदि मया देवस्य पुण्डरीकस्य दर्शनात् प्रभति, मनसापि अपरः पुनाम न चिन्तितः, तदा अयम् अलीककामी अनिरूपितस्थानास्थानवादी शुकवत् प्रलपन् शुकजातौ पततु'' इति अवदम्। स च मे वचसोऽस्यानन्तरमेव छिन्नमूलः तरुरिव क्षितौ अपतत्। अथ कृताक्रन्दात् तत्परिजनात् 'महाभागस्यैव मित्रम् असौ' इति श्रुतिवती।**

शब्दार्थ– अतीतेषु = बीतने पर। केषुचित् दिवसेषु = कुछ दिन। गाढायां यामिन्याम् = आधी रात में। उपसृत्य = आकर। हन्तुम् उद्यतः = मारने के लिए तैयार है। कुसुमसायकः = कामदेव। आत्मप्रदानेन = अपने को देकर। तदाकर्ण्य = यह सुनकर। क्रोधावेगरूक्षाक्षरम् = क्रोध के आवेग में कठोर वाणी में। उत्तमांगे = सिर पर। निपतितम् = गिरा। अवशीर्णा = कट गई। सहस्रधा = हजारों टुकड़े। चन्द्राभिमुखी भूत्वा = चन्द्रमा की ओर मुख करके। अपरः पुमान् = अन्य पुरुष। अलीककामी = असत्य ही काम का नाम लेने वाला। अनिरूपितस्थानास्थानवादी = कहाँ बोलना चाहिए कहाँ नहीं बोलना चाहिए, इसका निरूपण किये बिना बोलने वाले। शुकवत् प्रलपन् = सुग्गे की तरह बोलने वाला। शुकजातौ = सुग्गे की योनि में। क्षितौ = पृथ्वी पर। अपतत् = गिर पड़ा। कृताक्रन्दात् = विलाप करने वाले। तत्परिजनात् = उसके सेवकों से। श्रुतवती = सुना।

हिन्दी अनुवाद– कुछ दिन बीतने पर एक बार आधी रात को उसने मेरे पास आकर कहा– चन्द्रमुखी, यह कामदेव मुझे मार डालने के लिए तत्पर है। इसलिए मैं शरण में आया हूँ। तुम अपने को देकर मेरी रक्षा करो। मैंने यह सुनकर कठोर वाणी में कहा– अरे पापी! मुझसे इस प्रकार कहते हुए तुम्हारे सिर पर वज्र क्यों नहीं गिर पड़ा। तुम्हारी जीभ हजारों टुकड़े क्यों नहीं हो गई। ऐसा कहकर मैंने चन्द्रमा की ओर मुँह करके कहा– हे लोकपाल! यदि मैंने देव पुण्डरीक को देखने के समय से अब तक किसी परपुरुष के बारे में न सोचा हो तो यह व्यर्थ ही काम की दुहाई देने वाला भली-बुरी जगह का विचार किये बिना सुग्गे की तरह बोलने वाला, सुग्गे की योनि में चला जाय। वह मेरे इस प्रकार कहते ही कटे हुए जड़ वाले पेड़ की तरह पृथ्वी पर गिर पड़ा। इसके पश्चात् विलाप करने वाले उसके सेवकों से मैंने सुना कि वह आप का ही मित्र है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– हन्तुम् = हन् + तुमुन् प्रत्यय। तदाकर्ण्य = तत् + आकर्ण्य। क्रोधावेगरूक्षाक्षरम् = क्रोध + आवेगरूक्ष + अक्षरम्। तत्परिजनात् = तत् + परिजनात्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. 'चन्द्रमुखि! हन्तुम् उद्यतः माम् अयं कुसुमसायकः।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– चन्द्रमुखि! यह कामदेव मुझे मारने के लिए तत्पर है।

प्रश्न 3. कः गाढायां यामिन्याम् माम् उपसृत्य अब्रवीत्?

उत्तर– वैशम्पायनः गाढायां यामिन्याम् माम् उपसृत्य अब्रवीत्।

प्रश्न 4. क्रोधावेगरूक्षाक्षरं का अवदत्?

उत्तर– महाश्वेता क्रोधावेगरूक्षाक्षरम् अवदत्।

प्रश्न 5. छिन्नमूलः तरुरिव छितौ कः अपतत्?

उत्तर– वैशम्पायनः छिन्नमूलः तरुरिव छितौ अपतत्।

➥ **चन्द्रापीडस्य तु तत् आकर्ण्य स्वभावसरसं हृदयम् अस्फुटत्। अथ तरलिका महाश्वेतायाः शरीरम् उत्सृज्य ससंभ्रमं प्रतिपन्नचन्द्रापीडशरीरा ''हा देव चन्द्राकृते, चन्द्रपीड, कादम्बरीप्रिय! क्वेदानीं गम्यते'' इत्यार्तनादं मुमोच। परिजनाश्च ''आः पापे दुष्टतापसि! किमिदं त्वया कृतम्? तारापीडस्य कुलमुत्सादितम्। अनाथीकृताः प्रजाः। हा देव चन्द्रापीड! परित्यज्य सर्वान् एकाकी क्व प्रस्थितोऽसि?'' इति करुणम् आचुक्रुशुः।**

शब्दार्थ– तत् आकर्ण्य = यह सुनकर। स्वभावसरसम् = स्वभाव से ही कोमल। अस्फुटत् = फट गया। उत्सृज्य = छोड़कर। ससंभ्रमम् = शीघ्रता के साथ। प्रतिपन्न चन्द्रापीडशरीरा = चन्द्रापीड के शरीर को पकड़कर। क्वेदानीम् = इस समय कहाँ। मुमोच = छोड़ा। कुलमुत्सादितम् = वंश को नष्ट कर दिया। आचुक्रुशुः = विलाप किये।

हिन्दी अनुवाद– यह सुनकर स्वभाव से ही कोमल चन्द्रापीड का हृदय विदीर्ण हो गया। तरलिका ने महाश्वेता के शरीर को छोड़कर शीघ्रता के साथ चन्द्रापीड के शरीर को पकड़ लिया और ''हे देव, चन्द्रमा जैसे सुन्दर कादम्बरी के प्रिय, चन्द्रापीड! आप इस समय कहाँ जा रहे हैं''– इस प्रकार कहकर करुण विलाप करने लगी। चन्द्रापीड के सेवक भी अरी दुष्ट तपस्विनी, तुमने यह क्या किया? तारापीड के वंश को नष्ट कर दिया, प्रजा को अनाथ कर दिया, हाय चन्द्रापीड सबको छोड़कर तुम अकेले कहाँ जा रहे हो? इस प्रकार कहकर करुण विलाप करने लगे।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– स्वभावसरसम् = स्वभावात् + सरसम्। क्वेदानीम् = क्व + इदानीम्। कुलमुत्सादितम् = कुलम् + उत्सा।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. ''हा देव चन्द्रापीड! परित्यज्य सर्वान् एकाकी क्व प्रस्थितोऽसि?'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– हे देव चन्द्रापीड! सबका परित्याग करके आप अकेले कहाँ चल पड़े?

प्रश्न 3. कस्य हृदयम् अस्फुटत्?

उत्तर– चन्द्रापीडस्य हृदयम् अस्फुटत्।

प्रश्न 4. तरलिका महाश्वेतायाः शरीरम् उत्सृज्य कस्य शरीरम् अगृह्णात्?

उत्तर– तरलिका महाश्वेतायाः शरीरम् उत्सृज्य चन्द्रापीडस्य शरीरम् अगृह्णात्।

प्रश्न 5. चन्द्राकृते कः आसीत्?

उत्तर– चन्द्रापीडः चन्द्राकृते आसीत्।

➥ **अत्रान्तरे पत्रलेखानिवेदितचन्द्रापीडागमना कादम्बरी महाश्वेतादर्शनं व्याजीकृत्य, पत्रलेखाकरावलम्बिनी मदलेखया सह तत्रैव आजगाम। तत्र च तत्क्षणोन्मुक्तजीवितं चन्द्रापीडं दृष्ट्वा 'हा हा किमिदम्' इति अधोमुखी धरातलम् उपयान्ती मदलेखया अधार्यत्। चिरात् लब्धसंज्ञा कादम्बरी महाश्वेतां कण्ठे गृहीत्वा अवादीत्– ''प्रियसखि! तवास्ति काचन प्रत्याशा। मम पुनः हताशायाः सापि नास्ति। तत आमन्त्रये प्रियसखीम् पुनः जन्मान्तरसमागमाय। अहं पुनः इममात्मानं देवस्य कण्ठलग्ना विभावसौ निर्वापयामि'' इत्यभिधानैव चन्द्रापीडचरणौ कराभ्याम् उपक्षिप्य अङ्केन धृतवती।** (2020 ZU)

अत्रान्तरे पत्रलिखानिवेदित ..... सापि नास्ति। (2020 ZQ)

शब्दार्थ– अत्रान्तरे = इसी बीच। पत्रलेखानिवेदितचन्द्रापीडागमना = पत्रलेखा ने निवेदन किया है चन्द्रापीड का आना जिससे वह। व्याजीकृत्य = बहाना करके। पत्रलेखाकरावलम्बिनी = पत्रलेखा का हाथ पकड़े हुए। तत्क्षणोन्मुक्तजीवितम् = उसी समय के

मरे हुए। अधोमुखी = नीचे मुँह किये। धरातलम् उपयान्ती = पृथ्वी पर गिरती हुई। अधार्यत् = पकड़ ली गई। चिरात् = बड़ी देर के बाद। लब्धसंज्ञा = होश में आकर। प्रत्याशा = जीने की आशा। आमन्त्रये = निमन्त्रित करती हूँ। जन्मान्तरसमागमाय = दूसरे जन्म में मिलने के लिए। कण्ठलग्ना = गले लगी हुई। विभावसौ = अग्नि में। निर्वापयामि = समर्पित करती हूँ। इत्यभिदधानैव = इस प्रकार कहती हुई। कराभ्याम् = हाथों से। उपक्षिप्य = उठाकर। अङ्केन धृतवती = गोद में रख लिया।

हिन्दी अनुवाद– इसी बीच पत्रलेखा द्वारा चन्द्रापीड के आने का समाचार पाकर कादम्बरी महाश्वेता को देखने का बहाना बनाकर पत्रलेखा का हाथ पकड़े हुए मदलेखा के साथ वहाँ आई, वहाँ उसने तत्काल ही के मरे चन्द्रापीड को देखा, उसे देखते ही वह मुँह के बल पृथ्वी पर गिरने लगी कि मदलेखा ने उसे पकड़ लिया। बहुत देर के बाद होश आने पर कादम्बरी ने महाश्वेता को गले लगाकर कहा– सखि, तुम्हें तो (अपने प्रिय के जीवित होने की) कुछ आशा है किन्तु मुझ निराश को तो वह भी नहीं है। अतः मैं दूसरे जन्म में मिलने के लिए अपनी प्रिय सखी तुमको निमन्त्रित करती हूँ। मैं अपने आपको चन्द्रापीड के गले लगाकर अग्नि को समर्पित कर दूँगी (चन्द्रापीड के साथ सती हो जाऊँगी)। इस प्रकार कहती हुई उसने चन्द्रापीड के पैरों को उठाकर अपनी गोद में रख लिया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– अत्रान्तरे = अत्र + अन्तरे। पत्रलेखानिवेदितचन्द्रापीडागमना = पत्रलेखया निवेदितम् चन्द्रापीडस्य आगमनम् यस्यै सा। पत्रलेखाकरावलम्बिनी = पत्रलेखाकर + अवलम्बिनी। तत्क्षणोन्मुक्तजीवितम् = तत् + क्षण + उन्मुक्तजीवितम्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. ''प्रियसखि! तवास्ति काचन प्रत्याशा। मम पुनः हताशायाः सापि नास्ति।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– हे प्रियसखि! तुम्हारे हृदय में कुछ आशा है, किन्तु मुझ निराश को तो वैसी आशा भी नहीं है।

प्रश्न 3. कादम्बरी कया सह आजगाम?

उत्तर– कादम्बरी मदलेखया सह आजगाम।

प्रश्न 4. कादम्बरी तत्क्षणोन्मुक्तजीवितं कम् अपश्यत्?

उत्तर– कादम्बरी तत्क्षणोन्मुक्तजीवितं चन्द्रापीडम् अपशयत्।

प्रश्न 5. अधोमुखी धरातलम् उपयान्ती कादम्बरी कया अधार्यत्?

उत्तर– अधोमुखी धरातलम् उपयान्ती कादम्बरी मदलेखया अधार्यत्।

➥ **अथ तत्करस्पर्शेन उच्छ्वसत इव चन्द्रापीडदेहात् झटिति अव्यक्तरूपं चन्द्रधवलं ज्योतिः उज्जगाम। अनन्तरं च अन्तरिक्षे क्षरन्तीव अमृतम् अशरीरिणी वाक् अश्रूयत– ''वत्से महाश्वेते! पुनरपि त्वं मयैव समाश्वासयितव्या वर्तसे। तत् ते पुण्डरीकशरीरम् मल्लोके मत्तेजसा आप्याय्यमानम् अविनाशि भूयः त्वत्समागमाय तिष्ठत्येव। इदम् अपरं मत्तेजोमयं स्वतः एव अविनाशि विशेषतः अमुना कादम्बरीकरस्पर्शेन आप्याय्यमानम् चन्द्रापीडशरीरम् अन्तरात्मना कृतशरीरान्तरसक्रान्तेः योगिन इव शरीरम् अत्रैव भवत्योः प्रत्ययार्थम् आस्ताम् यत्नतः परिपालनीयम् आसमागमप्राप्तेः'' इति।**

शब्दार्थ– तत्करस्पर्शेन = उसके हाथ के स्पर्श से। उच्छ्वसतः इव = साँस लेते हुए से। झटिति = सहसा। चन्द्रधवलं = चन्द्रमा के समान उज्ज्वल। उज्जगाम = निकली। अनन्तरम् = इसके बाद। अन्तरिक्षे = आकाश में। क्षरन्तीव अमृतम् = अमृत की वर्षा सी करती हुई। अशरीरिणी वाक् = आकाशवाणी। अश्रूयत = सुनी। समाश्वासयितव्या वर्तसे = धैर्य दिलाने के योग्य हो। मत्तेजसा = मेरे तेज से। आप्याय्यमानम् = सिंचित होकर। अविनाशि = नाश रहित होकर। त्वत्समागमाय = तुम्हारे मिलने के लिए। मत्तेजोमयम् = मेरे तेज से पूर्ण। अन्तरात्मना = अन्तरात्मा से। कृतशरीरान्तरसंक्रान्तेः = दूसरे शरीर में चले जाने वाले। योगिनः इव = योगी के समान। भवत्योः तुम दोनों के। प्रत्ययार्थम् = विश्वास के लिए। आशापक्षयात् = शाप के नष्ट होने के समय तक। आस्ताम् = रहे। आसमागमप्राप्तेः = मिलन होने के समय तक।

हिन्दी अनुवाद– उसके हाथ के स्पर्श से साँस लेते हुए से चन्द्रापीड के शरीर से चन्द्रमा जैसी उज्ज्वल ज्योति निकलकर

ऊपर चली गयी और अमृत वर्षा करती हुई आकाशवाणी सुनाई पड़ी– महाश्वेते, मैं तुम्हें फिर आश्वासन दे रहा हूँ। पुण्डरीक का शरीर मेरे लोक में मेरे तेज से सिंचित होकर फिर तुमसे मिलने के लिए पड़ा है। यह दूसरा मेरे तेज से पूर्ण, नाश-रहित और कादम्बरी के हाथों के स्पर्श से सिंचित अपनी आत्मा से दूसरे शरीर में चले जाने वाले योगी के शरीर के समान चन्द्रापीड का शरीर यहीं तुम दोनों के विश्वास के लिए शाप नष्ट होने के समय तक रहेगा। अतः मिलन होने तक उसकी रक्षा करना।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– तत्करस्पर्शेन = तत् + कर + स्पर्शेन। अन्तरात्मना = अन्तः + आत्मना। प्रत्ययार्थम् = प्रत्यय + अर्थम्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. ''तत्करस्पर्शेन उच्छ्वसत इव चन्द्रापीडदेहात् झटिति अव्यक्तरूपं चन्द्रधवलं ज्योतिः उज्जगाम।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– उसके हाथ के स्पर्श से साँस लेते हुए से चन्द्रापीड के शरीर से चन्द्रमा के समान उज्ज्वल ज्योति निकलकर ऊपर चली गयी।

प्रश्न 3. कस्याः करस्पर्शेन चन्द्रापीडदेहात् अव्यक्तरूपं चन्द्रधवलं ज्योतिः उज्जगाम?

उत्तर– कादम्बरीकरस्पर्शेन चन्द्रापीडदेहात् अव्यक्तरूपं चन्द्रधवलं ज्योतिः उज्जगाम।

प्रश्न 4. कस्य देहात् अव्यक्तरूपं चन्द्रधवलं ज्योतिः उज्जगाम?

उत्तर– चन्द्रापीडदेहात् अव्यक्तरूपं चन्द्रधवलं ज्योतिः उज्जगाम।

प्रश्न 5. क्षरन्तीव अमृतम् अशरीरिणी वाक् का अश्रूयत्?

उत्तर– क्षरन्तीव अमृतम् अशरीरिणी वाक् महाश्वेता अश्रूयत्।

➥ **पत्रलेखा मुहूर्तमिव निश्चेतना सती तस्य ज्योतिषः स्पर्शेन लब्धसंज्ञा उत्थाय आविष्टेव वेगात् धावित्वा, परिवर्धकहस्तात् इन्द्रायुधम् आच्छिद्य, तनैव सह आत्मानम् अच्छोदसरसि अक्षिपत्। तयोः निमज्जनसमयानन्तरमेव, तस्मात् सरस्सलिलात् शिरसि जटाकलापम् उद्वहन् उद्विग्नाकृतिः तापसकुमारः सहसैव उदतिष्ठत्। उत्थाय च दूरत एव विलोकयन्तीम् महाश्वेताम् उपसृत्य बभाषे– ''गन्धर्वराजपुत्रि! जन्मान्तरात् आगतोऽपि प्रत्यभिज्ञायतेऽयं जनः, न वा?'' इति। सा त्वेवं पृष्टा शोकानन्दमध्यवर्तिनी ससंभ्रमम् उत्थाय कृतप्रणामा प्रत्यवादीत्- ''भगवन् कपिञ्जल! नाहम् एवंविधा अपुण्यवती, या भवन्तमपि न प्रत्यभिजानामि। तत् कथय 'केनासौ उत्क्षिप्य नीतः? किं वा तव उपजातम्, येन एतावता कालेन वार्तापि न दत्ता। कुतो वा त्वम् एकाकी देवेन विना समायातः'' इति।**

शब्दार्थ– मुहूर्तमिव = थोड़ी देर। निश्चेतना सती = चेतना रहित-सी होती हुई। ज्योतिषः स्पर्शेन = ज्योति के स्पर्श से। लब्धसंज्ञा = होश में आकर। उत्थाय = उठकर। आविष्टा इव = भूत के वश में हुई सी। वेगात् धावित्वा = वेग से दौड़कर। परिवर्धकहस्तात् = साईस के हाथ से। आच्छिद्य = छीनकर। अक्षिपत् = फेक दिया। तयोः = उन दोनों के। निमज्जनसमयानन्तरम् एव = डूबने के बाद ही। सरस्सलिलात् = तालाब के जल से। शिरसि = सिर पर। जटाकलापम् उद्वहन् = जटाएँ धारण किये हुए। उद्विग्नाकृतिः = घबड़ाया हुआ। उदतिष्ठत् = निकला। विलोकन्तीम् = देखने वाली। बभाषे = बोला। जन्मान्तरात् = दूसरे जन्म से। प्रत्यभिज्ञायते = पहचाना जाता है। शोकानन्दमध्यवर्तिनी = शोक और आनन्द के बीच स्थित। ससम्भ्रमम् = झटके के साथ। एवं विधा = इस प्रकार। अपुण्यवती = पापिनी। नीतः = ले गया। तव उपजातम् = तुम्हारा हुआ। वार्तापि = समाचार। समायातः = आए।

हिन्दी अनुवाद– पत्रलेखा क्षण भर चेतनाहीन-सी होकर फिर उस प्रकाश से होश में आकार भूत-प्रेत से ग्रसित जैसी दौड़कर साईस के हाथ से इन्द्रायुध को छीनकर उसी के साथ अच्छोद तालाब में कूद पड़ी। उन दोनों के डूबने के बाद ही उस तालाब के जल से सिर पर जटाएँ धारण किये घबड़ाया हुआ सा एक तपस्वी कुमार निकला। वह निकलकर दूर ही से देखने वाली महाश्वेता के पास आकर बोला– हे गन्धर्वराज की पुत्री, दूसरे जन्म से आये हुए इस व्यक्ति को आप पहचान रही हैं या नहीं? उसके ऐसा पूछने पर शोक और आनन्द के बीच स्थित महाश्वेता ने झटके से उठकर उसे प्रणाम करके कहा– भगवान् कपिंजल मैं इतनी पापिनी नहीं हूँ जो आपको नहीं पहचानूँ। इसलिए बताइये उन्हें कौन उठाकर ले गया? आपको क्या हुआ जो इतने दिन तक समाचार भी नहीं दिया। आप देव पुण्डरीक के बिना अकेले ही क्यों आये।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– मुहूर्तमिव = मुहूर्तम् + इव। निश्चेतना = निः + चेतना। परिवर्धकहस्तात् = परिवर्धकस्य हस्तात्। सरस्सलिलात् = सरः + सलिलात्। उद्विग्नाकृतिः = उद्विग्न + आकृतिः। जन्मान्तरात् = जन्म + अन्तरात्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. तापसकुमारः कः आसीत्।

उत्तर– तापसकुमारः भगवन् कपिञ्जलः आसीत्।

प्रश्न 3. 'गन्धर्वराजपुत्रि! जन्मान्तरात् आगतोऽपि प्रत्यभिज्ञायतेऽयं जनः, न वा?' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– हे गन्धर्वराजपुत्रि! दूसरे जन्म से आये इस व्यक्ति को आप पहचानती हैं या नहीं?

प्रश्न 4. का अच्छोदसरसि अक्षिपत्?

उत्तर– पत्रलेखा अच्छोदसरसि अक्षिपत्।

प्रश्न 5. पत्रलेखा केन सह अच्छोदसरसि अक्षिपत्?

उत्तर– पत्रलेखा इन्द्रायुधेन सह अच्छोदसरसि अक्षिपत्।

➥ **स तु प्रत्यवादीत् – 'गन्धर्वराजपुत्रि! श्रूयताम्– अहं हि कृतार्तप्रलापामपि त्वाम् एकाकिनीम् उत्सृज्य, तं पुरुषम् अनुबध्नन् जनेव उदपतम्। स तु मे प्रतिवचनम् अदत्वैव अतिक्रम्य तारागणम् चन्द्रलोकम् अगच्छत्। तत्र च महोदयाख्यायां सभायाम् इन्दुकान्तमये महति पर्यङ्के तत् पुण्डरीकशरीरं स्थापयित्वा, माम् अवादीत्– कपिञ्जल! जानीहि मा चन्द्रमसम्। अहं खलु अनेन ते प्रियवयस्येन कामापधात् जीवितम् उत्सृजता निरपराधः संशप्तः– ''दुरात्मन् इन्दुहतक ! यथाहं त्वया करैः संताप्य प्राणैः वियोजितः, तथा त्वमपि भारतेवर्षेऽस्मिन् जन्मनि जन्मन्येव उत्पन्नानुरागः असंप्राप्तसमागमसुखः तीव्रतरां हृदयवेदनाम् अनुभूय जीवितम् उत्स्त्रक्षयसि'' इति। अहं तु, 'किमनेन अगणितात्मदोषेन निरागाः शप्तोऽस्मि' इत्युत्पन्नकोपः 'त्वमपि मत्तुल्यसुखदुःख एव भविष्यसि' इति प्रतिशापम् अस्मै प्रायच्छम्।**

शब्दार्थ– प्रत्यवादीत् = उत्तर दिया। कृतार्तप्रलापामपि = दुःख के साथ रोने वाली। एकाकिनीम् = अकेली को। उत्सृज्य = छोड़कर। अनुबन्धनन् = पीछा करता हुआ। उदपतम् = ऊपर चला गया। जवेन = वेग से। प्रतिवचनम् = उत्तर। अदत्वैव = दिये बिना ही। अतिक्रम्य = पार करके। महोदयाख्यायाम् = महोदय नाम की। महति पर्यङ्के = बहुत बड़ी शैय्या पर। स्थापयित्वा = रखकर। अवादीत् = कहा। जानीहि = समझो। चन्द्रमसम् = चन्द्रमा। प्रियवयस्येन = प्रिय मित्र ने। कामापराधात् = काम के दोष से। जीवितम् उत्सृजता = जीवन त्याग करने वाले। संशप्त = शाप दिया गया। करै संताप्य = किरणों से जलाकर। प्राणैः वियोजितः = प्राणों से अलग किया गया। जन्मनि जन्मनि = कई जन्मों में। उत्पन्नानुरागः = प्रेम हो जाने पर। असम्प्राप्तसमागमसुखः = मिलन का सुख पाये बिना। तीव्रतराम् = कठिन। हृदयवेदनाम् = हृदय की पीड़ा। अनुभूय = अनुभव करके। जीवितम् = जीवन को। उत्स्त्रक्ष्यसि = छोड़ोगे। अगणितात्मदोषेण = अपना दोष न देखने वाले। निरागाः = निरपराध। शप्तोस्मि = शाप दिया गया हूँ। उत्पन्नकोपः = क्रोधः आ जाने से। प्रतिशापम = शाप के बदले शाप, प्रायच्छम् = दिया।

हिन्दी अनुवाद– कपिंजल ने कहा– गन्धर्वराज पुत्रि महाश्वेते! सुनो– मैं दुःख के साथ रोती हुई आपको अकेली छोड़कर उस पुरुष का पीछा करते हुए वेग से ऊपर चलता गया। वह मेरी बातों का उत्तर दिये बिना ही तारों को पार करके चन्द्रलोक में चला गया। वहाँ महोदय नाम की सभा में इन्दुकान्तमणि की बहुत बड़ी शैय्या पर पुण्डरीक के शरीर को रखकर उसने मुझसे कहा–कपिंजल तुम मुझे चन्द्रमा समझो। तुम्हारे इस मित्र ने कामदोष से अपने प्राणों का परित्याग करते समय मुझे शाप दिया कि पापी चन्द्रमा तुमने अपनी किरणों से मुझे मार डाला है, अतः तुम भी इस भारतवर्ष में दो जन्म लेकर प्रेम उत्पन्न होने पर बिना समागम-सुख पाये हृदय की कठिन पीड़ा का अनुभव करके प्राणों का परित्याग करोगे। मुझे क्रोध आ गया और मैंने भी उसे शाप के बदले शाप दे दिया कि तुम्हें भी मेरे ही समान सुख-दुःख होगा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– कृतार्तप्रलापामपि = कृतःआर्तप्रलापः यया ताम्। अदत्वैव = अदत्व + एव। महोदयाख्यायाम् = महोदय + आख्याम्। उत्पन्नानुरागः = उत्पन्न + अनुरागः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. 'त्वमपि मत्तुल्यसुखदुःख एव भविष्यसि।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– तुम्हें भी मेरे ही तरह सुख-दुःख होगा।

प्रश्न 3. कः प्रत्यवादीत्?

उत्तर– कपिञ्जलः प्रत्यवादीत्।

प्रश्न 4. कः तं पुरुषं अनुबध्नन् जवेन उदपतम्?

उत्तर– कपिञ्जलः तं पुरुषं अनुबध्नन् जवेन उदपतम्।

प्रश्न 5. कस्य प्रतिवचनम् अदत्वैव चन्द्रलोकम् अगच्छत्?

उत्तर– कपिञ्जल्य प्रतिवचनम् अदत्वैव चन्द्रलोकम् आगच्छत्।

➥ **अपगतामर्षः विमृशन् महाश्वेताव्यतिकरमस्य अधिगतवानस्मि– ''वत्सा हि महाश्वेता, मन्मयूखसंभवात् अप्सरःकुलात् लब्धजन्मनि गौर्याम् उत्पन्ना। तया चायं भर्ता स्वयं वृतः। अनेन च स्वयं कृतादेव दोषात् मया सह मर्त्यलोके वरद्वयम् अवश्यम् उत्पत्तव्यम्। अन्यथा जन्मनि जन्मनि इत्येषा वीप्सा न चरितार्था भवति। तत् यावदयं शापदोषात् अपैति तावत् अस्य शरीस्य मा विनाशः भूत् इति मया इदम् उत्क्षिप्य समानीतम्। वत्सा च महाश्वेता समाश्वासिता। अधुना त्वं गत्वा एनं वृत्तान्तम् श्वेतकेतवे निवेदय। महाप्रभावोऽसौ कदाचित् अत्र प्रतिक्रियां कांचित् करोति'' इत्युक्त्वा मां व्यसर्जयत्।**

शब्दार्थ– अपगतामर्ष = जिसका क्रोध दूर हो गया। विमृशन् = विचार करते हुए। महाश्वेताव्यतिकरम् = महाश्वेता का सम्बन्ध। मन्मूखसम्भवात् = मेरी किरणों से उत्पन्न। अप्सरसः कुलात् = अप्सराओं के कुल से। लब्धजन्मनि = जन्म लेने वाली। स्वयं वृत्तः = स्वयं वरण कर लिया है। कृतादेव दोषात् = स्वयं किये दोषों से। वारद्वयम् = दो बार। उत्पतव्यम् = उत्पन्न होगा। इत्येषा वीप्सा = यह दो बार कहना। चरितार्था = सफल। शापदोषात् = शाप दोष से। अपैति = मुक्त होता है। मा विनाशः भूतः = विनाश न होवे। उत्क्षिप्य = उठकर। आनीतम् = लाया हूँ। समाश्वासिता = आश्वासन दी गई है। अधुना = अब गत्वा = जाकर। श्वेतकेतवे = श्वेतकेतु को। निवेदय = बताओ। महाप्रभावोऽसौ = वह महान् प्रभाव वाले। कदाचित् = शायद। प्रतिक्रियाम् = उपाय। कांचित् = कोई। व्यसर्जयत् = भेजा।

हिन्दी अनुवाद– क्रोध दूर हो जाने पर मैंने विचार किया कि महाश्वेता के साथ इसके सम्बन्ध को जान गया हूँ। पुत्री महाश्वेता मेरी किरणों से उत्पन्न अप्सराओं के कुल में जन्म लेने वाली गौरी से उत्पन्न हुई है। उसने इसे स्वयं पति रूप में वरण किया है। वह स्वयं अपने पापों से मेरे साथ मृत्युलोक में दो बार उत्पन्न होगा। नहीं तो जन्म-जन्म दो बार कहना चरितार्थ नहीं होगा। इसलिए शाप से मुक्त होने के समय तक इसका शरीर नष्ट न हो जाय, इसलिए मैं इसे उठाकर लाया हूँ। पुत्री महाश्वेता को भी आश्वासन दे दिया है। इस समय तुम जाकर यह समाचार श्वेतकेतु को सुनाओ। वह अत्यन्त प्रभावशाली हैं। सम्भवतः इसका कोई उपाय करें। ऐसा कहकर उन्होंने मुझे विदा दिया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– अपगतामर्षः = अपगतः अमर्षः यस्य सः। मन्मयूखसम्भवात् = मन् + मयूखसम्भवात्। गत्वा = गम् +क्त्वा।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. ''वत्सा हि महाश्वेता, मन्मयूखसंभवात् अप्सरः कुलात् लब्धजन्मनि गौर्याम् उत्पन्ना।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– पुत्री महाश्वेता मेरी किरणों से उत्पन्न अप्सराओं के कुल में जन्म लेने वाली गौरी से उत्पन्न हुई है।

प्रश्न 3. अपगतामर्षः कः?
उत्तर– अपगतामर्षः कपिञ्जलः।
प्रश्न 4. कः महाश्वेताव्यतिकरमस्य अधिगतवानस्ति?
उत्तर– कपिञ्जलः महाश्वेताव्यतिकरमस्य अधिगतवानस्ति।
प्रश्न 5. अप्सरःकुलात् लब्धजन्मनि गौर्यान् उत्पन्न का?
उत्तर– महाश्वेता अप्सरः कुलात् लब्धजन्मनि गौर्यान् उत्पन्ना।

➥ **अहं तु विना वयस्येन शोकावेगान्धः गीर्वाणवर्त्मनि प्रधावन् अतिक्रोधनं वैमानिकम् एकम् अलंघयम्। स तु दहन्निव निरीक्ष्य अब्रवीत्– ''दुरात्मन्! यदेवम् अतिविस्तीर्ण गगनमार्गे त्वया अहं तुरङ्गमेणेव उल्लंघितः, तस्मात् तुरङ्गम एव भूत्वा मर्त्यलोके अवतर'' इति। अहं तु तं कृताञ्जलिः अवदम्– 'भगवन्! वयस्यशोकान्धेन त्वं मया उल्लङ्घितः, नावज्ञया। तत्प्रसीद। उपसंहार शापम् इमम्'' इति। स तु मां पुनः अवादीत्– ''यन्मयोक्तं तत् नान्यथा भवितुमर्हति। तदेतत् ते करोमि। कियन्तमपि कालं यस्य वाहनताम् उपयास्यसि, तस्यैव अवसाने स्नात्वा विगतशापः भविष्यसि'' इति।**

शब्दार्थ– वयस्येन = मित्र के। शोकावेगान्धः = शोक के कारण अन्धा। गीर्वाणवर्त्मनि = आकाश मार्ग में। प्रधावन् = दौड़ते हुए। अतिक्रोधनम् = अत्यन्त क्रोधी। वैमानिकम् = विमान पर चढ़े देवता को। अलंघयम् = उल्लंघन किया। दहन् = जलता हुआ। निरीक्ष्य = देखकर। अति विस्तीर्ण = अत्यन्त चौड़े। तुरंगमेणेव = घोड़े की तरह। उल्लंघितः = उल्लंघन किया गया। भूत्वा = होकर। अवतर = उतरो। कृतांजलिः = हाथ जोड़कर। अवदम् = कहा। नावज्ञया = अपमान से नहीं। तत्प्रसीद = अतः कृपा करो। उपसंहर = हटाओ। नान्यथा = व्यर्थ नहीं। भवतुमर्हति = हो सकता। वाहनताम् उपयास्यसि = सवारी बनोगे। अवसाने = अन्त होने पर। विगतशापः = शाप रहित।

हिन्दी अनुवाद– मैंने मित्र के बिना शोक के आवेग में अंधा होकर आकाश मार्ग में दौड़ते हुए एक विमान पर बैठे देवता का उल्लंघन कर दिया जिससे वह जलता हुआ सा मेरी ओर देखकर बोला– दुष्ट, इतने चौड़े आकाशमार्ग के होते हुए भी तुमने घोड़े की तरह मेरा उल्लंघन किया है। इसलिए घोड़ा बनकर मृत्युलोक में जाओ। मैंने हाथ जोड़कर कहा– भगवन्! मित्र शोक में अन्धा होकर आपका उल्लंघन किया है, आपका अपमान करने के लिए नहीं। अतः कृपा करें शाप को दूर कीजिए। उसने फिर मुझसे कहा– मैंने जो कहा है व्यर्थ नहीं हो सकता। तुम्हारे लिए मैं इतना करता हूँ कि तुम बहुत समय तक जिसकी सवारी में रहोगे उसके मर जाने पर स्नान करके पापरहित हो जाओगे।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– शोकावेगान्धः = शोक + आवेग + अन्धः। तुरंगमेणेव = तुरंगमेण + एव। भूत्वा = भू + क्त्वा। कृतांजलिः = कृत + अंजलिः। नावज्ञया = न + अवज्ञया। नान्यथा = न + अन्यथा।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।
प्रश्न 2. ''भगवन्! वयस्यशोकान्धेन त्वं मया उल्लङ्घितः।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– भगवान्! मित्र के शोक से अन्धा होकर मैंने आपका उल्लङ्घन किया है।
प्रश्न 3. कः बिना वयस्येन शोकावेगान्धः बभूव?
उत्तर– कपिञ्जल बिना वयस्येन शोकावेगान्धः बभूव।
प्रश्न 4. कः गीर्वाणवर्त्मनि प्रधावन् अतिक्रोधनं वैमानिकम् एकम् अलंघयत्।
उत्तर– कपिञ्जल गीर्वाणवर्त्मनि प्रधावन् अतिक्रोधनं वैमानिकम् एकम् अलंघयत्।
प्रश्न 5. कः तं कृताञ्जलिः अवदत्?
उत्तर– कपिञ्जलः तं कृताञ्जलिः अवदत्।

➥ **एवमुक्तस्तु तमहम् अवदम्– ''भगवन्! यद्येवम् ततः विज्ञापयामि। तेनापि मत्प्रियवयस्येन पुण्डरीकेण चन्द्रमसा सह शापदोषात् मर्त्यलोक एव उत्पत्तव्यम्। तत् एतावन्तमपि भगवान् प्रसादं करोतु मे दिव्येन चक्षुषा अवलोक्य,**

यथा– तुरङ्गमत्वेऽपि मत्प्रियवयस्येन सह अवियोगेन कालः यायात्'' इति।

शब्दार्थ– अवदम् = कहा। विज्ञापयामि = निवेदन करता हूँ। मत्प्रियवयस्येन = मेरे प्रिय मित्र से। चन्द्रमसा सह = चन्द्रमा के साथ। उत्पत्तव्यम् = उत्पन्न होगा। एतावन्तमपि = इतना भी। प्रसादं करोतु = कृपा करो। अवियोगेन = बिना वियोग के ही। कालः यायात् = समय बीते।

हिन्दी अनुवाद– मैंने शाप देनेवाले उस देवता से कहा कि भगवन् यदि ऐसा है तो आपसे निवेदन करता हूँ, मेरा प्रिय मित्र पुण्डरीक भी शाप के कारण चन्द्रमा के साथ मृत्युलोक में उत्पन्न होगा। अतः दिव्य नेत्रों से देखकर आप यह भी कृपा करें कि घोड़ा होने पर भी मित्र के साथ ही रहकर मेरा समय बीते।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– मत्प्रियवयस्येन = मत् + प्रियवयस्येन। एतावन्तमपि = एतावन्तम् + अपि।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. 'तुरङ्गमत्वेऽपि मत्प्रियवयस्येन सह अवियोगेन कालः यायात्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– अश्व होने पर भी मित्र के साथ ही रहकर मेरा समय बीते।

प्रश्न 3. कपिञ्जलः कम् अवदत्?

उत्तर कपिञ्जलः वैमानिकम् अवदत्।

प्रश्न 4. मत्प्रियवयस्येन पुण्डरीकेण केन सह शापदोषात् मर्त्यलोक एव उत्पत्तव्यम्?

उत्तर– मत्प्रियवयस्येन पुण्डरीकेण चन्द्रमसा सह शापदोषात् मर्त्यलोक एव उत्पत्तव्यम्।

प्रश्न 5. तुरङ्मत्वेऽपि केन सह अवियोगेन कालः यायात्?

उत्तर– तुरङ्मत्वेऽपि प्रियवयस्येन सह अवियोगेन कालः यायात्।

➥ **स तु एवम् उक्तः मुहूर्तमिव ध्यात्वा पुनः माम् अवादीत्– 'उज्जयिन्याम् अपत्यहेतोः तपस्यतः तारापीडनाम्नः राज्ञः चन्द्रमसा तनयत्वम् उपगन्तव्यम्। वयस्येनापि ते पुण्डरीकेण तन्मन्त्रिण एव शुकनासस्य। त्वमपि तस्य चन्द्रात्मनः राजपुत्रस्य वाहनताम् उपयास्यसि'' इति। अहं तु तद्वचनानन्तरमेव अधः स्थिते महोदधौ न्यपतम्। तस्माच्च तुरङ्गीभूयैव उदतिष्ठम्। संज्ञा तु मे तुरङ्गमत्वेऽपिम त्यपगता इति। येन अयं मया अस्यैवार्थस्य कृते किन्नरमिथुनानुसारी भूमिम् एताम् आनीतः देवश्चन्द्रमसोऽवतारः चन्द्रापीडः। योऽप्यसौ प्राक्तनानुरागसंस्कारात् अभिलषन् अजानत्या त्वया शापाग्निना निर्दग्धः स मे वयस्यस्य पुण्डरीकस्यावतारः'' इति।**

शब्दार्थ– उक्तः = कहे जाने पर। मुहूर्तमिव ध्यात्वा = थोड़ी देर तक ध्यान करके। माम् मुझको। अवादीत् = कहा। अपत्यहेतोः = सन्तान के लिए। तपस्यतः = तप करने वाले। तनयत्वम् = पुत्रत्व। उपगन्तव्यम् = प्राप्त होगा। वयस्येनापि = मित्र भी। वाहनताम् उपयास्यसि = सवारी बनोगे। तद्वचनानन्तरमेव = उसके कहने के बाद ही। अधः स्थिते = नीचे स्थित। महोदधौ = समुद्र में। न्यपतम् = गिरा। तस्माच्च = और उससे। तुरंगीभूय = घोड़ा बनकर। उदतिष्ठम् = निकला। संज्ञा = चेतना। न व्यपगता = नहीं गई। अस्यैवार्थस्य कृते = इसी काम के लिए। किन्नरमिथुनानुसारी = किन्नर घोड़े का पीछा करने वाले। भूमिम् एताम् = इस भूमि को। आनीतः = लाया गया। देवश्चन्द्रमसोऽवतारः = देव चन्द्रमा का अवतार। प्राक्तनानुरागसंस्कारात् = पूर्व प्रेम के संस्कार से। अभिलशन् = चाहते हुये। अजानन्त्या = न जानने वाली। शापाग्निना निर्दग्धः = शाप की अग्नि से जलाया गया है।

हिन्दी अनुवाद– मेरे ऐसा कहने पर उसने थोड़ी देर ध्यान करके फिर मुझसे कहा– उज्जयिनी में सन्तान के लिए तप करने वाले तारापीड नाम के राजा का पुत्र चन्द्रमा होगा और तुम्हारा मित्र पुण्डरीक उसके मन्त्री शुकनास का पुत्र होगा। तुम उसी चन्द्रमा के अवतार राजपुत्र चन्द्रापीड के वाहन बनोगे। मैं उसके यह कहने के साथ ही नीचे स्थित समुद्र में गिर पड़ा और घोड़ा होकर निकला। घोड़ा होने पर भी मुझे पूर्व जन्म की चेतना नहीं गई थी। इसी कार्य के लिए किन्नरों का पीछा करने वाले चन्द्रमा के अवतार चन्द्रापीड को मैं इस स्थान पर ले आया था। पूर्व जन्म के प्रेम के संस्कार के कारण तुम्हारी कामना करने वाला यह अनजान में जो तुम्हारे द्वारा शाप की अग्नि में जला डाला गया है वह मेरे मित्र पुण्डरीक का ही अवतार था।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– मुहूर्तमिव = मुहूर्तम् + इव। वयस्येनापि = वयस्येन + अपि। तद्वचनानन्तरमेव = तत् + वचन + अन्तरम् + एव। तस्माच्च = तस्मात् + च। देवश्चन्द्रमसोऽवतारः = देवः + चन्द्रमसः + अवतारः।

॥ प्रश्नोत्तरः॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. 'त्वमपि तस्य चन्द्रात्मनः राजपुत्रस्य वाहनताम् उपयास्यसि।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– तुम भी उसी चन्द्रमा के अवतार राजपुत्र चन्द्रापीड के वाहन बनोगे।

प्रश्न 3. तारापीडः कः आसीत्?

उत्तर– तारापीडः उज्जयिन्यां राज्ञः आसीत्।

प्रश्न 4. चन्द्रमा कस्य तनयं भविता?

उत्तर– चन्द्रमा राज्ञतारापीडस्य तनयं भविता।

प्रश्न 5. पुण्डरीकः कस्य तनयं भविता?

उत्तर– पुण्डरीकः शुकनासस्य तनयं भविता।

➥ **एतत् श्रुत्वा ''हा देव पुण्डरीक! जन्मान्तरेऽपि अविस्मृतमदनुराग! लोकान्तरगतस्यापि ते अहमेव राक्षसी विनाशायोपजाता'' इत्युन्मुक्तार्तनादा महाश्वेताम् कपिञ्जलः पुनरवादीत्–''गन्धर्वराजपुत्रि! कस्तवात्र दोष? यथा च शापदोषात् इदमुपनतम् भवत्योः द्वयोरपि दुःखम् तथा मया कथितमेव। चन्द्रमसोऽपि भारती भवतीभ्यां श्रुतैव। भवत्या अङ्गीकृतं तपः तदेव अनुबध्यताम्'' इति।**

शब्दार्थ– जन्मान्तरे अपि = दूसरे जन्म में भी। अविस्मृतमदनुरागः = मेरे प्रेम को न भूलने वाले। लोकान्तरगतस्यापि = दूसरे लोक में जाने पर भी। विनाशायोपजाता = विनाश के लिए उत्पन्न हुई। उन्मुक्तार्तनादाम् = चिल्लाकर रोने वाली। कस्तवात्र = इसमें तुम्हारा कौन। शापदोषात् = शाप के दोष से। इदमुपनत् = यह हुआ है। भवत्योः द्वयोरपि = आप दोनों को। भारती = वाणी। भवतीभ्याम् = आप दोनों। अनुबध्यताम् = निर्वाह कीजिए।

हिन्दी अनुवाद– यह सुनकर, हा देव पुण्डरीक! दूसरे जन्म में भी मेरे प्रेम को न भूलने वाले, दूसरे लोक में चले जाने वाले, आपके विनाश के लिए ही मुझ राक्षसी का जन्म हुआ। इस प्रकार चिल्लाकर रोने वाली महाश्वेता से कपिंजल ने फिर कहा– गन्धर्वराजपुत्री, इसमें तुम्हारा दोष ही क्या है? शाप के कारण जिस प्रकार आप दोनों को यह दुःख मिला है उसे मैंने कहा है। चन्द्रमा की वाणी आप लोगों ने सुनी ही है। आपने जिस तप को स्वीकार किया है उसका निर्वाह कीजिए।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– अविस्मृतमत् + अनुरागः। कस्तवात्र = कः + तव + अत्र। उन्मुक्तार्तनादाम् = उन्मुक्ते + आर्तनादाम्। द्वयोरपि = द्वयोः + अपि।

॥ प्रश्नोत्तरः॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. ''जन्मान्तरेऽपि अविस्मृतमदनुराग! लोकान्तरगतस्यापि ते अहमेव राक्षसी विनाशायोपजाता।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– दूसरे जन्म में भी मेरे प्रेम को न भूलने वाले, दूसरे लोक में चले जाने वाले आप के विनाश के लिए ही मुझ राक्षसी का जन्म हुआ।

प्रश्न 3. ''हा देव पुण्डरीक! जन्मान्तरेऽपि अविस्मृतमदनुराग!'' कस्याः उक्तिः?

उत्तर– महाश्वेतायाः उक्तिः।

प्रश्न 4. कया अङ्गीकृतं तपः?

उत्तर– महाश्वेतया अङ्गीकृतं तपः।

प्रश्न 5. कस्य अनुबध्यताम्?

उत्तर– ''भवत्या अङ्गीकृतं तपः तदेव अनुबध्यताम्।''

➥ **अथ कादम्बरी कपिञ्जलम् अप्राक्षीत्–''भगवन्! पत्रलेखया त्वया च अस्मिन् सरसि जलप्रवेशः कृतः। तत् किम् तस्याः संवृत्तम्? इत्यावेदनेन प्रसादं करोतु भवान्'' इति। स तु प्रत्यवादीत्–''राजपुत्रि! सलिलपातानन्तरम् न कश्चिदपि तद्वृत्तान्तः मया ज्ञातः। तत् अधुना क्व चन्द्रापीडस्य जन्म? क्व वैशम्पायनस्य? किं वास्याः पत्रलेखायाः वृत्तम्? सर्वस्यास्य वृत्तान्तस्य अवगमनाय भगवतः श्वेतकेतोः पादमूले गमिष्यामि'' इत्यभिदधान एव गगनम् उदपतत्।**

शब्दार्थ– अप्राक्षीत् = पूछा। जलप्रवेशः कृतः = जल में प्रवेश किया। तस्याः = उसका। संवृत्तम् = हुआ। आवेदनेन = बताकर। सलिलपातानन्तरम् = जल में प्रवेश करने के बाद। तद्वृत्तान्तः = उसका समाचार। अवगमनाय = जानने के लिए। इत्यभिदधानः एव = ऐसा कहते हुए। उदपतत् = उड़ गया।

हिन्दी अनुवाद– इसके बाद कादम्बरी ने कपिंजल से पूछा– भगवन्! पत्रलेखा और आपने इस तालाब के जल में प्रवेश किया। फिर उसका (पत्रलेखा का) क्या हुआ? यह मुझे बताने की कृपा करें। उसने उत्तर दिया– राजपुत्रि! जल में प्रवेश करने के बाद उसका कोई भी समाचार मैं न जान सका। इस समय चन्द्रापीड का जन्म कहाँ हुआ है? वैशम्पायन का जन्म कहाँ हुआ है? पत्रलेखा की क्या दशा है? इन सभी वृत्तान्तों को जानने के लिए मैं भगवान् श्वेतकेतु के पास जा रहा हूँ। ऐसा कहते हुए वह आकाश में उड़ गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– सलिलपातानन्तरम् = सलिलपात् + अनन्तरम्। तद्वृत्तान्तः = तत् + वृत्तान्तः। इत्यभिदधानः = इति + अभिदधानः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. ''तत् अधुना क्व चन्द्रापीडस्य जन्म?'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– इस समय चन्द्रापीड का जन्म कहाँ हुआ है।

प्रश्न 3. कादम्बरी किम् अप्राक्षीत्?

उत्तर– कादम्बरी कपिञ्जलम् अप्राक्षीत्।

प्रश्न 4. कः भगवतः श्वेतकेतोः पादमूले जगाम?

उत्तर– कपिञ्जलः भगवतः श्वेतकेतोः पादमूले जगाम।

प्रश्न 5. कः गगनम् उदपतत्?

उत्तर– कपिञ्जलः गगनम् उदपतत्।

➥ **अथ कादम्बरी तां निर्विकारवदनाम् चन्द्रापीडतनुम् कस्मिंश्चित् शिलातले स्थापयित्वा स्नानशुचिः भूत्वा देवतोचिताम् अपचितिं संपाद्य, निराहारा दिवसम् अनयत्। यथैव दिवसम् तथैव मेघोपरोधभीमाम् क्षपामपि समुपविष्टैव क्षपितवती। अन्येद्युश्च महाश्वेतया उपनीतानि फलानि तया सहैव उपभुक्तवती। अथ च मदलेखाम् अवादीत्- ''प्रियसखि! देवस्य शरीरम् इदम् उपचरन्तीभिः अस्माभिः आशापक्षयात् अत्र स्थातव्यम्। तत् इमम् अत्यद्भुतं वृत्तान्तम् तातस्य अम्बायाश्च गत्वा निवेदय। यथा माम् एवंविधाम् आगत्य न पश्यतः तथा करिष्यसि''। इत्यभिधाय ताम् व्यसर्जयत्। गत्वा आगतया च तया, ''प्रियसखि! सिद्धं ते अभिवाञ्छितम्। एवं सन्दिष्टम् तातेन अम्बया च– शापावसाने जामात्रा सहैव आनन्दवाष्पनिर्भरम् आननम् ते द्रक्ष्यावः'' इति आवेदिते निर्वृतेन अन्तरात्मना अतिष्ठत्।**

अथ कादम्बरी .....गत्वा निंवदय। (2020 ZR)

शब्दार्थ– निर्विकारवदनाम् = शान्तमुखवाले। चन्द्रापीडतनुम् = चन्द्रापीड के शरीर को। स्थापयित्वा = रखकर। स्नानशुचिः = स्नान से पवित्र। देवोचिताम् = देवता के योग्य। अपचितिम् = पूजा। संपाद्य = करके। निराहारः = बिना भोजन के ही। अनयत् = बिताया। मेघोपरोधभीमाम् = बादलों के व्याप्त हो जाने से भयंकर। क्षपाम् = रात को। समुपविष्टैव = बैठी ही। क्षपितवती = बिता दिया। उपचरन्तीभिः = सेवा करती हुई। आशापक्षयात् = शाप के नष्ट होने तक। स्थातव्यम् = रहना चाहिए। अत्यद्भुतं वृत्तान्तम् = अति अद्भुत समाचार को। अम्बायाः = माता को। निवेदय = बताओ। एवम् विधाम् = इस प्रकार की। इत्यभिधाय = ऐसा कहकर।

व्यसर्जयत् = विदा किया। जामात्रा सहैव = दामाद के साथ ही। आनन्दवाष्पनिर्भरम् = आनन्द के आँसुओं से पूर्ण। आननम् ते = तुम्हारा मुख। द्रक्ष्यावः = देखेंगे। आवेदिते = ऐसा कहने पर। निर्वृतेन अन्तरात्मना = निश्चिन्त हृदय से। अतिष्ठित् = रहने लगी।

हिन्दी अनुवाद– इसके पश्चात् कादम्बरी ने शान्त मुखवाले चन्द्रापीड के शरीर को किसी शिला पर रखकर स्नान से पवित्र हो देवोचित पूजा करके बिना कुछ खाये-पीये उस दिन को बिता दिया और जिस प्रकार दिन बिताया उसी प्रकार बादलों के घिर आने से भयंकर रात को भी बैठे ही बैठे बिता दिया। दूसरे दिन महाश्वेता द्वारा लाये गये फलों को उसी के साथ खाया। इसके बाद मदलेखा से कहा– देव चन्द्रापीड के शरीर की सेवा करती हुई हम लोगों को शाप का अन्त होने के समय तक यहाँ रहना चाहिए। इसलिए इस अद्भुत वृत्तान्त को तुम पिता और माता के पास जाकर बतला दो और ऐसा प्रयत्न करो कि वह लोग मुझे यहाँ आकर इस स्थिति में न देखें। ऐसा कहकर उसे भेज दिया। वहाँ जाकर लौटने के पश्चात् मदलेखा ने कहा कि प्रिय सखि, तुम्हारा मनोरथ सफल हुआ। पिता ने यह सन्देश दिया है कि शाप के अन्त में दामाद के साथ आनन्दाश्रुपूर्ण तुम्हारे मुख को देखेंगे। उसके ऐसा कहने पर कादम्बरी निश्चिन्त मन से वहाँ रहने लगी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– निर्विकारवदनाम् = निर्विकारं वदनम् यस्याः ताम्। स्नानशुचिः = स्नानेन शुचिः। मेघोपरोधभीमाम् = मेघानाम् उपरोधेन भीमा ताम्। अत्यद्भुतं = अति + अद्भुतं। इत्यभिधाय = इति + अभिधाय।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. उपर्युक्त गद्यांश किस मूल ग्रन्थ से उद्धृत है?

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश बाणभट्ट कृत कादम्बरी कथा से उद्धृत है।

प्रश्न 3. 'प्रियसखि! देवस्य शरीरम् इदम् उपचरन्तीभिः अस्माभिः आशापक्षयात् अत्र स्थातव्यम्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– प्रियसखि! देव के शरीर की सेवा करती हुई हम लोगों को शाप के अन्त होने के समय तक यहाँ रहना चाहिए।

प्रश्न 4. कादम्बरी चन्द्रापीडतनुं कुत्र स्थापितवती?

उत्तर– कादम्बरी चन्द्रापीडतनुं कस्मिंश्चित् शिलातले स्थापितवती।

प्रश्न 5. कादम्बरी कथं दिवसम् अनयत्?

उत्तर– कादम्बरी निराहार दिवसम् अनयत्।

प्रश्न 6. कादम्बरी अन्येद्युः कया उपनीतानि फलानि उपभुक्तवती?

उत्तर– कादम्बरी अन्येद्युः महाश्वेतया उपनीतानि फलानि उपभुक्तवती।

➥ **अत्रान्तरे चन्द्रापीडः चिरयति इति उत्ताम्यता तारापीडेन वार्ताहराः प्रहिताः। ते च कादम्बरीतुखात् सर्वं वृत्तान्तम् अधिगम्य प्रतिनिवृत्य तारापीडाय राज्ञे यथादृष्टं यथाश्रुतं च सर्वम् निवेदयामासुः। श्रुत्वा च विस्मयेन कुतूहलेन शोकेन चाविष्टम् तारापीडं शुकनासः प्रोवाच– ''देव! विचित्रेऽस्मिन् संसारे किं किं संभाव्यते। सर्वम् आगमप्रामाण्यात् अभ्युपगतमेव। मुद्राबन्धनात् ध्यानाद्वा विषप्रसुप्तस्य उत्थापनम्। अयस्कान्तस्य चायस्समाकर्षणम्। वैदिकैः अवदिकैर्वा मन्त्रैः कर्मसु सिद्धिः। आगमेषु च पुराणरामायणभारतादिषु बहुप्रकाराः शापवार्ताः श्रूयन्ते। तद्यथा-नहुषस्य राजर्षेः अगस्त्यशापात् अजगरता सौदासस्य वसिष्ठसुतशापात् मानुषादत्वम्। ययातेः असुरगुरुशापात् तारुण्य एव जरसा भङ्गः। त्रिशंकोः पितृशापात् चाण्डालभाव इति।**

शब्दार्थ– अत्रान्तरे = इसी बीच। चिरयति = विलम्ब करता है। उत्ताम्यता = संतप्त हृदय वाले। वार्ताहराः = समाचार ले जाने वाले। प्रहिताः = भेजे। कादम्बरीमुखात् = कादम्बरी के मुँह से। अधिगम्य = जानकर। प्रतिनिवृत्त्य = लौटकर। यथादृष्टन् = जैसा देखा। यथाश्रुतम् = जैसा सुना। निवेदयामासुः = निवेदन किये। आविष्टम् = पूर्ण होकर। संभाव्यते = हो सकता है। आगमप्रमाणात् = शास्त्रों के प्रमाण से। अभ्युपगतमेव = स्वीकृत है / मानी गई है। मुद्राबन्धात् ध्यानादवा = ध्यान व पूजा की मुद्राओं से। विषप्रसुप्तस्य = विष से सोये हुए। उत्थापनम् = उठाना, जगाना। अयस्कान्तस्य = चुम्बक लोहा। अयस्समाकर्षणम् = लोहे का खींचना। अवैदिकैः = लौकिक। कर्मसु = कर्मों में। श्रूयन्ते = सुनी जाती हैं। अजगरता = अजगर बनना। मानुषादत्वम् = मनुष्य का भोजन करने वाला (नर-भक्षी)। असुरगुरुशापात् = शुक्र के शाप से। तारुण्ये एव = जवानी में ही। जरसा भंगः = बुढ़ापा से बूढ़ा होना। चाण्डालभावः = चाण्डाल बनना।

हिन्दी अनुवाद– इसी बीच चन्द्रापीड को अधिक देर करने पर दुःखी होकर तारापीड ने उसके पास सन्देशवाहकों को भेजा। उन्होंने कादम्बरी के मुख से सारी बातें जानकर लौट करके राजा तारापीड को सुनायी। यह सुनकर आश्चर्य और कुतूहल तथा शोक से पूर्ण राजा तारापीड से मंत्री शुकनास ने कहा– राजन्, इस विचित्र संसार में क्या-क्या नहीं हो सकता? शास्त्रों के प्रमाण के अनुसार सभी कुछ हुआ है। मुद्राओं तथा ध्यान द्वारा विष से अचेत होश में आये हैं। वैदिक या लौकिक मन्त्रों से कार्य की सिद्धि हुई है। वेदों, पुराणों, रामायण, महाभारत आदि में बहुत प्रकार के शाप की कथायें सुनी जाती हैं। जैसे अगस्त्य के शाप से राजा नहुष का अजगर बनना, वशिष्ठपुत्र के शाप से सौदास का नरभक्षी होना, शुक्र के शाप से ययाति का जवानी में ही बुढ़ापे से टेढ़ा होना, पिता के शाप से त्रिशंकु का चांडाल बनना आदि।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– अत्रान्तरे = अत्र + अन्तरे। अभ्युपगतमेव = अभि + उपगतम् + एव। अयस्समाकर्षणम् = अयस् + समाकर्षणम्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. ''देव! विचित्रेऽस्मिन् संसारे किं किं संभाव्यते।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– महाराज! इस विचित्र संसार में क्या-क्या नहीं हो सकता है?

प्रश्न 3. उत्ताम्यता तारापीडेन कस्याः समीपे वार्ताहराः प्रतिहताः?

उत्तर– चन्द्रापीडस्य समीपे वार्ताहराः प्रतिहताः।

प्रश्न 4. सर्वहराः कस्याः मुखात् सर्वं वृत्तान्तं ज्ञातः?

उत्तर– सर्वहराः कादम्बरीमुखात् सर्वं वृत्तान्तं ज्ञातः।

प्रश्न 5. शुकनासः किं प्रोवाच?

उत्तर– शुकनासः प्रोवाच–''देव! विचित्रेऽस्मिन् संसारे किं किं संभाव्यते।''

➥ **श्रूयते च स्वर्गलोकनिवासी महाभिषः भूमौ शान्तनुः उत्पन्नः गङ्गायाम् वसूनाम् अष्टानाम् उत्पत्तिः। तिष्ठन्तु तावदन्ये। अयमादिदेवः भगवान् अज एव जमदग्नेः आत्मजाताम् उपगतः, पुनश्चतुर्धा आत्मानं विभज्य राजर्षेः दशरथस्य तथैव मथुरायां वसुदेवस्य। तन्मनुष्येषु देवानाम् उत्पत्तिः नैवासंभाविनी। अपि च, गर्भारम्भसंभवे देव्या वदने विशन् चन्द्रमा एव दृष्टः। तथा ममापि स्वप्ने पुण्डरीकस्य दर्शनम् समुपजातम्। विनष्टयोः तयोः कथं पुनः जीवितप्रतिलम्भः इत्यत्रापि अमृतमेव कारणम् आवेदितम्। तच्च चन्द्रमसि विद्यते। तत् अस्मिन् वस्तुनि न मनागपि शोकः कार्यः'' इत्युक्तवति शुकनाशे सशोक एव राजा सद्य एव गमनसंविधानम् अकरायत्।**

(2019 CZ)

शब्दार्थ– महाभिषः = महाभिष नाम का राजा। वसूनाम् अष्टानाम् = आठ वसुओं का। तिष्ठन्तु तावदन्ये = दूसरों की बात छोड़िये। अयमादिदेवः = यह आदि देवता। अज = ब्रह्मा। आत्मजताम् उपगतः = पुत्र रूप में उत्पन्न हुए। चतुर्धा = चार भाग में। विभज्य = बाँटकर। नैवासंभाविनी = असम्भव नहीं है। देव्याः वदने = देवी के मुख में। विशन् = प्रवेश करते हुए। पुण्डरीकस्य = श्वेतकमल का। समुपजातम् = हुआ। जीवितप्रतिलम्भः = पुनः जीवित होना। आवेदितम् = बताया गया है। चन्द्रमसि = चन्द्रमा में। मनागपि = थोड़ी भी। वस्तुनि = विषय में। उक्तवति = कहने पर। सद्यः = शीघ्र ही। संविधानम् = जाने की तैयारी। अकारयत् = कराया।

हिन्दी अनुवाद– ऐसा सुना जाता है कि स्वर्गवासी महाभिष नाम के राजा पृथ्वी पर शान्तनु हुए थे। उन्हीं द्वारा गंगा से आठ वसुओं का जन्म हुआ था। दूसरों की बात छोड़िए, यह आदि देवता ब्रह्मा भी जमदग्नि के पुत्र बने थे। इसी प्रकार अपने को चार भागों में बाँटकर दशरथ के पुत्र तथा मथुरा में वसुदेव के पुत्र हुए थे। अतः मनुष्यों में देवताओं की उत्पत्ति असम्भव नहीं है। इसके अतिरिक्त गर्भ के आरम्भ के समय आपने देवी के मुख में चन्द्रमा को प्रवेश करते हुए देखा था और मैंने स्वप्न में पुण्डरीक का दर्शन किया था। नष्ट हुए उन दोनों को फिर से जीवन मिलने का कारण अमृत बताया गया है, वह चन्द्रमा विद्यमान है। इसलिए इस विषय में आप कुछ भी शोक न करें। शुकनास के ऐसा कहने पर शोक के साथ राजा शीघ्र ही प्रस्थान की तैयारी करने लगा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– तावदन्ये = तावत् + अन्ये। अयमादिदेवः = अयम् + आदिदेवः। नैवासंभाविनी = न + एव + संभाविनी।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।
प्रश्न 2. 'तन्मनुष्येषु देवानाम् उत्पत्तिः नैवासंभाविनी।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– मनुष्यों में देवताओं का उत्पन्न होना असम्भव नहीं है।
प्रश्न 3. कस्य नाम्नः राज्ञः भूमौ शान्तनुः उत्पन्नः?
उत्तर– स्वर्गलोकनिवासी महाभिषः नाम्नः राज्ञः भूमौ शान्तनुः उत्पन्नः।
प्रश्न 4. कः जमदग्नेः आत्मजातम् उपगतः?
उत्तर– आदिदेव भगवान अज जमदग्नेः आत्मजातम् उपगतः।
प्रश्न 5. कस्याम् अष्टानाम् वसुनाम् उत्पत्तिः?
उत्तर– गङ्गायाम् अष्टानाम् वसुनाम् उत्पत्तिः।
प्रश्न 6. गर्भारम्भसंभवे कया वदने विशन् चन्द्रमा एव दृष्टः?
उत्तर– गर्भारम्भसंभवे देव्या वदने विशन् चन्द्रमा एव दृष्टः।
प्रश्न 7. कः स्वप्ने पुण्डरीकस्य दर्शनम् उपजातम्?
उत्तर– शुकनासः स्वप्ने पुण्डरीकस्य दर्शनम् उपजातम्।

➥ **अथ उत्ताम्यता हृदयेन राजा सततम् अविच्छिन्नैः प्रयाणकैः आससाद महाश्वेताश्रमम् । अथ सहसैव तत् चन्द्रापीडगुरुजनागमनम् आकर्ण्य, धावित्वा ह्रिया महाश्वेता गुहाभ्यन्तरमविशत्। चित्ररथतनयापि लज्जावनम्रमुखी प्रतिपत्तिमूढा परवत्येव मदलेखया यथाक्रमम् अकारयत वन्दनं गुरूणाम्। नरपतिस्तु अनतिक्रमणीया नियतिरिति कृत्वा संनिहितान्यपि परित्यज्य सर्वसुखानि तपस्विजनोचिताः क्रियाः कुर्वन् सपरिवारः समं देव्या शुकनासेन च तत्रैव अतिष्ठत्।**

शब्दार्थ– उत्ताम्यता हृदयेन = सन्तप्त हृदय से। सततम् = निरन्तर। अविच्छिनैः प्रयाणकैः = लगातार प्रस्थानों से। महाश्वेताश्रमम् = महाश्वेता के आश्रम को। आससाद = पहुँचा। चन्द्रापीडगुरुजनागमनम् = चन्द्रापीड के गुरुजनों का आगमन। आकर्ण्य = सुनकर। धावित्वा = दौड़कर। हिया = लज्जा से। गुहाभ्यन्तरम् = गुफा के बीच। चित्ररथतनयापि = चित्ररथ की पुत्री कादम्बरी भी। लज्जावनम्रमुखी = लज्जा से सिर झुकाकर। प्रतिपत्तिमूढ़ा = कर्त्तव्यज्ञान से रहित। परवत्येव = पराधीन-सी। मदलेखया = मदलेखा द्वारा। अकारयत = कराया। अनतिक्रमणीया = अनुल्लंघनीय। नियतिः = भाग्य। सन्निहितान्यपि = समीप में ही उपस्थित। सर्वसुखानि = सारे सुख को। तपस्विजनोचिताः = तपस्वी लोगों के योग्य। क्रियाः कुर्वन् = कार्य करते हुए। समम् देव्या = देवी के साथ।

हिन्दी अनुवाद– इसके पश्चात् दुःखी हृदय से राजा निरन्तर बिना विश्राम के चलते हुए महाश्वेता के आश्रम में पहुँचे। अकस्मात् चन्द्रापीड के गुरुजनों (माता-पिता) का आना सुनकर महाश्वेता लज्जा के कारण दौड़कर गुफा के भीतर चली गई। कादम्बरी ने भी लज्जा से सिर झुकाकर तत्कालोचित कर्त्तव्यज्ञान से रहित पराधीन-सी होकर मदलेखा द्वारा क्रमशः गुरुजनों की वन्दना कराई। भाग्य को अनुल्लंघनीय जानकर राजा भी सभी सुलभ सुखों को छोड़कर तपस्वियों के योग्य क्रियायें करते हुए सपरिवार देवी विलासवती तथा शुकनास के साथ वहीं रहने लगे।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– चन्द्रापीडगुरुजनागमनम् = चन्द्रापीडस्य गुरुजनानाम् आगमनम्। गुहाभ्यन्तरम् = गुहा + अभि + अन्तरम्। चित्ररथतनयापि = चित्ररथस्य + तनया + अपि। परवत्येव = परवत्य + एव।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।
प्रश्न 2. ''अथ उत्ताम्यता हृदयेन राजा सततम् अविच्छिन्नैः प्रयाणकैः आससाद महाश्वेताश्रमम्।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– इसके पश्चात् दुःखी हृदय से राजा निरन्तर विश्राम रहित यात्रा से महाश्वेता के आश्रम में पहुँचे।

प्रश्न 3. राजा तारापीडः कुत्र आससाद?
उत्तर– राजा तारापीडः महाश्वेताश्रमम् आससाद।
प्रश्न 4. के चन्द्रापीडगुरुजनागमनम् अशृणोत्?
उत्तर– महाश्वेता चन्द्रापीडगुरुजनागमनम् अशृणोत्।
प्रश्न 5. का धावित्वा ह्रिया गुहाभ्यान्तरमविशत्?
उत्तर– महाश्वेता धावित्वा ह्रिया गुहाभ्यन्तरमविशत्।

➥ **एवं कथयित्वा भगवान जाबालिः स्मितं कृत्वा हारीतप्रमुखान् सर्वान् अवादीत् ''दृष्टं कथारसस्य चित्ताक्षेपसामर्थ्यम्। यत् कथयितुं प्रवृत्तोऽस्मि तत् परित्यज्यैव कथारसात् अतिदूरम् अतिक्रान्तोऽस्मि। यः स कामोपहतचेताः स्वयं कृतादेव अविनयात् दिव्यलोकतः परिभ्रश्य, मर्त्यलोके वैशम्पायननामा शुकनाससूनुः अभवत्, स एवैष पुनः स्वयंकृतेन अविनयेन अस्यां शुकजातौ पतितः'' इति। एवं वदत्येव भगवति जाबालौ सुप्तप्रबुद्धस्येव मे पूर्वजन्मोपार्जिताः सर्वाः विद्याः जिह्वाग्रे अभवन्। मनुजस्येव चेयं विस्पष्टा भारती समुत्पन्ना। मनुष्यशरीरात् ऋते सर्वमन्यत् महाश्वेतानुरागादिकम् उपगतम्। अथ भगवान् जाबालिः ''अहो प्रभातप्राया रजनी'' इत्युक्त्वा गोष्ठीं भङ्क्त्वा उदतिष्ठत्।** (2017 NG)

शब्दार्थ– स्मितं कृत्वा = मुसकराकर। अवादीत् = कहा। कथारसस्य = कथा से रस के। चित्ताक्षेपसामर्थ्यम् = मन को खींच लेने की शक्ति। दृष्टम् = देखा। यत् कथयितुम् = जो कहने के लिए। प्रवृत्तोऽस्मि = लगा हुआ हूँ। अतिक्रान्तोऽस्मि = चला आया हूँ। कामोपहतचेताः = काम से नष्ट ज्ञान वाला। कृतादेव = किये हुए। अविनयात् = पाप से। दिव्यलोकतः = देवता के लोक से। परिभ्रश्य = भ्रष्ट होकर। शुकनाससूनुः = शुकनास का पुत्र। शुकजातौ = सुग्गे की योनि में। एवं वदत्येव = ऐसा कहते ही। सुप्तप्रबुद्धस्येव = सोकर जगे हुए के समान। पूर्वजन्मोपार्जिताः = पूर्व जन्म में प्राप्त की गई। जिह्वाग्रे अभवन् = याद हो गयी। मनुजस्येव = मनुष्य के समान। विस्पष्टा भारती = स्पष्ट वाणी। मनुष्यशरीरात् ऋते = मानव शरीर छोड़कर। सर्वमन्यत् = और सब। उपगतम् = याद हो गई। गोष्ठी भङ्क्त्वा = गोष्ठी भंग करके। उदतिष्ठत् = उठे।

हिन्दी अनुवाद– इस प्रकार कहकर भगवान् जाबालि ने मुसकराकर हारीत इत्यादि सभी श्रोताओं से कहा– मन को हरण कर लेने वाली कथा के रस की शक्ति आप लोगों ने देख ली। मैं जो कह रहा था उसे छोड़कर कथारस में बहुत दूर तक चला गया हूँ। कामवासना से नष्टज्ञान वह अपने ही किये पापों के कारण स्वर्गलोक से भ्रष्ट होकर मृत्युलोक में शुकनास का पुत्र वैशम्पायन हुआ था और वही फिर अपने ही पापों से इस सुग्गे की योनि में आया है। भगवान् जाबालि के ऐसा कहते ही सोकर जगे हुए के समान मेरे पूर्वजन्म की सारी विद्यायें याद हो गयीं। मनुष्य के समान यह चेष्टा और वाणी भी उत्पन्न हो गई। मनुष्य शरीर को छोड़कर महाश्वेता का अनुराग आदि सब प्राप्त हो गया। अरे प्रातःकाल हो गया। ऐसा कहकर गोष्ठी भंग करके भगवान् जाबालि उठ खड़े हुए।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– कृत्वा = कृ + क्त्वा। प्रवृत्तोऽस्मि् = प्रवृत्तः + अस्मि। कामोपहतचेताः = कामेन उपहतः चेतः यस्य सः। वदत्येव = वदति + एव। जिह्वाग्रे = जिह्वा + अग्रे। मनुजस्येव = मनुजस्य + एव।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।
प्रश्न 2. ''मनुजस्येव चेयं विस्पष्टा भारती समुत्पन्ना।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– मनुष्य की तरह ही विशेष रूप से स्पष्ट वाणी भी उत्पन्न हो गई।
प्रश्न 3. हारीतः कः आसीत्?
उत्तर– हारीतः जाबालि मुनेः पुत्रः आसीत्।
प्रश्न 4. मर्त्यलोके शुकनासस्य पुत्रः कः अभवत्?
उत्तर– मर्त्यलोके शुकनासस्य पुत्रः वैशम्पायनः अभवत्।
प्रश्न 5. कः स्वयंकृते अविनयेन शुकजातौ पतितः?
उत्तर– वैशम्पायनः स्वयंकृते अविनयेन शुकजातौ पतितः।

➥ **उत्थिते जाबालौ समस्तैव सा परिषत् यथास्थानं जगाम। हारीतस्तु माम् आत्मपर्णशालां नीत्वा स्वशयनीयैकदेशे स्थापयित्वा प्रभातिकक्रियाकरणाय निर्ययौ। अथ कपिञ्जलः मम पितुः श्वेतकेतोः पादमूलात् आगत्य हारीतेन प्रवेशितः करद्वयेन उत्क्षिप्य माम् भूयसा मन्युवेगेन अरोदीत्। अहं तु तम् अवदम्– ''सखे कपिञ्जल! धन्योऽसि बालोऽपि त्वं न स्पृष्ट एव अमीभिः संसारदोषैः। उपविश्य तावत् कथय यथावृत्तम्। अपि कुशलं तातस्य। मद्वृत्तान्तम् आकर्ण्य किमुक्तवान्? कुपितो वा न वा'' इति। स त्वेवम् आख्यातवान्–सखे! कुशलं तातस्य, अयं च अस्मद्वृत्तान्तः प्रथमतरमेव तातेन दिव्येन चक्षुषा दृष्टः। दृष्ट्वा च प्रतिक्रियायै कर्म प्रारब्धम्।**

शब्दार्थ– उत्थिते = उठने पर। समस्तैव = सारी। सा परिषत् = वह सभा। जगाम = चली गई। आत्मपर्णशालाम् = अपनी झोपड़ी में। नीत्वा = ले जाकर। स्वशयनीयैकदेशे = अपने सोने की जगह के एक किनारे। प्राभातिक = प्रातःकाल की। करणाय = करने के लिए। निर्ययौ = चले गये। पादमूलात् = चरणों के पास से। आगत्य = आकर। उत्क्षिप्य = उठाकर। भूयसा = अत्यधिक। मन्युवेगेन = दुःख के वेग से। अरोदीत् = रोया। अमीभिः = इन। संसारदोषैः = सांसारिक वासनाओं से। उपविश्य = बैठकर। यथावृत्तम् = जो हुआ। आख्यातवान् = कहा। अस्मद्वृत्तान्तः = हम लोगों का समाचार। प्रथमतरमेव = पहले ही। तातेन = पिता द्वारा। चक्षुषा = नेत्रों द्वारा। प्रतिक्रियायै = उसकी शान्ति के उपाय के लिए। प्रारब्धम् = प्रारम्भ किया।

हिन्दी अनुवाद– जाबालि के उठ जाने पर सारी सभा यथास्थान चली गई। हारीत मुझे अपनी कुटिया में लाकर अपने बिछौने के एक किनारे रखकर प्रातःकालीन क्रियाओं को करने के लिए चले गये। इसके बाद कपिंजल ने मेरे पिता श्वेतकेतु के पास से लौटकर हारीत के साथ कुटिया में आकर दोनों हाथों से मुझे उठा लिया और वह अत्यन्त दुःख के साथ रोने लगा। मैंने उससे कहा– मित्र कपिंजल, तुम धन्य हो, बचपन से ही तुम इन सांसारिक वासनाओं से अछूते रहे हो, बैठकर सारा समाचार सुनाओ, पिता कुशल से हैं न? मेरा समाचार सुनकर उन्होंने क्या कहा? क्रुद्ध हुए अथवा नहीं? उसने मुझसे इस प्रकार कहा–पिताजी कुशल से हैं। पिताजी ने दिव्य दृष्टि से इस समाचार को पहले ही जान लिया था और उसी के लिए कार्य भी आरम्भ कर दिया था।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– समस्तैव = समस्ते + एव। स्वशयनीयैकदेशे = स्वशयनीये + एकदेशे। अस्मद्वृत्तान्तः = अस्मत् + वृत्तान्तः। प्रथमतरमेव = प्रथमतरम् + एव।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. 'धन्योऽसि बालोऽपि त्वं न स्पृष्ट एव अमीभिः संसारदोषैः।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– तुम धन्य हो, बालक होकर भी तुम इन सांसारिक दोषों से अछूते हो।

प्रश्न 3. उत्थिते जाबालौ समस्तैव सा परिषत् कुत्र जगाम?

उत्तर– उत्थिते जाबालौ समस्तैव सा परिषत् यथास्थं जगाम।

प्रश्न 4. हारीतः शुकं कुत्र अनैषीत्?

उत्तर– हारीतः शुकं पर्णशालाम् अनैषीत्।

प्रश्न 5. श्वेतकेतुः कः आसीत्?

उत्तर– श्वेतकेतुः वैशम्पायनस्य पिता आसीत्।

प्रश्न 6. कपिञ्जलः कुतः प्रत्यागत्?

उत्तर– कपिञ्जलः मम पितुः श्वेतकेतोः पादमूलात् प्रत्यागत्।

➥ **समारब्धे एव कर्मणि तुरगभावात् विमुक्तः गतोऽस्मि तस्य पादमूलम्। गत्वा च भयात् अनपसर्पन्तं माम् आहूय आज्ञापितवान्– 'वत्स कपिञ्जल! परित्यज्यतां स्वदोषशङ्का। बलवती हि भवितव्यता। शुकजातौ इदानीं सुहृत् ते पतितः। तत् गत्वापि तम् अद्य नैवं वेत्सि। नाप्यसौ त्वां वेत्ति। मया तु वत्सस्य कृते समारब्धम् आयुष्करं कर्म। अधुना सिद्धप्रायमेवेदम्। तत् अत्रैव तावत् स्थीयताम्' इति। अद्य च प्रातरेव आहूय माम् आज्ञापितवान्– ''वत्स कपिञ्जल! महामुनेः जाबालेः आश्रमं सुहृत् ते प्राप्तः। जन्मान्तरस्मरणं चास्योपजातम्। तत् गच्छ संप्रति तं द्रष्टुम्। मदीयया च आशिषा अनुगृह्य वक्तव्योऽसौ–'वत्स! यावदिदं कर्म परिसमाप्यते तावत् त्वया अस्मिन्नेव**

जाबालेराश्रमे स्थातव्यम्' इति। इत्युक्त्वा कपिञ्जलः क्षणमिव स्थित्वा 'सखे व्रजामि' इत्युक्त्वा अन्तरिक्षम् अतिक्रम्य क्वापि अदर्शनम् अगात्।

शब्दार्थ– तुरगभावात् = घोड़े की योनि से। अनपसर्पन्तम् = पास न जाने वाले। आहूय = बुलाकर। आज्ञापितवान् = आज्ञा दी। परित्यज्यताम् = छोड़ो। भवितव्यता = होनहार। शुकजातौ = सुग्गे की योनि में। इदानीम् = इस समय। जन्मान्तरस्मरणम् = दूसरे जन्म की याद। सम्प्रति = इस समय। मदीयया = मेरे। आशिषा = आशीर्वाद द्वारा। परिसमाप्यते = समाप्त होता है। अन्तरिक्षम् = आकाश को। अतिक्रम्य = लांघकर। क्वापि = कहीं। अदर्शनम् अगात् = लुप्त हो गया।

हिन्दी अनुवाद– कार्य के आरम्भ होने पर मैं घोड़े की योनि से मुक्त होकर उनके चरणों में पहुँचा था। मैं वहाँ जाकर मारे डर के उनके पास नहीं जा रहा था, फिर भी उन्होंने मुझे बुलाकर कहा– पुत्र कपिंजल! अपने अपराध की शंका छोड़ दो। होनहार बलवान है। इस समय तुम्हारा मित्र सुग्गे की योनि में पड़ा है। इसलिए तुम आज जानकर भी उसे न जान सकोगे। न वह तुम्हें जान सकेगा। मैंने पुत्र के जीवन के लिए कर्म आरंभ किया है। अब वह सिद्ध होने के निकट है। इसीलिए तब तक यहीं ठहरो। आज प्रातःकाल ही उन्होंने मुझे बुलाकर कहा कि पुत्र कपिंजल! महामुनि जाबालि के आश्रम में तुम्हारा मित्र है। उसे अब देखने जाओ और मेरा आशीर्वाद कहकर उससे कहना कि जब तक यह कर्म समाप्त नहीं हो जाता तब तक वह उसी जाबालि के आश्रम में ही रहे। ऐसा कहकर कपिंजल थोड़ी देर तक रुका और मित्र मैं जा रहा हूँ ऐसा कहकर आकाश में लुप्त हो गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– गतोऽस्मि = गतः + अस्मि। गत्वापि = गत्वा + अपि। नाप्यसौ = न + अपि + असौ। अत्रैव = अत्र + एव। चास्योपजातम् = च + अस्य + उपजातम्। यावदिदं = यावत् + इदं। अस्मिन्नेव = अस्मिन् + एव। इत्युक्त्वा = इति + उक्त्वा।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. 'बलवती हि भवितव्यता।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– होनहार निश्चय ही बलवान है।

प्रश्न 3. कः तुरगभावात् विमुक्तं बभूव?

उत्तर– कपिञ्जलः तुरगभावात् विमुक्तं बभूव।

प्रश्न 4. कपिञ्जलः तुरगभावात् विमुक्तः कस्य पादमूलम् अगमत्?

उत्तर– कपिञ्जलः तुरगभावात् विमुक्तः श्वेतकेतोः पादमूलम् अगमत्।

प्रश्न 5. 'बलवती हि भवितव्यता' इति कस्योक्तिः?

उत्तर– 'बलवती हि भवितव्यता' इति श्वेतकेतोः उक्तिः।

➥ **गते च तस्मिन्, हारीतेन प्रतिदिनम् आहारादिभिः उपचारैः संवर्ध्यमानः संजातपक्षोऽभवम् उत्पन्नोत्पतनसामर्थ्यश्च 'गमनक्षमस्तु संवृत्तोस्मि। नास्ति चन्द्रापीडोत्पत्तिपरिज्ञानम्। महाश्वेता पुनः सैवास्ते। भवतु, तत्रैव गत्वा तिष्ठामि' इति निश्चित्य एकदा प्रातर्विहारनिग्रत एव उत्तरां ककुभं गृहीत्वा अवहम्। अनभ्यस्तगमनतया स्तोकमेव गत्वा शिथिलितपक्षतिः कस्यचित् सरस्तीरतरुनिकुञ्जस्योपरि आत्मानम् अमुञ्चम्। ततश्च अध्वश्रमसुलभविनिद्राम् अगच्छम्। चिरादिव लब्धप्रबोधः बद्धम् आत्मानम् अपश्यम्। अग्रतश्च कालपुरुषमिव परुषं पुरुषम् अद्राक्षम्। आलोक्य च तम् आत्मनः उपरि निष्प्रत्याश एव अपृच्छम्– ''भद्र! कस्त्वम्? किमर्थ वा त्वया बद्धोऽस्मि?'' इति।**

शब्दार्थ– गते च तस्मिन् = उसके चले जाने पर। आहारादिभिः = भोजन आदि से। उपचारैः = सेवा से। संवर्ध्यमानः = बड़ा होकर। संजातपक्षः = पंखोंवाला। अभवम् = हुआ। उत्पन्नोत्पतनसामर्थ्यश्च = उड़ने योग्य। गमनक्षमः = जाने में समर्थ। चन्द्रापीडोत्पत्तिपरिज्ञानम् = चन्द्रापीड के उत्पन्न होने का ज्ञान। प्रातर्विहारनिर्गतः एव = प्रातःकाल विहार के लिए निकलकर। उत्तरां ककुभम् = उत्तर दिशा। अनभ्यस्तगमनतया = चलने का अभ्यास न होने के कारण। स्तोकमेव = थोड़ा ही। शिथिलितपक्षतिः = पंखों के शिथिल होने से। सरस्तीरतरुनिकुंजस्योपरि = तालाब के वृक्ष के कुंज के ऊपर। अमुञ्चम् = छोड़ दिया। अध्वश्रमसुलभविनिद्राम् = मार्ग की थकान के कारण नींद को। लब्धप्रबोधः = जागकर। बद्धम् = बँधा हुआ। कालपुरुषमिव = यमराज के समान। परुषम् = कठोर। अद्राक्षम् = देखा। निष्प्रत्याश एव = निराश होकर।

हिन्दी अनुवाद– उसके चले जाने पर हारीत के द्वारा प्रतिदिन भोजनादि सेवाओं को पाकर मैं बड़ा हुआ और मुझे पंख निकल आये। मुझमें उड़ने की शक्ति आ गई और मैं जाने योग्य हो गया। मुझे चन्द्रापीड की उत्पत्ति का ज्ञान नहीं था किन्तु महाश्वेता यहीं पर है तो वहीं चलकर रहूँ। ऐसा निश्चय करके प्रातःकाल विहार के लिए वहाँ से निकलकर उत्तर दिशा की ओर उड़ने लगा। उड़ने का अभ्यास न होने के कारण थोड़ी दूर ही जाने पर मेरे पंख शिथिल हो गये। इसीलिए मैं तालाब के किनारे वृक्ष के ऊपर बैठ गया। इसके बाद रास्ते की थकान के कारण मुझे नींद आ गई। बड़ी देर के बाद जब मैं जगा तो अपने को बँधा हुआ देखा और सामने यमराज के समान एक कठोर पुरुष को भी देखा। उसे देखकर निराश होकर उससे पूछा– भद्र तुम कौन हो? तुमने मुझे किसलिये बाँधा है?

व्याकरणात्मक टिप्पणी– उत्पन्नोत्पतनसामर्थ्यश्च = उत्पन्नः उत्पतनस्य सामर्थ्यः यस्मिन् स। सरस्तीरतरुनिकुंजस्योपरि = सरः तीरतरोः निकुंजस्योपरि। कालपुरुषमिव = कालपुरुषम् + इव।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. ''चिरादिव लब्धप्रबोधः बद्धम् आत्मानम् अपश्यम्।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– बड़ी देर के बाद जब मैं जागा तो अपने को बँधा हुआ देखा।

प्रश्न 3. केन प्रतिदिनम् आहारादिभिः उपचारैः संवर्ध्यमानः बभूव?

उत्तर– हारीतेन प्रतिदिनम् आहारादिभिः उपचारैः संवर्ध्यमानः बभूव।

प्रश्न 4. कं चन्द्रापीडोत्पत्तिपरिज्ञानं नास्ति?

उत्तर– शुकं चन्द्रापीडोत्पत्तिपरिज्ञानं नास्ति।

प्रश्न 5. कः प्रातर्विहारनिग्रत एव उत्तरां ककुभं गृहीत्वा अवहम्?

उत्तर– शुकः प्रातर्विहारनिग्रत एव उत्तरां ककुभं गृहीत्वा अवहम्।

➥ **स माम् उक्तवान्– ''महात्मन्! अहं खलु जात्या चाण्डालः। मम खलु स्वामी पक्कणाधिपतिः इतः नातिदूरे कृतावस्थानः। तस्य दुहिता प्रथमे वयसि वर्तते। तस्याः त्वं केनापि दुरात्मना कथितः। तया च कौतुकात् त्वद्ग्रहणाय बहवः मादृशाः समादिष्टाः। तत् अद्य पुण्यैः मया आसादितोऽसि। तत्प्रा। तदहं तत्पादमूलं त्वां प्रापयामि। बन्धे मोक्षे वा सा प्रभवति'' इति। अहं तु तत् श्रुत्वा चेतस्यकरवम्– ''अहो मे मन्दपुण्यस्य दारुणः कर्मणां विपाकः। येन मया जगत्त्रय नमस्यस्य भगवतः श्वेतकेतोः स्वहस्तसंवर्धितेन भूत्वा, अधुना पक्कणमपि प्रवेष्टव्यम्। चाण्डालैः सह एकत्र स्थातव्यम्। चाण्डालबालजनस्य क्रीडनीयकेन भवितव्यम्। जरन्मातङ्गाङ्नाकरोपनीतैः कवलैः आत्मा पोषणीयः'' इत्येतान्यन्यानि च चेतसा विलपन्तं माम् आदाय स चाण्डालः सर्वपापानाम् आवासभूतम् अतिभयंकरसंनिवशं पक्कणं प्रविश्य, तस्यै चाण्डालदारिकायै दर्शितवान्।**

शब्दार्थ– जात्या = जाति से। पक्कणाधिपतिः = चाण्डालों की बस्ती का मालिक। इतः = यहाँ से। नातिदूरः = समीप ही में। कृतावस्थानः = ठहरा हुआ। त्वद्ग्रहणाय = तुम्हें पकड़ने के लिए। बहवः = बहुत से। मादृशाः = मेरे जैसे लोगों। समादिष्टाः = आज्ञा पाये हैं। तत्पादमूलम् = उसके पास। आसादिताऽसि = पाये गये हो। प्रापयामि = पहुँचा देता हूँ। चेतस्यकरवम् = मन में विचार किया। मे मन्दपुण्य = मुझ पापी का। जगत्त्रयनमस्यस्य = तीनों लोकों के पूज्य। स्वहस्तसंवर्धितेन भूत्वा = स्वयं अपने हाथ से पाले-पोसे जाकर। स्थातव्यम् = रहना पड़ेगा। क्रीडनीयकेन = खिलौना। जरन्मातङ्गाङ्गनाकरोपनीतैः = बूढ़े चांडालों की पत्नियों के हाथों से लाये गये। चेतसा = हृदय से। आवासभूतम् = निवास स्थान। अतिभयंकरसन्निवशम् = अत्यंत भयंकर स्थान। प्रविश्य = प्रवेश करके। चाण्डालदारिकायैः = चाण्डाल कन्या को। दर्शितवान् = दिखाया।

हिन्दी अनुवाद– उसने मुझसे कहा– महात्मन् मैं जाति से चांडाल हूँ। मेरा स्वामी चांडाल की बस्ती का मालिक समीप में ही रहता है। उसकी कन्या नवयुवती है। उससे किसी दुष्ट ने तुम्हारे विषय में कहा था। उसने तुम्हें पकड़ने के लिए मेरे जैसे बहुत लोगों को आदेश दिया है। आज बड़े पुण्य से मैंने तुम्हें पा लिया है। इसलिए मैं तुम्हें उसके पास पहुँचा दूँगा। तुम्हें बाँधने या छोड़ देने में वही समर्थ है। मैंने यह सुनकर विचार किया कि मुझ अभागे के कर्मों का ही यह बुरा फल मिल रहा है, जिससे मैं तीनों लोक

में वन्दनीय भगवान् श्वेतकेतु के हाथों से पाला-पोसा हुआ होकर भी इस समय चाण्डालों की बस्ती में जाऊँगा चाण्डालों के साथ एक ही जगह रहूँगा। चाण्डाल बालकों का खिलौना बनूँगा। बूढ़ी चाण्डालिनों के हाथ से लाये गये भोजन से अपनी आत्मा का पालन करूँगा। इस प्रकार से तथा और अनेक प्रकार से विलाप करने वाले मुझको लेकर उस चाण्डाल ने सभी प्रकार के पापों की निवास भूमि अत्यन्त भयंकर चाण्डालों की बस्ती में आकर उस चाण्डाल कन्या को दिखाया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– कृतावस्थानः = कृत + अवस्थानः। चेतस्यकरवम् = चेतसि + अकरवम्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. 'अहो मे मन्दपुण्यस्य दारुणः कर्मणां विपाकः।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– अहो मुझ मन्दपुण्य (अभागे) के कठोर कर्मों का फल है।

प्रश्न 3. चाण्डालः केन अकथयत्–महात्मन्! अहं खलु जात्याः चाण्डालः?

उत्तर– चाण्डालः शुकेन अकथयत्–महात्मन्! अहं खलु जात्याः चाण्डालः।

प्रश्न 4. कस्य दुहिता प्रथमे वयसि वर्तते?

उत्तर– चाण्डालस्य स्वामी दुहिता प्रथमे वयसि वर्तते।

प्रश्न 5. कस्यै दर्शितवान्?

उत्तर– चाण्डालदारिकायै दर्शितवान्।

➥ **सा तु प्रहृष्टवदना स्वकरयुगेन आदाय माम् 'आः पुत्रक! प्राप्तोऽसि इत्यभिदधानैव मनाक् उद्घाटितद्वारे दारुपञ्जरे माम् आक्षिप्य अर्गलितद्वारा 'अत्रैव निर्वृतः तिष्ठ' इत्यभिधाय तूष्णीम् अस्थात्। अहं तु तथा संरुद्ध चेतस्यकरवम्– 'अहो महासंकटे पतितोऽस्मि। सर्व एवायम् अनियतेन्द्रियत्वस्य दोषः। तत् सर्वेन्द्रियाण्येव नियमयामि' इति निश्चित्य मौनग्रहणम् अकार्षम्। अथ च तया स्वपाणिनोपनीतेषु फलपानीयादिषु क्षुत्पिपासोपशमाय अशनक्रियाम् अङ्गीकृतवान् अस्मि।** (2020 ZS)

शब्दार्थ– प्रहृष्टवदना = प्रसन्न मुखवाली। स्वकरयुगेन = अपने दोनों हाथों से। आदाय माम् = मुझे लेकर। प्राप्तोऽसि = मिल गये। इत्यभिदधानैव = इस प्रकार कहती हुई। मानक् = थोड़ा सा। उद्घाटितद्वारे = खुले हुए द्वार वाले। दारुपंजरे = काठ के पिंजड़े में। आक्षिप्य = डालकर। अर्गलितद्वारा = दरवाजा बन्द करके। निर्वृतः = निश्चिन्त होकर। तूष्णीम् = चुप। अस्थात् = बैठ गई। संरुद्ध = पिंजड़े में बन्द होकर। चेतस्यकरवम् = मन में विचार किया। अनियतेन्द्रियत्वस्य = इन्द्रियों के असंयम का। सर्वेन्द्रियाणि = सारी इन्द्रियों को। नियमयामि = संयमित करूँ। अकार्षम् = किया। स्वपाणिनोपनीतेषु = अपने हाथ से लाये गये। क्षुत्पिपासोपशमाय = भूख-प्यास की शांति के लिये। अशनक्रियाम् = भोजन करना। अंगीकृतवान् अस्मि = स्वीकार किया।

हिन्दी अनुवाद– उसने प्रसन्न मुख हो दोनों हाथों से मुझे लेकर कहा कि पुत्र तुम मिल गये और इस प्रकार कहकर पिंजड़े के द्वार को थोड़ा सा खोलकर उसमें मुझे डाल दिया और ''यहीं निश्चिन्त होकर रहो'' ऐसा कहकर वह चुप होकर बैठ गई, मैं इस प्रकार पिंजड़े में बन्द हो जाने पर विचार करने लगा– अब तो मैं बहुत बड़े संकट में पड़ गया हूँ, यह सब मेरी इन्द्रियों के असंयम का दोष है। अतः मैं अपनी इन्द्रियों को वश में करता हूँ। ऐसा निश्चय करके मैंने मौन व्रत ग्रहण कर लिया। इसके पश्चात् उसके हाथों से लाये गये फल-पानी आदि से भूख-प्यास दूर करने के लिए मैंने भोजन करना स्वीकार किया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– प्रहृष्टवदना = प्रहृष्टं वदनं यस्याः सा। स्वकरयुगेन = स्वस्य करयुगम् तेन। इत्यभिदधानैव = इति + अभिधाना + एव। उद्घाटितद्वारे = उद्घाटितं द्वारं यस्य तस्मिन्। चेतस्यकरवम् = चेतसि + अकरवम्। स्वपाणिनोपनीतेषु = स्वस्य पाणिना उपनीतः तेषु।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. 'सर्व एवायम् अनियतेन्द्रियत्वस्य दोषः।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– यह सब मेरी इन्द्रियों के असंयम का दोष है।
प्रश्न 3. का स्वकरयुगेन आदाय माम् अकथयत्, आः पुत्रकः प्राप्तोऽसि?
उत्तर– चाण्डाल कन्या स्वकरयुगेन आदाय माम् अकथयत्, आः पुत्रकः! प्राप्तोऽसि।
प्रश्न 4. दारुपंजरे कम् अक्षिपत्?
उत्तर– दारुपञ्जरे शुकम् अक्षिपत्।
प्रश्न 5. मौनग्रहणम् अकार्षत् कः?
उत्तर– शुकः मौनग्रहणम् अकार्षत्।

➥ **एवम् अतिक्रामति काले, एकदा प्रभातायां यामिन्याम् उन्मीलितलोचनः अद्राक्षमस्मिन् कनकपञ्जरे स्थितम् आत्मानम्। सापि चाण्डालदारिका देवेनापि दृष्टैव। सकलमेव च तं पक्कणम् अमरपुरसदृशम् अलोक्य, किमेतदिति प्रष्टुकामं माम् आदाय झटिति देवपादमूलम् आयाता। तत् केयम्? किमर्थं वाहं बद्धः? किमर्थम् इह आनीतः? इत्यत्र अहमपि देव इव अनपगतकुतूहल एव'' इति।**

शब्दार्थ– अतिक्रामति काले = समय बीतने पर। यायिन्याम् = रात में। उन्मीलितलोचनः = आँखें खोलकर। कनकपञ्जरे = सोने के पिंजड़े में। चाण्डालदारिका = चाण्डाल-कन्या। आयाता = आई। प्रष्टुकामम् = पूछने की इच्छा वाले। आदाय = लेकर। झटिति = तुरन्त। आनीतः = लाया गया हूँ। अनपगतकुतूहलः = जिसका कुतूहल दूर न हुआ हो।

हिन्दी अनुवाद– इस प्रकार कुछ समय बीतने पर एक बार रात बीत जाने पर प्रातःकाल मैंने आँखें खुलने पर अपने को इस सोने के पिंजड़े में देखा। उस चाण्डालकन्या को महाराज ने देखा ही है। चांडालों की उस सारी बस्ती को देवताओं की नगरी के समान देखकर मैं यह पूछना चाहता था कि यह क्या है कि इस समय वह तुरन्त मुझे लेकर आपके पास आई। इसलिए वह कौन है? किसलिए मुझे बाँधा है? यहाँ क्यों ले आई? इस विषय में आप ही के समान मेरी भी उत्सुकता दूर नहीं हुई है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– उन्मीलितलोचनः = उन्मीलितं लोचनं येन सः। कनकपञ्जरे = कनकस्य पञ्जरे। अनपगत कुतूहलः = न अपगतः कुतूहलःयस्य स।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।
प्रश्न 2. 'अहमपि देव इव अनपगतकुतूहल एव।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– आप ही के समान मेरी भी उत्सुकता दूर नहीं हुई है।
प्रश्न 3. शुकः आत्मानं कुत्र स्थितम् अद्राक्षत्?
उत्तर– शुकः आत्मानं कनकपञ्जरे स्थितम् अद्राक्षत्।
प्रश्न 4. सकलमेव चाण्डालानां पक्कणं कस्य सदृशम् आसीत्?
उत्तर– सकलमेव चाण्डालानां पक्कणम् अमरपुरसदृशम् आसीत्।
प्रश्न 5. का माम् आदाय देवपादमूलम् आयाता।
उत्तर– चाण्डालकन्या माम् आदाय देवपादमूलम् आयाता।

➥ **राजा तु तत् श्रुत्वा, समुपजातभ्यधिककुतूहलः तदाह्वानाय प्रतीहारीम् आदिदेश। न चिरादेव प्रविश्य सा पुरस्तात् ऊर्ध्वस्थितैव बभाषे– ''भुवनभूषण, रोहिणीपते, कादम्बरीलोचनानन्दकरः, सर्वस्त्वयास्य दुर्मतेः आत्मनश्च पूर्वजन्मवृत्तान्तः श्रुत एव। अहमस्य दुरात्मनः जननी। तथा पितुः आज्ञाम् उल्लङ्घ्य वधूसमीपं प्रस्थितम् एनम् दिव्येन चक्षुषा दृष्ट्वा अस्य पित्रा अहम् आदिष्टास्मि। अयं ते तनयः कदाचित् अस्या अपि तिर्यग्जातेः अधस्तात् पतति। तद्यावदिदं कर्म न परिसमाप्यते, तावदेनं मर्त्यलोके एव बद्ध्वा धारय। तदस्य विनयायेदं विनिर्मितं मया।**

सर्वमधुना तत्कर्म परिसमाप्तम्। शापावसानसमयो वर्तते। शापावसाने च युवयोः सममेव सुखेन भवितव्यम् इति त्वत्समीपमानीतो मयायम्। अत्रापि यच्चाण्डालजातिः ख्यापिता तत् लोकसंपर्कपरिहाराय। तत् अनुभवतं संप्रति द्वावपि सममेव जन्मजरादिदुःखबहुले तनू परित्यज्य इष्टजनसमागमसुखम्'' इत्यभिदधानैव सा गगनम् उदपतत्। (2020 ZT)

शब्दार्थ– समुपजाताभ्यधिकुतूहलः = और अधिक उत्सुक होकर। तदाह्वानाय = उसको बुलाने के लिए। आदिदेश = आज्ञा दी। न चिरादेव = शीघ्र ही। पुरस्तात् = सामने। ऊर्ध्वस्थिता = ऊपर ही खड़े। भुवनभूषण = हे संसार की शोभा। रोहिणीपते = रोहिणी के स्वामी। कादम्बरीलोचनानन्दकरः = कादम्बरी के नेत्रों को आनन्दित करने वाले। सर्वस्त्वयास्य = तुमने इसके सभी। दुर्मतेः = दुष्ट। आत्मनः = अपना। पूर्वजन्मवृत्तान्तः = पूर्वजन्म का हाल। श्रुतः एव = सुना ही। दुरात्मनः = दुष्ट का। जननी = माता। पितुः आज्ञाम् = पिता की आज्ञा की आज्ञा को। वधूसमीपम् = वधू (महाश्वेता) के पास। प्रस्थितम् = जाने वाले। दिव्येन चक्षुषा = दिव्य नेत्रों से। आदिष्टास्मि = आज्ञा पाई हूँ। तनयः = पुत्र। तिर्यग्जातेः = पक्षी की योनि से। अधस्तात् = नीचे। परिसमाप्यते = समाप्त हो जाता है। मर्त्यलोके = मनुष्य लोक में। बद्ध्वा = बाँधकर। धारय = रक्खो। विनयाय = शिक्षा देने के लिए। इदं विनिर्मितं मया = मैंने यह सब रचा है। शापावसानसमयः = शाप के अन्त का समय। युवयोः = तुम दोनों। सममेव = साथ ही। त्वत्समीपमानीतः = तुम्हारे पास लाई हूँ। यच्चांडालजातिः = चांडाल की जाति। स्थापितः = प्रसिद्ध की है। लोकसंपर्कपरिहाराय = लोगों का संपर्क दूर रखने के लिए। जन्मजरादिदुःखबहुले = जन्म और बुढ़ापे के दुःख से भरे। तनू = शरीर। इष्टजनसमागमसुखम् = प्रिय लोगों के मिलने का सुख। अभिदधाना = कहती हुई। गगनम् उदपतत् = आकाश में उड़ गई।

हिन्दी अनुवाद– राजा ने यह सुनकर और भी अधिक उत्सुक होकर उसे (चांडाल कन्या को) बुलाने के लिए प्रतीहारी को आदेश दिया। वह शीघ्र ही आकर सामने ऊपर ही स्थित होकर बोली– संसार की शोभा, रोहिणी के स्वामी, कादम्बरी को आनन्दित करनेवाले आपने इस दुष्ट और अपने पूर्वजन्म का वृत्तान्त सुना ही है। मैं इस दुष्ट की माता हूँ। इसके पिता ने अपने दिव्य नेत्रों से इसको पिता की आज्ञा का उल्लंघन करके बहू के पास जाते देखकर मुझे आज्ञा दी कि तुम्हारा यह पुत्र कहीं पक्षी योनि से भी नीचे न गिर पड़े इसलिए जब तक यह अनुष्ठान समाप्त नहीं होता तब तक तुम इसे मृत्यु लोक में बाँधकर रखो। अतः मैंने इसे शिक्षा देने के लिए ही यह सब काम किया है। अब वह कर्म पूरा हो चुका है। शाप का समय समाप्त हो गया है। शाप के अन्त हो जाने पर तुम दोनों साथ ही सुखी होगे। इसीलिए मैं इसको तुम्हारे पास ले आई हूँ। यहाँ मैंने लोगों के सम्पर्क से दूर रहने के लिए ही अपनी जाति चांडाल बताई थी। इसीलिए अब तुम दोनों साथ ही जन्म और बुढ़ापे आदि के दुःख से भरे शरीर का परित्याग करके प्रियजनों के समागम का सुख भोगो। ऐसा कहती हुई वह आकाश में उड़ गई।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– समुपजाताभ्यधिकुतूहलः = समुपजातः अभ्यधिकः कुतूहलः यस्य स। तदाह्वानाय = ताम् आह्वानाय। भुवनभूषणम् = भुवनस्य भूषणः तत्सम्बुद्धौ। कादम्बरीलोचनान्दकरः = कादम्बर्याः लोचनयोः आनन्दकरः। सर्वस्त्वयास्य = सर्व + त्वया + अस्य। शापावसानसमयः = शापस्य अवसानसमयः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।
अथवा अस्य गद्यांशस्य प्रणेताकः?
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. 'सर्वमधुना तत्कर्म परिसमाप्तम्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– अब यह सभी कर्म पूरा हो चुका है।

प्रश्न 3. समुपजातभ्यधिककुतूहलः कः आसीत्?
उत्तर– राजा शूद्रकः समुपजातभ्यधिककुतूहलः आसीत्।

प्रश्न 4. अस्य दुरात्मनः जननी का असीत्?
उत्तर– चाण्डाल कन्या अस्य दुरात्मनः जननी आसीत्।

प्रश्न 5. कः पितुः आज्ञाम् उल्लङ्घनम् अकरोत्?
उत्तर– वैशम्पायनः पितुः आज्ञाम् उल्लङ्घनम् अकरोत्।

➥ **अथ राज्ञः तद्वचनम् आकर्ण्य, संस्मृतजन्मान्तरस्य मकरकेतुः जीवितापहरणाय पदं चकार। तामेव कादम्बरीमभिध्यायतः विमुक्तसर्वान्यक्रियस्य सद्यः काष्ठीभूतम् तस्य शरीरम् परां कोटिमधिरूढः कामानलो ददाह। एवमेव महाश्वेतोत्कण्ठया राज्ञ तुल्यावस्थस्य पुण्डरीकात्मनो वैशम्पायनस्य च।**

शब्दार्थ– संस्मृतजन्मानन्तरस्य = पूर्वजन्म का स्मरण करने वाले। राज्ञः = राजा का। मकरकेतुः = कामदेव। जीवितापहरणाय = जीवन का हरण करने के लिए। पदं चकार = सामना किया। कादम्बरीमभिध्यायतः = कादम्बरी का ध्यान करने वाले। विमुक्तसर्वान्यक्रियस्य = और सभी काम छोड़ देने वाले। काष्ठीभूतम् = लकड़ी बना हुआ। परां कोटिमधिरूढः = चरम सीमा पर पहुँचा हुआ। कामानलः = कामरूपी अग्नि। दहाद = जलाया। महाश्वेतोत्कण्ठया = महाश्वेता की उत्कंठा से। राज्ञा तुल्यावस्थस्य = राजा की ही अवस्था वाले। पुण्डरीकात्मनः = पुण्डरीक के स्वरूप।

हिन्दी अनुवाद– इस प्रकार उसकी वाणी सुनकर पूर्वजन्म का वृत्तान्त याद आ जाने वाले उस राजा के प्राणों का हरण करने के लिए कामदेव आ पहुँचा। कादम्बरी के ध्यान में लगे तथा सभी क्रियाओं से रहित रहने वाले लकड़ी बने शरीर को कामाग्नि जलाने लगी। इसी प्रकार राजा ही की समान अवस्था वाले महाश्वेता की उत्कंठा में लगे पुण्डरीक के स्वरूप वैशम्पायन का शरीर भी कामाग्नि में जलने लगा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– संस्मृतजन्मान्तरस्य = संस्मृतः जन्मान्तर येन तस्य। कादम्बरीमभिध्यायतः = कादम्बर्याः अभिध्यायतः। पुण्डरीकात्मनः = पुण्डरीकस्य आत्मनः।

॥ प्रश्नोत्तरः॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. ''कादम्बरीमभिध्यायतः विमुक्तसर्वान्यक्रियस्य सद्यः काष्ठीभूतम् तस्य शरीरम् परां कोटिमधिरूढः कामानलो ददाह।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– कादम्बरी के ध्यान में लगे तथा सभी क्रियाओं से रहित रहने वाले लकड़ी बने शरीर को कामाग्नि जलाने लगी।

प्रश्न 3. राज्ञः जीवितापहरणाय कः पदं चकार?

उत्तर– राज्ञः जीवितापहरणाय मकरकेतुः पदं चकार।

प्रश्न 4. महाश्वेतोत्कण्ठया राज्ञः तुल्यावस्थस्य पुण्डरीकात्मनो कस्य शरीरोऽपि कामानलो ददाह?

उत्तर– महाश्वेतोत्कण्ठया राज्ञः तुल्यावस्थस्य पुण्डरीकात्मनो वैशम्पायनस्य शरीरोऽपि कामानलो ददाह।

➥ **तस्मिन्नेव चान्तरे दक्षिणानिलं प्रवर्तयन् मन्मथोल्लासकारी परावर्तत सुरभिमासः। तेन च पर्याकुलितहृदया कादम्बरी सायाह्ने स्नात्वा निर्वर्तितकामदेवपूजा चन्द्रापीडम् सुरभिशीतलैः स्नपयित्वाम्भोभिः विलिप्य हरिचन्दनेन पुष्पैः अलंकृत्य भावार्द्रया दृशा सुचिरम् आलोक्य निर्भरं कण्ठे जग्राह। तेन कादम्बरीकण्ठग्रहेण, चन्द्रापीडतस्य कण्ठस्थानं पुनर्जीवितं प्रत्यपद्यत। सद्य एव उच्छ्वसितं हृदयम्। उन्मीलच्चक्षुः एवं च सुप्तप्रतिबुद्ध इव प्रत्यापन्नसर्वाङ्गचेष्टः चन्द्रापीडः कादम्बरीं दोर्भ्याम् आबध्नन् अवादीत्–''भीरु ! परित्यज्यतां भयम्।**

(2019 DB)

शब्दार्थ– तस्मिन्नेव चान्तरे = इसी बची। दक्षिणानिलम् = दक्षिणी वायु को। प्रवर्तयन् = चलाता हुआ। मन्मथोल्लासकारी = कामदेव के हर्ष को बढ़ाने वाला। सुरभिमासः = चैत्रमास वसन्त ऋतु। पर्याकुलितहृदया = बेचैन मन वाली। परावर्तत = आया। सायाह्ने = संध्याकाल। निर्वर्तितकामदेवपूजा = कामदेव की पूजा समाप्त करके। सुरभिशीतलैः = सुगन्धित और ठण्डे। अम्भोभिः = जल से। स्नपयित्वा = स्नान कराके। विलिप्य = लेप करके। हरिचन्दनेन = मलयागिरि चन्दन। अलंकृत्य = सजाकर। भावार्द्रया = भावपूर्ण। दृशा = नेत्रों से। सुचिरम् = देर तक। आलोक्य = देखकर। निर्भरम् = भावावेश के साथ। कंठे जग्राह = गले लगा लिया। कादम्बरीकंठग्रहणेन = कादम्बरी के गले लगाने से। कंठस्थानम् = गले का भाग। पुनरुज्जीवितं प्रत्यपद्यत् = फिर से जी उठा। सद्यः एव = शीघ्र ही। उच्छ्वसितं हृदयम् = हृदय से साँस आने-जाने लगी। उन्मीलितचक्षुः = आँखें खुल गईं। सुप्तप्रबुद्धं इव = सोकर उठे हुए। प्रत्यापन्नसर्वांगचेष्टः = सभी अंगों की चेष्टा को प्राप्त कर लेने वाला। दोर्भ्याम् = दोनों भुजाओं से। आबध्नन् = बाँधते हुए। अवादीत् = कहा। भीरु = भयभीत।

हिन्दी अनुवाद– उसी बीच कामदेव को आनन्दित करने वाला चैत्रमास (बसंत ऋतु) दक्षिणी वायु को चलाता हुआ आ गया। जिससे बेचैन होकर सायंकाल कादम्बरी ने स्नान किया, कामदेव की पूजा की और चन्द्रापीड को सुगन्धित तथा शीतल जल से नहलाकर मलयागिरि चन्दन का लेप किया तथा फूलों से सजाकर भावपूर्ण नेत्रों से देर तक देखकर भावावेश में उसे गले लगा लिया। कादम्बरी के गले लगाने से चन्द्रापीड के शरीर में प्राण का संचार हो गया। शीघ्र ही शरीर में साँसें आने-जाने लगीं और सोकर जागे हुए के समान उसके सभी अंगों में चेष्टा होने लगी। और उसने अपनी दोनों भुजाओं से कादम्बरी को जकड़ते हुए कहा– भयभीत मत बनों।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– पर्याकुलितहृदया = पर्याकुलित हृदयं यस्या या। निर्वर्तितकामदेवपूजा = निर्वर्तितः कामदेवस्य पूजा यया सा। प्रत्यापन्नसर्वांगचेष्टा = प्रत्यापन्ना सर्वांगानाम् चेष्टा येन सः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' (उत्तरार्द्ध भाग) से उद्धृत है।

प्रश्न 2. चन्द्रापीडः कां दोर्भ्याम् आबध्नन् अवादीत्?

उत्तर– चन्द्रापीडः कादम्बरीं दोर्भ्याम् आबध्नन् अवादीत् ।

प्रश्न 3. 'कण्ठग्रहेण' में कौन-सी विभक्ति है?

उत्तर– 'कण्ठग्रहेण' में तृतीया विभक्ति है। 'कण्ठग्रहेण' तृतीया विभक्ति के एकवचन का रूप है।

प्रश्न 4. 'उन्मीलच्चक्षुः' का शाब्दिक अर्थ लिखिए।

उत्तर– 'उन्मीलच्चक्षुः' का शाब्दिक अर्थ है– आँखें खुली हुई।

प्रश्न 5. ''मन्मथोल्लासकारी परावर्तत सुरभिमासः।'' रेखांकित अंश का हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

उत्तर– कामदेव के उल्लास को बढ़ाने वाला बसन्त का महीना आ गया।

➥ **प्रत्युज्जीवितोऽस्मि तवैव अमुना कण्ठग्रहेण। त्वं खलु अमृतसंभवात् अप्सरसां कुलात् उत्पन्ना। अद्य स मे व्यपगतः शापः। परित्यक्ता सा शूद्रकाख्या तनुः। अपि च–प्रियसख्या अपि ते महाश्वेतायाः प्रियतमो मयैव सह विगतशापः संवृत्तः'' अभिदधत्येव चन्द्रापीडशरीरान्तरितवपुषि चन्द्रमसि, तथैव कण्ठेन एकावलीम् धारयन् अम्बरतलात् अवतरन् अदृश्यत कपिञ्जलकरावलम्बी समुत्सृष्टशुकशरीरः पुण्डरीकः। चन्द्रापीडस्तु तं कण्ठे गृहीत्वा अब्रवीत्–''सखे पुण्डरीक, प्राग्जन्मसंबन्धात् जामातासि। अनन्तरजन्माहितेन सौहृदेन मया सह वर्तितव्यं भवता'' इति।** (2017 NI, 18 BE, 19 DC)

शब्दार्थ– प्रत्युज्जीवितोऽस्मि = फिर से जीवित हो गया हूँ। अमृतसंभवात् = अमृत से उत्पन्न होने वाले। अप्सरसाम् कुलात् = अप्सराओं के कुल से। मे = मेरा। व्यपगतः = दूर हो गया। शूद्रकाख्या तनुः = शूद्रक नाम का शरीर। विगतशापः संवृत्तः = शाप रहित हो गया है। अभिदधत्येव = कहते ही। चन्द्रापीडशरीरान्तरितवपुषि = चन्द्रापीड के शरीर में छिपे हुए शरीर वाले। चन्द्रमसि = चन्द्रमा। अम्बरतलात् = आकाश से। अवतरन् = उतरने हुए। अदृश्यत् = दिखाई पड़ा। कपिंजलकरावलम्बी = कपिंजल का हाथ पकड़े हुए। समुत्सृष्टशुकशरीरः = सुग्गे का शरीर छोड़ने वाले। प्राग्जन्मसंबन्धात् = पूर्वजन्म के सम्बन्ध से। जामाताऽसि = दामाद हो। अनन्तरजन्माहितेन = उसके बाद के जन्म में किये हुए। सौहृदेन = मित्रता से। वर्तितव्यम् = रहना चाहिए।

हिन्दी अनुवाद– तुम्हारे इस गले लगाने से मैं जीवित हो गया हूँ। तुम अमृत से उत्पन्न अप्सराओं के कुल से उत्पन्न हो। आज मेरा शाप दूर हो गया। मैंने शूद्रक का शरीर छोड़ दिया। तुम्हारी प्रिय सखी महाश्वेता का प्रियतम भी मेरे ही साथ शाप से मुक्त हो गया है। चन्द्रापीड के शरीर में छिपे हुए चन्द्रमा (चन्द्रापीड चन्द्रमा का ही अवतार था) के इस प्रकार कहते ही सुग्गे का शरीर छोड़ देने वाले कपिंजल का हाथ पकड़े हुए, गले में एकावली धारण किये हुए पुण्डरीक आकाश से उतरता हुआ दिखाई दिया। चन्द्रापीड ने उसे गले लगाकर कहा– मित्र पुण्डरीक, पूर्वजन्म के सम्बन्ध से तुम मेरे दामाद हो और दूसरे जन्म में होने वाले मित्रता के कारण अब मित्र बनकर रहो।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– चन्द्रापीडशरीरान्तरतिवपुषि = चन्द्रापीडस्य शरीरे अन्तरितम् वपुः यस्य तस्मिन्। समुत्सृष्टशुकशरीरः = समुत्सृष्टम् शुकस्य शरीरम् येन सः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. अस्य गद्यांशस्य प्रणेता कः?

उत्तर– अस्य गद्यांशस्य प्रणेता 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. कः विगतशापः सवृत्तः?

उत्तर– महाश्वेतायाः प्रियतमो (पुण्डरीकः) विगतशापः संवृत्तः।

प्रश्न 3. 'प्रत्युज्जीवितोऽस्मि तवैव अमुना कण्ठग्रहेण।' रेखांकित अंश का हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

उत्तर– तुम्हारे इस आलिंगन से मैं पुनः जीवित हो गया हूँ।

प्रश्न 4. ''विगतशापः'' का शाब्दिक अर्थ लिखिए।

उत्तर– विगतशापः का शाब्दिक अर्थ है- 'शापरहित'।

प्रश्न 5. 'गृहीत्वा' में कौन-सा प्रत्यय है?

उत्तर– 'गृहीत्वा' में 'क्त्वा' प्रत्यय है।

➥ **अथ मदलेखा धावमाना निर्गत्य मृत्युञ्जयजपव्य ग्रस्य तारापीडस्य विलासवत्याश्च पादयोः पतित्वा ''देव! दिष्ट्या वर्धसे– प्रत्युज्जीवितः युवराजः समं वैशम्पायनेन'' इत्युच्चैर्जगाद। राजा तु तत् श्रुत्वा हर्षपरवशः विलासवत्या शुकनासेन च सह तत्रैव आगच्छत्। चन्द्रापीडस्तु पितरम् आलोक्य चरणयोः अपतत्। स तु सत्वरापसृतः तथा प्रणतम् उन्नमय्य तम् तारापीडोऽभ्यधात्–''पुत्र यद्यपि पिता अहं तव शापदोषात् संजातः, तथापि जगद्वन्दनीयः लोकपालः त्वम्। मय्यपि नमस्यो योंऽशः सोऽपि मया त्वय्येव संक्रामितः। तत् उभयधापि त्वमेव नमस्कार्यः'' इत्युक्त्वा प्रतीपमस्य पादयोः अपतत्। विलासवती तु तं पुनः शिरसि पुनर्ललाटे पुनश्च कपोलयोः चुम्बित्वा गाढतरम् आलिलिङ्ग। उनमुक्तश्च मात्रा उपसृत्य पुनः पुनः कृतनमस्कारः शुकनासं प्रणनाम। आशीस्सहस्त्राभिर्वर्धितश्च तेन आत्मनोपसृत्य यथानुक्रमं पित्रोः शुकनासस्य मनोरमायाश्च 'एष वो वैशम्पायनः' इति पुण्डारीकम् अदर्शयत्।**

शब्दार्थ– धावमाना = दौड़ती हुई। निर्गत्य = निकल कर। मृत्युंजयजपव्य = मृत्युंजय मंत्र का जाप करने में लगे हुए। दिष्ट्या = भाग्य से। प्रत्युज्जीवितः = फिर से जी उठे। उच्चैर्जगाद = जोर से बोली। हर्षपरवशः = हर्ष के अधीन। सत्वरापसृतः = शीघ्र ही हटकर। प्रणतम् = प्रणाम करते हुए। उन्नमय्य = ऊपर उठाकर। अभ्यधात् = कहा। शापदोषात् = शाप के दोष से। संजातः = हुआ। मय्यपि = मुझमें भी। नमस्यः = नमस्कार करने योग्य। योंऽशः = जो अंश है। त्वय्येव = तुममें ही। संक्रामितः = डाल दिया है। उभयधापि = दोनों प्रकार से। नमस्कार्यः = नमस्कार करने योग्य हो। प्रतीपम् = उल्टे। शिरसि = सिर पर। गाढतरम् = अत्यन्त प्रेम के साथ। अलिलिंग = आलिंगन किया। उन्मुक्तश्च = और छूटकर। उपसृत्य = जाकर। कृतनमस्कारः = नमस्कार करके। प्रणनाम = प्रणाम किया। आशीस्सहम्राभिर्वर्धितश्च = हजारों आशीर्वाद से वृद्धि को प्राप्त होने वाले। वः = तुम लोगों का।

हिन्दी अनुवाद– इसके पश्चात् मदलेखा दौड़ती हुई वहाँ से निकलकर मृत्युंजयमंत्र जपने में लगे हुए तारापीड और विलासवती के पैरों पर गिर कर जोर से बोली– राजन्, भाग्य से युवराज चन्द्रापीड वैशम्पायन के साथ ही फिर जीवित हो उठे हैं। राजा यह सुनकर हर्ष से व्यग्र हो उठे और विलासवती तथा शुकनास के साथ वहाँ आये। चन्द्रापीड पिता को देखकर उनके पैरों पर गिर पड़ा किन्तु तारापीड शीघ्रता से हट कर झुकते हुए चन्द्रापीड को उठाकर बोले–पुत्र, यद्यपि शापदोष से मैं तुम्हारा पिता बना किन्तु तुम जगद्वन्दनीय लोकपाल हो, मुझमें जो वन्दनीय अंश था उसे भी तुम्हीं में आरोपित कर दिया है। इस प्रकार दोनों तरह से तुम्हीं प्रणम्य हो। ऐसा कहकर उलटे उसके ही (चन्द्रापीड के) पैरों पर गिर पड़े। विलासवती ने बार-बार शिर, ललाट और कपोल का चुम्बन करके चन्द्रापीड को अत्यन्त प्रेम के साथ भुजाओं में बाँध लिया। माता से छूटकर शुकनास के पास जाकर उसने उन्हें बार-बार प्रणाम किया। हजारों आशीर्वादों से वृद्धि को प्राप्त होने वाले चन्द्रापीड ने स्वयं माता-पिता शुकनास और मनोरमा के पास जाकर– यही तुम लोगों का वैशम्पायन है– ऐसा कहकर पुण्डरीक को दिखाया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– प्रत्युज्जीवितः प्रत्युत्+जीवितः। उच्चैर्जगाद = उच्चैः+जगाद। सत्वरापसृतः = सत्वर+अपसृतः। इत्युक्त्वा = इति+उक्त्वा। पुनर्ललाटे = पुनः+ललाटे।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. ''प्रत्युज्जीवितः युवराजः समं वैशम्पायनेन।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– वैशम्पायन के साथ युवराज (चन्द्रापीड) पुनः जीवित हो गये हैं।

प्रश्न 3. मृत्युञ्जयजपव्यग्रस्य तारापीडस्य विलासवत्याश्च समीपौ का आगता?

उत्तर– मृत्युञ्जयजपव्यग्रस्य तारापीडस्य विलासवत्याश्च समीपौ मदलेखा आगता।

प्रश्न 4. मदलेखा कस्य पादयोः अपतत्?

उत्तर– मदलेखा तारापीडस्य विलासवत्याश्च पादयोः अपतत्।

प्रश्न 5. राजा तारापीडः केन सह आगच्छत्?

उत्तर– राजा तारापीडः विलासवत्या शुकनासेन च सह आगच्छत्।

➥ **तस्मिन्नेव च प्रस्तावे समुपसृत्य कपिञ्जलः शुकनासम् अब्रवीत् –एवं संदिष्टम् आर्यस्य भगवता श्वेतकेतुना ''अयं खलु पुंडरीकः संवर्धित एव केवलं मया। आत्मजः पुनस्तव। अस्यापि भवत्स्वेव लग्नः स्नेहः। तत् वैशम्पायन एवायम् इत्यवगत्य अविनयेभ्यः निवारणीयः। परोऽयम् इति कृत्वा नोपेक्षणीयः'' इति। शुकनासश्च तथेति प्रत्यग्रहीत्।**

शब्दार्थ– तस्मिन्नेव प्रस्तावे = उस बातचीत के समय ही। समुपसृत्य = पास जाकर। संदिष्टम् = सन्देश दिया है। संवर्धितः = बड़ा किया गया है। आत्मजः = पुत्र। अविनयेभ्यः = उद्दण्ड कार्यों से। निवारणीयः = रोकने योग्य है। परोऽयम् = यह दूसरा है। नोपेक्षणीयः = उपेक्षा योग्य नहीं है। प्रत्यग्रहीत् = स्वीकार किया।

हिन्दी अनुवाद– उसी वार्तालाप के समय कपिंजल ने शुकनास के पास आकार कहा कि भगवान् श्वेतकेतु ने आपको सन्देश दिया है कि पुण्डरीक को तो मैंने केवल पाल-पोस कर बड़ा ही किया है, पुत्र तो यह आपका ही है। ऐसा जानकर इसे उद्दण्डतापूर्ण कार्यों से सर्वथा रोकिएगा। यह दूसरा है– ऐसा जानकर इसकी उपेक्षा न कीजिएगा। शुकनास ने ''ऐसा ही होगा'' कहकर स्वीकार किया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– तस्मिन्नेव = तस्मिन्। परोऽयम् = परः+अयम्। नोपेक्षणीयः = न+उपेक्षणीयः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक का नाम 'बाणभट्ट' है।

प्रश्न 2. 'अयं खलु पुण्डरीकः संवर्धित एव केवलं मया।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– इस पुण्डरीक का मैंने केवल पालन-पोषण करके ही बड़ा किया है।

प्रश्न 3. भगवान् श्वेतकेतुः कम् संदिष्टम्?

उत्तर– भगवान् श्वेतकेतुः शुकनासं संदिष्टम्।

प्रश्न 4. ''अयं खलु पुण्डरीकः संवर्धित एव केवलं मया, आत्मजः पुनस्तव।'' केनोक्तः?

उत्तर– भगवता श्वेतकेतुना उक्तः –''अयं खलु पुण्डरीकः संवर्धित एव केवलं मया, आत्मजः पुनस्तव।''

प्रश्न 5. शुकनासः कं प्रत्यग्रहीत्?

उत्तर– शुकनासः पुण्डरीकं प्रत्यग्रहीत्।

➥ **अथं केयूरकेण विदितवृत्तान्तौ चित्ररथहंसौ मदिरागौरीभ्यां समं तत्रैवाजग्मतुः। आगतयोश्च तयोः तारापीडशुकनासाभ्यां सम्बन्धकोचितकथया सहस्त्रगुण इव महोत्सवः प्रावर्तत। अथ ते सर्वेऽपि हेमकूटं गत्वा दंपत्योः उभयोरपि विवाहक्रियाः यथाविधि निरवर्तयन्। चित्ररथः कादम्बर्या सह समग्रमेव स्वं राज्यं चन्द्रापीडाय**

न्यवेदयत्। पुण्डरीकायापि समं महाश्वेतया निजपदं हंसः। कादम्बरी तु हृदयवल्लभलाभेऽपि विषण्णमुखी चन्द्रापीडम् अप्राक्षीत् – '' आर्यपुत्र! सर्वे खलुः वयं मृताः प्रत्युज्जीविताः पुनः संघटिताश्चय। सा पुनः वराकी पत्रलेखा अस्माकं मध्ये न दृश्यते। न विद्मः किम् तस्याः वृत्तम्?'' इति। स तु प्रत्यवादीत्–''सा हि रोहिणी शप्तं माम् उपश्रुत्य 'कथं त्वम् एकाकी मर्त्यलोकनिवासदुःखम् अनुभवसि?' इत्यभिधाय, निवार्यमाणापि मया मत्परिचर्यायै मर्त्यलोके जन्माग्रहीत्। इतश्च जन्मान्तरं गच्छता मया पुनः आत्मलोकं विसर्जिता इति। तत्र पुनः तां द्रक्ष्यसि'' इति।

शब्दार्थ– विदितवृत्तान्तौ = समाचार पाकर। चित्ररथहंसौ = चित्ररथ और हंस। मदिरागौरीभ्यां समम् = मदिरा और गौरी के साथ। तत्रैवाजग्मतुः = वहीं आए। आगतयोश्च तयोः = उन दोनों के आने पर। सम्बन्धकोचितकथया = सम्बन्ध की बातचीत से। सहस्त्रगुण इव = हजार गुना जैसा। महोत्सवः = महान उत्सव। प्रावर्तत = हुआ। निरवर्तयन् = पूरा किया। न्यवेदयत् = दे दिया। हृदयवल्लभलाभेऽपि = प्राणप्रिय के मिलने पर भी। विषण्णमुखी = उदास मुख होकर। अप्राक्षीत् = पूछी। संघटिताश्च = और मिल गये। वराकी = बेचारी। न विद्मः = नहीं जानती हूँ। वृत्तम् = समाचार। उपश्रुत्य = सुनकर। निवार्यमाणापि = रोकने पर भी। मत्परिचर्यायै = मेरी सेवा के लिए। जन्माग्रहीत् = जन्म लिया था। आत्मलोकं = अपने लोक को, विसर्जिता = भेज दिया।

हिन्दी अनुवाद– इसके पश्चात् केयूरक द्वारा समाचार पाकर चित्ररथ और हंस मदिरा तथा गौरी के साथ वहीं आये। उन दोनों के आने पर तारापीड और शुकनास के साथ विवाह सम्बन्ध की बातचीत से हजार गुना महोत्सव हुआ। वे सभी हेमकूट पर जाकर दोनों दम्पतियों का विधिपूर्वक विवाह सम्पन्न किये। चित्ररथ ने कादम्बरी के साथ अपना सारा राज्य चन्द्रापीड को दे दिया। हंस ने भी महाश्वेता के साथ पुण्डरीक को अपना देश दे दिया। कादम्बरी अपने प्राणप्रिय को पाकर भी उदास मुख होकर चन्द्रापीड से बोली– आर्यपुत्र, हम सभी लोग मरे, फिर जीवित हुए और मिले भी, किन्तु वह बेचारी पत्रलेखा हम लोगों के बीच नहीं दिखाई देती, उसका क्या हाल है? नहीं जानती हूँ। उसने कहा– वह रोहिणी थी। मुझे शाप में पड़ा सुनकर –तुम कैसे अकेले मृत्युलोक के दुःखों को भोगोगे– ऐसा कहकर मेरे मना करने पर भी मेरी सेवा के लिए मृत्युलोक में जन्म ली थी। इस दूसरे जन्म में आने पर मैंने फिर उसे अपने लोक को भेज दिया है। वहाँ तुम उसे देखोगी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– विदितवृत्तान्तौ = विदित वृन्तान्तः याभ्याम् तौ। चित्ररथहंसौ = चित्ररथः च हंसः च। तत्रैवाजग्मतुः = तत्र+एव+आजग्मतुः। निवार्यमाणापि = निवार्यमाण+अपि।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. ''आर्यपुत्र! सर्वे खलुः वयं मृताः प्रत्युज्जीविताः पुनः संघटिताश्चय।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– आर्यपुत्र ! हम सभी मरकर पुनः जीवित हुए और परस्पर (आपस में) मिल भी गये।

प्रश्न 3. केयूरकेण विदितवृत्तान्तौ चित्ररथहंसौ केन समं आजग्मतुः?

उत्तर– केयूरकेण विदितवृत्तान्तौ चित्ररथहंसौ मदिरागौरीभ्यां समं आजग्मतुः।

प्रश्न 4. चित्ररथः कादम्बर्या सह समग्रमेव स्वं राज्यं कस्मै न्यवेदयत्?

उत्तर– चित्ररथः कादम्बर्या सह समग्रमेव स्वं राज्यं चन्द्रापीडाय न्यवेदयत्।

प्रश्न 5. पत्रलेखा का आसीत्?

उत्तर– पत्रलेखा रोहिणी आसीत्।

➥ **एवं च चन्द्रापीडः तत्र दशरात्रं स्थित्वा परितुष्टहृदयाभ्यां श्वशुराभ्यां विसर्जितः पितुः पादमूलम् आजगाम। आगत्य च पुण्डरीके समारोपितराज्यभारः, कदाचित् उज्जयिन्याम्, कदाचित् हेमकूटे, कदाचित् चन्द्रलोके, कदाचित् अपरेष्वपि रम्यतरेषु स्थानेषु निवसन् सुखम् अनुबभूव। एवं चन्द्रापीडः, कादम्बरी, पुण्डरीकः, महाश्वेता, इत्येते सर्वेऽपि परस्परावियोगेन परां कोटिम् आनन्दस्य अध्यगच्छन्।**

शब्दार्थ– दशरात्रम् = दस रात्रि। परितुष्टहृदयाभ्याम् = सन्तुष्ट हृदय वाले। श्वशुराभ्याम् = सास तथा ससुर से। विसर्जितः = विदा होकर। पितुः पादमूलम् = पिता के चरणों के पास। आजगाम = आ गया। समारोपितराज्यभारः = राज्य का भार सौंपकर। अपरेष्वपि = दूसरे। रम्यतरेषु = रमणीय। परस्परावियोगेन = परस्पर वियोग रहित होकर। परां कोटिम् = चरम सीमा को। अध्यगच्छन् = पहुँचे।

हिन्दी अनुवाद– इस प्रकार चन्द्रापीड वहाँ दस रात रहकर सन्तुष्ट हृदय वाले सास-ससुर से विदा होकर पिता के पास आ गया। वह पुण्डरीक के ऊपर राज्यभार सौंपकर कभी उज्जयिनी, कभी हेमकूट, कभी चन्द्रलोक, कभी दूसरे रमणीय स्थानों में निवास करता हुआ सुख भोगने लगा। इस प्रकार चन्द्रापीड और कादम्बरी तथा पुण्डरीक और महाश्वेता ये सभी वियोग रहित होकर आनन्द की चरम सीमा पर पहुँच गये।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– दशरात्रम् = दशाणां रात्रीणां समाहारः। समारोपितराज्यभारः = समारोपितः राज्यस्य भारः येन सः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. 'सर्वेऽपि परस्परावियोगेन परां कोटिम् आनन्दस्य अध्यगच्छन्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– ये सभी वियोग रहित होकर आनन्द की चरम सीमा पर पहुँच गये।

प्रश्न 3. चन्द्रापीडः कियन्तः रात्रं अतिष्ठत्?

उत्तर– चन्द्रापीडः दशरात्रं अतिष्ठत्।

प्रश्न 4. चन्द्रापीडः श्वशुराभ्यां विसर्जितः कुत्र आजगाम?

उत्तर– चन्द्रापीडः श्वशुराभ्यां विसर्जितः पितुः पादमूलम् आजगाम।

प्रश्न 5. के परस्परवियोगेन परां कोटिम् आनन्दस्य अध्यगच्छन्?

उत्तर– चन्द्रापीडः, कादम्बरी, पुण्डरीकः, महाश्वेता, इत्येते सर्वेऽपि परस्परवियोगेन परां कोटिम् आनन्दस्य अध्यगच्छन्।

अनन्ताचार्यनामासौ नल्लानभिजनः सुधीः।
जग्रन्थ बाणभट्टस्य वाक्यैरेव कथामिमाम्॥

इति चन्द्रापीडकथा
सम्पूर्णा।

●●

➨ अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. शुकनासः कस्य मंत्री आसीत्?
उत्तर– शुकनासः राज्ञः तारापीडस्य मंत्री आसीत्।

प्रश्न 2. विलासवती कस्य महिषि आसीत्?
उत्तर– विलासवती राज्ञः तारापीडस्य महिषी आसीत्।

प्रश्न 3. चन्द्रापीडः कस्य पुत्रः आसीत्?
उत्तर– चन्द्रापीडः विलासवत्याः तारापीडस्य च पुत्रः आसीत्।

प्रश्न 4. कः स्वप्ने विलासवत्याः वदने प्रविशन्तं शशिनम् अद्राक्षीत्?
उत्तर– राजा तारापीडः स्वप्ने विलासवत्याः वदने प्रविशन्तं शशिनम् अद्राक्षीत्।

प्रश्न 5. भगवन्तं जाबालिं शुकः कुत्र अपश्यत्?
उत्तर– भगवन्तं जाबालिं शुकः रक्ताशोकतरोः अधःछायायाम् अपश्यत्।

प्रश्न 6. कस्मात् कारणात् हारीतः शुक-शिशुं स्वाश्रमं आनीतवान्?
उत्तर– शाल्मलीवृक्षस्य तवस्विदुरारोहत्वात् शुकशिशुम् स्वाश्रमम् हारीतः आनीतवान्।

प्रश्न 7. हारीतः कस्यः पुत्रः आसीत्?
उत्तर– हारीतः जाबालेः महर्षेः पुत्रः आसीत्।

प्रश्न 8. वैशम्पायनः शुकः कस्मिन् वृक्षे अवसत्?
उत्तर– वैशम्पायनः शुकः शाल्मली वृक्षे अवसत्।

प्रश्न 9. कः मुनिः पम्पाभिधानस्य सरसः नातिदूरवर्तिनि तपोवने प्रतिवसति स्म?
उत्तर– जाबालिः नाम मुनिः पम्पाभिधानस्य सरसः नातिदूरवर्तिनि तपोवने प्रतिवसति स्म।

प्रश्न 10. शुकशावकान् कः पादपम् आरुह्य क्षितौ अपातयत्?
उत्तर– शुकशावकान् जीर्णः शबरः पादपम् आरुह्य क्षितौ अपातयत्।

प्रश्न 11. मातंगः कः आसीत्?
उत्तर– मातंगः शबर सेनापतिः आसीत्।

प्रश्न 12. उज्जयिनी कुत्र अस्ति?
उत्तर– उज्जयिनी अवन्तिदेशे अस्ति।

प्रश्न 13. जीर्णः शाल्मली वृक्षः कुत्र आसीत्?
उत्तर– पम्पाभिधानस्य सरसः पश्चिमे तीरे जीर्णः शाल्मलीवृक्षः आसीत्।

प्रश्न 14. आश्रमस्य नातिदूरे कः आसीत्।
उत्तर– आश्रमस्य नातिदूरे पम्पाभिधानं सरः आसीत्।

प्रश्न 15. विदिशा कस्य राजधानी आसीत्?
उत्तर– विदिशा शूद्रकस्य राजधानी आसीत्।

प्रश्न 16. सकलभूतलरत्नभूतः कः आसीत्?
उत्तर– सकलभूतलरत्नभूतः वैशम्पायनो नाम शुकः आसीत्।

प्रश्न 17. कः कृतजयशब्द राजानम् उद्दिश्य आर्याम् छन्दः पपाठ?
उत्तर– वैशम्पायनो शुकः कृतजयशब्द राजानाम् उद्दिश्य आर्याम् छन्दः पपाठ।

प्रश्न 18. शूद्रकस्य समीपं पञ्जरस्थं शुकमादाय का आगता?
उत्तर– चाण्डाल-कन्या पञ्जरस्थं शुकमादाय शूद्रकसमीपं आगता।

प्रश्न 19. का शूद्रकस्य पुरः पञ्जरं निधाय अपससार?
उत्तर– चाण्डालकन्या शूद्रकस्य पुरः पञ्जरं निधाय अपससार।

प्रश्न 20. शुकस्य किम् नाम आसीत्?
उत्तर– शुकस्य ''वैशम्पायनः'' इति नाम आसीत्।

प्रश्न 21. केषाम् धर्मः अनाथपरिपालनम् अस्ति?
उत्तर– अनाथपरिपालनम् तपस्विसदृशानाम् जनानाम् धर्मः अस्ति।

प्रश्न 22. शुक-शकुनिकुलानि कुत्र प्रतिवसन्ति स्म?
उत्तर– शुक-शकुनिकुलानि शाल्मली वृक्षे प्रतिवसन्ति स्म।

प्रश्न 23. दण्डकारण्यः कुत्र आसीत्?
उत्तर– दण्डकारण्यःविन्ध्याटव्याम् आसीत्।

प्रश्न 24. किम् नाम्न्या सरितया आश्रमपदम् परिगतम् आसीत्?
उत्तर– गोदावर्या सरितया आश्रमपदम् परिगतम् आसीत्।

प्रश्न 25. शुकः कोलाहलध्वनिम् आकर्ण्य कुत्र अविशत्?
उत्तर– शुकः कोलाहलध्वनिम् आकर्ण्य स्वपितुः पक्षपुटान्तरम् अविशत्।

प्रश्न 26. महाश्वेता कस्मिन् अनुरक्ता आसीत्?
उत्तर– महाश्वेता पुण्डरीके अनुरक्ता आसीत्।

प्रश्न 27. कादम्बरी कस्मिन् अनुरक्ता आसीत्?
उत्तर– कादम्बरी चन्द्रापीडे अनुरक्ता आसीत्।

प्रश्न 28. का शूद्रकस्य राजधानी आसीत्?
उत्तर– विदिशा शूद्रकस्य राजधानी आसीत्।

प्रश्न 29. शूद्रकः कस्य अवतारः आसीत्?
उत्तर– शूद्रकः चन्द्रापीडस्य अवतारः आसीत्।

प्रश्न 30. कौ चन्द्रापीडस्य माता पितरौ आस्ताम्?
उत्तर– चद्रापीडस्य माता विलासवती पिता च तारापीडः आस्ताम्।

प्रश्न 31. चन्द्रापीडस्य बालमित्रं कः आसीत्?
उत्तर– चन्द्रापीडस्य बालमित्रं वैशम्पायनः आसीत्।

प्रश्न 32. कः विद्यामन्दिरम् चन्द्रापीडम् आनेतुं अगच्छत्?
उत्तर– बलाधिकृतः बलाहकः चन्द्रापीडम् आनेतुं विद्यामन्दिरम् अगच्छत्।

प्रश्न 33. पत्रलेखा का आसीत्?
उत्तर– चन्द्रपत्नी रोहिण्याः अवतारः पत्रलेखा चन्द्रापीडस्य च ताम्बूलकरंकवाहिनी आसीत्।

प्रश्न 34. चन्द्रापीडः कस्य अवतारः आसीत्?
उत्तर– चन्द्रापीडः चन्द्रस्य अवतारः आसीत्।

प्रश्न 35. किं नाम चन्द्रापीडस्य अश्वस्य आसीत्?
उत्तर– इन्द्रायुधः चन्द्रापीडस्य अश्वस्य नाम आसीत्।

प्रश्न 36. कस्य अवतारः इन्द्रायुधः आसीत्?
उत्तर– कपिंजलस्य अवतारः इन्द्रायुधः आसीत्।

➨ बहुविकल्पीय प्रश्न

नोट : सही विकल्प का चयन कीजिए–

1. का समुत्थाय महाश्वेतां स्नेह निर्भरं कण्ठे जग्राह?
(क) चन्द्रापीडः (ख) कादम्बरी (ग) वैशम्पायनः (घ) तरलिका
उत्तर–(ख) कादम्बरी।

2. कस्योक्तिः 'एष च दर्शनात् प्रभृति मे निष्कारण बन्धुतां गतः।'
(क) पत्रलेखा (ख) मदलेखा (ग) महाश्वेता (घ) कादम्बर्याः
उत्तर–(ग) महाश्वेता।

3. का कादम्बरीम् अनामयं पप्रच्छ? (2019 DB, DC)
(क) महाश्वेता (ख) पत्रलेखा (ग) पुण्डरीकः (घ) तारापीडः
उत्तर–(क) महाश्वेता।

4. का कादम्बरीम् अभाषत– 'अयम् अभिनवागतः चन्द्रापीडः आराधनीयः।'
(क) मदलेखा (ख) महाश्वेता (ग) केयूरकः (घ) तरलिका
उत्तर–(ख) महाश्वेता।

5. ''सखि, लज्जेऽहम् अनुपजात परिचयाप्रागल्भ्येनानेन।'' कस्योक्तिः? (2020 ZP)
(क) महाश्वेता (ख) तरलिका (ग) मदलेखा (घ) कादम्बर्याः
उत्तर–(घ) कादम्बर्याः।

6. कः केयूरकेण उपदिश्यमानमार्गः मणिमन्दिरम् अगात्?
(क) पुण्डरीकः (ख) कपिंजलः (ग) चन्द्रापीडः (घ) वैशम्पायनः
उत्तर– (ग) चन्द्रापीडः।

7. गन्धर्वराजपुत्री का आसीत्? (2017 NG, NH, 18 BD, 19 DC, DD, DE, 20 ZO, ZQ, ZS)
(क) तरलिका (ख) मदलेखा (ग) पत्रलेखा (घ) कादम्बरी
उत्तर–(घ) कादम्बरी।

8. 'परित्यक्तः कुलकन्यकानां क्रमः' कस्योक्तिः? (2017 NG)
(क) महाश्वेतया (ख) कादम्बर्या (ग) पत्रलेखया (घ) मदलेखया
उत्तर–(ख) कादम्बर्या।

9. कः अचिन्तयत् 'किमनेन वृथैव मनसा खेदितेन?
(क) तारापीडः (ख) शुकनासः (ग) चन्द्रापीडः (घ) कपिंजलः
उत्तर–(ग) चन्द्रापीडः।

10. 'उत्तरावकाशम् अपहरन्त्या कृतं वचसि कौशलम्' कस्योक्तिः?
(क) चन्द्रापीडस्य (ख) पुण्डरीकस्य (ग) तारापीडस्य (घ) केयूरकस्य
उत्तर–(क) चन्द्रापीडस्य।

11. कादम्बरीं समुपसृत्य, तस्यामेव सुधावेदिकायां विन्यस्तम् आसानं भेजे–
(क) चन्द्रापीडः (ख) कपिंजलः (ग) पुण्डरीकः (घ) वैशम्पायनः
उत्तर–(क) चन्द्रापीडः।

12. **'युवयोः दूरस्थितयोरपि कमलिनीकमलाबान्धवयोरिव स्थिरेयं प्रीतिः आप्रलयात्। कस्योक्तिः?**
(क) चन्द्रापीडस्य (ख) शुकनासस्य (ग) महाश्वेतायाः (घ) तरलिकायाः
उत्तर–(ग) महाश्वेतायाः।

13. **'बहुभाषिणः न श्रद्दधाति लोकः' कस्योक्तिः?** (2019 DE, 20 ZP)
(क) चन्द्रापीडस्य (ख) केयूरकस्य (ग) शुकनासस्य (घ) कपिंजलस्य
उत्तर–(क) चन्द्रापीडस्य।

14. **काम्वर्जम् अशेषः कन्यकाजनः चन्द्रापीडं व्रजन्तम् आबहिस्तोरणात् अनुवव्राज?**
(क) कादम्बरीम् (ख) महाश्वेताम् (ग) तरलिकाम् (घ) मदलेखाम्
उत्तर–(क) कादम्बरीम्।

15. **''केयूरक! कथय, कच्चित् कुशलिनी ससखीजना देवी कादम्बरी भगवती महाश्वेता च।'' कः पप्रच्छ?**
(क) चन्द्रापीडः (ख) तारापीडः (ग) शुकनासः (घ) कपिंजलः
उत्तर–(क) चन्द्रापीडः।

16. **कस्य सन्देशः-धन्या खलु ते येषां न गतोऽपि चक्षुषोर्विषयम्?**
(क) महाश्वेता (ख) तरलिका (ग) मदलेखा (घ) केयूरकः
उत्तर–(क) महाश्वेता।

17. **महाश्वेता कस्मिन् अनुरक्ता आसीत्?** (2018 BD, BE, 19 CZ, DB, 20 ZQ, ZS)
(क) पुण्डरीके (ख) चन्द्रापीडे (ग) वैशम्पायने (घ) शूद्रके
उत्तर–(क) पुण्डरीके।

18. **शुकनासपुत्रः वैशम्पायनः कस्य अवतारः आसीत्?** (2017 NI)
अथवा **वैशम्पायनः कस्य अवतारः आसीत्?** (2017 NH)
(क) पुण्डरीकस्य (ख) शूद्रकस्य (ग) चन्द्रापीडस्य (घ) कपिंजलस्य
उत्तर–(क) पुण्डरीकस्य।

19. **कस्याः माता गौरी पिता च हंस आस्ताम्?**
(क) महाश्वेतायाः (ख) कादम्बर्या (ग) मदलेखायाः (घ) पत्रलेखायाः
उत्तर–(क) महाश्वेतायाः।

20. **चन्द्रापीडस्य अश्वस्य नाम आसीत्–**
अथवा **चन्द्रापीडस्य अश्वस्य नाम किम् ?** (2020 ZR)
(क) चक्रायुधः (ख) इन्द्रायुधः (ग) वज्रायुधः (घ) शक्तियुधः
उत्तर–(ख) इन्द्रायुधः।

21. **''अहो मानषीषु पक्षपातः प्रजापतेः'' इति का चिन्तायां बभूव?**
(क) मदलेखा (ख) पत्रलेखा (ग) कादम्बरी (घ) महाश्वेता
उत्तर–(ग) कादम्बरी।

22. **कः अपृच्छत्– ''देवि! जानामि कामरतिं निमित्तीकृत्य प्रवृत्तोऽयं व्याधिः।''**
(क) चन्द्रापीडः (ख) पुण्डरीकः (ग) कपिंजल (घ) तारापीडः
उत्तर–(क) चन्द्रापीडः।

23. **''मृणालिन्याः किसलयमपि हुताशनायते'' कस्योक्तिः?**
(क) मदलेखा (ख) पत्रलेखा (ग) तरलिका (घ) महाश्वेता
उत्तर–(क) मदलेखा।

24. का अब्रवीत्– ''पत्रलेखे दर्शनात् प्रभृति प्रियासि।''
(क) महाश्वेता (ख) कादम्बरी (ग) मदलेखा (घ) तरलिका
उत्तर–(ख) कादम्बरी।

25. कस्योक्ति– 'आज्ञापय किं कृतं देवेन चन्द्रापीडेन'?
(क) कादम्बरी (ख) पत्रलेखा (ग) मदलेखा (घ) महाश्वेता
उत्तर–(ख) पत्रलेखा।

26. का अवदत्– 'उपवनेषु एकाकिन्याः मे परिष्वङ्गम् आचरति।'
(क) पत्रलेखा (ख) मदलेखा (ग) महाश्वेता (घ) कादम्बरी
उत्तर–(घ) कादम्बरी।

27. ''मन्मथमूढमानसश्च, कथय, हे पत्रलेखे! केन प्रकारेण निषिध्यते।'' केन कथितम्?
(क) कादम्बरी (ख) महाश्वेता (ग) तरलिका (घ) मदलेखा
उत्तर–(क) कादम्बरी।

28. ''अनाराधित प्रसन्नेन कुशुमशरेण भगवता ते वरः दत्तः।'' कस्योक्तिः?
(क) तरलिका (ख) मदलेखा (ग) पत्रलेखा (घ) महाश्वेता
उत्तर–(ग) पत्रलेखा।

29. कः चेतस्यकरोत्– 'अहो संदेहदोलाधिरूढं मे जीवितम्।
(क) चन्द्रापीडः (ख) वैशम्पायनः (ग) केयूरकः (घ) कपिञ्जलः
उत्तर–(क) चन्द्रापीडः।

30. 'बलवान् जननीस्नेहः।' कस्योक्तिः? (2019 CZ, 20 ZO)
(क) तारापीडः (ख) शुकनासः (ग) श्वेतकेतुः (घ) चन्द्रापीडः
उत्तर–(घ) चन्द्रापीड।

31. प्रहृष्टचेताः कः अब्रवीत्– ''केयूरक! करतलवर्तिनीं सिद्धिम् अवधारय''?
(क) शुकनासः (ख) तारापीडः (ग) कपिञ्जलः (घ) चन्द्रापीडः
उत्तर–(घ) चन्द्रापीडः।

32. ''सर्वो हि प्रत्याशया धार्यते।'' कस्योक्तिः? (2020 ZT)
(क) श्वेतकेतु (ख) शुकनास (ग) जाबालि (घ) केयूरक
उत्तर–(घ) केयूरक।

33. मदलेखा कस्याः चरणौ प्रक्षालितवती? (2017 NC)
(क) चन्द्रापीडस्य (ख) महाश्वेतायाः (ग) पत्रलेखायाः (घ) विलासवत्याः
उत्तर–(क) चन्द्रापीडस्य।

34. चन्द्रापीडाय का ताम्बूलं ददौ ? (2017 NC)
(क) पत्रलेखा (ख) मदलेखा (ग) कादम्बरी (घ) महाश्वेता
उत्तर–(ग) कादम्बरी।

35. ''आनीतो मम विप्रलम्भकः चन्द्रापीडः'' इति कस्याः कथनम्? (2017 ND)
(क) कादम्बर्याः (ख) महाश्वेतायाः (ग) मदलेखायाः (घ) पत्रलेखायाः
उत्तर–(क) कादम्बर्याः।

36. **''अदर्शनमुपगते भगवति गभास्तिमालिनि'' इत्यस्मिन् वाक्ये कस्य वर्णनमस्ति?** (2017 ND)
(क) इन्द्रस्य (ख) सूर्यस्य (ग) यमस्य (घ) कुबेरस्य
उत्तर–(ख) सूर्यस्य।

37. **जाबालि महर्षेः कः पुत्रः आसीत्?** (2017 NF)
(क) शुकनासः (ख) हारीतः (ग) वैशम्पायनः
उत्तर–(ख) हारीतः।

38. **विदिशा कस्य राजधानी आसीत्?** (2017 NF)
(क) चन्द्रापीडस्य (ख) तारापीडस्य (ग) शूद्रकस्य (घ) शुकनासस्य
उत्तर–(ग) शूद्रकस्य।

39. **केयूरकेण उत्सङ्गे गृहीतचरणयुगलः कः चिन्तां विवेश?** (2018 BC)
(क) विलासवती (ख) तारापीडः (ग) पुण्डरीकः (घ) चन्द्रापीडः
उत्तर–(घ) चन्द्रापीडः।

40. **अम्बरतलात् अवतरन् समुत्सृष्टशुकशरीरः कः आसीत्?** (2018 BC)
(क) केयूरकः (ख) पुण्डरीकः (ग) चन्द्रापीडः (घ) तारापीडः
उत्तर–(ख) पुण्डरीकः।

41. **''एष च दर्शनात् प्रभृति मे निष्कारण वन्धुतां गतः।'' कस्योक्तिः?** (2018 BE, 19 DA)
(क) पत्रलेखा (ख) मदलेखा (ग) महाश्वेता (घ) कादम्बर्याः
उत्तर–(ग) महाश्वेता।

42. **कादम्बरी कस्मिन् अनुरक्ता असीत्?** (2019 DD, 20 ZU)
(क) पुण्डरीके (ख) शूद्रके (ग) वैशम्पायने (घ) चन्द्रापीडे
उत्तर–(घ) चन्द्रापीडे।

43. **कादम्बरी कः आसीत्?** (2019 DF, 20 ZT)
(क) चन्द्रापीडस्य प्रेयसी (ख) केयूरकस्य पुत्री (ग) पत्रलेखायाः भगिनी
उत्तर–(क) चन्द्रापीडस्य प्रेयसी।

44. **चन्द्रापीडस्य माता कः आसीत्?** (2019 DF)
(क) मदलेखा (ख) पत्रलेखा (ग) विलासवती
उत्तर–(ग) विलासवती।

45. **हरीतः कस्य पुत्रः आसीत्?** (2020 ZR)
(क) महर्षिजाबलिः (ख) विश्वामित्रस्य (ग) अगस्त्यस्य (घ) वशिष्ठस्य
उत्तर–(क) महर्षिजाबलिः।

46. **शुकनासः कस्य मंत्री आसीत्?** (2020 ZU)
(क) हारीतस्य (ख) चन्द्रापीडस्य (ग) तारापीडस्य (घ) पुण्डरीकस्य
उत्तर–(ग) तारापीडस्य।

●●

खण्ड - 'ख' (पद्य)

महाकविकालिदासप्रणीतम्

रघुवंश-महाकाव्यम्

(द्वितीयः सर्गः)

महाकवि कालिदास : एक संक्षिप्त परिचय

(2017 NF, NI, 18 BD, BE, 19 DA, DD)

जीवन-वृत्त एवं जन्म-स्थान—महाकवि कालिदास के जीवन-वृत्त के विषय में कोई भी प्रामाणिक सामग्री उपलब्ध नहीं है। उन्होंने अपने ग्रन्थों में, महाकवि बाण के तुल्य, अपने जीवन के विषय में कोई सामग्री नहीं दी है, अतः अन्तःसाक्ष्य का अभाव है। परवर्ती काव्यों, महाकाव्यों या नाटकों में भी कहीं कालिदास के जीवन के विषय में कोई उल्लेख नहीं है, अतः बहिःसाक्ष्य का भी प्रायः अभाव है। केवल कुछ किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं, जिनके आधार पर कालिदास के जीवन पर कुछ प्रकाश पड़ता है।

कालिदास के जन्म-स्थान के विषय में भी पर्याप्त मतभेद है। कश्मीर के विद्वान् उनको कश्मीरी सिद्ध करते हैं, बंगाल के विद्वान् बंगाली और उज्जैन के विद्वान् उज्जयिनी-निवासी। 'मेघदूत' में कालिदास ने उज्जयिनी के प्रति विशेष आग्रह और आदर-भाव प्रदर्शित किया है, इससे ज्ञात होता है कि वे उज्जयिनी के निवासी थे या अधिक समय तक उज्जयिनी में रहे। 'मेघदूत' में उज्जयिनी नगरी के सौन्दर्य, शिप्रा नदी और महाकाल के मन्दिर का विशेष वर्णन मिलता है। विद्वानों का कहना है कि ये राजा विक्रमादित्य के नवरत्नों में से थे। विक्रमादित्य के निम्नलिखित नवरत्न कहे जाते हैं :

धन्वन्तरिक्षपणकामरसिंहशंकुवेतालभट्टघटखर्परकालिदासाः।
ख्यातो वराहमिहिरो नृपतेःसभायां रत्नानि वै वररुचिर्नवविक्रमस्य॥

इनके विषय में एक मत यह भी है कि ये उज्जयिनी के राजा भोज के सभासद थे। एक कथा के अनुसार उनका सम्बन्ध श्रीलङ्का के राजा कुमारदास (500 ई.) से बताया जाता है। इनके विषय में अनेक किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं, किन्तु जो किंवदन्ती अधिक चल पड़ी है, उसके अनुसार पहले ये बड़े ही मूर्ख थे। एक बार किसी राजा की कन्या ने जिसका नाम विद्योत्तमा कहा जाता है, प्रतिज्ञा की कि जो विद्वान् शास्त्रार्थ में उसे हरा देगा उसी से वह अपना विवाह करेगी। उसने अनेक उद्भट विद्वानों को हराया जिससे पण्डित-समाज को अपमानित होना पड़ा, अतः उन्होंने एक ऐसा मूर्ख खोज निकाला जो उसी डाल को काट रहा था जिस पर वह बैठा था। उन्होंने उसे ले जाकर राजकुमारी के समक्ष प्रस्तुत किया और कहा कि आज पण्डित महाशय का मौन व्रत है, अतः ये संकेत द्वारा शास्त्रार्थ करेंगे। विद्योत्तमा ने इसे स्वीकार कर लिया। शास्त्रार्थ शुरू हुआ, राजकुमारी ने एक उँगली दिखायी। उसके उत्तर में मूर्ख ने दो उँगलियाँ दिखायीं। फिर राजकुमारी ने पाँच उँगलियाँ दिखायीं तो उस मूर्ख ने उत्तर में मुट्ठी दिखायी। उनके प्रश्नोत्तर का जो भी अर्थ रहा हो, किन्तु राजकुमारी ने अपनी पराजय स्वीकार कर ली और उस मूर्ख पण्डित से उसका विवाह हो गया।

ऐसा कहा जाता है कि विवाह के बाद एक दिन मूर्ख कालिदास अशुद्ध शब्दों का उच्चारण कर गये, जिससे उनकी धर्मपत्नी ने मूर्ख कहकर उनका बड़ा अपमान किया। इस अपमान से पीड़ित होकर वे घर से बाहर निकल गये और अपना प्राण त्यागने के